

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर की (1989-2009 ई. तक)
सर्जनात्मक संस्कृत साधना

शोध प्रबन्ध

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
में
पीएच.डी. (संस्कृत) की उपाधि हेतु प्रस्तुत
संस्कृत
(कला संकाय)
शोधकर्त्री
शिख्रा हाड़ा
एम.ए., एम.फिल्. (संस्कृत)



शोध-निर्देशिका
डॉ. (श्रीमती) हेमलता लोया, उपाचार्य
संस्कृत विभाग
राजकीय महाविद्यालय, कोटा (राज.)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)
2017

शोध प्रमाण - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री शिखा हाड़ा पुत्री श्री शिवनन्दन सिंह हाड़ा द्वारा प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध “प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर की (1989-2009 ई. तक) सर्जनात्मक संस्कृत साधना” मेरे निर्देशन में तैयार किया गया है। शोधार्थी ने प्रतिवर्ष 200 दिन मेरे पास नियमित रहकर कार्य किया है। इनका यह शोध-प्रबन्ध मौलिक एवं सारगर्भित है। अतः शोध-प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु अग्रसारित किया जाता है।

डॉ. हेमलता लोया
उपाचार्य,
राजकीय महाविद्यालय,
कोटा (राज.)

DECLARATION

I **Miss Shikha Hada D/o Sh. Shivnandan Singh Hada** student of Govt. College, Kota hereby declare that the research work incorporated in the present thesis entitled "**Prof. Harishchandra Renapurkar ki (1989-2009 AD) Sarjanatmak Sanskrit Shadhana**" is my own work and is original. This work (in part or in full) has not been submitted to any University for the award of a Degree or a Diploma. I have properly acknowledged the material collected from secondary sources wherever required. I solely own the responsibility for the originality of the entire content.

Date :

Signature of the Candidate

प्राक्कथन

पथ्यं ये कटुकं कवित्वविषयीकर्तुं यतन्तेऽधुना

यत्सत्यं कविता तदीयकविताऽन्येषा तु गल्लध्वनिः । ।

महाराजदीन पाण्डेय (मौनवेधम्)

अर्थात् “जो कटुपथ्य को कवित्व का विषय बनाने का प्रयास करते हैं, उन्हीं की कविता आज कविता है, शेष लोगों की रचना तो गल्लध्वनि या गाल बजाना ही है।”

“क्रान्तदर्शिनः कवयः” की प्रसिद्ध उक्ति के अनुसार हर युग का प्रसिद्ध कवि क्रान्तदर्शी होता है। यह उक्ति आद्यकवि वाल्मीकि से लेकर आज तक के यशस्वी कवियों के लिए सटीक है। कवि केवल कवि ही नहीं होता है वह प्राचीन मान्यताओं से जुड़कर वर्तमान की समस्त स्थितियों का आकलन करके भविष्य के लिए एक सन्देश प्रस्तुत करता है।

संस्कृत धारा वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक अजस्र रूप से प्रवाहमान रही है। आधुनिक युग को संस्कृत के रचनाकाल की दृष्टि से ‘स्वर्ण युग’ कहा जा सकता है, क्योंकि इस समय संस्कृत साहित्य में एक ओर तो यात्रावृत्त, संस्मरण, रेडियो रूपक, नुक्कड़ नाटक, हाइकु, सिजो, कविता गजल, नीति,, नृत्यनाटिका, गीति नाट्य आदि नवीन विधाओं में साहित्य सर्जन हो रहा है। तो दूसरी ओर महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, नाटक कथा आख्यायिका आदि प्राचीन विधाओं के लक्षणों में युगानुरूप कुछ परिवर्तन करके उन्हें नये स्वरूप में प्रस्तुत किया जा रहा है इन प्राचीन विधाओं में सबसे प्रसिद्ध विधा है महाकाव्य विधा।

महाकाव्य-विधा में लौकिक संस्कृत साहित्य में हम देखते हैं कि महाकाव्य किसी पौराणिक नायक, देवता, क्षत्रिय आदि पर आधारित होते थे। इनमें ऐतिहासिक या पौराणिक कथावस्तु का सन्निवेश होता था। शृंगार, वीर, शान्त में से कोई एक रस अंगी रस होता था। वहीं आधुनिक महाकाव्यों में ये लक्षण कुछ परिवर्तित हो गये हैं। यहाँ नायक कोई क्रान्तिकारी नेता, समाज सुधारक भी हो सकता है और नायक ही नहीं, आधुनिक काल में तो नायिका प्रधान महाकाव्य भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से भी परिवर्तन हो रहा है। इस परिवर्तन में हम देखते हैं कि पौराणिक व ऐतिहासिक कथावस्तु के साथ-साथ आधुनिक कथावस्तु का भी संयोजन किया जा रहा है, समसामयिक विषयों को कवि अपने काव्यों में प्रस्तुत कर रहे हैं। रस की दृष्टि से भी पर्याप्त परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। शृंगार, वीर, शान्त के साथ राष्ट्रभक्ति आदि अन्य रस भी अंगी रस के रूप में महाकाव्यों में प्रतिष्ठित हो रहे हैं।

अनेक कालजयी काव्यकृतियों की रचना द्वारा संस्कृत भाषा-साहित्य की श्रीवृद्धि करने वाले प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ने “प्राचीन एवं अर्वाचीन विषयों को आधार बनाकर महाकाव्य, खण्डकाव्य, दीर्घकाव्य तथा काव्यों की रचनाएँ की हैं। एक ओर “प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्” महाकाव्य प्राचीन, किन्तु अतिविशिष्ट विषय संस्कृति को केन्द्र में रखकर रचा गया है। वहीं दूसरी ओर काव्यनिष्पन्दः, काव्योद्यानम्, काव्यनिर्झरः, काव्योन्मेषः, इन्दिरापतनोत्थानम्, राममन्दिरविवादः, हुतात्मश्रीश्यामलालचरितम्, श्रद्धाकुसुमाञ्जलिः जैसे काव्य ग्रन्थ समकालीन घटना प्रधान काव्य है। प्राचीन भारत संस्कृतीयम् महाकाव्य देशवासियों में राष्ट्र के प्रति प्रेमभाव जाग्रत करने वाला तथा सभ्यता व संस्कृति के महत्त्व को उजागर करने वाला महाकाव्य है। साथ ही पुरुषार्थ चतुष्टय को भी पूर्णरूपेण समझाया है। अन्य काव्यग्रन्थों में समकालीन घटनाओं व ज्वलंत मुद्दों को काव्य का विषय बनाया है।

ऐसे उदात्त वैशिष्ट्य से युक्त इन काव्य ग्रन्थों का “प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर की (1989-2009 तक) सर्जनात्मक संस्कृत साधना” विषय पर परम आदरणीया डॉ. (श्रीमती) हेमलता लोया, उपाचार्य, राजकीय महाविद्यालय, कोटा के निर्देशन में यह शोध ग्रन्थ पूर्णता को प्राप्त हो गया है।

“प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर की (1989-2009 तक) सर्जनात्मक संस्कृत साधना” नामक यह शोध प्रबन्ध 9 खण्डों में विभक्त है जिनमें से प्रथम, चतुर्थ, पंचम, सप्तम खण्ड में दो-दो अध्याय हैं।

प्रथम खण्ड - व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रथम अध्याय में प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर के जीवन का परिचय दिया गया है। इस अध्याय में उल्लिखित विवरण स्वयं कविवर द्वारा दूरभाष पर हुए वार्तालाप के पश्चात् प्रेषित किया गया है। जिसे महाकवि ने स्वयं लिखा है। द्वितीय अध्याय में काव्य के सभी रूपों पर लेखनी चलाने वाले प्रो. रेणापुरकर की समस्त कृतियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया है।

द्वितीय खण्ड - “धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजकीय विषय परक काव्य संग्रह “काव्योन्मेषः” में सर्वप्रथम काव्यों का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया गया है तत्पश्चात् क्रमानुसार उन काव्यों का विवेचन एवं विश्लेषण कर काव्यग्रन्थ का वैशिष्ट्य प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय खण्ड - सांस्कृतिक महाकाव्य - ‘प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्’ का सामान्य परिचय प्रस्तुत करने के उपरान्त सर्गानुसारी विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया है। सर्गानुसार वृत्तों का उल्लेख भी किया है जो सहृदय पाठकों को भाषा शैली समझने में मदद करता है तत्पश्चात् अन्य काव्यों के आधार पर महाकाव्य का काव्यत्व प्रस्तुत किया है। अन्त में महाकाव्य के भावपक्षों व कलापक्षों के आधार पर वैशिष्ट्य प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ खण्ड – राष्ट्रीय काव्य संग्रह काव्योद्यानम् एवं काव्यनिष्यन्दः इसमें दो काव्य संग्रहों का अध्यायानुसार वर्णन है प्रथम अध्याय में काव्योद्यानम् का सामान्य परिचय, विवेचन एवं विश्लेषण तथा वैशिष्ट्य का वर्णन है। द्वितीय अध्याय में काव्यनिष्यन्दः के राष्ट्रीय काव्यों का क्रमानुसार परिचय देते हुए विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया है। तत्पश्चात् काव्य का वैशिष्ट्य प्रस्तुत किया गया है।

पंचम खण्ड – राष्ट्रीय काव्य संग्रह – राममन्दिरविवादः एवं इन्दिरापतनोत्थानम् – वास्तविकता में तो ये दोनों ही ऐतिहासिक विषयाधारित खण्डकाव्य हैं। इनको दो अध्यायों में विभाजित करते हुए खण्डकाव्यों का वर्णन किया गया है। प्रथम अध्याय राममन्दिरविवादः में राममहात्म्य से प्रारम्भ करते हुए हिन्दुओं की विशालता का परिचय दिया है तत्पश्चात् क्रमानुसार विवेचन एवं विश्लेषण करते हुए वैशिष्ट्य प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय अध्याय इन्दिरापतनोत्थानम् में इन्दिरा के जीवन के पतन व उत्थान का 21 भागों में सामान्य परिचय देते हुए विवेचन एवं विश्लेषण किया है अन्ततः वैशिष्ट्य प्रस्तुत किया गया है। यह दोनों ही ऐतिहासिक खण्डकाव्य पृथक विषय को धारण करने वाले हैं।

षष्ठ खण्ड – आन्ताराष्ट्रीय काव्यसंग्रह काव्यनिर्झरः में आन्ताराष्ट्रीय स्तर की 29 कविताओं का परिचय देते हुए क्रमानुसार उनका विवेचन एवं विश्लेषण किया है साथ ही वैशिष्ट्य में भाव पक्ष व कला पक्ष को स्थान दिया है।

सप्तम खण्ड – अन्य काव्य संग्रह को दो अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में हैदराबाद मुक्ति संग्राम के महानायक “हुतात्मश्रीश्यामलाल” पर आधारित ‘हुतात्मश्रीश्यामलालचरितम्’ काव्य का सामान्य परिचय देते हुए सम्पूर्ण जीवन का विवेचन एवं विश्लेषण किया है तथा वैशिष्ट्य प्रस्तुत किया है। द्वितीय अध्याय श्रद्धाकुसुमाञ्जलिः में क्रमानुसार महापुरुषों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए सामान्य परिचय, विवेचन एवं विश्लेषण तथा वैशिष्ट्य का वर्णन किया है।

अष्टम खण्ड – प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृत साहित्य की दशा एवं दिशा के संदर्भ में प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का स्थान में प्राचीन, अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में प्रो. रेणापुरकर के काव्यग्रन्थों का स्थान निर्धारण किया है। इन अध्यायों में प्राचीन व अर्वाचीन काव्यकारों के काव्यग्रन्थों से तुलना करते हुए संस्कृत साहित्य में रेणापुरकर जी का स्थान निर्धारित किया है।

नवम खण्ड – उपसंहार में समस्त खण्डों एवं उनके अध्यायों का निचोड़ प्रस्तुत किया है। जिससे यह निष्कर्ष निकलाता है कि कवि का आग्रह आधुनिक घटना प्रधान विषयों की ओर ही है और उन्होंने समसामयिक प्रत्येक घटना को संस्कृत के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

उन्होंने अनेक घटनाओं के वर्ष, माह दिनांक तक भी अंकित किए हैं। जो आगे की पीढ़ी में संस्कृत के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सामग्री सिद्ध होंगे।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ को पूर्ण करने में मुझे जिन विद्वानों का अपरिमित सहयोग मिला, उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ। सर्वप्रथम प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी का हृदय से आभार प्रकट करना मेरा परम कर्तव्य है क्योंकि उन्होंने उनके काव्य ग्रन्थों पर शोधकार्य की अनुमति देने के साथ अपना सम्पूर्ण परिचय भी प्रेषित किया।

इस शोध ग्रन्थ के दुःसाध्य कार्य को पूर्ण करने में आरम्भ से लेकर समाप्त तक का सम्पूर्ण श्रेय मेरी शोध-निर्देशिका डॉ. (श्रीमती) हेमलता लोया को जाता है, जिन्होंने अपने उत्कृष्ट वैदुष्य, पारदर्शनी प्रतिभा, दीर्घकालीन अध्यापनानुभव एवं शिष्य वत्सलता से मुझे सदैव उपकृत किया है। इस शोध ग्रन्थ में जो कुछ भी सार एवं निखार आया है वह इन्हीं के प्रशस्त पथ प्रदर्शन का परिणाम है। मैं उनकी हृदय से आभारी एवं कृतज्ञ हूँ।

अन्य समस्त विभागीय गुरुजनों का भी मुझे सतत् सहयोग प्राप्त हुआ संस्कृत विद्वान डॉ. एल.एन. शर्मा की निरन्तर प्रेरणा ने मुझे उत्साहित रखा अतः मैं इन सबका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं अपने परिवार के सदस्यों की भी आभारी हूँ। मेरे पितृ श्री शिवनन्दन सिंह हाड़ा और मातृ श्री श्रीमती लाडकँवर की सतत प्रेरणा मेरी पथप्रदर्शक रही है। मैं शब्दों के माध्यम से उनके ऋण को प्रकट करने में असमर्थ हूँ। कुछ मानसिक भाव ऐसे होते हैं जिनका प्रकटन कठिन होता है। माता पिता के स्नेह और वात्सल्य भाव भी ऐसे ही भाव हैं। जिनका शब्दों द्वारा प्रकाशन असम्भव है। उनका आशीर्वाद और वरदान आजनम मेरे साथ रहेगा। साथ ही मेरी अग्रजा सुश्री मेघा का स्नेह और परामर्श मुझे सतत् प्रेरणा देता रहा है। अतः मैं उनके प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

मेरे इस शोध प्रबन्ध के टंकणकार श्री राकेश दाधीच का भी सहयोग मुझे प्राप्त हुआ। उन्होंने शुद्ध टंकण प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है, परन्तु फिर भी संस्कृत का टंकण एक कठिन कार्य है। अशुद्धियों का रहना स्वाभाविक है। विद्वज्जन इन अशुद्धियों को क्षमा करने की कृपा करेंगे।

मेरे इस कार्य की पूर्णता में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी सभी विद्वज्जन एवं संस्थाओं के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

वस्तुतः मैं संस्कृत की एक अल्पज्ञ छात्रा हूँ । यद्यपि यह ग्रंथ प्रसाद गुण युक्त है परन्तु फिर भी अनुवाद में कुछ अशुद्धियाँ होना स्वाभाविक है । इसी प्रकार से कवि के मन्तव्य को प्रकट करने में मेरी अक्षमता दिखाई दे सकती है । विद्वज्जन इसे क्षमा करने की कृपा करेंगे । संस्कृत की एक उक्ति है -

दोषं दूरीकृत्यः कवयः

सद्गुणं घत्त यस्मात् ।

सन्तः सद्गुणं किल

परगुणग्रहिणस्ते प्रशस्ताः ॥

(शूरसिंह चरित काव्य)

विषयानुक्रमणिका

खण्ड/अध्याय	विषयवस्तु	पृष्ठ सं.
प्रथम खण्ड	व्यक्तित्व एवं कृतित्व	1-11
प्रथम अध्याय	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का परिचय	1-5
	(i) जन्म एवं परिवार	
	(ii) शिक्षा	
	(iii) वृत्ति/आजीविका	
	(iv) सम्मान एवं उपाधियाँ	
द्वितीय अध्याय	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर की कृतियों का सामान्य परिचय	6-11
	(i) काव्योन्मेषः	
	(ii) राममन्दिरविवादः	
	(iii) इन्दिरापतनोत्थानम्	
	(iv) काव्यनिष्पन्दः	
	(v) काव्योद्यानम्	
	(vi) काव्यनिर्झरः	
	(vii) हुतात्मश्रीश्यामलाल चरितम्	
	(viii) श्रद्धाकुसुमाञ्जलिः	
	(ix) प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्	
	(x) अन्य काव्य संग्रह	
द्वितीय खण्ड	धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजकीय विषय परक काव्य संग्रह: "काव्योन्मेष"	12-63
	(i) सामान्य परिचय	12-14
	(ii) विवेचन एवं विश्लेषण	15-56
	(iii) वैशिष्ट्य	57-62

तृतीय खण्ड	सांस्कृतिक महाकाव्य - प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्	64-139
	(i) सामान्य परिचय	64-65
	(ii) सर्गानुसारी विवेचन एवं विश्लेषण	66-122
	(iii) प्राचीनभारतसंस्कृतीयम् का महाकाव्यत्व	123-128
	(iv) वैशिष्ट्य	129-133
चतुर्थ खण्ड	राष्ट्रीय काव्य संग्रह - काव्योद्यानम् एवं काव्यनिष्यन्दः	140-184
प्रथम अध्याय	काव्योद्यानम्	140-162
	(i) सामान्य परिचय	140-141
	(ii) विवेचन एवं विश्लेषण	142-159
	(iii) वैशिष्ट्य	160-162
द्वितीय अध्याय	काव्यनिष्यन्दः	163-182
	(i) सामान्य परिचय	163
	(ii) विवेचन एवं विश्लेषण	164-178
	(iii) वैशिष्ट्य	179-182
पंचम खण्ड	ऐतिहासिक खण्डकाव्य - राममन्दिरविवादः एवं इन्दिरापतनोत्थानम्	185-216
प्रथम अध्याय	राममन्दिर विवादः	185-198
	(i) सामान्य परिचय	185
	(ii) विवेचन एवं विश्लेषण	186-196
	(iii) वैशिष्ट्य	197-198
द्वितीय अध्याय	इन्दिरापतनोत्थानम्	199-215
	(i) सामान्य परिचय	199-200
	(ii) विवेचन एवं विश्लेषण	201-212
	(iii) वैशिष्ट्य	213-215

षष्ठ खण्ड	आन्ताराष्ट्रीय काव्य संग्रह - काव्यनिर्झर	217-254
	(i) सामान्य परिचय	217-218
	(ii) विवेचन एवं विश्लेषण	219-246
	(iii) वैशिष्ट्य	247-252
सप्तम खण्ड	अन्य काव्य संग्रहः	255-288
प्रथम अध्याय	हुतात्मश्रीश्यामलालचरितम्	255-265
	(i) सामान्य परिचय	255
	(ii) विवेचन एवं विश्लेषण	256-260
	(iii) वैशिष्ट्य	261-264
द्वितीय अध्याय	श्रद्धाकुसुमाञ्जलिः	265-287
	(i) सामान्य परिचय	265-266
	(ii) विवेचन एवं विश्लेषण	267-282
	(iii) वैशिष्ट्य	283-287
अष्टम खण्ड	प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृत साहित्य की दशा एवं दिशा के संदर्भ में प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का स्थान	289-304
नवम खण्ड	उपसंहार	305-307
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	308-312

प्रथम खण्ड
व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय
प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का
परिचय

द्वितीय अध्याय
प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर की
कृतियों का सामान्य परिचय

प्रथम खण्ड

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

संस्कृत कवियों की सुविशाल परम्परा में आधुनिक शताब्दियों में श्री हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का नाम भी अत्यन्त सम्मान के साथ परिगणित है। इन शताब्दियों में संस्कृत की प्राचीन और नवीन धाराएँ सतत प्रवाहशील हैं। प्राचीन परम्परा के काव्य, नाटक और गद्यकाव्य के साथ ही आधुनिक परम्परा की विविध काव्य विधाएँ भी निरन्तर प्रकाश में आ रही हैं।

डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी के शब्दों में “समकालीन संस्कृत रचना का परिदृश्य वैविध्यमय तथा संभावना पूर्ण है। नवोदित रचनाकारों में प्रयोगशीलता और अछूती भावभिव्यक्तियों की दृष्टि से श्री केशवचन्द्र दाश तथा हर्षदेव माधव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।”

उनका यह भी कथन है कि आज का कवि नवीन भावभिव्यक्तियों के साथ ही प्राचीनता से भी जुड़ा है। नए छन्दों के साथ ही प्राचीन छन्दों का भी बहुत प्रयोग हो रहा है। आज के अनेक संस्कृत कवि अन्य भाषाओं के कवियों के समान आधुनिक मानव की भावनाओं को वाणी प्रदान करते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ कवि ऐसे भी हैं जो प्राचीन छन्दों में समकालीन घटनाओं को मूर्तिमान करने में कुशल हैं। ऐसे कवियों की शृंखला में प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का नाम अग्रगण्य है। इनकी रचनाओं में आधुनिक काल की समस्त घटनाओं का काव्यमय वर्णन है यद्यपि राजनैतिक घटनाएँ विरल कवियों के काव्य का विषय रही हैं। परंतु श्री हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ने लगभग समस्त राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक घटनाओं का काव्यमय वर्णन करके इस अभाव की पूर्ति की है। उनकी अनेक रचनाओं को पढ़ने से उनके बहु आयामी कवित्व और व्यक्तित्व का सहज रूप से ज्ञान हो जाता है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के विषय में अनेक ग्रन्थों के अन्त में कुछ संकेत मिलते हैं, जिनका विशद विवेचन इस प्रकार है -

प्रथम अध्याय - प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का परिचय

(i) व्यक्तित्व -

कविवर हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का जन्म 17 सितम्बर 1924 को श्री पाण्डुरंगराव और मुक्ता बाई के पुत्र के रूप में महाराष्ट्र के लातूर जिले के रेणापुर ग्राम में हुआ। लातूर में यद्यपि संस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था नहीं थी, परन्तु प्रारंभ से ही इनके हृदय में संस्कृत अध्ययन की अदम्य लालसा उत्पन्न हो गयी।

(ii) शिक्षा -

कविवर हरिश्चन्द्र रेणापुरकर की प्रारंभिक शिक्षा रेणापुर और लातूर में हुई। लातूर के विद्यालय में ही आर्य समाजी पण्डितों के भाषण सुनकर उनके हृदय में संस्कृत सीखने

की उत्कट इच्छा हुई । लातूर से शिक्षा समाप्त करने के पश्चात ये औरंगाबाद के विद्यालय में पहुँच गए । औरंगाबाद में संस्कृत अध्ययन की व्यवस्था थी । अतः उन्होंने इण्टरमीडियट में संस्कृत को अपना प्रमुख अध्ययन विषय बनाया । आठवीं कक्षा से संस्कृत विषय पढ़ने वाले छात्रों के समक्ष इन्हें संस्कृत पढ़ने में काठिन्य का अनुभव हुआ, क्योंकि उस कक्षा में महाकवि कालिदास के काव्य, नाटक और श्री हर्ष के काव्य के कुछ अंश भी निर्धारित थे । उस समय संस्कृत का माध्यम भी आंग्लभाषा थी । कठिनाई का अनुभव होने के कारण इन्होंने संस्कृत छोड़ने का भी विचार किया, किन्तु अपनी अदम्य इच्छा शक्ति और कठोर परिश्रम के बल पर इन्होंने सब कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की और इस परीक्षा में हैदराबाद राज्य में संस्कृत में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए । उसके पश्चात् ये हैदराबाद आ गए और वहीं से इन्होंने स्नातक और स्नातकोत्तर परीक्षाएँ उस्मानिया विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की । औरंगाबाद में प्रथम स्थान प्राप्त करने के कारण इन्हें गुणवत्ता पुरस्कार/छात्रवृत्ति प्राप्त हुई थी । स्नातकोत्तर कक्षा में भी इन्होंने विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया । इस प्रकार इनकी शिक्षा प्रथम श्रेणी के साथ ही पूर्ण हुई ।

(iii) वृत्ति/आजीविका -

स्नातकोत्तर उत्तीर्ण करते ही इनकी प्रथम नियुक्ति संस्कृत प्राध्यापक के रूप में शासकीय महाविद्यालय वारङ्गल में 1952 में हुई वारङ्गल में कुछ समय अध्यापन के पश्चात् 1954 में इनका स्थानान्तरण गुलबर्गा में हो गया । तत्पश्चात् 1964 में ये सहाचार्य (रीडर) के रूप में शिमोगा के महाविद्यालय में आ गए । 1964 - 1975 तक इस पद पर रहने के पश्चात् इनकी प्रोन्नति हुई और ये 1975 में प्रो. और प्राचार्य के रूप में चिकमंगलूर आ गए । उसके पश्चात् इनका स्थानान्तरण गुलबर्गा में हो गया और वहाँ से 1980 में सेवानिवृत्त हुए ।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी इनका अध्ययन शोधकार्य तथा संस्कृत रचनाधर्मिता निरन्तर चलते रहे । इन्होंने 10 वर्ष तक गुलबर्गा में मराठी साहित्य मण्डल की अध्यक्ष के साँहि ही गुलबर्गा में ही संस्कृत अध्ययन मंडल के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में काम किया । ये विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान काशी के मंत्री भी रहे । तत्पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक के उपप्रधान है । हैदराबाद के मुक्ति संग्राम में ये एक स्वातन्त्र्य सेनानी रहे हैं । इस प्रकार संस्कृत काव्य रचना के साथ ये सामाजिक गतिविधियों से भी निरन्तर जुड़े रहे हैं । हिन्दी और मराठी भाषा के भी लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान हैं इन दो भाषाओं में इन्होंने प्रचुर लेखन कार्य किया सम्प्रति गुलबर्गा में ही स्थायी रूप से निवास करते हुए संस्कृत साहित्य साधना में अनवरत रत हैं । 85 वर्ष के होते हुए भी ये निरन्तर रूप से माँ भारती के भण्डार को अपने काव्यों से समृद्ध कर रहे हैं ।

(iv) सम्मान एवं उपाधियाँ

बहुश्रुत विद्वान् होने के कारण डॉ. रेणापुरकर को अनेक सम्मान और सत्कार प्राप्त हुए हैं ।

1. संवत् 2002 की विजयादशमी को अयोध्या के संस्कृत कार्यालय में गोवर्धनपीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री शंकराचार्य ने इन्हें साहित्य रत्न की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया ।
2. मार्च 1973 में नान्देड़ में आयोजित आर्यमहासंस्कृत सम्मेलन में आचार्य श्री वैद्यनाथ जी ने इन्हें सम्मानित किया ।
3. 30 अक्टूबर 1983 को अजमेर में दयानन्द निर्वाण शताब्दी आयोजित हुई । उस अवसर पर डॉ० सत्यप्रकाश जी द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया ।
4. संस्कृत की महत्ता पर लिखे हुए एक काव्य के कुछ पद्य विद्यालयों में प्रचलित हुए अतः इन्हें दिनाङ्क 17.3.1985 को बम्बई विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० गोरे जी ने मुम्बई के मराठा मंदिर में इनको सम्मानित किया ।
5. इंदिरा गांधी की हत्या पर लिखे हुए इनके काव्य से प्रभावित होकर दिल्ली की देववाणी परिषद् ने इनको कर्नाटक के प्रतिनिधि के रूप में आमंत्रित किया और 19.8.1986 में अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन में इनका हार्दिक सत्कार किया गया ।
6. 24 जून 1989 को गुलबर्गा के संस्कृत अध्ययन मण्डल ने इनके सम्मान के लिए तर्कतीर्थ श्री लक्ष्मण शास्त्री जोशी को आमंत्रित किया गया और इन्हें सम्मानित किया गया ।
7. दिनाङ्क 3.1.90 को मुम्बई के भारतीय विद्याभवन में उपराष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा द्वारा इनके “काव्योन्मेष” का विमोचन कर इनका सम्मान किया गया । इसी वर्ष मुम्बई के संस्कृत विद्यापीठ में इनका हार्दिक सत्कार किया गया ।
8. 23 अगस्त 1992 को लातूर नगर में संस्कृत दिवस में शुभ अवसर पर वहाँ के प्राचार्य श्री जनार्दन राव द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया ।
9. 7 फरवरी 1993 को संस्कृत अध्ययन मण्डल गुलबर्गा में श्री कवीश्वर द्वारा इनका सम्मान हुआ और इसी वर्ष 7 जुलाई को काशी की सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थान में पण्डित वासुदेव शास्त्री द्विवेदी द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया ।
10. 30 दिसम्बर 1996 को काशी में विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान के अध्यक्ष काशी नरेश श्री विभूति नारायण सिंह देव ने इनकी संस्कृत सेवा से प्रभावित होकर इन्हें सम्मानित किया ।
11. 1 अगस्त 1999 में गुलबर्गा की अनेक संस्थाओं ने मिलकर इसका अमृतमहोत्सव मनाया इसके अध्यक्ष श्री परमानन्द भारती थे । इस महोत्सव में संस्कृत के अनेक

विद्वान् उपस्थित थे और उन सभी ने इसका भव्य सत्कार करके इन्हें सम्मान पत्र समर्पित किया ।

12. 22 अगस्त 2002 को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री विलासराव देशमुख ने एक विशाल समारोह में महाकवि कालिदास संस्कृत साधना पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया । उसके पश्चात् गुलबर्गा, लातूर उदगीर आदि अनेक स्थानों पर इन्हें सम्मानित किया गया ।
13. 28 अगस्त 2006 को पूणे की महानगर पालिका तथा शारदा ज्ञानपीठ के अध्यक्ष तथा शारदा संस्कृत पत्रिका के सम्पादक परम विद्वान् श्री वसन्तराव गाडगिल ने पूना के विशाल तिलक मंदिर में इन्हें संस्कृत महाकवि और आशुकवि के रूप में ऋषितुल्य नामक सम्मान चिन्ह प्रदान किया ।
14. इन्होंने हैदराबाद के आंदोलन में भाग लिया था, अतः इन्हें स्वातन्त्र्य सैनिक सम्मान से सम्मानित किया गया ।

संस्कृत सम्मेलनों में सहभागिता, काव्यपाठ और पत्रवाचन

1. श्री रेणापुरकर जी ने अनेक संस्कृत सम्मेलनों में भाग लेकर वहाँ अपने पत्र वाचन तथा काव्य पाठ किए । सर्वप्रथम इन्होंने भारतीय विद्या भवन मुम्बई के तत्वावधान में श्री माणिक्य लाल मुंशी द्वारा संस्थापित विश्व संस्कृत परिषद् में 1955 में ही तिरुपति के सम्मेलन में भाग लेकर अपने काव्यपाठ से सबको प्रभावित किया ।
2. 1957 में कुरुक्षेत्र के महासम्मेलन में 1961 में मुम्बई में आयोजित विश्व संस्कृत परिषद् के सम्मेलन में 1969 में महाराष्ट्र संस्कृत परिषद् के उत्कूल कोट सम्मेलन में तथा तत्पश्चात् नान्देड में आयोजित सम्मेलन में सम्मिलित होकर इन्होंने अपने काव्य पाठ प्रस्तुत किए हैं ।
3. मार्च 1973 में नान्देड में पुनः आर्यमहासम्मेलन आयोजित हुआ, उसमें इन्होंने सबको अपने काव्यपाठ द्वारा प्रभावित किया ।
4. 1983 में अजमेर में, 1986 में नई दिल्ली में तथा 1988 में नासिक में हुए विविध आयोजनों में इन्होंने काव्य पाठ प्रस्तुत किए हैं ।
5. 1997 में जनवरी माह में बैंगलोर में एक सप्ताह तक दशम विश्व संस्कृत महा सम्मेलन आयोजित हुआ, उसमें सम्मिलित हुए । इसी प्रकार 2000 में बैंगलोर में भारतीय विद्याभवन के सभाभवन में अखिल कर्णाटक संस्कृत महासम्मेलन में अध्यक्ष पद को अलंकृत करके इन्होंने वहाँ भी काव्यपाठ प्रस्तुत किया ।

6. मार्च 2001 में 23 मार्च से 26 मार्च तक बम्बई में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित हुआ और उसमें इन्होंने पूर्ण सहभागिता प्रदान की ।

इनके ग्रन्थों पर अनेक विद्वानों ने प्रस्तावना तथा सम्मतियाँ प्रस्तुत की है -

इन विद्वानों में तर्कतीर्थ श्री लक्ष्मण शास्त्री जोशी । स्व. श्री पण्डित भाई शंकर पुरोहित पण्डित देरूलगांवकर श्री डॉ० रामनिरंजन पाण्डेय तथा स्व. युधिष्ठिर मीमांसक के नाम उल्लेखनीय है ।

इनकी अभिनव कृति “प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्” का विमोचन भारतीय विधा भवन के मानार्हनियामक श्री जयन्तकृष्ण हरिकृष्ण दवे ने किया है । इस पर डॉ० देवीप्रसाद खरवंडीकर का स्वस्तिवाचन एवं डॉ० मो.दि. पराडकर की प्ररोचना तथा गुलामदस्तगीर विराजदार का पुरोवाक् प्रस्तुत हुई है । इस कृति का अनुवाद डॉ० शकुन्तला बनाले नामक इनकी बहन की प्रेरणा से स्वयं श्री रेणापुरकर जी ने ही किया है, जिससे इस ग्रंथ की उपयोगिता और भी अधि-
क बढ़ गई है ।

द्वितीय अध्याय – प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर की कृतियों का सामान्य परिचय

संस्कृत व्याकरण, काव्य और तत्व ज्ञान में विशेष रुचि होने से इन्होंने इन विषयों का गहन अध्ययन किया। ऐसा इनके समस्त काव्यों में स्थान-स्थान पर दृष्टिगत होता है। इनका रचनाकार्य सन् 1964 से प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम इन्होंने गांधी जी के जीवन पर अपनी काव्यकृति प्रस्तुत की। दूसरी काव्यकृति में अमेरिका के राष्ट्रपति केनेडी की हत्या का विवरण प्रस्तुत किया गया। इनके काव्यों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे समसामयिक विषयों को प्रस्तुत करने वाले हैं। भारत तथा भारत के बाहर जो-जो भी महत्वपूर्ण आन्दोलन हुए हैं उन पर इन्होंने प्रसाद गुण युक्त रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। भारत के भाषावाद, प्रान्तवाद, जातिवाद, भारत पाकयुद्ध, बंगला-मुक्तिसंग्राम, आपातस्थिति, रूस की रक्तहीन क्रांति तथा उसका विघटन, अफ्रीका के वर्णभेद की समाप्ति अमरीका का भारत-द्रोह, कोसोवो की समस्या, भारत का आणविक परीक्षण, विल्टन की भारत यात्रा आदि सभी राजनैतिक घटनाओं का इन्होंने वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त इन्होंने प्राकृतिक विपदाओं पर भी काव्य लिखे हैं। इनके काव्यों का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है -

(i) “काव्योन्मेषः” - धार्मिक, सामाजिक सांस्कृतिक तथा राजनैतिक विषयों पर लिखी हुई 42 कविताओं का यह 200 पृष्ठों का इन का प्रथम काव्यसंग्रह है। सन् 1989 में भारतीय विद्याभवन मुम्बई में तत्कालीन उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा ने इस ग्रंथ का विमोचन किया था। इस पर संस्कृत के विख्यात पण्डित श्री लक्ष्मण शास्त्री जोशी ने अपनी प्रस्तावना प्रस्तुत की है। अनेक उत्कृष्ट विद्वानों की सम्मतियों से युक्त ये ग्रंथ संस्कृत भाषा की महत्ता से लेकर मानवमात्र के कल्याण के लिए आवश्यक ब्रह्मविद्या तक का विवरण प्रस्तुत करता है। इस काव्यसंग्रह में स्वामी दयानन्द सरस्वती विवेकानन्द महात्मा गांधी, पण्डित नेहरू, वीर सावरकर, सातवलेकर, लाला लाजपतराय आदि अनेक भारतीय महापुरुषों के जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है।

(ii) “राममंदिरविवादः” - यह एक खण्डकाव्य है जिसमें 425 वसन्ततिलका छन्दों में रामजन्म भूमि तथा बाबरी मस्जिद विवाद पर प्रकाश डाला गया है। इनका मानना है कि अयोध्या में कुश ने राम मन्दिर का निर्माण करवाया था। सर्वप्रथम मिनान्डर ने इसका विध्वंस किया और महाराज विक्रमादित्य ने पुनः इसका भव्य-निर्माण करवाया। प्रथम मुगल सम्राट बाबर ने उत्तरी भारत के अनेक राज्यों को जीतने के पश्चात् राममंदिर का विध्वंस करवा दिया। मंदिर के स्थान पर उसने एक सुदृढ़ बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया। भारतवासी इस घटना को भूले नहीं थे। उन्होंने अनेक बार इसे पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयत्न किए परन्तु अंत में श्री कल्याण सिंह के मुख्यमंत्री काल में इसका पूर्ण विध्वंस कर दिया गया। कवि ने 425 श्लोकों में इन सब घटनाओं का अत्यन्त रोचक वर्णन प्रस्तुत किया है।

(iii) “इन्दिरापतनोत्थानम्” - यह काव्य 250 मन्दाक्रान्ता छन्दों में इंदिरागांधी द्वारा लगाये गए आपातकाल का वर्णन करता है। इंदिरा गांधी ने सन् 1975 में हाईकोर्ट के निर्णय की अवहेलना कर भारत में आपातकाल लागू किया था। अनेक लोगों को कारागार में बंदकर जनतन्त्र को समाप्त कर दिया था, परंतु 1977 में वे चुनाव में सत्ता से बाहर हो गईं। उस समय जनता दल की विजय हुई, किन्तु जनतादल के आपसी भेदों के कारण 1980 में इंदिरागांधी पुनः देश की प्रधानमंत्री बन गईं। कवि ने इस काव्य में इन्दिरा के पतन व उत्थान की सभी घटनाओं का रोचक व रोमहर्षक वर्णन किया है।

(iv) काव्यनिष्पन्दः - 658 श्लोकात्मक 22 काव्यों का संग्रह है जिसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन भारत के चित्र का वर्णन है। पोप महोदय तथा अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा का वर्णन है। कारगिल संग्राम पर रचित काव्य अनायास ही राष्ट्र प्रेम को उजागर करने वाला है। दशमविश्वसंस्कृतसम्मेलनम् काव्य के माध्यम से संसार में संस्कृत की महत्ता को स्थापित करने का प्रयास किया है।

(v) काव्योद्यानम् - 1125 श्लोकात्मक राष्ट्रीय काव्य संग्रह है जिसमें राष्ट्रीय समस्याओं जैसे भ्रष्टाचार, आरक्षण, राष्ट्रीय चरित्रपात, राष्ट्रीयघोरपतनम् जैसे प्रमुख विषयों को वर्णित किया है। कश्मीर जैसे ज्वलंत विषय पर भी यह काव्य ध्यानाकर्षित करने वाला है। वहीं दूसरी ओर आर्य समाज के शताब्दी समारोह तथा दयानन्द सरस्वती द्वारा किए गए समाज सुधारों, धार्मिक सुधारों तथा वेद प्रचार का वर्णन है।

(vi) “काव्यनिर्झरः” - यह एक आन्ताराष्ट्रीय काव्य संग्रह है जिसमें कुल 920 श्लोक हैं। कवि ने इस संग्रह में सन् 2000 से 2005 के मध्य की अनेक घटनाओं को उपनिबद्ध किया है। इसमें राष्ट्रीय और आन्ताराष्ट्रीय घटनाओं का विशद वर्णन है। इसमें कुल 28 काव्यों का संग्रह है, जिनमें विभिन्न विषयों का सुन्दर वर्णन किया गया है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी की अमरीकी यात्रा से लेकर मनमोहन सिंह की यात्रा तक का वर्णन है। भारत ने आतंकवाद के शमन के लिए संघर्षविराम की घोषणा की और उस संघर्षविराम का विस्तार भी किया परन्तु फिर भी आतंकवादियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। गुजरात तथा महाराष्ट्रों के भूकम्पों के साथ ही सुनामी लहरों का भी वर्णन है। कवि ने “हिन्द महासागरे महाभूकम्पः” का वर्णन भी इसी काव्य निर्झर में प्राप्त होता है। आगरा की शिखर वार्ता भी इसी काव्यसंग्रह में वर्णित है तथा साथ ही गोधारा के हत्याकाण्ड का भी वर्णन करने के साथ कवि ने उसकी प्रतिकृति का भी वर्णन किया है। इसी आतंकवाद के क्रम में राममन्दिर पर किए गए हुए आतंकवाद का भी वर्णन है, दिल्ली के लाल किले और संसद भवन के ऊपर आतंकवाद के आक्रमण का वर्णन भी इसी काव्यनिर्झर में उपलब्ध होता है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि बांग्लादेश को भारत ने ही पाकिस्तान से मुक्त करवाया था, परंतु मुक्त होने के पश्चात् इस राष्ट्र ने कृतज्ञता के स्थान पर कृतघ्नता का ही परिचय दिया है। कवि ने काव्य निर्झर में इस कृतघ्नता का विशदीकरण किया है उसका नाम है

“बांग्लादेश कृतघ्नता” । इस काव्यनिर्झर में ही ईराक युद्ध का भी वर्णन हुआ है, जिसे कवि ने “ईराक युद्ध खलुमत्स्यन्याय” नाम दिया है । मत्स्यन्याय में बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है । अमरिका का इराक आक्रमण भी मत्स्य न्याय के समान ही था । इस काव्यनिर्झर में “अहो! धन्या कल्पना चावला सा” द्वारा कल्पना की अक्षय ख्याति का सुन्दर वर्णन है । दो राजनैतिक घटनाओं का भी सुंदर वर्णन हुआ है जिनमें एक “गुर्जरचमत्कारः” में गुजरात की प्रशंसा की गयी है, जिसमें गोधरा काण्ड का वर्णन करते हुए गुजरात के उन चुनावों का वर्णन है जिसमें नरेन्द्र मोदी को विजय प्राप्त हुई और उन्होंने सारे विरोधियों को पराजित कर पुनः गुजरात में भारतीय जनता पार्टी का शासन स्थापित किया । “मुफ्ती मोहम्मद की विचित्र नीति” का भी वर्णन 20 श्लोकों में किया गया है । 2002 में कश्मीर में चुनाव हुए जिसमें मुफ्ती मोहम्मद मुख्यमंत्री बने । मुफ्ती मोहम्मद ने मुख्यमंत्री बनते ही यह घोषणा करी कि कश्मीर एक स्वतन्त्र राष्ट्र है और वह भारत का अभिन्न अंग है । उसने समस्त आतंकवादियों को भी कारागार से मुक्त कर दिया उसने उन 26 आतंकवादियों को मुक्त कर दिया जिन्होंने अनेक कश्मीरवासियों का रक्त बहाया था । कवि ने उसकी इस नीति की घोर निन्दा प्रस्तुत की है । इसी प्रसङ्ग में कवि की 25 नवम्बर, 2002 में लिखी गई “भो! राष्ट्रनायकवरा” कविता भी उल्लेखनीय है । जिसमें जम्मू स्थित रघुनाथ मंदिर के आतंकवाद का वर्णन करते हुए कवि ने समस्त राष्ट्रनायकों को यह चेतावनी दी है कि पाकिस्तान के कर्णधार धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन के समान है । जिस प्रकार दुर्योधन ने यह सूचित किया था कि मैं सूच्यग्रभागमात्र भी पृथ्वी पाण्डवों को नहीं दूँगा, यद्यपि उस काल के नीतिज्ञ कृष्ण शांति प्रस्ताव लेकर गए थे, परंतु दुर्योधन की हठधर्मिता ने युद्ध को आमंत्रित करके अपने कुल का विनाश कर लिया ठीक उसी प्रकार की नीति कश्मीर की भी है । यह राष्ट्र शिशुपाल के समान शतापराध कर चुका है, अतः अब कृष्ण के समान सुदर्शन चक्र चलाने का समय है । कवि ने नादिरशाह, तैमूरलंग, सिकंदर, बाबर आदि की बरबरता का वर्णन करते हुए राष्ट्रनायकों को कहा है कि उन्हें राम कृष्ण और शिवाजी के चरित्र का स्मरण करना चाहिए । जिस प्रकार राम ने लंकाधिपति रावण का विनाश किया, उसी प्रकार हमारे देश की सेंना पहले भी पाकिस्तान को पराजित कर चुकी है और इस समय भी वह उसे पाठ पढ़ाने में समर्थ है । इस प्रकार यह काव्य वीर रस से परिपूर्ण है । इसी काव्यनिर्झर में भारत की शांतिप्रधान नीति की कवि ने 2 कविताओं के माध्यम से आलोचना की है -

(1) शोकावहैव खलु सान्त्वन सामनीति:

(2) आतंकवाद विपदा नहिः सामसाध्या

इनमें प्रथम कविताओं में 28 श्लोक हैं और द्वितीय में 29 श्लोक हैं । दोनों ही कविताओं में कवि ने प्रबल प्रमाणों द्वारा यह प्रतिपादित किया है कि पाकिस्तान के प्रति सामनीति श्रेयस्कर नहीं है । इसके प्रति तो दण्डनीति का ही प्रयोग किया जाना चाहिए । पाकिस्तान और चीन दोनों ही मायावी राष्ट्र हैं । चीन ने भी हिंदी चीनी भाई-भाई कहते हुए

भारत के ऊपर आक्रमण किया था और आज भी अकसायचीन नामक भारत का भाग उसके अधि-कार में है। पाकिस्तान ने भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के भू भाग पर जो अधिकार किया था वह आज तक भी उसके पास है। पाकिस्तान के आतंकवादियों की नीति तो समस्त विश्व को मुस्लिममय बनाने की है और इस प्रकार आतंकवाद की ये विपत्ति सामसाध्या नहीं है। ये दोनों कविताएँ सन् 2003 में लिखी गई थी और दोनों में ही कवि का उग्रराष्ट्रवाद प्रकट हुआ है। काव्यनिर्झर में अन्तिम “वितैषणामहाव्याधिः” नामक कविता है जिसमें कवि ने भारतीय संस्कृति के अनुसार वितैषणा को अत्यन्त निन्दनीय बताया है। आज भारत में युवक, वृद्ध, महिलाएँ, व्यापारी, वकील, चिकित्सक, शिक्षक और कृषक वर्ग भी वितैषणा नामक महाव्याधि से रुग्ण हो चुके हैं। आज अर्थ से ही समस्त वस्तुएँ उपलब्ध हैं। अतः न्यायालय तथा समस्त कार्यालयों में उत्कोच (रिश्वत) का साम्राज्य हो चुका है। आज वित्त की प्रधानता और चरित्र की गौणता हो गई है। भोगप्रधान इस युग में धन का उपयोग केवल व्यक्तिगत भोग के लिए हो गया है। इस प्रकार कवि ने तीन एषणाओं में से वितैषणा को ही महान व्याधि प्रमाणित किया है। कवि ने अपने अनेक काव्यों में आतंकवाद के विविध पक्षों के वर्णन के साथ ही ऐसे विविध काव्य भी लिखे हैं। जिसमें विभिन्न ज्वलन्त समस्याओं का विवेचन हुआ है।

(vii) “हुतात्मश्रीश्यामलालचरितम् - 150 श्लोकात्मक इस काव्य में कवि ने स्वतन्त्र भारत के इतिहास की एक अविस्मरणीय घटना हैदराबाद के मुक्तिसंग्राम का वर्णन किया है। लौह पुरुष पटेल के प्रयत्न से भारत के समस्त नरेशों ने भारत राष्ट्र में अपने राज्यों का विलय कर दिया था, परंतु हैदराबाद का निजाम स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में रहने का पक्षपाती था। निजाम के शासन में हिन्दुओं पर अनेक अत्याचार होते थे। श्यामलाल इन अत्याचारों के विरुद्ध खड़े हो गए। उन्हें अनेक बार प्राणघातक आक्रमणों का सामना करना पड़ा और अन्त में बिदर जेल में विष देकर उनकी नृशंस हत्या करवा दी गई। उनकी जन्म शताब्दी 15-12-2003 के अवसर पर उनके पुण्यस्मरण में कवि ने इस काव्य रचना के रूप में 150 श्लोकों में भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है।

(viii) “श्रद्धाकुसुमाञ्जलिः” कवि ने 500 श्लोकों के माध्यम से अनेक भारतीय महापुरुषों को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं। भारत के लगभग सभी महापुरुषों का पुण्य स्मरण इस कुसुमाञ्जलिः का प्रमुख लक्ष्य है।

(ix) “प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्” - कवि का यह महाकाव्य 1500 श्लोकों में भारतीय संस्कृति की समस्त विशेषताओं को रूपायित करने वाला है। इसमें पुरुषार्थ चतुष्टय कर्मतत्त्व रहस्य, निष्काम कर्मयोग, आत्मतत्त्व, वर्णाश्रम व्यवस्था, यज्ञ रहस्य, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, संस्कार, प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्था आदि विषयों का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। इस ग्रंथ का संक्षिप्त हिन्दी अनुवाद भी वर्तमान में ही भारतीय विद्या भवन द्वारा प्रकाशित किया गया है।

(x) अन्य काव्य संग्रहः

1. हिन्दूनां विशालता - नामक कविता संस्कृति से सम्बद्ध है। आर्यजनों की सहिष्णुता, सर्वधर्मसमभाव धार्मिक उदारता आदि गुणों का वर्णन करने वाली है इस प्रकार कवि ने भारतीय संस्कृति और संस्कृत पर भी अनेक कविताएँ प्रस्तुत की हैं।
2. श्री सुभाषचन्द्रपुण्यस्मरणम् - नामक काव्य 35 श्लोक का है श्री सुभाषचन्द्र के 105 वें जन्मदिवस पर कवि की यह भाव पूर्ण श्रद्धाञ्जलि है।
3. लौह पुरुष श्री वल्लभभायि पटेल पुण्य स्मरणम् - नामक काव्य 24 श्लोकात्मक है यह पटेल के 128 वें जन्मदिवस पर रचा गया एक लघुकाव्य है परंतु इसमें कवि की भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अभिव्यक्त हुई है।
4. डॉ० कपिलदेव द्विवेदी नामाभिनन्दनम् - यह 23 श्लोकात्मक एक अभिनन्दन काव्य है कपिलदेव द्विवेदी की संस्कृत साधना समस्त संस्कृतज्ञों को परिज्ञात है। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना करके संस्कृत अध्येताओं का महान उपकार किया है अतः कवि ने इनके 86 वें जन्मदिवस पर यह कविता लिखकर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की है।
5. “श्रीभवानी लाल अभिनन्दनम्” तथा “मण्डेला अभिनन्दनम्” - क्रमशः 35 तथा 15 श्लोकों में अभिनन्दन किया गया है तथा नेल्सन मंडेला के भारत आगमन पर अभिनन्दन किया है।
6. “आनन्दलहरी” - यह काव्य भी हैदराबाद मुक्ति संग्राम से ही सम्बन्धित है। इस मुक्तिसंग्राम के एक वीर सेनानी श्री आनन्द मुनि जी के त्यागमय जीवन का संक्षिप्त वर्णन इस काव्य का विषय है।
7. “बेलणकरलहरी” - दक्षिण भारत के विद्वानों में श्री बेलणकर का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध है। यह प्रमुख रूप से वेदों के ज्ञाता थे, अतः कवि ने 25 श्लोकों में इनकी संस्कृत साधना और विद्वता का गौरवपूर्ण चित्रण प्रस्तुत किया है। इन ग्रन्थों से यह सिद्ध होता है कि कवि का संस्कृत विद्वानों के प्रति भी अत्यधिक सम्मान रहा है। भारत के प्राचीन महापुरुषों के साथ स्वतंत्रता संग्राम के महापुरुषों का वर्णन कवि ने अपनी कविताओं द्वारा प्रस्तुत किया है परंतु कवि संस्कृति, संस्कृत और संस्कृत साधको पर भी अपनी काव्य रचना करते रहे हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि श्री हरिश्चन्द्र रेणापुरकर आधुनिक भारत के एक श्रेष्ठ काव्याकार और कवि हैं। इनके काव्य का आयाम केवल एक विषय तक ही सीमित नहीं हैं। इनके समय की सारी राजनैतिक घटनाएँ तो इनके काव्य का विषय रही ही है साथ ही प्राकृतिक आपदाओं पर भी अपनी कविताएँ प्रस्तुत की हैं। मुस्लिम आतंकवाद इनके काव्य

का मूल स्वर प्रतीत होता है परंतु इसके साथ ही प्रत्येक राजनैतिक घटनाक्रम को इन्होंने काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है । संस्कृत के विद्वान् होने के कारण विद्वानों और महापुरुषों का सम्मान, उनका अभिनन्दन, प्राचीन भारतीय संस्कृति का गुणगान भी इनकी कविता के मुख्य विषय कहे जा सकते हैं । इस प्रकार इन्होंने छोटे-बड़े लगभग 150 खण्डकाव्य और कविता संग्रह प्रस्तुत किए हैं । इनके अधिकांश काव्य ग्रंथ रूप में अथवा पत्रिकाओं में प्रकाशित है । परन्तु अभी भी कुछ काव्य अप्रकाशित अवस्था में है । काव्य में अतिरिक्त इन्होंने संस्कृत गद्यविधा में भी अपने ग्रंथ प्रस्तुत किए हैं ।

ये हिन्दी, उर्दू, मराठी और आंग्ल भाषा पर समान अधिकार रखते हैं अतः हिन्दी और मराठी भाषा में भी लेखन कार्य किया है । आकाशवाणी और दूरदर्शन तथा अनेक कवि सम्मेलनों में भी सहभागिता द्वारा संस्कृत के अतिरिक्त अन्य भाषाओं की भी सेवा की है ।

उपर्युक्त समस्त रचनाएँ प्रकाशित हैं तथा “महापुरुषपुण्यस्मरणकाव्य संग्रह” व “कतिपय गद्य काव्यानां संग्रह” अप्रकाशित हैं ।

द्वितीय खण्ड
धार्मिक, सामाजिक,
सांस्कृतिक तथा राजकीय
विषय परक काव्य संग्रहः
“काव्योन्मेषः”

द्वितीय खण्ड

धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजकीय विषय परक काव्य संग्रहः
“काव्योन्मेषः”

(i) सामान्य परिचय -

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर द्वारा सन् 1989 में 14 जनवरी के शुभ अवसर पर इस काव्यगुच्छ को प्रकाशित किया। जिसमें संस्कृत प्रेमियों के लिए 42 कविताओं की संकलन किया गया है। इन कविताओं के प्रथम वाचक व श्रोता स्वयं प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी हैं। रेणापुरकर जी द्वारा विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित इनकी कविताओं का संकलन इस पुस्तक में किया गया है। इनका मानना है कि भविष्य में संस्कृत का पठन-पाठन विश्व शांति के लिए आवश्यक कड़ी के रूप में सिद्ध होगा। इनके काव्यों में प्राचीन संस्कृति के साथ-साथ आधुनिक विषयों व विचारों को सम्यक स्थान दिया गया है। इस काव्य में विविध विषयों को केन्द्र में रखकर कविताओं की रचना की है जिसमें प्राचीन छन्दों को नए विषयों के साथ जोड़ा गया है “काव्योन्मेष” के वर्ण्यविषय व्यक्तिपरक, देशभक्ति, देवभाषा, भीषण अकाल, कर्मगति, धर्मतत्वसमीक्षा, ब्रह्मविद्या आदि हैं।

“काव्योन्मेषः” नामक रचना में अनुक्रमणिका के अनुसार सर्वप्रथम कविता “तस्मै नमो ब्रह्मणः” में 8 श्लोकों में ब्रह्मविद्या के विषय में बताया है तथा परमात्मा के रहस्य को जानने का प्रयास किया है। “स एव पूज्य” नामक अष्ट श्लोकात्मक द्वितीय कविता में सृष्टि के संचालनकर्ता स्वरूप ब्रह्मा जी को शत-शत नमन किया है। एकादश श्लोकात्मक तृतीय कविता “सुखस्यैकमूलं भव्यात्मतत्त्वम्” में आत्मतत्त्व को सुख का मूल कारण बताते हुए उस तत्त्व को प्राप्त करने का उपाय बताया है। “रे! मूढ मानव” नामक चतुर्थ कविता में द्वादश श्लोकों में बताया है कि मनुष्य ईश्वर सृष्टि की रचनाओं को देखकर आश्चर्यचकित है वह इस प्रकृति के गूढ रहस्य को जानने में अक्षम है। पंचम कविता “विना तेन मानुष्यजन्मैव मोघम्” में चतुर्दश श्लोकों में बताया गया है कि ईश्वर की प्राप्ति के बिना मनुष्य जीवन व्यर्थ है। षष्ठ कविता “वाञ्छसि बन्धो प्रेम यदि त्वम्” में द्वादश श्लोकों के माध्यम से स्पष्ट किया है। कि मनुष्य को यदि प्रेम चाहिए तो स्वार्थ, भोग-विलास आदि को त्यागना होगा। “वृथा चन्द्रताराग्रहाणां जयोऽसौ” नामक सप्तम कविता में बताया है यदि मनुष्य स्वयं को ही नहीं जान पाया तो चाँद तारों को जान लेना या उन तक पहुँचना व्यर्थ है। अष्टम कविता में 16 श्लोकों में “कर्मगतिर्विचित्रा” में कर्मों की रहस्यमयी गति के विषय में बताया है। नवम् कविता में ‘श्रयत विश्वशुभङ्करसंस्कृतम्” में एकादश श्लोकों में संस्कृत को विश्वकल्याण के लिए आवश्यक बताया है। यह भाषा अजर, अमर तथा मधुर देव भाषा है। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए दशम् कविता “सा देववाणी खलु संवनीया” में एकोनविंशति श्लोकों में देवभाषा को सभी के द्वारा पूजनीय बताया है। जिसके

द्वारा हमें विशाल शब्दकोश साहित्य, आदिकवि प्राप्त हुए हैं। एकादश कविता “आङ्ग्लीधुरं क्षिपत सत्वरमात्मकण्ठात्” में पाश्चात्य संस्कृति (जो हमारे जीवन में बहुत अधिक प्रवेश कर गई है) का पुरजोर विरोध करते हुए भारतीय संस्कृति को अपनाने पर जोर दिया गया है। ‘आलम्ब्यतामक्षरादिव्यवाणी’ नामक द्वादश कविता में 17 श्लोकों में देवभाषा (जिसे हमारे ऋषि मुनियों द्वारा फलीफलित किया गया) का वर्णन है। “राष्ट्रनिर्माण मूलम्” नामक त्रयोदशम् कविता में 17 श्लोकों में राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक विचारवान युवाओं को बताया है। “सा खलु धन्या भारतभूमिः” नामक चतुर्दशम् कविता में सप्तत्रिंशत श्लोकों में भारतभूमि की महत्ता व विशालता को वर्णित किया है। “जीवेच्चिरं भारतलोकराज्यम्” पंचदशम् कविता में चतुर्विंश श्लोकों में भारत देश (जो लोगों का कल्याणकारी राज्य है) को दीर्घकाल तक आगे बढ़ने की कामना की गई है। “तावत्स्वराज्यं नहि लोकराज्यम्” नामक षोडशम् कविता में द्वादश श्लोकों में बताया है कि जब तक अंग्रेज यहाँ से चले नहीं जाते तब तक हमारा देश कल्याणकारी नहीं बन सकता है। ‘धन्यो धन्यः कालिदासः कवीन्द्रः’ नामक सप्तदशम् कविता में त्रयोदशी में कवियों के इन्द्र या कवियों के आदर्श कहे जाने वाले कालिदास जी को नमन किया गया है। कालिदास जी का संस्कृत साहित्य के लिए योगदान प्रदर्शित किया है। “धन्यो धन्यः श्रीदयानन्दवर्यः” नामक अष्टादशम् कविता में 16 श्लोकों के माध्यम से श्री दयानन्द जी का अभिनन्दन किया है व “गान्धिजन्मदिननिमित्तेन” नामक एकोविंशतिम् कविता में बताया है कि गान्धी आदि नेताओं के प्रयासों से हमें स्वतंत्रता मिली है, परन्तु आज भी हम मूलभूत सुख सुविधाओं का पूरा नहीं कर पाए हैं। हिन्दी को हमारी राष्ट्र भाषा बनाने के बावजूद भी उसे सम्मान नहीं दिला सके हैं। “जवाहरवर्धापनम्” नामक विंशतिम् कविता में द्वादश श्लोकों में श्री जवाहर लाल नेहरू के लिए समृद्धि मंगलकामनाएँ व बधाइयों की अभिव्यक्ति है जिनके जन्म से यह भारतभूमि भी धन्य हो गई है। “सातवलेकरभिनन्दनम्” नामक इक्कीसवीं कविता में 27 श्लोकों में सातवलेकर महोदय का अभिनन्दन किया गया है जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन इस देववाणी संस्कृत तथा वेदों के लिए अर्पित कर दिया। “ब्रह्ममहर्षेर्गायत गीतम्” नामक बाईसवीं कविता में 23 श्लोकों में भारत भूमि के लिए महर्षियों ने गुणगान किए हैं। ब्रह्मा तथा महेश के लिए गीतों की रचना की है। “वीराय तरुमै नमः” नामक तेइसवीं कविता में 12 श्लोकों में भारत के वीर सैनिकों को शत शत नमन किया है। “भोः पाकभूशासकाः” नामक चौबीसवीं कविता में 25 श्लोकों में पाकिस्तान के शासकों की भूमि को पाने की लालसा प्रदर्शित की है। जिसमें कायरता से पीठ पीछे वार करके कश्मीर को अपनाने की मंशा प्रकट होती है। “भो!देशभक्तोत्तमाः” नामक पच्चीसवीं कविता में 18 श्लोकों में भारत के देशभक्तों का गुणगान किया है। भारत सोने की चिड़िया से दासता के पाशों में बन्धने का वर्णन है। “स्वाततन्व्योपहासः” नामक छब्बीसवें भाग में 28 श्लोकों में स्वतंत्रता के पश्चात् भारत की उपहास जैसे परिस्थितियों का वर्णन किया है। “भीषणं दुर्भिक्षम्” नामक सताईसवीं कविता में 25 श्लोकों में भीषण अकाल की त्रासदी का वर्णन किया है। जिससे महाराष्ट्र, मैसूर, गुजरात आदि राज्य भी पीड़ित थे। “सन्नागरा एवं

यथाराष्ट्रम्” नामक अठारहवीं कविता में 36 श्लोकों में एक राष्ट्र के निर्माण के लिए क्या-क्या आवश्यक है यह बताया है “बाङ्गलामुक्तिसङ्ग्रामः” नामक उन्नतीसवीं कविता में 24 श्लोकों में बाङ्गलादेश की मुक्ति के लिए होने वाले युद्ध का वर्णन है। “वेदलहरी” नामक तीसवीं कविता में सोलह श्लोकों में वेदों के ज्ञान की तरंगों का वर्णन किया गया है। “दयानन्दलहरी” नामक कविता में 27 श्लोकों में दयानन्द महाभाव के गुणों व को वर्णित किया है। “विवेकानन्दलहरी” नामक कविता में संसार की समस्त माताओं द्वारा कामना योग्य पुत्र समान महान विवेकानन्द जी के गुणों को प्रकाशित किया है। “गान्धिलहरी” नामक कविता में राष्ट्रपिता गान्धी जी द्वारा राष्ट्र हित के लिए किए कार्यों का वर्णन है। श्लोकों में उनके ध्येय वाक्यों सत्य तथा अहिंसा का किस तरह प्रयोग गान्धी जी ने किया यह बताया है। “धर्मतत्व समीक्षा (पूर्वार्धः)” नामक कविता में 40 श्लोकों में तथा “धर्मतत्व समीक्षा (उत्तरार्धः)” नामक कविता में 67 श्लोकों में धर्म की समीक्षा की गई है। जिसमें लोगों को कर्मकाण्ड, सत्य, अहिंसा, शम, दम, तप, त्याग, सौहार्द भाव के विषय में अवगत कराया है। यज्ञ-अनुष्ठान के विषय में बताया है। सूर्य, चंद्र तारों की गति, प्रकृति के नियम आदि को समझाया है। “अनात्मवादः खलु दुःखमूलम्” नामक छतीसवीं कविता में एक सौ सतरह श्लोकों में दुःख का मूल कारण नश्वर शरीर, असंयम को बताया है। “लाजपतरङ्गिणी” नामक सैंतिसवीं कविता में नैवांसी श्लोकों में दासता के कीचड से भारत भूमि को निकालने वाले लाजपतराय जी के कार्यों का वर्णन है। जिन्होंने भारतीय जनमानस में आजादी प्राप्त करने की अलख जगा दी थी। “नेहरुनिर्याणम्” नामक कविता में में उत्कृष्ट व्यक्तित्व के धनी, पृथ्वी पर अवतरित देवों के समान छवि वाले पण्डित जवाहर लाल नेहरु के एकाएक स्वर्ग सिधारने की अविश्वसनीय घटना को वर्णित किया है। “स्वातन्त्र्यवीरोत्क्रमणम्” नामक कविता में इक्कीस श्लोकों में भारत को स्वतन्त्रता दिलाने के लिए प्राणों को न्यौछावर कर देने वाले वीरो शहिदों का वर्णन किया है। इन वीरो ने प्रथमभारतमुक्तियुद्ध किया था। “शास्त्रिशोकलहरी” नामक कविता में सताईस श्लोकों में लाल बहादुर शास्त्री जी अचानक के इस धरती से स्वर्गारोहण की घटना का वर्णन है। जिनके निर्वाण से भारत पुनः नेतृत्व हीन हो गया था। “इन्दिराहौतात्म्यम्” नामक कविता में बताया है कि किस प्रकार इंदिरा जी द्वारा स्वयं को भारतीय हवन कुण्ड में होम कर दिया गया। जिससे अन्धकार में डूबी भारतभूमि प्रकाशित हो सके। “इन्दिरापुण्यस्मरणम्” नामक अन्तिम कविता में चालीस श्लोकों में इंदिरा को स्मरण करते हुए उनके गुणों का वर्णन किया है। जिन्होंने भारतीय जनमानस के हृदय पर अमिट छाप छोड़ दी है इस कविता के साथ ही काव्योन्मेष की समाप्ति होती है। प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी द्वारा विभिन्न वर्षों में भिन्न-भिन्न प्रकरणों को मुख्य बिन्दु बनाकर कविताओं की रचना की गई है। रेणापुरकर जी ने अपनी कविताओं के लिए प्राचीन तथा आधुनिक समस्त विषयों को चुना है। रेणापुरकर जी के “काव्योन्मेष” में संस्कृति, प्रासंगिकता आधुनिकता की छवि स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है “काव्योन्मेष” में निम्नलिखित कविताओं के माध्यम से रचनाकार ने अपने विचारों को लेखनी प्रदान की है।

(ii) विवेचन एवं विश्लेषण

1. तस्मै नमो ब्रह्मणे

“तस्मै नमो ब्रह्मणे” नामानुसार प्रस्तुत कविता में सृष्टि निर्माता ब्रह्मा जी का पूजन, अभिनन्दन किया गया है। जिनका कोई आकार नहीं है, जिनका कोई आदि या अन्त नहीं है वो इस ब्रह्माण्ड के कर्ता है। इस सृष्टि को ब्रह्मा जी ने संज्ञा, बुद्धि, गति क्रम आदि से अलंकृत किया है। अत्यन्त सूक्ष्म व गूढ़ नियमों से इस सृष्टि का संचालन किया जा रहा है। श्रेष्ठ विचार दृष्टि तथा वैभवशाली ब्रह्मा जी को नमस्कार है। ब्रह्मा जी द्वारा संचालित इस सृष्टि में सूर्य, चंद्र आदि जैसे एक नहीं अनेक ग्रह इस ब्रह्माण्ड में जो निरन्तर गतिमान होते हुए भी बिना घर्षण के गति कर रहे हैं। यह सब उन सर्वशक्तिमान के वश में ही है।

आत्यादपि नैकलक्षणगुणितस्थूलानसंख्यान् ग्रहान् ¹
नित्यं खे भ्रमतः प्रचण्डरभसा ह्यन्योन्यघर्षं बिना ।
स्वप्रातिस्विकसर्वशक्तिवशतो निर्माय योऽलम्बयत्
प्रज्ञातीतमति क्रियाबलवते तस्मै नमो ब्रह्मणे ॥ (1-2)

एक ही ब्रह्मा की सृष्टि के अनेक जाति, सम्प्रदायों में बँट जाने के बाद भी उस जगत पिता परमब्रह्मा की ही संतान है विभिन्नताओं के होते हुए भी वह सब एक ही हैं। ब्रह्मा के द्वारा ही देवों के सहयोग से ऋषियों को वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ इस लिए ही वेदों को अपौरुषेय कहा गया है। यह ब्रह्मा ही सम्पूर्ण जगत के पूर्ण ज्ञाता है। इस बात को समर्थन ऋग्वेद के दसवें मण्डल में सृष्टि उत्पत्ति विषयक नासदीय सूक्त में निम्न प्रकार किया है -

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि 'वा न ।²
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन् सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ॥
(ऋ. 10 मण्डल 129 सूक्त 7वाँ श्लोक)

यहाँ स्पष्ट है कि ईश्वर ही सृष्टि को धारण किये हुए हैं उसके अतिरिक्त अन्य कोई धारण नहीं किये हुए है इस सृष्टि का स्वामी उत्कृष्ट रूप आकाश के सदृश अपने प्रकाश में प्रतिष्ठित है।

सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी ने जीवों को निष्काम कर्म करते हुए मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रेरित किया जिससे साधारण मनुष्य सासारिक बन्धनों से स्वयं को मुक्त करके मोक्ष की प्राप्ति कर सके। काम, क्रोध, मद से पीड़ित लोग इस संसार के दुःखों में लगे रहते हैं इन पर भी ब्रह्मा जी ने स्नेह औदार्य कृपा की दृष्टि रखी है इस स्नेहभाव से परिपूर्ण ब्रह्मा जी हम सभी के लिए पूजनीय हैं।

ब्रह्मा जी द्वारा जन सामान्य हेतु कर्म तथा मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया गया जिसकी पुष्टि भगवद्गीता के निम्न श्लोकों से की जा सकती है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।³

मा कर्मफल-हेतुर्भू-मा ते संगो-ऽस्त्वकर्माणि।। 47।। (भीष्मपर्व)

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च⁴

तस्मा-दपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितु-मर्हसि।। 27।।

ब्रह्मा जी जन्मजन्मान्तर से शरीर से रहित, निर्विकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर सर्वाधर, सभी प्रणियों के हितेषी, समस्त शक्तियों को धारण करने वाले, सर्वज्ञानमय कल्याणकारी, सत्चित आनन्द रूप है ऐसे गुणोदंत ब्रह्मा को कवि द्वारा शत शत नमन किया जा रहा है।

विशेष - 1. “तस्मै नमो ब्रह्मणे” नामक कविता में रेणापुरकर जी ने समस्त श्लोकों की रचना शार्दूलविक्रीडितम् छन्द में की है। इस छन्द में 19 वर्ण है। यह समवर्णिक छन्द है 12 व 7 वर्ण पर यति है।

लक्षण - सूर्याश्वैर्यदिमः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्

2. यह कविता 1-1-85 को लिखी गई।

2. स एव पूज्यः

“स एव पूज्यः” अर्थात् वह ही पूजनीय है यह ब्रह्मा जी को निर्देशित करते हुए कह गया है जिनके द्वारा 14 लाख योनियों का निर्धारण किया गया है। करोड़ो मनुजों को उत्पन्न किया गया है जिनकी संख्या बहुत अधिक है ऐसे वह सभी के लिए पूज्य है। इनकी कृपा से तो कर्णों में भी जान आ जाती है जिनके द्वारा पङ्ग को पैर, अन्धे को आँखें, बधिर को श्रवण शक्ति, गूँगे को आवाज प्रदान की जाती है वह पूज्य है जिनकी आज्ञा से सूर्य उदय अन्त होता है नदी झरने, पहाड़ चल व अचल बने हुए हैं जिनके आदेश से हवा प्रवाहित होती है उनकी शरण में हमें जाना चाहिए। जिनके कारण ही अनिवार्य रूप से ऋतुएँ आती व जाती रहती हैं बीज में वृक्ष व वृक्ष से फल उत्पन्न होते हैं जिनकी कृपा से ही इस आकाश में सूर्य, चन्द्रमा, तारे विचरण करते हैं नम्रता से उनकी शरण लेनी चाहिए। ब्रह्मा जी द्वारा इस त्रिलोक से अन्धकार की समाप्ति कर प्रकाश का संचार किया जाता है इनके द्वारा ही चराचर जगत तथा अनेक भुवनों को प्रकट किया गया है देवाधिदेव को समस्त मानवों द्वारा नमन किया जाता है। इनकी महिमा बहुत विशाल है जो कि प्रत्येक कण व क्षण में हमें दृष्टिगत होती है इनकी छवि अतीव अनोखी व आकर्षक है जिसे मुनिजनों ने अपने हृदय में बसा लिया है जो कुछ इस जगत में दिखाई दे रह है वह

सब इनकी कृपा का ही फल है।

यस्याविरस्ति महिमा विततो विशालः⁵
प्रेक्षावतां प्रतिकर्णं प्रतिपर्णदृश्यः।
ध्यानावगाढमुनिर्भिर्हृदयान्तराले
यो दृश्यते स सततं मनुजैः समर्च्यः ॥2-7॥

इनकी शक्ति से ही सूर्य की किरणे और अधिक दीप्तिमान होती है इनसे ही आत्मा की तृप्ति या मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है इस धरा पर वे मनुष्य धन्य हो जाते जो जो देवाधिदेव को पूजते हैं।

विशेष - 1. वसन्ततिलका छन्द - लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

3. सुखस्यैकमूलं भवत्यात्मतत्त्वम्

सुख का एक ही आधार है आत्मा के वास्तविक स्वरूप या वास्तविक प्रकृति को जानना। इस संसार में रहकर ही मानव का विकास या उन्नति सम्भव है जिस प्रकार पक्षी आकाश में, मछली जल की गहराई में अपनी उन्नति को प्राप्त करती है उसी तरह मनुष्य को इस धरा की वास्तविकता को जानना चाहिए।

बिजली के कड़कने से उत्पन्न चमक स्वयं चालित आकाश के ग्रहों, पक्षियों की उड़ान के विषय में जानना मानव को सुख शान्ति नहीं प्रदान करने वाला है। इसके विपरीत सुख की प्राप्ति की इच्छा से मानव निर्मित उन्नत संस्कृति को नष्ट कर दिया है। मानव ने ही अस्त शास्त्रों के निर्माण एवं प्रयोग से इस पृथ्वी को भस्मसात् कर दिया है झूठे घमंड, लड़ाई, झगड़े, भय, आतंक, शंका से व्याकुल होकर वातानुकूलित कमरे में भी सुख चैन की नींद नहीं सो सकता नित्य ही कोई घोर कृत्यो को करके दुखों को आमंत्रित कर लेता है वह नहीं समझ पाता कि सारे दुखों विपत्तियों का निवारण हमारे अंतर्मन में, हमारी आत्मा में ही है यह ही सुख का आधार है। जिस प्रकार हिरण भूलवश कस्तूरी की तलाश में भटकता रहता है जबकि कस्तूरी तो उसी के पास है उसी तरह मूर्ख मनुष्य भी सुख के आधार आत्मतत्त्व की खोज में भटकता रहता है वह स्वयं में सुख को ढूँढने का प्रयास नहीं करता है।

सुखस्यैकमूलं चिरं शान्तिकेन्द्रं⁶
चिन्दानन्द कोषं सदा सन्निविष्टम्।
विहायात्मत्त्वं भ्रमत्येष मूढो
मृगो नाभिगन्धं यथा मूढबुद्धिः ॥ 3-7 ॥

इस श्लोक को अज्ञात कवि की इन पंक्तियों से स्पष्ट किया जा सकता है।

“जंगल-जंगल ढूँढ रहा है मृग अपनी कस्तूरी को,
कितना मुश्किल है तय कर पाना खुद से खुद की दूरी को”

मनुष्य इस जर्जर शरीर, मन, मृत्यु के बंधनों को अज्ञानता के कारण नहीं समझ पाता है और अपनी बुद्धि को अन्य तत्वों में लगाकर रखता है मनुष्य कितनी ही ज्ञान, विज्ञान की प्राप्ति कर ले पर वह जब तक आत्म तत्व को नहीं समझता तब तक उसको दुख का अनुभव ही होता रहेगा। आत्म तत्व की प्राप्ति केवल धर्म विज्ञान से ही सम्भव है। क्योंकि धर्म के ज्ञान से ही शरीर को उचित गति प्राप्त होगी।

विशेष - 1. भुजङ्गप्रयातं छन्द

लक्षण - भुजङ्गप्रयातं चतुर्भयकारैः

4. रे ! मूढ मानव !!

इस कविता में रचनाकार मानव को मूर्ख बताते हुए कहते हैं कि ईश्वर निर्मित इस अद्भुत सुन्दर, विशाल विचित्र रचनाओं वाली, शिल्पकला से पूर्ण सृष्टि को देखकर मानव आश्चर्यचकित है। कृतज्ञता भाव से युक्त सू की पहली किरण के साथ ही बंद आँखों से ही पक्षियों के कलरव ध्वनि को सुनकर मौन धारण करने वाले हैं। ईश्वर की इस अनुपम सृष्टि में हवा की मर्मर ध्वनि, दिन-रात सुनाई देने वाला पक्षियों का मधुर कलरव, भंवरोँ का गुञ्जन मन में नए राग को, नूतन स्वर को उत्पन्न करने वाला है। रात्रि के अंधकार के बाद सूर्य की पहली किरण के स्पर्श मात्र से ही ओस की बूंदों का मोतियों का रूप धारण कर लेना, सूर्य की किरणों का उदय होना तारों का छिपना ये सब जगदीश की कीर्ति को ही बताने वाले हैं, किन्तु अपने ही मद में चूर मूर्ख मानव ईश्वर की इन गूढ रचनाओं को नहीं समझ पा रहा है। छोटी-छोटी कृतियों से, विज्ञान की सामान्य खोजों से ही मनुष्य मदगर्वित हो रहा है। मूर्ख मनुष्य यह नहीं जानता कि यदि ईश्वर द्वारा इस धरातल को थोड़ी देर के लिए भी भूकम्प के झटकों से हिला दिया जाए तो सभी मानव कृतियाँ धराशायी होएँगी। मूर्ख माव यह नहीं समझ पाता कि जिस प्रकार उसके निर्मित विमान टकराते रहते हैं, उस या दुर्घटनाग्रस्त होते रहते हैं वैसे ईश्वर निर्मित तारे, पक्षी ग्रह कभी भी आपस में नहीं टकराते हैं जबकि ये ब्रह्माण्ड में अनगित हैं तो स्वयं को ज्ञानवान मान लेना मनुष्य की मूर्खता ही है। अनेक संवत्सरों में मानव द्वारा निर्मित विशाल कृतियाँ भी ईश्वर के द्वारा पृथ्वी हिलाने मात्र ये ही धराधायी हो जाती हैं।

विशेष - 1. वसन्ततिलका छन्द

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

5. विना तेन मानुष्यजन्मैव मोघम्

जिसके बिना मनुष्य जीवन व्यर्थ है वह है ईश्वर। अत्यन्त दिव्य, भव्य,

सर्वशक्तिमान भूत-भविष्यत से परे, सर्वज्ञ ईश्वर ने मानव को निर्मित किया। यह सोचकर कि मानव! तुम किए जाने वाले कार्यों को करो अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग खोजो, इनके बिना तुम्हारा जीवन व्यर्थ है दया के सागर ईश्वर द्वारा तुम्हें सुन्दर शरीर दिया गया है। जो सुसम्पन्न है। इस प्रकार विवेक धर्मा, महाशक्तिशाली परमात्मा ने मनुष्यों को मति भी प्रदान की है।

दयासिन्धुना तेन तुभ्यं प्रदत्तं ⁷
शरीरं ह्यनर्घं सुसम्पन्नमेतत्।
विवेकैकधर्मा महाशक्तिपूर्णा
मतिश्चापि दत्ता दुरापाऽन्यजीविः। (5-2)

ईश्वर ही मोक्ष की प्राप्ति का मुख्य उपाय है यह महान वेगयुक्त, विमान के प्रदाता है परन्तु हे मानव ! फिर भी तुम सुखी नहीं होते हो। अयोध्या नगर के नवनिर्मित द्वार के समान इनका रूप दिव्य है। बादलों से परे इनका धाम है। जहाँ यह परमानन्द में सुखपूर्वक रहते हैं। जिस प्रकार मूर्ख व्यक्ति सर्दी में अगारों की प्राप्ति के लिए चन्दन की लकड़ी को भी जलाने से नहीं चूकता है उसी प्रकार काम, क्रोध की अग्नि से जलने वाला मनुष्य परमात्मा के दिव्य स्वरूप को नहीं जान पाता है।

परम ब्रह्म परमात्मा का संविधान सबसे निराला है हम सब कहाँ से आए हैं ? कहाँ जाएंगे ? इन सबका कारण क्या है ? क्यों हम इन बन्धनों में बंधे हुए हैं ? इन समस्त प्रश्नों का उत्तर ईश्वर के पास ही है। जिस प्रकार के कर्म है उसी के अनुसार मनुष्य जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म के बंधन में बँधा हुआ है। यह शरीर जो तुम्हें प्राप्त हुआ है वह केवल सुख-साधनों का भोग करने के लिए नहीं बल्कि त्याग के लिए है। यदि मनुष्य जीवन की प्राप्ति के पचात् भी यदि तुम विधाता का ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो तो सपने में भी उनके दर्शन नहीं कर सकोगे। अनेक जन्म लेने के बाद भी मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति होजाए तथा उसके ज्ञान चक्षु खुल ही जाएँ यह आवश्यक नहीं। मानव आत्मकल्याण की प्राप्ति के लिए योग मार्ग पर चल कर ही ईश्वर के दर्शन कर सकेंगे क्योंकि इसके बिना मनुष्य जीवन व्यर्थ है।

अतो मान वैरात्मकल्याणकामैः⁸
प्रयत्नो महान् योगमार्गानुसारम्।
विधेयः सदैवात्मसन्दर्शनार्थं
विना तेन मानुष्यजनमैवमोघम्।। (5-14)

विशेष - 1. छन्द - भुजङ्गप्रयात

लक्षण - भुजङ्गप्रयातं चतुर्भ्यकारैः

6. वाञ्छसि बन्धो प्रेम यदि त्वम्

प्रेम की इच्छा रखने वाले हो तो स्वार्थ, भोग, विलास निश्चित रूप से त्यागना होगा, क्योंकि सच्चे प्रेम की प्राप्ति तभी हो सकती है। त्याग और तप के द्वारा ही इस मार्ग को अपनाया जा सकता है। इसके साथ चंचल मन को भी स्थिर करने की आवश्यकता है। मैं जीवन के सार को समझना होगा यथा यह संसार नश्वर है, हमारी देह पार्थिव है, हमें इसमें आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। जिस प्रकार श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का ज्ञान देते हुए कहा था कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, इसी प्रकार जीवात्मा पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर का प्राप्त करती है। इसलिए हमें इसमें आसक्ति नहीं रखनी चाहिए।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय १

नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा

न्यन्यानि संयाति नवानि देही । (भ.ग. 2-22/34)

मनुष्य को भोगों से रिक्त तथा त्याग युक्त इस सृष्टि के नियमों को जानना चाहिए, यदि प्रेम की अभिलाषा रखते हो तो तुम्हें अपनी आत्मा को अर्पित करना होगा, इसकी हवि देनी होगी। भंवरे के समान चंचल चित्त वृत्ति की अपेक्षा उज्ज्वल, दिव्य, विशाल, पवित्र, शांत चित्तवृत्ति रखने की आवश्यकता है। जिससे हम समुद्र की लहरों, झरनों, वायु की गति, पक्षियों का कलरव, मेघ निनाद की ध्वनियों को सुन सकेंगे उससे आनन्द का अनुभव कर सकेंगे, क्योंकि झरने, नदियाँ, किरणें, भूमि, पवन आदि मिलकर ईश्वर की प्रेमभाव से युक्त सृष्टि को दर्शाते हैं। इसलिए मनुष्य को सभी से प्रेम रखना चाहिए।

“प्रेम कुरुध्वं प्रेम कुरुध्वं 10

प्राणिनः” इत्थं गायति नित्यम् ।

स्थावरजीः स्निग्ध निसर्गो

रे । कुरु कर्णे मानव! मूढ ।।” (6-9)

देवकृपा से प्राप्त हुई इस देह को प्राप्त करके अथवा मृत्यु से भी मनुष्य सुखी नहीं हो पाता है जबतक स्मृति है तभी तक सब है जब यह विस्मृत हो जाएगी तो इस सृष्टि के अलावा कुछ भी शेष नहीं रहेगा। यही सृष्टि का नियम है।

विशेष - 1 छन्द - रुक्मवती

लक्षण - रुक्मवती सा यत्र भमरगाः ।।

7. वृथा चन्द्रतारा ग्रहाणां जयोऽसौ

चांद, तारों आदि ग्रहों पर विजय प्राप्त कर लेना व्यर्थ है क्योंकि भले ही मनुष्य चन्द्रमा, आकाश पर विजय पा ले, जिज्ञासा वश शुक्र, भूमि के बारे में जानकारी एकत्रित

कर ले, तारों के समूह को जीतने में सफल हो जाए परन्तु जब तक उनके साध्य के विषय में, उन समस्त ग्रहों को वश में करने वाले के बारे में नहीं जान सके तो यह सब व्यर्थ ही है। मनुष्य ने चन्द्रमा को जीत लिया, तारों के मार्ग को पहचान लिया किन्तु जब तक स्वयं के अंतर्मन को ही नहीं जान सके तक तक बाह्य विश्व को जीत लेने का भी कोई लाभ नहीं होगा।

जितश्चन्द्रमास्तेन तारापथस्थः ११

परं चन्द्रमाः स्वान्तरस्था जितो नो।

जितो भूतसऽघो न तु स्वान्तराङ्गो

जितं बाह्यविश्वं न तु स्वान्तरस्थन् ॥ (7-2)

ईश्वर ने सभी को प्रेम व खुशी प्रदान की है किन्तु मनुष्य स्वयं द्वारा किए कार्यों कर्मों के कारण ही दुःख के सागर में गोते लगाता रहता है। मनुष्यों ने विभिन्न रत्नों से परिपूर्ण, निर्मल व शीतल जल, प्राणवायु से सुगन्धित इस पृथ्वी को अणु, परमाणुओं के प्रयोग से दूषित कर दिया है। सारी पृथ्वी व आकाश का वातावरण विषैला कर दिया है। सम्पूर्ण जल, धन, धान्य अभक्ष्य हो गए हैं। बेचारा मनुष्य इस संसार की सत्यता को नहीं समझ पाता है। जब मनुष्य अपनी इन्द्रियों को जीतना दुष्कर है मन को वश में करना कठिन है, तो चांद, तारों को जीतना व्यर्थ ही है। जिस प्रकार अर्जुन को कुरुक्षेत्र के युद्ध में श्रीकृष्ण ने ज्ञान देते हुए कहा जिस पुरुष की इन्द्रियाँ वश में होती हैं उसकी बुद्धि स्थिर होती है।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत् मत्परः १२

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ (भ.ग. 2-61/79)

पृथ्वी पर रहने वाले असंख्य लोग भूख, रोग, गरीबी आदि से पीड़ित हैं उन लोगों की मदद करने की अपेक्षा चन्द्रमा को पर विजय प्राप्त करना मनुष्य की मूर्खता है। जो मनुष्य परस्पर प्रेम, भाईचारे व स्नेह से हीन है वह कहीं भी चले जाए, चांद, तारों पर अधिकार कर ले पर वह मनुष्य तीनों लोकों में भी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। यदि मनुष्य दया, भाई चारे, स्नेह युक्त, निश्चल, निर्विकारी, सात्विक बुद्धि वाला होकर मन को लोककल्याण के कार्यों में लगाए हुए हो तो सुख का अनुभव अवश्य ही करेगा।

विशेष - छन्द - भुजङ्गप्रयातं

लक्षण - भुजङ्गप्रयातं चतुर्भ्यकारैः

8. कर्मगतिर्विचित्रा

प्रस्तुत कविता में कर्मों की गति की विचित्रता को बताया है। कुछ मनुष्य भाग्य को ही प्रबल मानते हैं तो कुछ लोग पौरुष को प्रबल मानते हैं। भिन्न-भिन्न मतों विचारों के कारण मनुष्यों के चिन्तन भी भिन्न-भिन्न ही है। तुच्छ नाम वाले मनुष्य सैकड़ों प्रयत्नों,

इच्छाओं के द्वारा कुशाग्र बुद्धि से चलते हैं। प्रारम्भ में तो वे कर्मों के वशीभूत होकर ही कार्य करते हैं, क्योंकि बिना कर्म किए तो ईश्वर से फल की कामना करना व्यर्थ है। मनुष्य चाहे कितने ही विशिष्ट ज्ञान वाला, विशेष गुणों से युक्त ही क्यों न हो वह भी प्रारम्भ में किए गए कर्मों के वशीभूत ही है। मनुष्यों के कर्मों की गति बहुत ही रहस्यमयी है कार्य करने के लिए कर्मशील मनुष्य स्वतन्त्र है परन्तु फल की प्राप्ति के लिए वह परमात्मा के वशीभूत है उसकी वृत्ति परतन्त्र है। इस चराचर संसार में निश्चित ही कर्मों के फल की प्राप्ति गुप्त है। मेधावी, धैर्यशाली वीर, धुरन्धर आदि गुणों से युक्त सर्वज्ञ प्रभु श्री राम भी धरा पर जन्म लेकर सुख-दुख के सागर में गोते लगाने को विवश हो गये क्योंकि वो भी कर्मों के वशीभूत थे। पाप करके भी सुख भोगने वाले तथा पुण्य करके भी दुख के द्वारा सताए जाने वाले मनुष्यों की विरोधी गतियों को देखकर ही कहा जा सकता है कि कर्म की गति कितनी विचित्र है।

पापं करोति सततं सुखमेघते च¹³
 पुण्यं करोति बहुधा परितप्यते च।
 इत्थं परस्पर विरुद्धिगतिं विलोक्य
 ज्ञानुं न शक्यमिहं कर्मगतिर्वि चित्रा ॥ (8-8)

इस विश्व के इतिहास में अनेक बहु चर्चित राजा मनीषी हुए हैं उनके भिन्न-भिन्न चरित्रों कर्मों तथा फलों को देखकर भी कर्मों की विचित्र गति दृष्टिगत होती है। आधुनिक परिवेश को देखें या प्राचीन परिवेश को श्री राम को वनवास भोगना पड़ा, कृष्ण को कारागार, महात्मा गांधी, ईसा मसीह, सुकरात अब्राहम लिंकन आदि की कथाएँ कर्म की विचित्रता को दर्शाती हैं।

न जाने कौनसी अदृश्य शक्ति है जो इस विशाल ब्रह्माण्ड को चला रही है जो समय, कर्मचक्र, कर्मफल सभी को देखने वाली है। मनुष्य जैसे-जैसे कर्म करते हैं उन्हें जन्म, जन्मान्तर तक उन फलों की प्राप्ति होती रहती है। किन्तु ईश्वर के द्वारा यह किस प्रकार किया जाता है यह तो वही जानता है। जिस प्रकार रात्रि के बाद सूरज नया सवेरा, नूतन उर्जा व खुशियों को देने वाला होता है उसी तरह से छाया की इच्छा से राहगीर कड़ी धूप में तपन को सहन करते हुए आगे बढ़ता रहता है यही भाग्य है। भाग्य के अनुकूल होने पर मनुष्य के द्वारा किए गए प्रयास भी फल देने वाले होते हैं प्रयत्न न करने पर तो नियति भी फल नहीं देती है इसलिए ही मनुष्यों को कर्मों में गति बनाए रखनी होती है जैसा कि गीता में भी कहा है ?

कर्मण्येवा-धिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।¹⁴
 मा कर्मफल - हेतुर्भू - मा - ते संगो -ऽस्त्वकर्मणि ॥ (भ.ग. 2.7/61)

प्रकृति और परमेश्वर ने मनुष्य को जीवन के साथ-साथ कर्म की महाशक्ति दी है। मनुष्य के सुन्दर ललाट पर कर्म का तिलक लगाकर प्रजापति ने उसे विजय का वरदान दिया है। जो कुछ हितकर योग्य और वांछित है उसे प्राप्त करना मनुष्य का अधिकार

है, ऐसा कुछ नहीं है जिसे मनुष्य कर्म के द्वारा प्राप्त न कर सके। कर्मयोग के परम तत्व को गीता ने चार सूत्रों में सुबोध कर दिया है :-

- (1) कर्म करने में ही तेरा अधिकार है।
- (2) फल में कभी नहीं।
- (3) कर्म फल के प्रति वासना न हो।
- (4) कर्म न करने में तेरी आसक्ति न हो।

विशेष - छन्द - वसन्ततिलका

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

9. श्रयत विश्वशुभङ्गर संस्कृतम्

प्रस्तुत कविता के माध्यम से रचनाकार लोगों में संस्कृत भाषा के प्रति जाग्रति लाने का प्रयास कर रहे हैं। संस्कृत भाषा को सम्पूर्ण विश्व के लिए कल्याणकारी, लाभकारी समझना चाहिए। ऐसी विचारधारा प्रकट करते हुए कहते हैं कि हे भारतवासियों यदि भारत का कल्याण चाहते हो तो जिस प्रकार मेरे हृदय में संस्कृत के प्रति प्रीति अभिरुचि है उसी प्रकार आप सब भी संस्कृत को विश्व के लिए कल्याणकारी मानें। इसी भाषा के माध्यम से हम उपनिषद् शास्त्र पुराणों के द्वारा प्राचीन वैभव तथा संस्कृति को जानने में सक्षम हैं। यह देवभाषा है जो देवों के द्वारा भी वन्दनीय है कवि शिरोमणि कालीदास, वाल्मीकि तथा मुनिजनों व तपस्वियों ने जिसके मान को बढ़ाया है अनेक रुचिकर कथा, नाटको, दर्शनशास्त्र, व्यंग्य विचारों के द्वारा ज्ञान देने वाली यह भाषा विश्व कल्याण का देने वाली है। जिस भाषा के द्वारा विधायक व आधायक सूत्र की निश्चितता प्रकट हुई भारत का खण्डभखण्ड सिद्धान्त दिया गया वह अतुलनीय है। यह भाषा विभिन्न धर्म, जाति, सम्प्रदायों में बंधे लोगों के द्वारा पूजनीय है यह सभी को एक सूत्र में बांधकर रखने वाली है। यह अकेली भाषा है जो युग-युगान्तरों से चली आ रही है इसी के द्वारा सम्पूर्ण साहित्य के इतिहास को वहन किया हुआ है यह तर्क व चिन्तन के लिए सबसे उचित है जिसमें राष्ट्र की वाणी होने के समस्त गुण विद्यमान हैं। इस भाषा में भारत देश के विभाजन को सूचित किया गया तथा कलह का निवारण करने का प्रयास भी किया गया है। यह भाषा लोगों की वाणी को सुशोभित करने वाली अमर, अजर तथा जीवनदायक है। यह सभी प्राणियों में प्रेम, प्रगाढ़ता बढ़ाने वाली है।

विशेष -

छन्द - द्रुतविलम्बितं

लक्षण - द्रुतविलम्बिताह नभौ भरो।

10. सा देववाणी खलु सेवनीया

इससे पूर्व 'श्रयत विश्वशुभङ्करसंस्कृतम्' कविता में संस्कृत को सम्पूर्ण संसार के लिए कल्याणकारी बताया गया है। इस कविता में रचनाकार यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि यह देवभाषा क्यों किसलिए निश्चित ही पूजनीय है ?

जिस प्रकार रत्नाकर से समस्त रत्नों की उत्पत्ति हुई है उसी प्रकार विश्व की समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा ही है। जिस प्रकार सूर्य की किरणें सम्पूर्ण जगत को प्रकाशित करने वाली हैं ठीक उसी प्रकार यह देवभाषा सभी के द्वारा सेवित है।

यस्याः प्रसूताः किल विश्वभाषा¹⁵

रत्नाकरादत्नगणा इवैते ।

यथोष्णरश्मेश्च समस्ततेजः

सा देववाणी सकलैः सुसेव्या ।। (10-1)

इस भाषा ने ही पहली बार मनुष्यों को प्रबन्धन सिखाया। प्रथम आदिकवि वाल्मीकी इसी भाषा ने हमें दिए हैं। इस भाषा के साहित्य में अनुपम व अनन्य है विविधता व गम्भीरता से युक्त यह भाषा सभी के द्वारा पूजनीय है। इस भाषा में शब्द निर्माण की जो पटुता है वो किसी अन्य भाषा में नहीं है इसके शब्दों की मधुरता देखते सुनते ही बनती है। यह बात प्राचीन नवीन सभी विद्वानों द्वारा मान्य है इस भाषा में लिखे गए शास्त्र संसार में अद्वितीय है इस भाषा का साहित्य बहुत ही समृद्ध है। इसकी लिपि वैज्ञानिक नियमानुसार कार्य करने वाली है। जो भाषा आध्यात्मिक, भौतिक, वैदिक समस्त दृष्टियों से सत्यं, शिवं, सुन्दरं की परिकल्पना को परिपूर्ण करने वाली है। जिसमें लिखा गया समस्त ज्ञान उत्कृष्ट कोटि का है। समस्त वेद, उपनिषदों, आरण्यक, ब्राह्मण, पुराण, रामायण, महाभारत, वेदान्त, सांख्य आदि सभी दर्शनों की रचना इसी भाषा में की गई है। चावकि जैन अर्हत, समस्त धर्मावलम्बियों शक्त, आगम, शैविकों द्वारा तन्त्र, मन्त्र आदि में इसी भाषा का प्रयोग किया जाता है। अभिज्ञानशांकुन्तलम्, रघुवंश, कुमारसंभवम्, मेघदूत जैसे कालिदास के काव्यों में माघ के किरातार्जुनीयम् हर्ष के नैषधीय चरितम् कादम्बरी तथा वासवदत्ता जैसे अन्य काव्यों, नाटकों में काव्यामृत को बरसाने वाली रसीकों को रसानन्द प्रदान करने वाली, प्राचीन, पवित्र, उज्ज्वल भाषा है। मानव सभ्यता का आधार इसी को माना गया है। भाषा विवाद से प्रान्तों में उत्पन्न होने वाली कद्विग्नता को दूर करने के लिए इसी भाषा ने औषधि का काम किया। भारतीय साहित्य, संगीत कला के इतिहास में यह भाषा ही सबसे बड़ी संवाहक हुई है। हमें भी रात दिन इसकी वैज्ञानिक शब्द राशि को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। उत्कृष्ट, भव्य, उज्ज्वल, ललित, माधुर्य गुणों से युक्त ललना के रमणीय रूप की तरह इसका आस्वादन किया जाना चाहिए।

उदात्तभव्योज्ज्वलकान्तकान्ति¹⁶

र्ललित्य माधुर्यगुणाढ्यशोभा ।

हृद्याऽनवधां रमणीयरूपा

सा देववाणी खलु सेवनीया ॥ (6-17)

हमारी यह भाषा लम्बे समय से मृतप्रायः हो चुकी है हमारी इस भाषा को पुनः जीवित करने की जीवनदान देने की आवश्यकता है जो कि कुछ मूर्खों के कारण अपना अस्तित्व खो रही है। संस्कृत भारती के गीत की इन पंक्तियों से भी कवि का भाव स्पष्ट हो जाता है।

पठतु संस्कृतं वदतु संस्कृतम्

लसतु संस्कृतं चिर गृहे गृहे च पुनरपि

कवि कल्पना के अनुसार यह संजीवनी बूटि कल्पलता तथा अमृत के समान है अतः इसको संरक्षित करना आवश्यक है जैसे इस पृथ्वी पर कल्पवृक्ष, कामधेनु व अमृत को सेवित करने की इच्छा है वैसे ही इस भाषा को भी सेवित किया जाना चाहिए।

विशेष -

छन्द - उपजाति

लक्षण -

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पदौ यदियावुपजातयस्ताः

इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, स्मरन्ति जातिविदमः नाम ॥

11. आङ्ग्लीधुरं क्षिपत सत्वरमात्मकण्ठात्

इस कविता के माध्यम से कवि भारतीय जनमानस को अंग्रेजों के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। भारतीयों के भाग्य विधाता सुदीर्घ काल से दासता में जकड़े हैं। अब भारत को मुक्ति दिलाने का समय है। अब इन अंग्रेजों को शीघ्र ही जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। इस संसार में दासता ऐसा विषय है जिसके लिए दो दशकों से जनता जिसका अपना अभिमान व संस्कृति, वाणी विदेशियों को देकर ऋण चुका रही है। भारत की स्वतन्त्रता या मुक्ति का तब तक कोई लाभ नहीं है जब तक स्वयं भारतीय ही पाश्चात्य संस्कृति का वरण करके उसकी दासता में जकड़े रहना चाहते हो। जिस देश के लोगों ने मातृ प्रधान, त्याग प्रधान जैसी उत्कृष्ट संस्कृति को भुलाकर भोग, विलासिता की संस्कृति को अपना लिया है, वो कैसे इसकी मुक्ति का विचार रखेंगे ? सर्वांगीण विकास करने वाली विशाल, समृद्ध देववाणी को तीनों लोकों में रूढ़ जानकर आंग्ल भाषा का वरण देशवासियों ने कर लिया है। उनको जाग्रत होकर इन सबसे दूर होने की आवश्यकता है। यह विदेशी लोगों की कुटिलता ही है कि जब वह आंग्ल अधिकारी आधी शताब्दी में भी अपनी छाप छोड़ने में सक्षम नहीं हो पाए तो उन्होंने सीधे-साधे भारतीयों को बहला फुसलाकर उनसे ही आंग्ल भाषा का प्रचार प्रसार करवाया है। यही हमारे देश के लिए सर्वाधिक घातक सिद्ध हो रहा है। आंग्ल अधिकारियों की यह कूटनीति सफल सिद्ध होती दृष्टिगत हो रही है। विद्यालयों में, अधिकारियों द्वारा, न्यायालय

राज प्रशासन में, विधानसभा आदि स्थलों पर देवभाषा का प्रयोग न कर आंग्ल भाषा का प्रयोग करना सम्मान का विषय समझा जाता है। यह ही हमारी संस्कृति पर कुठाराघात प्रतीत होता है। जब तक देश में राजकार्य के लिए शिक्षण के लिए आंग्ल भाषा का प्रयोग होता रहेगा तब तक देवभाषा के पुनः स्थापित होने या बढ़ने के विषय में उसी तरह नहीं सोच सकते जैसे वटवृक्ष के नीचे छोटा पेड़ नहीं बढ़ पाता है।

यावद्धि राज्यपदमाङ्गलगिराऽधिरूढा¹⁷

यावच्च सर्वविध शिक्षण माध्यमं सा।

तावन्न सम्भवति लोकगिरां विकासः

संवर्धते वटतले नहि बालवृक्षः।। (11-12)

जब तक देश में शुरुआत से ही भाषा का पठन-पाठन नहीं होगा तो उसके ग्रन्थों के अध्ययन-अध्यापन के विषय में सोच भी नहीं सकते हैं। जैसे तैरना जाने बिना समुद्र में नहीं तैरा जा सकता है उसी प्रकार प्रारंभ से भाषा को ग्रहण न करने पर उसमें आगे के लिए रुचि उत्पन्न नहीं की जा सकती है। आंग्लवासियों के अभिशाप से प्राप्त यह आंग्लभाषा राष्ट्र के द्वारा यदि नहीं ठुकराई गई तो देश का विकास बिल्कुल संभव नहीं है। देश की सम्पूर्ण सृजनशील शक्ति गर्त में चली जाएगी। हम देशवासियों को इसकी गम्भीरता को समझते हुए भाषा को उन्नत करने का प्रयास करना होगा।

विशेष - छन्द - वसन्ततिलका

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

12. आलम्बयतामक्षरदिव्य वाणी

दिव्य वाणी संस्कृत के असंख्य काव्य कोश में उज्ज्वलता, लालित्य, माधुर्य गुणों की शोभा, दूसरे साधारण तथा असाधारण शब्दों की शोभा दृष्टिगत होती है। इस भाषा को सेवित किए जाने की अत्यन्त आवश्यकता है। देव ऋषियों ने जिस भाषा को प्रफुल्लित किया, कवियों ने जिसकी गाथा को गाया, जिसकी यशोगाथा को सुनकर हमें आनन्द का अनुभव होता है वह दिव्य वाणी सम्मानित अक्षरों वाली है। उदात्त, भव्य, उज्ज्वल, दीप्त कान्ति, प्रसन्नता प्रदान करने वाली, कुमारी की तरह कोमल, हृदय को प्रफुल्लित करने वाली इस दिव्यवाणी की आराधना की जाती है। सम्पूर्ण विश्व में भाषाओं की जननी, विश्व की एकता को बनाए रखने वाली, पर-अपर के ज्ञान को जानने वाली यह दिव्य भाषा है। प्रसाद, माधुर्य आदि की कान्ति से युक्त विशाल साहित्य से परिपूर्ण विभिन्न कवियों की जीवनधूरी व जीवन को धारण करने वाली है। संसार के साहित्य में सबसे अग्रणी, उत्कृष्ट वाङ्मय से सबको अचम्बित करने वाली है। समस्त भाषाओं का यही आधार है। स्वर्ग के देवताओं द्वारा वन्दनीय है तो पृथ्वी वासियों द्वारा नमन योग्य है। वाग्देवी सरस्वती के मस्तक को अलंकृत करने वाली इस भाषा

की कीर्ति सब दिशाओं में फैली है। अपूर्व माधुर्य गुणों से सुशोभित देववाणी है। इस पृथ्वी पर अमृत व कामधेनु के समान यह देवभाषा ही पूजनीय है। तीनों लोको में उल्लासित, सुन्दर, स्फुरित, कान्तियुक्त, रम्या लावण्या के समान यह देवभाषा है। कार्य प्रवृत्ति को बढ़ाने वाली, विनय शीलता देने वाली, स्वच्छता प्रदान करने वाली यह दिव्यवाणी सभी के द्वारा सेवित है। चरित्र की पवित्रता का विकास करने वाली मनुष्य में साधुता का प्रवेश कराने वाली, आचार, विचार, संस्कार को बढ़ाने वाली सभी के द्वारा वन्दनीय भाषा है। विश्व एकता व वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना उत्पन्न करने वाली तीनों लोको में शान्ति प्रदान करने वाली इस भाषा पर सब आश्रित है। भूमि की रक्षा करने वाली, धर्म की शिक्षा देने वाली सभी को आश्रय देने वाली यह देववाणी है। धर्म को निश्चित रूप से शास्त्रों का मूल माना गया है। शास्त्रों के लिए जो धार्मिक ग्रन्थ हैं वो इस देवभाषा में ही लिखे गए हैं। जिज्ञासु प्रवृत्ति के मनुष्य धर्म को जानने के लिए इस वाणी का ही सहारा लेते हैं। सार रूप में यह कहा जा सकता है कि यह देवभाषा भारतीयों का आधारभूत तत्व है।

विशेष - छन्द - उपजाति

लक्षण - अनन्त रोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुप जातयस्ताः
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, स्मरन्ति जातिस्विदमेव नाम।

अलंकार - उपमा

13. राष्ट्रनिर्माण मूलम्

राष्ट्र के निर्माण के लिए आधार भूत तत्व क्या होना चाहिए अथवा किन लोगों के प्रयासों से इसे प्राप्त किया जा सकता है इस विषय में कवि ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। कवि के अनुसार भोगो तथा विषयों में लोग, शरीर मात्र का भजन करने वाले, शरीर तथा अपने आत्म तत्व के अलावा किसी ओर ध्यान न देने वाले, चार्वाको के बताए रास्ते पर चलने वाले इन उच्छृंखल युवकों से राष्ट्र की चिन्ता को कैसे दूर किया जा सकता है? आधुनिक विषयक नायक जो प्राचीन परम्पराओं को व्यर्थ मानने वाले तथा प्रगति में बाधक समझने वाले हैं यह प्रयत्न उनके विवेकानुसार नहीं किया जा सकता है। यह राष्ट्र भावना आत्मा में निहित होना आवश्यक है। प्राचीन राष्ट्र नायकों ने जो आदर्श स्थापित किए थे, वे आज भी युवकों के लिए अनुसरणीय हैं ना कि आधुनिक नायकों के भ्रष्टाचार में लिप्त दुर्गुण। गांधी, नेहरू जैसे आदर्श नरवीरों ने हिमालय के समान जो आदर्श स्थापित किए वह समय के परिवर्तन के साथ ही क्षीण होते गए। इसलिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र को हिमालय के समान उच्च आदर्शवाला बनाना केवल अभिलाषा मात्र ही है। नीति, न्याय, प्रगति, समता, धर्मतत्व आदि गुणों से युक्त देश आज तीव्रगति से निम्नता को प्राप्त कर चुका है देश को पुनः उत्कृष्ट स्थान पर स्थापित करने के लिए धैर्यशाली, सच्चरित नायकों की आवश्यकता है जिस प्रकार विशाल जल राशि की शक्ति को रोकने के लिए बांध या सेतु बनाकर उसकी शक्ति को बाँट दिया जाता है तथा उस शक्ति

का सही उपयोग किया जाता है उसी प्रकार भारत को स्वतन्त्रता दिलवाकर उत्कर्ष व अग्रणी देशों में स्थापित करने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। देश में जो व्योम स्पर्शि, भवनों व आवासों का निर्माण हुआ है उस नवनिर्माण का तब तक कोई लाभ नहीं होगा, जब तक आत्मभावना से समस्त देशवासी इसकी सफलता के लिए प्रयासरत नहीं होते। सच्चरित जनों के द्वारा इस निर्माण को नहीं किए जाने के फलस्वरूप ही ये योजनाएँ विफल होती हैं। राष्ट्र के उत्थान के लिए नवनिर्मित भवनों का जाल ही काफी नहीं है सच्चरित, वैभवशाली, श्रेष्ठ मनुष्यों की राष्ट्रप्रीति, धर्मावलम्बी तथा हृदय से राष्ट्र से जुड़ाव भी आवश्यक है। वंश के उत्कर्ष के लिए महिष, तुरंग, श्वान, गो, कुक्कुट आदि पशु भी गुणों व संस्कारों से जुड़े रहते हैं। संस्कृत के उत्थान के लिए मनुष्यों को भी एक जुट होना होगा। जिस प्रकार शिल्पकार ही पत्थर के टुकड़े से मूर्ति का निर्माण कर उसमें जान डाल सकता है उस मूर्ति को जीवन्त बनाता है उसी प्रकार अच्छे संस्कारों से ही अच्छे मनुष्यों का निर्माण संभव है।

सत्संस्कारैर्मनुजवर निर्माणकार्यं हि शक्यं,¹⁸

संस्कारैश्च प्रभतितरां व्यक्तित्प्रकाशः।

शिल्प्युद्भक्तेः प्रतिकृतिरिव स्थूलपाषाण खण्डाच्च,

शाणोल्लीढे मणिरिव नरो भाति संस्कारयुक्तः।। (13-11)

भारतीय संस्कृति में मनुष्यों के जन्म, मृत्यु तथा सम्पूर्ण जीवन को षोडश संस्कारों में विभक्त किया गया है। आधुनिक परिवेश में संस्कार प्रदाता केन्द्र अर्थात् शिक्षण संस्थाएँ भी दूषित हो चुकी हैं। साहित्य का स्थान चलचित्र, अन्तजलि आदि ने लिया है जो बालकों को लाभ की अपेक्षा अधिक हानि पहुँचा रहा है। अद्यतन सच्चरित्र तथा गुणों के विकास के लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों में निश्चित पाठ्यक्रम को आधार बनाकर सही शिक्षा दी जानी चाहिए। जिस प्रकार अन्य पाठ्यक्रमों की शिक्षा दी जाती है। धर्म तथा नीति की शिक्षा लुप्त हो रही है समस्त पर्यावरण दूषित हो गया है। जब अच्छे विचारों तथा धर्म को नष्ट कर दिया जाएगा तो आत्मरक्षा या आत्मतत्त्व की रक्षा कैसे संभव होगी ? अतः राष्ट्र के उत्थान के लिए चरित्र का उत्थान होना परमावश्यक है। ऐश्वर्य, सुख सुविधाओं से सम्पन्न राष्ट्र में चारित्रिक विकास भी होना अत्यावश्यक है तभी देश का विकास सम्भव है।

राष्ट्रोत्थानं युवकचरितोत्थानसंश्लिष्टमस्ति,¹⁹

सर्वेश्वर्यप्रचुरसुखं सौविध्यपूर्णोऽपि देशः।

चारित्र्यो नो भवति ननु चेद दीनहीनोऽस्ति नूनं,

राष्ट्रेश्वर्यं खलु युवजनाः शुद्धचारित्र्यवन्तः।।

विशेष- छन्द - मन्दाकान्ता,

लक्षण - मन्दाक्रान्ताम्बुधिरस न गैर्मोभनौतौ गयुग्मम्

14. सा खलु धन्या भारतभूमिः

जगत निर्माता ने प्राचीन संस्कृति, दया दक्षिणा के कारण इस धरती पर ही स्वर्ग के समान भारतभूमि का निर्माण किया। भारत माता के लिए गीतों को गाया गया। वह भारतभूमि तो निश्चित ही धन्य है। मानव जाति के द्वारा मुग्ध होकर जिसने अपने ज्ञान की किरणों को बिखेरा है उन वेदों की उत्पत्ति का आधार यह भारतभूमि ही है। अतः भारतमाता के गीतों के गायन से ही इसका वन्दन किया जाना चाहिए। उत्तर में विशाल हिमालय, दक्षिण में रत्नाकर जिसके चरणों का वन्दन करता है। सिद्ध जनों ने जिसकी पवित्रता को और बढ़ाया है उस भारत माता का गुणगान सभी के द्वारा किया जाना चाहिए। जिसकी कीर्ति से सभी को सुख की प्राप्ति होती है जो एकान्त स्थान पर खुशियों की ध्वनि उत्पन्न करने वाली है। जिसके चरणों का यश सर्वत्र फैला हुआ है उस भारत भूमि को सभी नमन करते हैं उसका वन्दन करते हैं।

सर्व सुखप्तैनिर्जर वृन्दैर्भाषितभूतिं कीर्तित कीर्तिम्।²⁰

नन्दितनादां वन्दितपादां भारतभूमिं गायत लोकाः ॥ 14.4 ॥

जिस भारत भूमि के लोग सुन्दर हृदय वाले, स्वर्ग के समान सुखानुभव करने वाले, सागर में डुबकी लगाने वाले, घोर तपस्याओं में जिन्होंने अपने आप को तपाया है उस भारतभूमि के लोग तथा भारतमाता धन्य है। हिमालय पर्वत प्राकृतिक आपदाओं से जिसकी रक्षा करता है। सागर जिसकी चरण रज को धोता है समुद्र की लहरें जिसके मन को पवित्र करने वाली है। जहां शास्त्रों का समूह ज्ञान की रोशनी प्रदान करने वाला एवं सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करने वाला है। जहाँ मुनिजनों की समाधि जीवन और मृत्यु से बढ़कर अन्तिम तत्व को पाने का साधन है। जिस धरा पर मुनी जनों के आश्रमों में हिंसक पशु भी अन्य पशुओं को नुकसान पहुँचाए बिना अनुराग पूर्वक रहते हैं। वह भारत देश विश्व गुरु की गरिमा को सुशोभित करने वाला लोक कलाओं के लिए प्राचीन काल से ही अग्रणी रहा है। सम्पूर्ण संसार के मनुष्य जिस धर्म के लिए प्यासे हैं वह यहाँ सहज ही उपलब्ध हो जाता है। संस्कृति, धर्म, आचार, सुदीक्षा के लिए यह सर्वोत्तम है। श्रीकृष्ण ने भी कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन को धर्म का ज्ञान यही दिया -

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि।

धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयो - डन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ (भ.ग. 2.31/43)

“स्वधर्म का साधारण अर्थ है अपना कर्तव्य” धर्म एक व्यापक, पवित्र और सारगर्भित शब्द है। शास्त्रीय भाषा में धर्म सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को धारण करता है।

“धर्मो धारयति प्रजाः”

राष्ट्र, समाज, संस्था और व्यक्ति सबको जीवित रखने वाला धर्म है धर्म सर्वोन्मुखी विकास का साधक है।

“यतोऽभ्युदय-निश्रेयस-सिद्धिः स धर्मः।” (भ.ग. पृ. 44)

जहाँ भौतिक सुख-साधनों की अपेक्षा मानव शान्ति ही सर्वोत्तम है जहाँ विरोध देखने मात्र से ही दूर हो जाता है। ऐसी भारतीय संस्कृति मानव निष्ठ, आध्यात्म विशिष्ट तथा सभी के लिए हितकारी है। यह त्याग को सर्वोपरि रखने तथा भागो से दूर करने वाली है। सबसे समृद्ध तथा विशाल, सर्व प्राचीन, शाश्वत, देवों की वाणी संस्कृत यहाँ है सम्पूर्ण देव संस्कृति इस धरती पर ही है। भौतिक शास्त्र आध्यात्मिक शास्त्र का ज्ञान यहीं है जो लोगो को विश्व कल्याण के लिए प्रेरित करता है इस धरा के मनुष्य वैर भाव को भुलाकर प्रेम से रहते हैं। कश्मीर जिसके शीर्ष भाग पर है केरल, तमिलनाडु जिसके पैर है, राजपूत जिसकी भुजाएँ हैं, पवित्र काशी जिसका मन है, सफेद बर्फ का हिमालय जिसका मुकुट है, पवित्र गंगा, सिन्धु आदि नदियाँ इसकी धमनियाँ हैं वह भारत भूमि धन्य है।

शुभ्रहिमाद्री रौप्यकिरीटः पावनगङ्गा सिन्धुतटिन्यः।²²

सन्ति यदीया रक्तधमन्यः सा खलु धन्या भारत भूमिः।। 14-18)

इस भारत भूमि का भाल उन्नत है मन निर्मल है सुन्दर शरीर व चरित्र है। उज्ज्वल वाणी भव्य भारत भूमि सबसे पहले जिस धरा पर मानव ने जन्म लिया गीतों का सृजन किया, ज्ञान को प्राप्त किया वह भारतभूमि धन्य है। आदि कवि वाल्मिकी तथा मुनिजनों की भूमि है। यहाँ मुनी वृन्दों ने शान्ति की कामना तथा विश्वहित के लिए तपस्या की है। यह भारत भूमि अपने ऐश्वर्य वैभव के कारण ही सोने की चिड़िया कहलायी। तीनों लोकों में उच्च स्थान की अधिकारणीय है। प्राचीन समय से ही सर्वोत्कृष्ट स्थान को प्राप्त करने वाली है। यहाँ रहने वाले लोग शरीर को ही सर्वोपरि मानते हैं। आत्मा के विषय में इनका ज्ञान अधूरा है। आजकल तो इन लोगों की आत्मा विहीन शरीर तथा पैसों में ही आसक्ति है यह मूर्ख लोग शान्ति व सुख के वास्तविक अर्थ से वियुक्त हैं, क्योंकि जब तक इनकी आसक्ति धन में रहेगी यह आत्मा से धर्म से दूर रहेगी। पाप कार्यों में संलग्न रहेंगे तब तक शान्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं? आजकल सभ्य मनुष्य भी संस्कृति, धर्म के आचरण को त्याग चुके हैं पापचरण में लिप्त हो चुके हैं कोई शर्म या भय नहीं है। मात्र शरीर ही मनुष्य नहीं है। आत्मा कभी मरती नहीं है शरीर तथा आत्मा इन दोनों का संयोग ही मनुष्य है। गीता के द्वितीय अध्याय में भी आत्मा के अजर, अमर तथा शरीर के नश्वर होने का ज्ञान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया है।

न जायते मित्रयते वा कदाचिन्²³

नायं भूत्वाऽभविता वा न भूयः।

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो

न हन्यते हन्यमाने शरीरे।। (भ.ग. 2.20 पृ. 32)

आत्मा से रहित इस भौतिक जगत् में मनुष्य दुःख, अशान्ति से ग्रसित

है। आत्मा की प्राप्त मनुष्य के लिए साध्य है। जबकि भौतिक सिद्धि साधन रूप में है विश्व विधाता के द्वारा निर्मित इस सृष्टि में जो तत्व ज्ञाता, सत्य है वह आत्मिक है तथा अन्य भौतिक है। इन्हे ही चेतन व अचेतन की संज्ञा प्रदान की गई है। इन्हें ही मूर्त, अमूर्त माना गया है यही साध्य तथा साधन है। जिस प्रकार मनुष्य बाह्य लेप आदि के द्वारा अपने शरीर को सुन्दर बनाने का प्रयास करता है उसी प्रकार अच्छे सात्विक विचारों से अपनी आत्मा को भी निर्मल करने का प्रयास किया जाना चाहिए। इन विशेषताओं के माध्यम से कवि भारत भूमि की महिमा तथा भारत में रहने वाले लोगों का गुणगान करते हैं।

विशेष - छन्द - रुक्मवती

लक्षण - रुक्मवती सा यत्र भमरगाः।

विशेष - अलंकार - उपमा, यमक

पुराणों में भारत देश की गौरव गाथा का अनुपम निदर्शन है। भारत भूमि को सारे विश्व में श्रेष्ठ कहा गया है, इसे स्वर्ग से भी अधिक स्तुहणीय बताया गया है - जैसे घन्याः खलु ते मनुष्याः, ये भारते नेन्द्रियविप्रहीनाः।। (भ.ग. 2/3/36)

सर्वेन्द्रिय सम्पन्न होकर भी जो भारत देश में जन्म पाते हैं वे ही मनुष्य भाग्यशाली हैं।

यतो हि कर्मभूरेषा जम्बूद्वीपे महामुने।

अत्रावि भारतं श्रेष्ठमतोऽन्या भोगभूमयः।। (शिवमहापुराण 5/18/19)

हे महामुने! इस (सर्वश्रेष्ठ) जम्बूद्वीप में भी भारत वर्ष सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि यह कर्मभूमि है इसके अतिरिक्त सभी देश भोग भूमियाँ हैं।

स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते, घन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।

गायन्तिदेवाः किल गीतकानि, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।

(शिवमहापुराण 5/18/17)

जनुर्हि येषां खलु भारतेऽस्ति

ते स्वर्गमोक्षोभय लाभवन्तः।।

(शिवमहापुराण 5/18/21)

15. जीवेच्चिरं भारतलोकराज्यम्

रचनाकार ने भारत को लोक कल्याणकारी राज्य बताते हुए उसके दीर्घकाल तक ऐसे ही बने रहने की कामना प्रकट की है। इस काव्य की रचना के 15 वर्ष पूर्व ही निर्मित, सर्वाधिक कीर्तिशाली इस लोकराज्य के दीर्घकाल तक रहने की अभिलाषा व्यक्त की है। प्रारंभ से ही जिसकी स्वतन्त्रता के लिए लोगों के द्वारा निरन्तर प्रयास किए गए। स्वतन्त्रता

प्राप्ति के पश्चात् स्वाधीनता से हीन लोगों को मुक्ति दिलाने का भरसक प्रयत्न किया गया। अशोक चक्र अंकित राष्ट्रध्वज को भारतभूमि पर फहराया गया। गांधी जैसे महान नेताओं के प्रयासों से ही शास्त्रों के बिना सत्य, अहिंसा पर जोर देकर भी शत्रु राष्ट्र पर विजय प्राप्त की गई। इसी कारण वे राष्ट्रपिता के नाम से सशोभित हुए। जवाहर लाल नेहरू जो कि सामान्य कदकाठी, किन्तु गूढ़ दृष्टि वाले थे। जिनके द्वारा सम्पूर्ण विश्व में शान्ति की स्थापना की गई ऐसे शिल्पकार जवाहर लाल नेहरू द्वारा इस भारत देश की आजादी की नींव रखी गई। वह भारत लोक कल्याणकारी राज्य बना शास्त्रों में निर्बाध गति तथा अनन्त कीर्ति वाले डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के निर्देशन में गुरु ज्ञान को प्राप्त करता हुआ यह देश आगे बढ़ता रहा। छोटी कदकाठी, लम्बी यशोगाथा वाले, उत्तेजना व शान्ति का समन्वय रखने वाले लाल बहादुर शास्त्री जी ने इस देश की बागडोर जवाहर लाल नेहरू जी के पश्चात् सम्भाली तथा इस देश को नवीन ऊँचाइयों तक पहुंचाया। जिसकी रक्षा के लिए हिमालय ढाल बनकर खड़ा है वह राष्ट्र हमेशा स्वस्थ ही रहेगा। समुद्र जिसकी चरण रज को धोने वाला है वह देश निरन्तर उन्नति को प्राप्त करेगा। जिस भारतभूमि को गंगा के पवित्र जल से स्वयं देवों ने अभिषिक्त किया है देवांगनाएँ जिसके यशोगान को गाने वाली है। अनेक ऋषिमुनियों के तेज से जो भूमि तप्त है वह हमेशा ऐसी ही कल्याणकारी रहे। विश्व को युद्ध मुक्त करके तटस्थ राजनीति करने वाले संसार को बन्धुत्व का भाव सिखाने वाले भारत को नमन है जहां की धरा पर समानता, भाईचारे की भावना को विकसित किया जाता हो तीनों लोको का कल्याण इसी के द्वारा सम्भव हो सकता है। इस देश में यह वाक्य पूर्णतः चरितार्थ होते हैं। “जनता का जनता के लिए जनता के द्वारा किया जाने वाला शासन” यह ही लोक कल्याणकारी राज्य का आधार है।

लोकस्य लोकाय च लोकचाल्यं ²⁴

लोकोन्मुखं लोकहितानुबन्धि।

इत्युच्चलक्ष्येण कृतप्रयाणं

जीवेच्चिरं भारतलोकराज्यम्।। 15-12)

इस भारत भूमि पर ही मानव समयता का बीज अंकुरित हुआ है जहां के लोग वातसल्य, प्रेमभाव से रहने वाले हैं। वहाँ सभी को बन्धनों से मुक्त करवाकर ही लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की गई है। जिसके लिए अनगिनत शूर वीर सैनिकों ने हंसते-हंसते अपने प्राणों का बलिदान इस स्वातन्त्र्य रूपी हवन में कर दिया है। उस भारत देश की जय जयकार है।

विशेष - छन्द - उपजाति

लक्षण - अनन्तरोदीरित लक्ष्मभाजौ, पदौ यदी यावुपजातयस्ताः, इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु स्मरन्ति जातिष्विदमेव नामः।।

अलंकार - स्वभावोक्ति, विशेषोक्ति

16. तावत्स्वराज्यं नहि लोकराज्यं

स्वराज्यं अर्थात् हमारा राज्य तब तक लोक कल्याणकारी राज्य नहीं बनेगा जब तक हम इन तथ्यों को ध्यान नहीं रखेंगे। जब तक हम अपनी भाषा को मान सम्मान हीं दिला सकते, उसे प्रतिष्ठित नहीं कर सकते, निजभाषा का प्रयोग विद्यालयों, न्यायालयायो, घरो, बाजारो, व्यवसायों में नहीं करेंगे तब तक स्वराज्य लोकराज्य नहीं बन सकेगा। हमारे राष्ट्र के मस्तक पर कलंक की रेखाओं के समान स्थित आंग्ल भाषा को जब तक जड से नहीं मिटा दिया जाएगा तब तक यह लोकराज्य नहीं बन पाएगा।

राष्ट्रस्य भव्योन्नतभालपट्टे, कलङ्करेखेव विराजमान।²⁵

आङ्ग्ली न यावन्निलयं प्रयाति, तावत्स्वराज्यं नहि लोकराज्यम्।। 16-2)

हमारी वरिष्ठ संस्कृति की संवाहक यह संस्कृत भाषा ही है जब तक इसको ही उचित मान्यपद नहीं दिया जाएगा तब तक हमारी संस्कृति के आगे बढ़ने का विचार भी नहीं किया जात सकता है। रुद्र सूर्य के पुत्र, पुत्री, वसुओं की पुत्री, अमृत कलश की नाभि से उत्पन्न गौमाता या कामधेनु को वेदों के द्वारा भी अध्व्य तथा संरक्षित माना गया है जो कि सभी देशों स्थानों पर पूजनीय है। यह मातृतुल्य तथा दुग्धामृत का पोषण देने वाली है यह गौ माता हमारे राष्ट्र की मान व उन्नति का प्रतीक है जो किसी भी राष्ट्र के लिए मेरुदण्ड के समान दृढता प्रदान करने वाली है। इसलिए हम सभी के द्वारा गौरक्षा का प्रयत्न अवश्य किया जाना चाहिए तभी हमारा राज्य लोकराज्य बनने में सक्षम होगा। प्राचीन, भव्य, उज्ज्वल सभ्यता से विपरीत क्षमित करने वाले, गौ हत्या को जब त नहीं रोकते तब तक कल्याणकारी राज्य नहीं बन सकते। जब तक देशवासी सुख, शान्ति, प्रसन्नता से युक्त न हो वहाँ भोजन प्राप्ति से तृप्त न हो, जहाँ पर मनुष्य सुविधा, धैर्यशाली धार्मिक प्रवृत्ति वाले न हो विवेकवान राष्ट्रभक्तों के होने पर भी वहाँ देश प्रगति नहीं कर सकेगा। जिस देश में मानवों को दासता के बन्धनों में जकड़े रहना पड़े, पाश्चात्य संस्कृति की शिक्षा को ग्रहण करना पड़े, वास्तविक स्वतन्त्रता जिनको प्राप्त न हो, जहाँ जनता का जनता के लिए, जनता के द्वारा शासन न हो, जो देश खाद्यान्न निमार्ण, रक्षा के लिए शस्त्रो अस्त्रो पर दूसरे देश पर आश्रित हो, परावलम्बी हो, वह देश उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता है। लोक कल्याणकारी नहीं बन सकता है। जब तक राष्ट्र अपनी शूरवीरता, पराक्रम को प्रदर्शित करने वाला, बहम आन्तरिक देवेषों को मिटाने वाला चीन पाकिस्तान आदि के सम्मुख साहसी विश्वस्त प्रवृत्ति वाला नहीं होगा तब तक कल्याणकारी नहीं बन सकेगा। कल्याणकारी राष्ट्र बनने के लिए इन सब कमियों को दूर करना अत्यावश्यक है।

विशेष - छन्द - उपजाति

लक्षण - अनन्तरोदीरित लक्ष्मभाजौ, पादौ यदीयावुपजातयस्तः। इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, रमरन्ति जातिष्विदमेवनाम।।

17. धन्योधन्यः कालिदासः कवीन्द्रः

कवियों में इन्द्र के समान कालिदास धन्य है। वे संसार के काव्याकाश में नक्षत्र के समान चमक बिखरने वाले हैं। कालिदास विक्रमादित्य के शासन काल में गुणों के कारण उसी तरह दिप्तिमान थे। जिस प्रकार कोई रत्न प्रकाशित होता है भाग्यवश ही कालिदास जैसे महान कवि की रचनाओं को पढ़ने का लाभ हम सभी को प्राप्त हुआ है। ज्योतिर्विदाभरण में एक श्लोक उपलब्ध होता है कि विक्रमादित्य की सभा में 9 रत्न थे, जिसमें से एक कालिदास भी थे।

धन्वन्तरि क्षपणका मरसिंह शडकु ²⁶

वेतालभट्ट घटकर्पर कालिदासः।

ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां

रत्नानि वे वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

(सं.सा.स.इति. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी पृ.- 136)

दो हजार युगों के अतीत में भी जिनकी कीर्ति पताका, स्फटिक के समान धवल है सम्पूर्ण भूमि व आकाश में जिसकी प्रकृष्ट किरणे आत्मा को दीप्त करने वाली है। सम्पूर्ण वातावरण जिसकी गन्ध से सुगन्धित होता है ऐसे पुष्पों के समान ही यह काव्य जगत भी कालिदास की कृतियों से महका हुआ है। भाग्य के वशीभूत इस प्राणी जगत में अनेक परिवर्तन दृष्टिगत होते रहते हैं। जन्म से ही मूढ व्यक्ति भी गुरुजनों, माता-पिता के सहयोग व प्रयासों से ज्ञानी बन सकता है। सर्वत्र भ्रमण कर उस अज्ञान के अन्धकार को मिटाया जाता है अतः वे माता-पिता सौभाग्यशाली ही समझे जाने चाहिए। विद्योत्तमा नामक विदुषी के अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए जो प्रयास किए उन प्रयासों को विफल करने के लिए विद्वत जनों ने उस मनुष्य (जो कि पेड पर बैठ कर उसी पेड की डाली को काटने वाला था) को चालाकी से विद्योत्तमा का जीवनसाथी बना दिया। पर देवी काली की परमकृपा से वो अज्ञानी ज्ञान को प्राप्त कर सम्पूर्ण विश्व में कवि कुलगुरु कालिदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ कालिदास के विषय में नाना प्रकार की वदन्तियां या कथाएँ प्रचलित हैं कहा जाता है कि कालिदास सौम्य, मित्रों के प्रिय थे। सिंहलद्वीप में रहने वाले थे। वहां की अङ्गनाओं के लुभावने वेश को देखकर इतना प्रभावित हुए कि वही रहने लगे। यह भोजराज की सभा में स्थित बाणादि मित्रों की कथाओं या रचनाओं में सुमधुर व्यक्तित्व के धनी जनों में इनका वर्णन है। इनके विनय व विनम्रता युक्त चरित्र की गाथाएँ दीर्घकाल से प्रचलित थी, किन्तु इनके द्वारा रचित रचनाओं में कभी भी स्वयं का उल्लेख दृष्टिगत नहीं होता। इस संसार में विद्या व विनय का ऐसा दुर्लभ मिलन कदाचित ही सम्भव होगा।

इत्थं दूरं विनयविनतः ख्यातिलोभात्स आसीत् ²⁷

दूरं तावच्चरितकथनं साति विस्तरपूर्वम् ।
नामोल्लेखादिकमपि न यः कर्तुकामो बभूव
सत्यं विद्या विनयमधुरा दुर्लभ मर्त्यलोके ।। (17-7)

उज्जयिनी के राजा महाकाल मे अत्यधिक आस्था होने से इन्होंने अपना अधिकांश जीवन वहीं व्यतीत किया। इनके नाटकों में नायक अग्निमित्र के उच्च चरित्र का वर्णित किया गया है। इनकी भाषा शैली सरस, सरल व मधुर है। इनके विषय में यह प्रबल मत प्रचलित है कि यह ईसा पूर्व हुए है, क्योंकि प्रथम शताब्दी में ही बौद्धाचार्य अश्वघोष आदि रचनाकार हुए जिन्होंने अपनी रचनाओं में कालिदास द्वारा प्रयुक्त वैदभी आदि रीतियों का अनुसरण किया है। इसलिए निश्चित ही कविकुलगुरु कालिदास का समय ईसा पूर्व माना जाना चाहिए। इनकी कृतियों में सहज मधुर कल्पना विलास, औचित्य नवरस गुण अलंकारों का प्रयोग किया है। इस लोक में काव्य की ऐसी महिमा अन्यत्र नहीं दृष्टिगत होती इनकी रचनाएं मन को उसी प्रकार शान्ति प्रदान करने वाली है। जिस प्रकार द्राक्षापाक के लेप से तथा मलय पर्वत से आने वाली शीतल हवाओं से मन शान्तिचित हो जाता है। सत्य, अहिंसा, शमू, दम, तप, त्याग, निष्ठ, वरिष्ठ, विश्वकल्याण से निरंतर, दिव्य उदात्त, विश्ववन्दनीय, सम्माननीय इस भारतीय संस्कृति को नमन है।

विशेष - वृतं - मन्दाक्रान्ता

अलंकार - उपमा (श्लोक 7 व 12)

18. धन्यो धन्यः श्री दयानन्दवर्यः

गुजरात के काठियावाड के मोर्वि नामक स्थान पर श्री दयानन्द ने जन्म लिया। बाल्यकाल में ही अपनी बहिन व चाचा जी के स्वर्गवास से शोक ग्रस्त होने के कारण इनके मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि मृत्यु कैसे होती है? मानव इस मृत्यु से कैसे मुक्ति पा सकता है। इस प्रश्न के उत्तर को जानने में उद्यत दयानन्द जी के मन में वैराग्य उत्पन्न हो जाने से वह मोक्ष प्राप्ति की इच्छा में गृह त्याग करके चले गए। सत्य की खोज के बीच ही श्री विरजानन्द जी को अपना गुरु बनाया विरजानन्द जी के सानिध्य में वेदादि ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त किया तथा गुरुदक्षिणा के रूप में इसी ज्ञान को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। इन्होंने कर्म सिद्धान्त, ब्रह्मचर्य, पूर्वजन्म तथा सन्यास को अपने दर्शन का स्तम्भ बनाया। इन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध किया तथा लोगों में वेदों को प्रमाण मानने पर बल दिया। शूद्रों को पढने का अधिकार दिलाया दलित वर्ग को बन्धन मुक्त कर उनका उत्थान करने का कार्य किया। समाज में व्याप्त बुराइयों सामाजिक कुरीतियों अन्धविश्वासों और रुढ़ियों को दूर करने के कारण 'सन्यासी' योद्धा कहलाए। उन्होंने जनन रहित निर्विकार, विश्वात्मा, सचिदानन्द ईश की भक्ति करने को कहा तथा मर्ति पूजा को त्यागने की बात कही। नाना प्रकार से अंग्रेजों द्वारा मूर्ख हिन्दुओं को छल बल से अपने धर्म में लेजाने का विरोध किया। लोगों को हिन्दु धर्म को ही मानने के लिए

प्रेरित किया। बाल विवाह और सती प्रथा का निषेध किया। ईश्वर को सृष्टि का निमित्त कारण तथा प्रकृति को अनादि तथा शाशवत माना। जीवनभर आर्य समाज की मान्यताओं को लोगों तक पहुंचाया। निरन्तर योग व प्राणायाम पर बल दिया। इन्होंने विधवा विवाह का समर्थन किया। “सत्यार्थ प्रकाश” नामक ग्रन्थ की रचना की जिसमें सभी मतों में प्राप्त बुराइयों का खण्डन किया।

विशेष - वृत्त - मन्दाक्रान्ता

जन्म - 12 फरवरी 1824

माता - यशोदाबाई

पिता - करशन जी लाला जी तिवारी

10 अप्रैल 1874 को आर्य समाज की स्थापना की।

19. गान्धिजन्मदिन निमित्तेन

प्रकृत कविता महात्मा गांधी जी के जन्मदिन के निमित्त लिखी गई। कवि अपनी लेखनी के माध्यम से गांधी जी के जीवन को शब्दों का स्वरूप प्रदान कर रहे हैं। हमने स्वराज्य की प्राप्ति तो कर ली है किन्तु राम राज्य की पहुंच से हम बहुत दूर हैं। हमने राष्ट्र को मुक्त करा लिया है, किन्तु हम अपने ही बन्धनों से देश को मुक्त नहीं कर सकते हैं। हम अपनी रूढ़िवादी संकीर्ण विचारधाराओं में देश को बांधे हुए हैं। देश को विदेशियों से मुक्त हुए 21 वर्ष व्यतीत हो गए हैं। फिर भी साधारण जनमानस वर्तमान में सुखी नहीं हो पाया है। दरिद्रता के दुख ने उन सभी को जकड़ा हुआ है। महात्मा गांधी जी ने जिस खुशहाल भारत का सपना देखा था वह एक सपना ही बनकर रह गया है। लोगों को देखकर ही यह शंका समाप्त हो जाती है कि स्वतन्त्रता के पश्चात पूरा देश सुखी व खुशहाल हो गया होगा। हमारा देश उन्नति के शिखर पर कैसे पहुँच सकता है जब हम घरों, हाट, बाजारों, विद्यालयों, न्याय स्थलों आदि स्थलों पर जोर-शोर से विदेशी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। इस दुर्दशा के लिए हम स्वयं ही उत्तरदायी हैं अविलम्ब हिन्दी को व्यवहार भाषा तथा राष्ट्र भाषा बनाने की आवश्यकता है। हमें अपनी भाषा वेशभूषा आदि का सम्मान करना होगा तथा इसके मान को बनाए रखने के लिए प्रयास करना होगा तभी हमारा देश विकासशील बन सकता है। हमें अपने राष्ट्र के मान तथा उन्नति के कारणभूत तत्वों को अर्थ तन्त्र के कारणों को जानना होगा तब ही हम इसके सम्मान की सुरक्षा कर सकेंगे। जिस देश में माता को सर्वोच्च स्थान दिया है उस देश में गौ माता की पवित्रता का ध्यान रखते हुए वध नहीं किया जाना चाहिए। रात दिन सत्कार्यों को सम्पादित करने से ही कष्टों को दूर किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, बुद्धि द्वारा किए कार्यों से ही इसे आगे बढ़ाया जा सकता है। रिश्वत, भ्रष्टाचार के कार्यों को छोड़कर लोगों के लिए कार्य करने की प्रवृत्ति एवं सही तरीके से शीघ्रता से कार्य करने की विचारधारा को अपनाया जाना चाहिए। सभी दोषों को मूल रूप से त्यागकर ही शासन की रक्षा की जा सकती है। स्वतन्त्रता देश के लिए साध्य

मात्र है देश के विकास के लिए समाज के अग्रसर होने के लिए धन साधन है। अभिन्न रूप से किए जाने वाले कार्यों के द्वारा ही साधनों से वास्तविक साध्य की प्राप्ति हो सकेगी। धर्म विरुद्ध राजनीति छल कपट से दूर होकर ही लोक कल्याणकारी राज्य की संकल्पना को चरितार्थ किया जा सकता है। भारतीयों को इस तन्त्र का दास बनने की अपेक्षा बुद्धि पूर्वक इस पर शासन करना होगा अन्यथा वह नाश को प्राप्त करेगे। साधन सम्पन्न अमीरों तथा गरीबों में वर्ग विभाजन अशान्ति का कारण है। मंत्री वर्ग धनाढ्य वर्ग वैभव सम्पन्न जीवन यापन करते हैं जबकि गरीब परिवार आज भी दो वक्त की रोटी के लिए दिन रात कोल्हू के बैल की तरह मेहनत करने को विवश है। स्वतन्त्रता प्राप्ति का उन लोगों के जीवन पर कोई सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगत नहीं होता है। यह राम राज्य की विचारधारा केवल कोरी कल्पना ही प्रतीत होती है। हिंसा, वैर भावना से श्रेष्ठ है इसका विरोध प्रदर्शित करना। हिंसा तथा वैर भाव रखने वालों के प्रति आवाज उठाना। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय व्यथित लोगों की सेवा का जो प्रण लिया गया था वह केवल व्रत मात्र ही रह गया है। उसके लिए कोई सकारात्मक प्रयास नहीं किए गए हैं। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है 'महात्मा' अर्थात् "महान आत्मा" वाले गांधी जी के पदचिन्हों पर चलकर देश के मान को बढ़ाया जाना चाहिए।

विशेष - छन्द - इन्द्रवज्रा

लक्षण - रयादिन्द्रवज्रा यदि तो जगौ गः।

20. जवाहर वर्धापनम्

प्रकृत कविता में कवि जवाहर लाल नेहरू जी के जन्मदिन के उपलक्ष में उनकी महिमा को प्रकट कर रहे हैं। संसार की रक्षा तथा विश्व में शान्ति की स्थापना के लिए स्वतन्त्रता के यज्ञ में अपने जीवन को समर्पित करने वाले भारत के गले के हार समान श्री जवाहर लाल नेहरू महोदय चिरकाल तक जीवित रहे।

संसारशान्तिपरिरक्षणमात्र चिन्तः,²⁸

स्वातन्त्र्ययज्ञहुत जीवन सर्वसौख्यः।

विद्योतमान इव भारतकण्ठहारो,

जीवेच्चिरं बत जवाहरलालधीरः।।(20.1)

धनवान माता-पिता की संतान होने पर भी राजा के समान सुख सुविधाओं को त्यागकर भारत राष्ट्र की स्वतन्त्रता हेतु अपना जीवन अर्पित करने वाले जवाहर लाल नेहरू जैसे महानुभाव किसके लिए वन्दनीय नहीं होंगे अर्थात् सभी के लिए आदरणीय रहेंगे। हेरो तथा केम्ब्रिज जैसे उच्च शिक्षा स्थलों पर अध्ययन प्राप्त करने में समर्थ होने के उपरान्त भी समस्त धन व सुविधाओं का त्याग देश के लिए कर दिया। जवाहर लाल नेहरू जी ने रावी नदी के तट पर यह उद्घोषणा की, कि भारत देश को विदेशी आक्रान्ताओं के चंगुल से वैसे ही मुक्त

कराया जाएगा जिस प्रकार चन्द्रमा को राक्षसों (राहु-केतु) के चंगुल से मुक्त कराया गया।

श्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा मध्यरात्रि 31 दिसम्बर 1929 को रावी नदी के तट पर पूर्ण स्वराज्य की स्थापना की घोषणा कांग्रेस अधिवेशन में की नेहरू जी ने इस अधिवेशन में “इंकलाब जिंदाबाद” तथा “वंदे मातरम्” का नारा भी दिया था।

हिन्दुस्तान तथा एशिया के छोटे-छोटे राष्ट्रों के विमोचन के लिए रात-दिन प्रयास करने वाले जवाहर लाल नेहरू जैसे महान नेता 100 वर्षों तक जीवित रहें यह कवि की कामना है। अफ्रीका, एशिया के नवोदित राष्ट्र नेताओं को नियोजित सुव्यवस्थित करके दुखी मानवों के दुख से दूर कर नवांकुर उत्पन्न करने वाले नेहरू जी दीर्घायु हो। उन्होंने अंग्रेजों की दुर्नीतियों, जात-पात के भेद को दूर करके, बन्दी बनाकर रखे जाने वालों को अनेक मित्रों की सहायता से मुक्त करवाया तथा स्वराज्य की पुनः स्थापना की। आदर्श राजनायक राजनीति के गुणों को धारण करने वाले समस्त माननीय गुणों से युक्त प्रख्यात कृतित्व वाले श्री जवाहर लाल नेहरू सौ वर्षों तक जीवित रहे।

आदर्श राजनीयविधुरि कीर्तनीयो, ²⁸
मानुष्यनिष्ठ महनीय गुणकरोऽसौ।
कर्ता सुविश्रुतकृतित्रितस्य धन्यो,
भूयाज्जवाहर सुधीः शतवर्ष जीवी।। (20-9)

बृहस्पति देव के समान वक्ता होने का वरदान जवाहर लाल जी को मिला, षडानन अर्थात् कार्तिकेय के समान जिनकी कीर्ति जगत में फैली है, सृष्टि कर्ता चतुर्मुखी ब्रह्मा जी के समान भारत देश के निर्माता चतुर बुद्धि वाले विद्वान् नेहरू जी दीर्घकाल तक जीवित रहे। इस मूढ जगत के लिए अच्छे उपदेशक के समान धीर गम्भिर करुणा से युक्त चेतना वाले शान्ति तथा वीरता के जल से धरती को सिंचित करने वाले जवाहर लाल नेहरू जी की छाया हम देशवासियों पर बनी रहे। चीन के असुरों को समाप्त करने वाले वीर योद्धा के समान वरदान प्राप्त, दुःख को दूर करने वाले महेश के समान, शत्रु की कुटिलताओं से बचाने वाले, रक्षा करने वाले जवाहर लाल जी को शत-शत नमन है।

विशेष - छन्द - वसन्ततिलका

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।।

कवि - मैथिलीशरण गुप्त की कविता “जय” का अंश

हमें कोटि-कोटि कुटुम्बियों की और विश्व विशाल की
सुख शांति चिंता थी, तुम्हारी सहचरी चिरकाल की
तुम जागते थे रात में भी, जबकि सोते थे सभी
जन मात्र की सच्ची विजय है, जय जवाहर लाल की।

(जन्म 14 नवम्बर 1889, मृत्यु 27 मई 1964)

21. सातवलेकरा भिनन्दनम्

वेदों में लिखित दिव्य, उज्ज्वल, अबाध ज्ञान राशि को अपने अपूर्व पण्डित्य व परिश्रम से सामान्य जनमानस को समर्पित करने वाले सातवलेकर जी की प्रशंसा करते हुए दीर्घायु होने की कामना की जा रही है। वेद के लिए, वेद के द्वारा, वेद के कारण सांस लेना, पलके झपकाना, वेदों के लिए ही आहार तथा विहार करना। ऐसे वेदमय महात्मा सातवलेकर जी को प्रणाम है। वेदादि सत शास्त्रों को ऊपर उठाने के लिए, मान सम्मान दिलाने के लिए, जिन्होंने अपने कष्टों की परवाह नहीं की, इसी से दीर्घ कीर्ति को अर्जित करने वाले सातवलेकर जी चिरकाल तक जीवित रहें। अनेक विद्यास्थलों, धर्म स्थलों, संस्थाओं में उच्च पद पर प्रशस्त प्राचीन देवों के महर्षियों के अवतार स्वरूप इनको नमन है।

अनेक विद्यास्थल धर्मपीठैः, संस्थान्तरैरमान पदैः प्रशस्तम्,³⁰

प्राचीन देवर्षि नवावतारं नमाम्यहं सातवलेकरार्यम्।। (21-5)

सावन्तवाडी के कोलगाम में निर्धन ब्राह्मण परिवार में जन्मे विद्याप्रिय सातवलेकर जी महाराष्ट्र में प्रसिद्ध थे। इनके जन्म से महाराष्ट्र भी धन्य हो गया। सौ वर्षों तक इनकी कीर्ति इसी प्रकार रहे। सामान्य अध्ययन परम्परा को समाप्त कर चित्रकारी का अध्ययन किया तथा प्रसिद्ध चित्रकार हुए। इन्होंने अपनी चित्रकारी में स्वातन्त्र्य युद्ध के चित्रों को उकेरा। इन्होंने आचार्य चाणक्य के मत “आर्य कभी दीन वृत्ति वाले नहीं हो सकते” को स्वतन्त्रता की ध्वनि बनाने में तिलक महोदय का साथ दिया। वैदिक राष्ट्रगीत के माध्यम से जनता में ऊर्जा का संचार किया। इनके तेजस्वी राष्ट्रीय परक भाषणों को सुनकर आंग्ल जन भयभीत हो गए। क्योंकि इन्होंने अपने लेखों व विचाराभिव्यक्ति से लोगों में राष्ट्र प्रेम की भावना को जागृत कर दिया था। इसी क्रम में वेदाज्ञानी दयानन्द जी से प्रभावित आर्य समाजीय संस्थाओं में भी इनकी कीर्ति फैल गई। वेद उपदेशक होने से कांग्रेस के सभा स्थलों, विद्यालयों, वेदपीठों, आचार्य पीठों में इनकी तेजस्वी वैदिक प्रार्थना का गायन तीव्रता से होने लगा। जिसके फलस्वरूप आंग्ल अधिकारीयों ने इनसे कुपित होकर इन्हें दीर्घकाल तक कारावास में रखा तथा इनके पक्ष में निर्णय होने पर ही इन्हें मुक्त किया। मुक्ति के पश्चात लाहोरपुर में चित्रशाला की स्थापना कर उसी के माध्यम से मन वचन कर्म से राष्ट्रीयता का प्रसार किया। प्राचीन वेदादि शास्त्रों के शुद्धिकरण का कार्य जो लगभग 50 वर्षों से रूका हुआ था उसे प्रारंभ किया। इन्होंने श्रुति आदि संहिताओं का अत्यल्प मूल्य में शुद्ध व सुन्दर पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। व्यास रचित महा भारत तथा आदिकाव्य रामायण को मूलभाषा में शुद्ध रूप में प्रकाशित किया। दयानन्द मुनि के बताए अनुसार आध्यात्मिक, भौतिक तथा दैविक गुणों से युक्त भाषा में वेदों का उनकी ही शैली में हिन्दी अनुवाद किया। देश के घर-घर में वैदिक मन्त्रों का पवित्र नाद जब तक सुनाई देता रहेगा

तब तक सब कुशल मंगल ही रहेगा। यह सब सातवलेकर जी के महान प्रयासों से ही सम्भव हो पाया है।

विशेष - वृत्त - इन्द्रवज्रा।

22. ब्रह्महर्षेर्गायत गीतम्

ब्रह्म या आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती जी की गौरव गाथा के गीत को गाया जाना चाहिए। उच्च स्वर में भव्य उदात्त, विशाल जीवन गाथा को जनमानस तक पहुंचाना चाहिए। विश्व के महान व्यक्तित्व जिन्होंने लोगों के सुख के लिए आत्म सुख का त्याग कर दिया। सम्पूर्ण जीवन देश के लिए अर्पित कर दिया। वेदिक धर्म की स्थापना करने वाले, वेदों को ही प्रमाण मानने वाले दयानन्द सरस्वती के गौरव गीत को गाना चाहिए। स्नेह, दया, करुणा, शान्ति, वित्तिका, धैर्य अदभुत मेधा के धनी महर्षि को गीतों में लोगो द्वारा स्मरण किया जाता है। जिन्होंने पीड़ित शूद्रो नारी और गौ माता को उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया। मूर्ति पूजा का खण्डन किया तथा यज्ञ अनुष्ठानों में मूक पशुओं की बलि दिए जाने का विरोध किया। अहिंसा के मार्ग को अपनाया मूर्ति पूजा की जगह वास्तविक पूजा में लोगो का विश्वास जगाया। श्रद्धा पक्ष में पितरों के तर्पण की अपेक्षा जीवित अंग्रजों की भक्ति का मार्ग लोगो को बताया। सिन्धु आदि नदियों की पवित्रता के विषय में लोगो को जागरूक किया। लोगो में वर्ण व्यवस्था को लेकर जो भ्रान्तियां थी उनको दूर किया। लोगो को समझाया केवल जन्म से ही वर्ण निर्धारित नहीं होता है बल्कि कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था होनी चाहिए। इन्होंने सायण, मूलेरुवट राथै आदि मतों का वेद द्वारा खण्डन किया। वेदों को प्रमाण स्थापित करने के ही क्रम में आर्य समाज की स्थापना इनके द्वारा की गई। इन्होंने मुस्लिम, ईसाइ आदि द्वारा जो विरोधी मत प्रकट किए गए उनको खण्डित किया। उज्ज्वल शरीर, प्राञ्जल वाणी, निर्मल मति दैदिध्यमान, कृति वाले ब्रह्म महर्षि के गौरव गान लोगो द्वारा गाए जाते हैं। जिन्होंने अपनी उत्कट बुद्धि उन्नत शक्ति उदान्त गुणों से लोगो मे सकारात्मक ऊर्जा को उत्पन्न किया। जिनके साहस, शौर्य, औदार्य को आज भी याद किया जाता है। जिनके विषय में कहा जाता है कि वो ज्ञानि नरेन्द्र, ध्यानि धुरेन्द्र, योगी वरेन्द्र, मौनी महेन्द्र, शान्ति समुद्र, धैर्य हिमाद्री है। ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी महर्षि दयानन्द का स्मरण सदैव गीतों के माध्यम से किया जाता रहेगा।

विशेष - वृत्त - रुक्मवती

अलंकार - अनुप्रास

23. वीराय तस्मै नमः

द्वादश श्लोकात्मक इस कविता में रचनाकार ने देश के वीरों को नमन किया है। कविवर कहते हैं जिन वीर पुरुषों ने जीवन धन, युवावस्था व सुख की परवाह न करते

हुए देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया ऐसे वीरों को शत-शत नमन है। इन देशभक्तों ने कभी स्वयं के विषय में विचार नहीं किया अपितु अपने सर्वस्व सुख व आनन्द का त्याग देश हित में कर दिया है। इन्होंने आंग्ल सेना को कपकपाने पर विवश कर दिया ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी ये वीर भारत भूमि के मस्तक पर मणि के समकक्ष सुशोभित होते हैं। ये वही योद्धा हैं जिनके द्वारा मां दुर्गा की प्रतिमा के समक्ष देश को पीडामुक्त करवाने का संकल्प किया गया था। ऐसे भारतरत्नों को नमन है। इसी क्रम में हम उन देशभक्तों को विस्मृत नहीं कर सकते जो विद्याध्ययन के लिए विदेश गए लेकिन भारत पर संकट आने पर अपना अध्ययन कार्य मध्य में ही छोड़कर वापस आ गए तथा जो नहीं आ सके उन्होंने विदेशी वस्त्रों व सामानों का त्याग करके अपना विरोध प्रकट किया था। हम उन लेखकों वीरों का भी अभिनन्दन करते हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से ही अंग्रेजी सरकार में अपना सिंहनाद कर दिया। जिससे आंग्ल सरकार की रातों की नींद उड़ गई। जिन वीरों को कारागार में डाल दिया गया उनके द्वारा नीडरता से अंग्रेज अधिकारी का सामना करना, उसका उपहास करना जैसे कृत्यों को किया गया। इन वीरों द्वारा अपने देश के मान सम्मान की रक्षा के लिए अनेक साहसिक कदम उठाए गए। हंसते हंसते अपना जीवन देश के लिए न्यौछावर कर देने वाले वीर देश भक्तों को सादर नमन करता हूँ।

वृत्त - शार्दूलविक्रीडितम्

24. भोः । पाकभूशासकाः ।

पंचविंशति श्लोकात्मक इस कविता में रचनाकार पाकिस्तानी शासकों को धिक्कार रहे हैं ये पाकिस्तानी शासक पुरुषार्थहीन हैं जो युद्ध के उन्माद में भ्रमित मति वाले ही दृष्टिगत होते हैं। जिन्हें शान्ति, सहिष्णुता, प्रेम, भाईचारा जैसे शब्दों का तात्पर्य भी नहीं ज्ञात है यह तो केवल काल के ही पर्याय हैं जो केवल आपराधिक निन्दनीय कृत्यों को करने वाले हैं। ये कश्मीर को हासिल करने के लिए नित नए हिंसक कृत्य करते हैं। यह कश्मीर भूमि ही विवाद का सबसे प्रमुख विषय है। कच्छ के रन में पर सन्धि हो जाने के बाद भी पाक शासकों द्वारा कच्छ के पिछले हिस्से पर प्रहार किया। 15 अगस्त के दिन भी भी शस्त्रास्त्रों से युक्त पाकिस्तानियों ने कश्मीर की धरा पर तबाही के उद्देश्य से आक्रमण कर दिया। लेकिन भारतीय आरक्षकों ने उनके इरादों को नस्तेनाबूत कर दिया। तत्पश्चात् भारतीय रक्षा मंत्री महोदय अमेरिका के पेंटागन गये ताकि वे देश की रक्षा के लिए कुछ इंतजाम कर सकें। उन्होंने वहां से स्टारफाइटर एफ-104 खरीदने की पेशकश की वो इस उद्देश्य में सफल भी हो गए लेकिन तभी 01 सितम्बर 1965 को पाकिस्तान द्वारा जम्मू कश्मीर के ही अखनूर नामक स्थान पर पुनः आक्रमण कर दिया गया। इस प्रकार के छोटे-छोटे आक्रमणों को करने में पाकिस्तानी सरकार ने भारत को कुछ बड़ा कदम उठाने पर विवश कर दिया जिसके फलस्वरूप भारत को भी जवाबी

आक्रमण करना ही पडा। पाकिस्तान ने भारत को भाषा जात के आधार पर टुकड़ों में बंट डुआ मानकर यहाँ मनमाने तरीके से प्रवेश करना चाहा। सन्धि के नियमों का उल्लंघन करते हुए भारत की सीमा में प्रवेश किया। पाकिस्तानी सैनिकों के अत्याधुनिक शस्त्रास्त्रों से सज्जित होने के बाद भी भारतीय वीरों ने पाक सेना के इरादों को तोड दिया। कश्मीर में रह रहे मुसलमानों व हिन्दुओं के मध्य जातिगत युद्ध करवाने का प्रयास पाक शासकों द्वारा किया गया। लेकिन उनको यह बात समझनी चाहिए कि कश्मीर में रहने वाले बहुसंख्यक मुसलमान भी यदि इरान, तुर्की, जॉर्डन की तरह भारत विरोधी भी हो जाए तब भी वे भारत भूमि का नुकसान नहीं कर सकेंगे। ऐसे घिनोने कृत्य करवाने वाले पाक शासक कितना भी प्रयास कर ले पर भारतीय वीरों से नहीं जीत सकेगे। तभी तो 6 सितम्बर 1965 को भारतीय सैनिक पाक सेना को खदेडते हुए लाहोर तक ले गए जहाँ उन्होंने भारतीय तिरंगा फहरा दिया था।

वृत्त - शार्दूलविक्रितम्

25. भो। देशभक्तोत्तमाः।।

स्वयं को देशभक्त कहने वाले भारतीयों क्या आप सभी मद से गर्वित हो गये हैं क्या आप सभी को मति भ्रम हो गया है ? जिस कारण आप सभी आपस में ही लडाई झगडा करते हुए नाशोन्मुख हो रहे हैं। क्रोध में अन्धे हुए आपको बाहरी शक्तियों द्वारा कये जाने वाले आक्रमण नहीं दिखाई देते। अन्य देशों से किये जाने वाले गुलिका प्रहारों पर भी आपका ध्यान नहीं जाता। लोकसभा, विधानसभा के निर्वाचित सदस्य अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए सरकारी धन को पानी की तरह बहा रहे हैं। कुछ तो हिंसा और घृणा को बढ़ाने वाले हैं। मैसूर, महाराष्ट्र राज्यों में हुआ सीमा विवाद, मद्रास प्रान्त में भाषा को लेकर विवाद ऐसे विवादों में स्वयं को जोडने वाले इन देशभक्तों को इस बात की चिंता नहीं है कि हिमालय के पार से कोई आक्रमण हो रहा है या नहीं। ये तो केवल राज्यी सीमाओं के लिए लड रहे हैं।

सीमावर्तिपुरं क्वचिन्निवसथं देशे स्वकीये स्थित³¹

मन्तर्भावितुं प्रदेशपरिधौ घोरं जनैर्युध्यते।

भाषार्थ क्रियते क्वचिच्च कलहः सामार्षघातोद्यतै -

रुद्धिग्नः प्रतिभाति कोऽपि न परं त्रातुं हिमाद्रिं परात्।। (25-4)

देशभक्ति का नाम लेते हुए स्वार्थपति के लिए यातायात सेवाएं रोक देना विद्यालयों महाविद्यालयों का अध्ययन कार्य रूकवा देना क्या ये सब हमें विकासशील बनाने वाले हैं ? चीन और पाक जैसे पडोसी देशों के आक्रमणों को मुख्य न मानकर आपसी कलह में ही अपना समय व्यतीत करने वाले हैं। हमारा देश जो कभी सोने की चिडिया कहा जाता था आज भ्रातजनो के कलह से रसातल मे चला गया है। धैर्य, सहिष्णुता, औदार्य, विश्वक्षमा परायण जैसे अमूल्य गुणों संस्कृति को भुलाकर आपसी कलह में लगे हैं। भाषा, जाति, राज्य के आधार पर

स्वयं को बांटने वाले आप स्वयं को देशभक्त कैसे मान सकते हैं ? निर्दोष भारतीय जनता इसको सहन कर रही है। अतः हमें आपसी कलह से बचना चाहिए।

वृत्त - शार्दूलविक्रीडितम्

26. स्वातन्त्र्योपहासः

स्वतन्त्रता रूपी खजाने को प्राप्त करने के लिए भारतीय वीरों ने अपने प्राणों की आहुतियाँ देकर इस स्वातन्त्र्य रूपी यज्ञ में स्वयं को अर्पित किया था स्वतन्त्रता प्राप्ति हो जाने पर इन्होंने सोचा था कि इससे दीन दुखियों के दुखों का अन्त होगा। सभी नागरिक आनन्द पूर्वक जीवन यापन कर सकेंगे। गरीब किसानों के जीवन का कायाकल्प हो सकेगा। लेकिन स्वतन्त्रता के पैतीस वर्ष पश्चात भी लोग अपनी छोटी-2 आवश्यकताओं के लिए तरस रहे हैं तो फिर गरीब किसानों के जीवन में परिवर्तन का तो प्रश्न ही नहीं उठता। देश में दीन हीन लोगों की स्थिति और भी दयनीय होती जा रही है तथा साधन सम्पन्न व्यक्तियों की तिजोरियाँ भरती जा रही हैं। ऐसी स्वतन्त्रता का भला क्या लाभ है जहां गरीब और गरीब तथा अमीर और अमीर हो रहा है। धन के लोभ में मूर्ख हुए लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों का हनन कर रहे हैं। एक तरफ तो मरते हुए गरीब को झोपड़ी भी नसीब नहीं हो रही, दूसरी ओर लोग महलों से नीचे नहीं आते। किसी के पास पहनने को अनेक वस्त्र रत्न आभूषण हैं और किसी के पास तन ढकने तक को वस्त्र नहीं हैं। कुछ लोग टूटी फूटी झोपड़ियों में रहने को विवश हैं और कुछ समस्त सुख सुविधाओं से पूर्ण आलीशान घरों में रह रहे हैं। किसी को खाने के लिए रोटी का टुकड़ा नहीं है और किसी के पास अनेक स्वादिष्ट भोजन व मिष्ठान हैं जो साधन सम्पन्न युक्त हैं वो अपने भवनों में कुत्ते, बिल्ली पाल रहे हैं। उन्हें दूध पिला रहे हैं जबकि गरीब के शिशु के लिए दूध तक नहीं है जिसके अभाव में उनकी मृत्यु हो रही है। श्रमिक वर्ग पाई-पाई को तरस रहे हैं तथा अमीर नए-नए साधनों से सम्पन्न होते जा रहे हैं। देश में बहुत खाद्य व वस्त्र सामग्री है परन्तु आम जनता तक वह पहुंच ही नहीं पाती है। समस्त कार्यालयों में कामचोर भरे हुए हैं भ्रष्टाचार अपनी जडे जमा चुका है। विषम परिस्थितियाँ स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी जस की तस ही हैं। अन्धविश्वास प्राचीन परम्परायें भी लोगों के हृदय में स्थान बना चुकी हैं। इन सबके स्थान पर मानवीय गुणों को धारण करने की आवश्यकता है।

वृत्त - मन्दाक्रान्ता

27. भीषणं दुर्भिक्षम्

कवि ने इस पंचविश श्लोकात्मक कविता में अकाल की भीषणता का वर्णन किया है। यहाँ अकाल की भयावहता को देखकर ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे

विश्वपालक, जगतबन्धु, करुणा के सागर दयाधन, देवों के देव ये कैसी विपरीत परिस्थितियाँ हैं। क्या सम्पूर्ण जल सूखा दिया गया है ? प्रत्येक दिन सैकड़ों जलीय जीव काल का ग्रास बन रहे हैं। महाराष्ट्र, मैसूर, गुजरात राज्य में अकाल की इस भीषण उग्रता को तो लेखनी द्वारा प्रकट भी नहीं किया जा सकता है। नदी, बावड़ी, तालाब, झरने सब जल बिन सूख गए हैं। सब स्थानों पर सूखा ही दृष्टिगत होता है हरियाली तो दूर-दूर तक नजर नहीं आती। खेतों में जहाँ फसलें दिखाई देती थी सूखे के कारण वहाँ हरी घास भी नजर नहीं आती। यह घोर विपत्ति की घड़ी हम सभी के सम्मुख आ खड़ी हुई है। नगर सेवें जनपदों आदि ने भी यथा सम्भव लोगों के लिए जल की व्यवस्था करने का प्रयास किया है। फिर भी, इस अकाल की भीषणता ने सबको जकड़ लिया है। वर्षा की विलम्बता के कारण जो किसान वर्ग वर्षा के अधीन है वो खेती करने में समर्थ नहीं है। उसी प्रकार गाय, बैल आदि जीव जन्तु भी इस कष्टकारक जीवन को व्यतीत कर रहे हैं। न जल है न अन्न है क्योंकि जल नहीं होने से अन्न का उत्पादन भी प्रभावित है। उद्योगों से रहित, भूख से पीड़ित लोग ही सर्वत्र दृष्टिगत होते हैं। जटराग्नि में उत्पन्न ज्वाला को स्वर्ण व रजत आभूषणों से भी शान्त नहीं किया जा सकता है। अतः नगरवासी अपने प्रिय पशुधन को कम कीमतों में भी बेचने को विवश हो रहे हैं। अकाल की भयावहता का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि मनुष्यों के लिए अन्न जल की न्यूनता को देखा ही जा रहा है। लेकिन पशुओं को चरने के लिए घास भी उपलब्ध नहीं हो पा रही है। गांवों में सब ओर सन्नाटा पसरा हुआ है निष्पाप निरीह शिशु भूख प्यास से बिलख रहे हैं। असंख्य जनता भूख प्यास के कारण दम तोड़ रही है। कुलीन स्त्रियाँ जो कभी कष्ट, दुख जैसे शब्दों से भी अनभिज्ञ थी वो आज उनको भोगने को विवश हैं। इस भीषण अकाल ने बालकों को काल का ग्रास बना दिया है। अब तो ईश्वर से यही प्रार्थना है कि जल्द ही वर्षा हो प्यासी धरती की प्यास बुझ जाए और जनजीवन पहले की तरह सामान्य हो जाए।

वृत्त - वसन्ततिलका

28. स्न्नागरा एवं यथार्थराष्ट्रम्

षडत्रिंशत् श्लोकात्मक काव्य में अच्छे राष्ट्र के निर्माण के लिए क्या-क्या आवश्यक है। इसका वर्णन कविवर ने किया है लेखक के अनुसार परतन्त्रता के पाशों में दीर्घकाल से बंधे हुए राष्ट्र के उत्थान के लिए अनेक योजनाओं का निर्माण किया जाना चाहिए। वन पर्वतों आदि को ध्यान में रखते हुए नदी तालाबों नहरों पर सेतु का निर्माण किया जाना चाहिए। जल प्रवाह को रोककर बांधों का बनाना चाहिए। आवश्यकतानुसार उस जल का उपयोग कृषि कार्य में करना चाहिए। इन समस्त कार्यों के साथ ही साथ विशाल सर्विधान निर्माण कार्यालयों, भवनों आदि का निर्माण आवश्यक है। लेकिन इन सबके निर्माण में मनुष्य मूल तत्त्व को विस्मृत करता जा रहा है। भूमि खण्ड वन नदियां पर्व अट्टालिकाएं कार्यशालाएं

वास्तविक रूप में राष्ट्र नहीं है। अपितु ये सब तो मिलकर किसी भी राष्ट्र के बाह्य शरीर निर्मित करते हैं। किसी भी देश के लिए उसमें रहने वाले लोग देश भक्त वीर देश की आत्मा हैं। जिस प्रकार कोई भी अङ्गना सुन्दर आभूषणों को धारण करने से ही रम्य नहीं लगती है बल्कि देह के साथ ही उसके गुण, शील को सुन्दरता उसे रमणीय बनाती है। उसी प्रकार राष्ट्र भी अच्छे नागरिकों को होने से ही उन्नत राष्ट्र बन सकता है। राष्ट्र निर्माण के लिए नागरिकों का चारित्रिक विकास आवश्यक है अन्यथा वो राष्ट्र व्यर्थ है। क्योंकि कोई भी साधन सम्पन्न राष्ट्र के नागरिक आदि भ्रष्ट, धूर्त, ठग हैं तो उस राष्ट्र का ऐश्वर्यशाली होना भी व्यर्थ है राष्ट्र के विकासशील से विकसित होने के क्रम में राष्ट्र की वृद्धि करता है तो भ्रष्टाचार भी उसी गति से बढ़ता जाता है। समस्त योजनाओं के क्रियान्वयन में पापाचार दृष्टिगत होता है। भारत राष्ट्र जहाँ विश्व का सबसे बड़ा संविधान मानवों के लिए निर्मित किया गया है। वहाँ न शांति और न ही सुख दृष्टिगत हो रहा है। हमारी भारतीय संस्कृति जो सम्पूर्ण विश्व में उच्च स्तरीय है। हम यदि उसका विस्मरण करेंगे तो आगे कैसे बढ़ पाएँगे। हमारी संस्कृति हमें केवल शरीर मात्र नहीं समझती अपितु आत्म तत्व का पुंज मानती है। इसलिए संस्कृति की रक्षा अत्यावश्यक है। जहाँ कोई भी वैज्ञानिक खोज लोगों की भलाई के लिए होनी चाहिए वहाँ हिरोशिमा पर अणु बम का प्रहार निराशाजनक है जो आविष्कार मनुष्यों को सुख प्रदान करने के लिए होना चाहिए। वहीं लोगों के नुकसान का कारण बन रहा है। प्राचीन संस्कृति में तो सभी मनुष्य जन्म से शूद्र तत्पश्चात् अपने कर्मों के आधार पर द्विजादि होते थे किन्तु वर्तमान में उस विचारधारा को परिवर्तित कर जन्माधारित जाति निर्धारण अपना लिया गया है। चाहे व्यक्ति संस्कारों से शून्य ही क्यों ना हो। प्राचीन काल में मानव निर्माण की शिक्षा सर्वोपरी शिक्षा थी। परन्तु वर्तमान में समस्त प्राचीन परम्पराओं को भूलकर पाश्चात्त्यीकरण की दौड़ में लगे हैं। यदि डार्विन के वृक्षरूप सिद्धान्त को माना जाए तो भारतीयों में भी वह समस्त संस्कार ही प्राचीन काल से यथारूप आने चाहिए। भारत में प्राचीन शिक्षा पद्धति को भूलकर नवीन शिक्षा व्यवस्था को अपनाया जा रहा है। यह चिन्तन का विषय है कि नई शिक्षा व्यवस्था में किन-2 विषयों का ध्यान रखा जाना चाहिए जिससे अच्छे नागरिकों का निर्माण हो सके। आधुनिक पाठ्यक्रम में साहित्य, संगीत, कला तथा मानव धर्म शिक्षा को अनिवार्य अंग बनाना चाहिए। जो राष्ट्र निर्माण का अमूल्य हिस्सा है।

वृत्त - उपजाति

29. बाङ्गलामुक्ति सङ्ग्रामः

चतुर्विंशति श्लोकात्मक इस कविता में बाङ्गलादेश की मुक्ति के लिए हुए भीषण युद्ध का वर्णन किया गया है। तैमूर, हलाक, नादिरशाह, चङ्गेज खान के अनुयाय बनकर पाप वाले कृत्यों को करने वाले पाकिस्तान के मतान्ध शासकों के कारण ही यह घोर युद्ध हुआ।

अमरीका, चीन आदि राष्ट्रों की सहायता लेकर इस भीषण युद्ध को बढ़ाया गया। बङ्ग प्रदेश की जनता के द्वारा ही निर्वाचन पद्धति से निर्वाचित कण्ठहार के समान लोकप्रिय नायक शेख मुजीबुर रहमान हमेशा अपनी जनता के लिए स्वतन्त्रता की याचना करते रहे। लेकिन बांग्लादेश जो कि पाकिस्तान का ही पूर्वी हिस्सा था इसे स्वतन्त्र नहीं करना चाहता था। बल्कि पाकिस्तान के मदान्ध लोगों द्वारा बंग प्रदेश में हत्या, लूट का कार्य जारी रहा। इस युद्ध की विभीषिका पर दृष्टि डाले तो लगभग 30 लाख लोग इस युद्ध का शिकार बने। उन क्रूरों ने तो न वृद्धजनों, ना ही बच्चों पर दया दिखाई। बंग प्रदेश के लोकप्रिय नेता शेख मुजिबुर रहमान को कारागार में बिना कारण ही डाल दिया। वहीं अमेरिका चीन देश की पाक सेना को हथियारों से समर्थन देते रहते थे। 26 मार्च 1971 से प्रारंभ हुआ यह मुक्ति संग्राम 16 दिसम्बर 1971 तक चला जिसमें आठ माह, 2 सप्ताह, 2 दिन का समय लगा। त्रेता युग में श्री राम ने लंका को पाप मुक्त करके स्वतन्त्र किया था उसी प्रकार भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी बांग्ला मुक्ति संग्राम में वही भूमिका अदा की है। इनके समर्थन से ही बंग प्रदेश में इस क्रांति का जन्म हुआ। जिसके फलस्वरूप ही बांग्लादेश को मुक्ति मिल पाई। अन्यथा पाक शासकों ने तो इस देश के सर्वनाश में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। भारत द्वारा बांग्लावासियों को पूर्वी भारत के विभिन्न हिस्सों में शरणार्थियों के रूप में स्थान दिया। अन्न-धन सभी माध्यमों से बांग्लावासियों को सहयोग प्रदान किया गया।

वृत्त - शार्दूलविक्रीडितम्

30. वेदलहरी

विद+धञ् - वेद अर्थात् ज्ञान, लहरी अर्थात् लहर या आनन्द। वेदलहरी अर्थात् वेदों से प्राप्त होने वाला ज्ञान और आनन्द। जगत् के कल्याण के लिए परमकरुणा मति वाले मुनियों के कोमल हृदय में ईश्वर की ही कृपा से यह ज्ञान प्रकट हुआ। वेदों को अपौरुषेय कह गया है, क्योंकि यह ज्ञान परमात्मा से प्रकट हुआ है या सुना गया है। इस कारण यह श्रुति नाम से इस संसार में अमर हो गया। यह ज्ञान भंडार धर्म की सरिता के समान है जो यह बताता है कि जगत् का प्रमुख तत्त्व ज्ञान क्या है? वो कैसे व कहां प्रकट होने वाला है। यह सभी प्रकार के मत, वादों से रहित बिना शंका वाला है जो परम ब्रह्म की प्राप्ति का मंगल मार्ग दिखाता है। यह मानवमात्र को अखण्ड सौभाग्य सिखाने वाला है यह तीनों लोकों में रहने वाला परम ज्ञान है। इस संसार में जो अज्ञानता रूपी अंधकार फैला हुआ है उसे ज्ञान की रोशनी से रोशन करने वाला है। यह तीनों लोको की अग्नि में तृप्त होकर दुखों को दूर कर सुख प्रदान करने वाला है। जो लोग इस संसार सागर में विषयों मदमोह से ग्रसित हैं उन पर कृपाकर इस तरणी मे पार कराने वाला है। भारतीयों ने ही नहीं अपितु अनेक पाश्चात्य विद्वानों कजीन्स, हीरेन आदि ने भी मुक्त हृदय से वेदों की प्रशंसा की है वे भी वेदों को ज्ञान का अथाह भण्डार मानने वाले हैं पाश्चात्य विद्वानों के कहे अनुसार वेद महाज्योतिस्तम्भ हैं वेद सम्पूर्ण मानव जाति के सुखों का मूल है। वेदों के महत्त्व को अन्य मत शास्त्रों को मानने वाले विद्वानों द्वारा

भी माना गया है। कुछ लोग मोहम्मद के मत को मानने वाले थे कुछ महावीर, कुछ बौद्ध & मार्निुयायी थे। परन्तु वेद के आदेश को मानने वाले सभी मानव धर्म को मानने वाले हैं।

वृत्त - शिखरिणी

31. दयानन्दलहरी

इस कविता में दयानन्द जी की महिमा को बताया है स्वामी दयानन्द अपनी धवल कीर्ति के कारण समस्त जगत में वन्दनीय है। जिन्हें श्रुतियों का आवास स्थल कहना गलत नहीं होगा। ये तीनों लोकों के गुरु हैं। समस्त पण्डितों में श्रेष्ठ है इन्होंने जगत के कल्याण के लिए अपने सुख को त्याग कर दिया था। सम्पूर्ण पृथ्वीवासी खुशीयों के घर के रूप में इनका सम्मान करते हैं। युवावस्था में ही इन्होंने मुनिजनों द्वारा ग्राहय कठोर तप को अपना लिया। अपने प्रियजनों का परित्याग कर दिया। जिस सांसारिक मोहमाया का त्याग करने में लोगों को वर्षों व्यतीत हो जाते हैं उन पाशों को इन्होंने कुछ ही क्षणों में तोड़ दिया। अनेक विषयों के द्वारा भी इनके मन को नहीं हिलाया जा सका, जिस प्रकार बलशाली भीम को विपक्षी दल द्वारा हिलाया नहीं जा सकता था। इन्होंने अपनी प्रखर बुद्धि से गहन वेदार्थ को स्पष्ट कर दिया तथा अज्ञानता रूपी अंधकार को नष्ट कर दिया। दयानन्द नामक यह सूर्य वैदिक जगत में प्रकाशित होगर अन्यो की भी रोशन कर रहा है। तीन प्रकार की अग्नियों से तप्त होने वाले सांसारिक लोग इनके ज्ञान रूपी वर्षा जल से संतुष्ट होते हैं। जगत के आधार प्रलय जनन को करने वाले सर्वशक्तिमान ईश्वर हैं यह बात जानते हुए भी लोग आनंद को छोड़कर अनेक जड मूर्तियों में लगे रहते हैं। उनके इन दुखों को निवारण दयानन्दवर्य द्वारा किया गया। मनुष्य अपने शुभ कार्यों की पूर्ति के लिए जा यज्ञादि करते हैं उनमें निरीह पशुओं की बली देते हैं जिसका विरोध दयानन्द वर्य ने किया क्यों कि निरीह पशुओं की हत्या करके किसी के भी शुभ कार्य कैसे सम्पन्न होंगे। दयानन्द जी के समान अतुल्य पुरुष कोई नहीं हुआ। शतको से चली आ रही रूढ़ीवादिता का खण्डन करते हुए इन्होंने दलितों व शूद्रों को अपने समकक्ष बैठाकर सम्मान दिया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए चलाए जा रहे आन्दोलन का हिस्सा बनकर स्वराज्य का उद्घोष इनके द्वारा किया गया। भारतमाता के आगे ये नतमस्तक हो गए। वे अनाथों के लिए नाथ, दलित वर्ग के मसीहा, गरीबों के शरणदाता थे, जिनका हृदय परमकरुणा से भरा हुआ है। ये अपनी इच्छाओं को त्यागकर संस्कृति को आगे बढ़ाने वाले हैं। यह अनेक प्रतिभाओं के धनी व्यक्तित्व थे जिन्होंने अनेक विद्वानों को जीत लिया, ये बहुत अच्छे वक्ता व नेता तथा, अनेक गुणों व रत्नों से परिपूर्ण सागर के समकक्ष थे। जिसमें क्षमा, शान्ति, औदार्य आदि अनेक रत्न थे।

वृत्त - शिखरिणी

32. विवेकानन्द लहरी

तीनों लोको के कल्याण के लिए भारत भूमि पर धर्म की सरिता बहाने वाले, परम पूजनीय देव रूप विवेकानन्द नाम धारण करने वाले परम ज्ञान पृथ्वी के कल्याण

कर्ता को नमन है। रामकृष्ण परमहंस के परम शिष्य, संस्कृति को आगे बढ़ाने वाले, प्रखर बुद्धि वाले, धर्म के दूत, प्रकृष्ट चरित्र अनुरूप विवेकानन्द जी सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त है। जगत में व्याप्त मिथ्यावादों को दूर करने के कार्य इनके द्वारा किया गया है। आत्म ज्ञान प्राप्त करके किसी उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु विशेष मार्ग का अनुसरण उनके द्वारा किया गया। जिसके पश्चात उस ज्ञान से भारतवासियों को उपदिशित किया गया। इन्होंने सम्पूर्ण वेद ज्ञान को ग्रहण कर पूरे विश्व में उस ज्ञान को बांटा। उदात्त साहित्य के द्वारा संस्कृति का प्राचार-प्रसार किया। स्वयं को मूढ़ तथा निम्न बुद्धि वाला बताते हुए यूरोपियन्स को ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा दी। समृद्धशाली देशों में अग्रगण्य अमरीका के शिकागो शहर में इनके विचारों से प्रभावित अनेक लोग रहते हैं। जो विवेकानन्द जी की बुद्धि व स्वभाव के कायल हैं। इनके द्वारा शिकागो शहर में अपने प्रवचनों में लोगों को ‘‘प्रिय भाईयों और बहनों’’ जैसे मधुर वचनों से सम्बोधित किया। इन मधुर वचनों से प्रभावित हुए लोग इनके शिष्य बन गए। विवेकानन्द जी अनेक कलाओं के धनी थे। उनमें अनोखी वाक कला, वेदादि अध्ययन के कारण उत्पन्न पाण्डित्य, प्रभापुंज, अच्छीदेह, रमणीय वचन शामिल हैं। जिस प्रकार सांप को मन्त्रोच्चार के द्वारा सम्मोहित कर लिया जाता है उसी प्रकार विवेकानन्द जी के मधुर वचनों ने लोगों को मोहित कर दिया था। इनके इस बुद्धि कौशल, वाकपटुता आदि से प्रभावित पण्डितों ने तो यह तक कह दिया कि विवेकानन्द अद्भुत हैं जो उत्कृष्ट गुणों वाले हैं। विवेकानन्द जी के अमृत के समान मधुर धर्म प्रवचनों को सुनकर लोगों का हृदय मोहित व मुदित हो गया। असंख्य लोगों ने इन्हें अपना गुरु मान के दीक्षा ग्रहण की। जब ये भारत लौटे तब इनके विचारों को समस्त दिशाओं में प्रोत्साहन मिला। इन्होंने शूद्र आदि जातियों को सहोदर के समान स्थान दिलाया। बिना शक्ति के मुक्ति नहीं मिल सकती इस बात को ध्यान में रखते हुए सेवाभाव से कार्य किया। लोग इनके विचारों से प्रभावित होकर कार्य करते रहे।

वृत्त - शिखरीणि

33. गान्धिलहरी

2 अक्टूबर को प्रातः काल की सुमधुर वेला में गुजरात राज्य के पोरबन्दर नामक स्थान पर गांधी महोदय ने जन्म लिया। इनका जन्म धनाढ्य वेश्य परिवार में हुआ था। इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात विदेश से कानून की शिक्षा ससम्मान प्राप्त की। विधि शिक्षा प्राप्ति के बाद इन्होंने भारत लौटने का निर्णय लिया। भारत में रहकर भारत के लिए ही कार्य करना चाहते थे। वैसे तो आङ्गल जनों के प्रभाव में आकर अनेक भारतीय देश का तिरस्कार कर रहे थे, किन्तु इन्होंने अपने कुल मातृ वचनों की रक्षा करने का निर्णय लिया। गांधी जी स्वयं के किए जाने वाले कार्यों से डच, फ्रेंच आदि विदेशी नागरिकों में भी वर्चस्व प्राप्त थे। इन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन, दलित वर्ग के उत्थान के लिए आवाज उठाना आदि कार्य

किए। गांधी जी जब किसी कारणवश दक्षिण अफ्रीका गए तब वहाँ की रंगभेद नहीति ने इन्हें बहुत आहत किया था। जिसके फलस्वरूप अफ्रीकावासियों के लिए सत्याग्रह आन्दोलन चलाया गया, जो पूर्णतया हिंसा रहित था। इन्होंने लोगों की पीडाओं को सुनकर उन्हें दूर करने का प्रयास किया। बाल गंगाधर तिलक ने “स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है” यह नारा दिया था। उसी स्वराज की प्राप्ति के लिए गांधी जी ने इस स्वातन्त्र्य युद्ध का 30 वर्षों तक नेतृत्व किया। जब यह युद्ध प्रारम्भ हुआ तो गांधी जी के आह्वान पर अनेक श्रमिक, कृषक, विधि ज्ञाता, तथा धनाढ्य वर्ग भी अपनी फूलों की सज्जा को त्याग कर इस आन्दोलन का हिस्सा बन गए। गांधी जी ने चम्पारण में किसानों के लिए आवाज उठाई। इन्होंने दाण्डी यात्रा या दाण्डी मार्च प्रारम्भ कर दिया था। 1919 में जलियावाला बाग में जनरल डायर द्वारा जो भीषण नरसंहार किया गया उसकी कड़ी निन्दा इन्होंने की थी। गांधी जी ने भारतीयों से एक जुट होकर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी अपनाने पर बल दिया था। इस आन्दोलन का जनता पर गहरा प्रभाव हुआ, जिसके फलस्वरूप जनता ने विदेशी समान का बहिष्कार करना जारी रखा। जिससे अंग्रेजी सरकार तिलमिला उठी। गांधी जी ने शूद्रों को उचित स्थान दिलाने का भी बहुत प्रयास किया। अनेक उपवास रखे ताकि शूद्रों को भी बराबरी का हिस्सा मिले। गांधी के मतानुसार इस पृथ्वी पर जन्म लेने वाला प्रत्येक प्राणी परमपिता परमेश्वर की सन्तान है। अतः हम व्यर्थ की कुरीतियों, अस्पृश्यता में शामिल होकर ऐसा धिनोना कृत्य नहीं करें। हमें भारत में पुनः राम राज्य लाने के लिए प्रयास करना चाहिए। जहां पर सभी धर्मों के लोगों को समान अधिकार प्राप्त हो। दलित वर्ग को इस स्थिति से दूर करने के लिए गांधी जी ने उन्हें ‘हरिजन’ नाम से सम्बोधित करना प्रारम्भ कर दिया। भारतीयों ने उन्हें नारायण के समक्ष उच्च पदवी पर बैठने का अधिकारी माना। गांधी जी के अनुसार पूजा, अर्चना, हवन आदि क्रियाएँ ही धर्म का हिस्सा नहीं है अपितु क्षमा, सत्य, अहिंसा, करुणा, स्नेह तथा मानव धर्म ही सबसे बड़ा धर्म है। अच्छे कर्मों को करने से ही अच्छे फल की प्राप्ति हो सकती है बुरे कर्मों से केवल दुष्परिणाम ही प्राप्त होंगे। अतः मनुष्यों को हमेशा यह प्रयास करना चाहिए कि उसके द्वारा किए जाने वाले कर्म सर्वथा उचित हो। गांधी जी को अनाथों का नाथ, दलितों का मसीहा, करुण हृदय, गौ रक्षक, जनता के प्रिय तथा पूजनीय कहा गया। महान गांधी जी की तुलना हिमालय की ऊँचाई से की गई है तथा कहा गया है कि गांधी जी वो दिव्य पुरुष हैं जिनका गुणगान चारों दिशाएँ करती हैं तथा इनकी महानता के सम्मुख तो हिमालय भी नतमस्तक है। ऐसे गांधी महोदय अतुलनीय हैं जिन्होंने इस भारत भूमि पर जन्म लेकर इस भूमि को गौरवान्वित किया।

वृत्त - शिखरिणी

34. धर्मत्वसमीक्षा (पूर्वाद्ध)

वर्तमान समय में धन परमपदवी को धारण करने वाला है। धन के

माध्यम से विद्या, गुण, ज्ञान, शासकीय पद सब पाये जाते हैं। सरकारी सेवा में भी बिना श्रम के, वित्त की शक्ति से पद प्राप्त किया जाता है। धन से ही सम्पूर्ण सुख सुविधाओं को प्राप्त किया जा सकता है। धन ही यश, कीर्ति के लिए आवश्यक हो गया है। वित्त ही सभी वस्तुओं के लिए मूल रूप में आवश्यक है। कुलयुग में तो धन ही ब्रह्म का दर्जा प्राप्त कर चुका है। लोग रात-दिन धन कमाने के लिए प्रयासरत रहते हैं। अल्पकाल में ही अधिक धन पाने की लोभी प्रवृत्ति लोगों में देखी जाती है। लोग अर्थावलम्बी हो गये हैं। धर्म से विमुख होकर मनुष्य धन, काम की प्राप्ति में लिप्त है। मानवीय मूल्यों साम, दाम, तप, को त्यागकर वित्त प्राप्ति में रत है। भारतीय संस्कृति में भी कहा है-मनुष्य को धन, काम की प्राप्ति धर्मानुसार करनी चाहिए। धन केवल परमपद मोक्ष प्राप्ति का सहायक होना चाहिए। धन, काम सब धर्मानुसार प्राप्त करो ऐसा व्यास जी ने भी कहा है धर्म क्या है ? इसका पालन कैसे करना चाहिए ? इन बातों पर चिन्तन किया जाना चाहिए। धर्म के लिए लोगों की मान्यता है कि धर्म परलोक में लाभ देने वाला है इहलोक में नहीं। यह मिथ्याभाव लोगों के मन में घर कर चुका है। धर्म मनुष्य के लिए समस्त लोकों में कल्याणकारी होता है। सत्य, अहिंसा, शम, दम, तप, त्याग, सौहार्द, शान्ति, स्नेह, विद्यासक्त व्यक्तियों का जीवन ही धर्मयुक्त है। 'जो मनुष्य के आभ्यान्तर गुणों को बाहर लाने वाला है वह ही धर्म है। बाहरी आडम्बरों को छोड़कर प्राणि मात्र दया दिखाना ही धर्म है। कविवर का मानना है अपने अन्तःकरण को शुद्ध रखने वाला मानव जो स्नेह करुणापूर्ण तत्त्वों से युक्त धवल आभा वाला है वहीं धर्म के मार्ग पर चलने वाला है।

वृत्त - मन्दाक्रान्ता

35. धर्मत्वसमीक्षा (उत्तरार्द्धः)

धर्मानुसार कार्य करते हुए मानव जब इस सृष्टि को देखता है तो आश्चर्य चकित हो जाता है। जो मानव विज्ञान को सर्वोपरि, शक्तिशाली मानते हुए विज्ञान पर गर्व करते हैं इस ब्रह्माण्ड में व्याप्त असंख्य ग्रह नक्षत्रों को देखकर स्वयं को तुच्छ प्राणि समझने लगते हैं। इस सुन्दर, विशाल सृष्टि को समझने का प्रयास करते हुए मनुष्य बहुत योजनाएँ बनाता है, ज्ञान-विज्ञान की मदद से सृष्टि के रहस्य को जानने का प्रयास करता है। कुछ जगह वो सफल होता है तथा अन्य स्थानों पर असफल हो जाता है। अथक प्रयासों के बाद भी मानव इस ब्रह्माण्ड के गूढ़ रहस्यों को पूर्ण रूप से नहीं जान पाया है। यथा - क्रमवार रात-दिन का होना, छोटे से बीज से ही विशाल वृक्ष बन जाना, अनेक मानवों की उत्पत्ति, बचपन से युवा, युवा से वृद्धावस्था तक पहुँचने का क्रम यथावत् रहता है। ऐसे अनगिनत रहस्य प्रकृति की गोद में छुपे हैं जिससे मनुष्य ईश्वर की सत्ता स्वीकार करने को विवश हो जाता है। छोटे कुओं, बावडियों, नहरों को बनाने में अनेक मानवों को कई दिन लग जाते हैं किन्तु प्रकृति में ये सब नदी, तालाब, समुद्र पहले से ही हैं। विशाल पर्वत श्रृंखलाएँ, ग्रह-नक्षत्र सृष्टि का भाग है। जो यथावत कार्य कर रहे

हैं। फिर भी विज्ञान व धर्म को अलग-अलग न मानकर एक-दूसरे का पूरक मानना चाहिए। धर्म के बिना विज्ञान अन्धे के समान तथा विज्ञान के बिना धर्म पङ्गु के समान है। दोनों ही मानव के लिए आवश्यक हैं। विज्ञान मानव की प्रगतिशीलता का द्योतक है। धर्म सृष्टि की रचना करने वाले परमतत्व का द्योतक है अतः ये दोनों एक दूसरे के लिए पूरक हैं।

वृत्त - मन्दाक्रान्ता

36. अनात्मवादः खलु दुःखमूलम्

अपने ऐश्वर्य पुण्यशाली कार्यों के कारण हमारा भारत देश तीनों लोकों का चारित्रिक गुरु कहा जाता था। इसके यश को देखकर तो स्वर्गस्थ देवता भी इसका वन्दन करते थे। इसकी कीर्ति सम्पूर्ण जगत में व्याप्त थी। यहाँ के लोग उदार हृदय उच्च चारित्रिक गुणों वाले थे। इनका आदर सत्कार भाव पूरे विश्व में प्रसिद्ध था। ये वो धरा है जहाँ के लोग बिना किसी चिन्ता के चाँदनी में चैन की नींद सोते थे। किसी भी व्यक्ति ने कभी भी चोरी के भय से अपने घर में ताला तक नहीं लगाया। ऐसा वर्णन अनेक विदेशी यात्रियों ने अपनी पुस्तकों में किया है। भारत की गोरवगाथा को केवल भारतीयों ने ही नहीं, अपितु विदेशियों ने भी लेखनी प्रदान की है। भारत भूमि स्वर्ग के समान पवित्र है। इस पर जन्म लेने मात्र से ही मनुष्यों का जीवन धन्य हो जाता है। यूनान, रोम आदि देशों में सुना जा सकता है कि जीवन जीने कि कला, आचार व्यवहार भारत भारत के लोगों से सीखा जाना चाहिए। इन समस्त वक्तव्यों के पश्चात् यह कहना बहुत ही दुःखदायी है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत की दशा को देखकर तो देवगण भी सन्तप्त हो जाते होंगे। आज भारत में न पर्याप्त अन्न, न जल, न निवास स्तर, ना ही आमजन के लिए मूलभूत सुविधाएँ ही उपलब्ध हो पा रही हैं। केवल कुछ ही धन कुबेर हैं, जो ऐश्वर्य सम्पन्न जीवन यापन कर रहे हैं। सर्वोच्च ज्ञान उपाधियों को प्राप्त करने वाला युवा वर्ग ही पाप कर्मों में संलिप्त हुआ दृष्टिगत होता है। जब मद्यादि के सेवन हेतु धन प्रदान नहीं किया जाता है तब इस वर्ग द्वारा अपने स्वजनों को आहत भी किया जाता है। कुछ उदण्ड विद्रोही लोगों द्वारा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए युवा वर्ग गलत पथ दिखाया जा रहा है। हिंसा, घृणा, चोरी, स्वार्थपरता, भ्रष्टाचार आदि कुरीतियाँ वर्तमान में बहुतायत में दृष्टिगत हो रही हैं। पहले सामाजिक सुखों की प्राप्ति हेतु धन, साधन मात्र था किन्तु आज धन ही साध्य हो गया है। मोक्ष प्राप्ति हेतु धर्म प्रवृत्ति अपनायी जाती थी, लोग परन्तु आजकल धन के पीछे ही भागते हैं। शारीरिक सुखों की पूर्ति हेतु वैज्ञानिक आविष्कार किये जा रहे हैं फिर भी कोई भी देश सुखी व शांत नहीं है। सभी देशों में हाय-हाय मची हुई है। वर्तमान की बात करे तो रिश्वत के बिना देश में कोई कार्य नहीं होता ना ही कोई वस्तु शुद्ध रूप में मिल पाती है। सब जगह अशान्ति व्याप्त है। न नारियों में सतीत्व है न मान, न शील, न पवित्रता ही कुछ भी सुरक्षित नहीं है। चारित्रिक गुरु कहलाने वाला भारत देश, पापाचार में लिप्त जनों की भूमि बन गया है। यह असंयम का ही

परिणाम नहीं है अपितु पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण का भी परिणाम है। शरीर मात्र ही मानव नहीं है बल्कि मृत्यु के पश्चात भी आत्मा का अस्तित्व है। वर्तमान में देह मात्र ही लक्ष्य है लोग शुभ-अशुभ, भद्र-अभद्र के विचार के बिना पशुवत जीवन जी रहे हैं। इसलिए समस्त भौतिक सुख सुविधाओं से अमेरिका देश के निवासी भी शान्तिपूर्ण जीवन नहीं जी पा रहे हैं। नींद की गोलियों का सेवन करने पर शांति अनुभव की जा रही है भौतिकवादी विचारधारा वाले लोग स्वार्थपरक होकर अपने वृद्ध माता पिता का त्याग कर रहे हैं। विवाह विच्छेद के अनेक मामले देखने को मिल रहे हैं। जहां सन्तान का त्याग भी दृष्टिगत होता है। अर्थ प्रदान संस्कृति में शुभाशुभ तरीके से धन का एकत्रिकरण मानव जीवन का लक्ष्य बन गया है। भोगों के बिना शरीर यात्रा पूर्ण नहीं होती किन्तु शरीर के मूल तत्व आत्मा को विस्मृत कर केवल भोगों में ही लिप्त रहना उचित नहीं है। भोगों को त्याग पूर्वक भोगा जाना चाहिए यही सब दुखों का कारण है। आत्म इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करके ही कल्याण हो सकता है प्राचीन काल में भी ऋषिगणों ने कहा है कि आत्मा के अतिरिक्त कोई मुख्य तत्व नहीं है। भौतिक सुखों की प्राप्ति कहीं भी हो सकती है पर आत्म शांति हर जगह नहीं मिल सकती है। भाईचारा, सौहार्द, सहानुभूति सच्चा मानव धर्म है। क्षमा, शांति, परोपकार, अक्रोध, विद्या, विनय, अनुराग में सभी धर्म के सहायक तत्व हैं। विज्ञान और धर्म विरोधी न होकर मित्रवत कार्य करें तो वह विश्व के लिए कल्याणकारक होगा। जिस प्रकार विनयता से रहित ज्ञान, सुगंध से रहित पुष्प शोभायुक्त नहीं होता उसी प्रकार धर्म से हीन मनुष्य जीवन इस संसार में व्यर्थ है।

वृत्त - इन्द्रवज्रा

37. लाजपततरङ्गिणी

स्वर्ग में विराजमान देवगणों के समान इस भूमि पर अवतरित होने वाले लाल लाजपत राय जैसे वीरो ने ही भारत को विश्व गुरु की उपाधि दिलायी। आंग्ल शासनों के पाशों में जकड़े भारत को पुनः वैभव इन्ही ने प्रदान किया था। धैर्य को धारण करने वाले धुरन्धर वीर जिन्होंने अपना सर्वस्व देश के स्वतंत्रता यज्ञ में होम कर दिया। ऐसे लाल लाजपतराय जी को पंजाब केसरी की उपाधि दी गई। इनका जन्म लुधियाना के धुडिके नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता राधाकृष्ण शिक्षक थे, जो कि एक चारित्रिक नायक थे। इनकी माता गुलाब देवी एक धर्म प्रिया पति परायण साध्वी वृत्ति वाली महिला थी। लाल लाजपत राय बचपन से ही शिक्षण वृद्धि वाले मेधावी छात्र थे। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा अपने ही निवास स्थान से प्राप्त की तत्पश्चात् वकालत की शिक्षा हिसार से ग्रहण की। वकालत करने का उद्देश्य धर्नाजन करना नहीं था अपितु दीन दुखियों की सहायता करना था। जिस प्रकार जल स्वयं की शीतलता के लिए नहीं बहता, वायु स्वहित के लिए प्रवाहित नहीं होती। उसी प्रकार उच्च विचारों वाले व्यक्ति भी परोपकार के लिए कार्य करने वाले होते हैं। महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते समय नवयुवक मण्डल से प्रभावित होकर ये छात्र नेताओं हंसराज, गुरुदत्त के साथ मिलकर कार्य करने लगे। दयानन्द

सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज में शामिल हो गए कुछ समय बाद ही दयानन्द जी की मृत्यु से शोक ग्रस्त हो गए तत्पश्चात अपने साथियों के साथ दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल की स्थापना राष्ट्रीय स्तर पर करने का निर्णय लिया। अपने प्रारम्भिक जीवन में आर्य समाज का प्रभाव होने से लोगो की सेवा सहायता में तत्पर रहते थे। कांग्रेस में जब गरम दल का उदय हुआ तब गोपाल कृष्ण गोखले को उसका अध्यक्ष बनाया गया। तब बाल गंगाधर तिलक, लाल लाजपत राय, विपिन चंद्रपाल उसके सदस्य बनें। इनकी प्रसिद्धि का अनुमान इस बात से लगाया जाना चाहिए कि जब यह धारा प्रवाह भाषण देते थे तो विदेशी भी अनायास ही इनकी प्रशंसा करने लगते थे।

वृत्त - वसन्तिलका

38. नेहरुनिर्याणम्

ऐसे महात्मा अद्वितीय गुणों से सुशोभित, वीर नायक श्री जवाहर लाल जी नेहरु भारत माता के सपूत थे। जिन्होंने भारत की सेवा के लिए अपने प्राणों का त्याग कर दिया। अपने जीवन की अंतिम श्वास तक विश्व शांति देश हित के लिए कार्य करते रहे। दिव्य प्रतिभा के धनी स्वतंत्रतारूपी युद्ध में महासचिव की भूमिका वाले जवाहर लाल जी नेहरु के स्वर्गवास से भारतीय जनता ने पीडा का अनुभव किया। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होने वाले वैभवशाली पिता की सन्तान जवाहर जी विद्यावान विधिशास्त्र में निपुण थे। राष्ट्रहित में कार्य करते हुए ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर दिया। देशहितार्थ कारावास में भी समय व्यतीत किया। विश्व युद्ध के कारण जब लोग दरीद्रता का जीवन जीने को विवश हो गए बिना घर के अनाथों की तरह रहने लगे, ऐसे लोगो को देख इन्हें बहुत ही पीडा का अनुभव होता था। रावी नदि के तट पर क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रांति का संचार किए। दलितों के उत्थान के लिए अनेक प्रयास किये इण्डोनेशिया की बेसहारा जनता को बंधन मुक्त कराने के लिए राजधानी दिल्ली में परिषद का गठन किया। जवाहर लाल जी गांधी जी के परम सहयोगी मित्र अथवा शिष्य कहे जाते थे। जो गांधी जी के बताये गए सत्य, अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए विश्व को शांति का उपदेश देते थे। अणुबमों के प्रयोग से विश्व को दूर रखना चाहते थे। इन्होंने शांति स्थापना के लिए ही रूस, अमेरिका आदि देशों के साथ कुशलता पूर्वक मैत्री सम्बंध स्थापित किए। साथ ही तीनों लोको में भारत की निर्मल छवि स्थापित की। भाखड़ा, दामोदर, महानदि जैसी नदि परियोजनाओं पर कार्य करते हुए बाँध बाँधवाए तथा इन बाँधो से बिजली उत्पादन का कार्य प्रारम्भ किया। यह कदम देश के कायाकल्प के लिए मील का पत्थर साबित हुआ किसी दक्ष शिल्पी की तरह भारत की नीतियों का निर्माण करते हुए उन्हे तराशते गए। अफ्रीका, एशिया के साथ मिलकर विश्व क्षेम की भावना स्थापित की। सत्य, अहिंसा के पुजारी, अंहकार से रहित, शील व्यवहार वाले जवाहर लाल जी ने विश्व को पंचशील का सिद्धांत दिया। यह एक कुशल प्रणेता थे। जो स्वतंत्रता की गाडी को कुशलता पूर्वक आगे बढा रहे थे। जब इनके दिवंगत

होने की सूचना जनता तक पहुँची तो तीनों लोको तथा आकाश मण्डल में भी शोक की लहर चल पड़ी। किसी राजऋषि के समान समस्त अनुरागों को दूर करते हुए स्नेह, करुणा की मूर्ति बने हुए सभी लोगों में प्रसन्नता बाँटते रहे। इस संसार में जब तक सूर्य चन्द्र तारे पहाड नदि झरने आदि हैं तब तक इस महानायक का नाम अजर अमर रहेगा।

वृत्त - मन्दाक्रान्ता

39. स्वातन्त्र्य वीरोत्क्रमणम्

आंग्ल शासन से देश को मुक्त करवाने के लिए जिन्होंने अपने जीवन की बाजी लगा दी ऐसे वीरो को हमारा कोटी कोटी नमन है। जिनके त्याग शौर्य, बलिदान और समर्पण की गाथा को सुनकर असंख्य वीर इनके पद चिहनों पर चलने लगे। हमारे स्वतंत्रता सेनानी दासता के पाशों में जकड़े हुए थे। उन्होंने दुर्गा माँ के समक्ष विधिवत प्रतिज्ञा ली कि वे देश को मुक्त करवाकर ही दम लेंगे। पूर्व में दुष्ट आंग्ल अधिकारियों ने तरुण भारत संस्था द्वारा बनाई गई स्वतंत्रता की योजना को शस्त्र युक्त होने के कारण विफल कर दिया। तत्पश्चात् स्वतंत्रता गीतों विदेशी वस्त्रों एवं सामानों के बहिष्कार के माध्यम से फिर एक कदम इस ओर बढ़ाया गया। श्री मदनलाल जी ने इस कार्य की कमान संभालते हुए लोगों को विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने हेतु प्रेरित किया। भारत को परतंत्रता से मुक्त कराने के लिए हमारे वीरों ने जो योगदान दिया वो अन्यों ने नहीं दिया।

वृत्त - वसन्ततिलका

40. शास्त्रिशोकलहरी

जवाहर लाल नेहरू जी के पद त्याग के पश्चात् यह प्रश्न खड़ा हुआ कि कौन शासन की बागडोर भली भाँति सम्भाल सकेगा। प्रजातन्त्र के लिए प्रकृष्ट नेतृत्व गुणों वाले व्यक्तित्व की आवश्यकता थी। तब श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का नाम सर्वसम्मति से सबके सामने आया। शास्त्री जी गांधी जी तथा जवाहर लाल नेहरू जी के ही पद चिहनों पर चलकर आगे बढ़ने वाले थे। यह बात बहुत हद तक सही भी साबित हुई। बहुमुखी प्रतिभा के धनी शास्त्री जी अदम्य साहस व नेतृत्व क्षमता से सज्जित थे। भारत-पाक के मध्य हुए युद्ध में भारत को जीत दिलाकर इन्होंने भारतीयों के सम्मुख अमिट छवि बना दी। शास्त्री जी इस युद्ध में जीत हासिल करके नेहरू जी से भी आगे निकल गए जो कि कुशल नेतृत्व क्षमता का परिचायक है। असम, मद्रास में आने वाले झंझावतों में भी कुशलता से निर्णय लिया। नेपाल आदि समीपस्थ देशों के साथ मित्रवत व्यवहार रखते हुए सन्धि की गई। पाकिस्तान का साथ देने से चीन के साथ भी सन्धि कार्य सफल नहीं हो सका। अमेरिका से शस्त्रादि का लेन-देन रहा। साइबर जैट जैसे युद्धवाहक विमानों की पूर्ति सैन्य क्षमताओं को मजबूत करने हेतु की गई। शास्त्री जी के सोच-विचार से लिए गए निर्णयों का प्रभाव भारतीय जनमानस पर भी दृष्टिगत हुआ। शास्त्री

जी जनता के समक्ष एक नायक के रूप में जगह बनाने में सफल हुए। भारत-पाक के बीच युद्ध की समाप्ति हेतु पाकिस्तान के प्रधानमंत्री अयूब खान तथा भारतीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के द्वारा सात दिनों तक चर्चा की गई। जिसके परिणामस्वरूप ही युद्ध समाप्ति की घोषणा की गई थी। भारत-पाक के बीच समझौता हो गया, लेकिन इस निर्णय के तुरन्त बाद ही ताशकन्द में शास्त्री जी की दिल का दौरा पडने से मृत्यु हो गई। उन्होंने लगभग 1 वर्ष 292 दिवस तक भारत का प्रधानमंत्री पद संभाला था। शास्त्री जी के मृत्यु की खबर ताशकन्द से आने पर भारतीय जनता में शोक की लहर दौड़ गई। भारत ने अपना वीर सपूत खो दिया। जिसकी क्षतिपूर्ति किसी के भी द्वारा नहीं की जा सकती थी।

वृत्तं - शिखरिणी

शास्त्री जी का जन्म - 2 अक्टूबर 1904 मुगलसराय

मृत्यु - 11 जनवरी 1966 ताशकन्द

41. इन्दिरा हौतात्म्यम्

अदम्य साहस की धनी इन्दिरा जी स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की पुत्री थी। इंदिरा जी ने लाल बहादुर शास्त्री के बाद भारत के प्रधानमंत्री पद की शोभा को बढ़ाया। इंदिरा जी भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री हुईं। यह धैर्य की मूर्ति, विशाल कीर्ति को धारण करने वाली महिला थी। इनका व्यक्तित्व अलौकिक रोशनी से आलोकित था। बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में अपनी कुशल नेतृत्व क्षमता व साहसिक कदम को दिखलाकर संसार में अपनी अमिट छवि बना ली। लेकिन 31 अक्टूबर 1984 के काले दिन में उन्हीं के अंग सुरक्षा वाले सैनिकों ने गोलियों के प्रहार से इंदिरा जी की हत्या कर दी। ये सैनिक सिक्ख समुदाय वाले थे। इंदिरा जी ने पाकिस्तान से बांग्लादेश के पृथक्करण में साथ देने पर सिक्ख समुदाय द्वारा खलिस्तान के निर्माण का मुद्दा उठाया था। तब इंदिरा जी द्वारा खलिस्तान तथा ऑपरेशन ब्लूस्टार चलाया। यह ऑपरेशन ही उनकी हत्या का कारण बन गए। अन्य सहयोगी जनों द्वारा इंदिरा जी को हर बार इस बात के लिए आगाह किया गया कि वह अपने सुरक्षा बल में से सिक्ख समुदाय वाले सैनिकों को दूर हटा दे। इंदिरा जी सशक्त, दृढ़ विचारों वाली महिला थी। वो किसी से डरकर पीछे हटने वालों में से नहीं थी अतः उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसके परिणाम स्वरूप उन्हें अपने प्राणों का त्याग करना पड़ा। जब पाकिस्तान से बङ्ग प्रदेश को पृथक् करने का निर्णय लिया गया तब दुर्गा का रूप धारण करते हुए बंगाल को पाकिस्तान से मुक्त किया। इसके कार्य से दुनिया ने इंदिरा जी का लोहा मान लिया। अणु अस्त्रों से सुसज्जित अमेरिका जैसे देश भी इनकी प्रतिभा के धनी हो गए। खलिस्तान की माँग करने वाले कुछ जात्यन्ध सिक्खों ने देश से कुशल नेतृत्व को हटा दिया। इंदिरा जी की हत्या कर दी। यह भारतीयों के लिए अनन्त दुःख का कारण बना। जो लोग भारत के टुकड़े करना चाहते थे वे अपने कार्यों में सफल न हो सके। इंदिरा जी के लिए कहा गया है जब तक आकाश में चाँद, सूरज

है, पृथ्वी पर सागर, पहाड़ है, जब तक भारत की प्रतिष्ठा है तब तक इंदिरा जी को उनके पुण्य कार्यों हेतु याद किया जाता रहेगा।

वृत्त - उपजाति

42. इंदिरापुण्यस्मरणम्

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू तथा उनकी धर्म पत्नी कमला देवी जी के घर कन्या रत्न ने जन्म लिया। यह भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री के रूप में प्रसिद्ध हुई। इनका जन्म प्रयाग में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा मुम्बई में तथा बाद में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में हुई थी, यह बहुत अल्प काल के लिए ही आक्सफोर्ड में रहीं। वहाँ इनकी मुलाकात फिरोज गांधी से हुई थी। कालान्तर में इन्हीं से इंदिरा का विवाह हुआ। इंदिरा ने राजीव और संजय नाम के सुन्दर बालकों को जन्म दिया। पिता के सर्वोच्च प्रधानमंत्री पद को सुशोभित करने के कारण अनेक विदूषी महिलाओं, कुशल राजनीतिक गुणों वाले नेतागणों से मिलने का सौभाग्य इन्हे प्राप्त होता रहा। इसलिए यह बचपन से ही राजनीतिक गुणों से परिपूर्ण रहीं। इन्होंने मुक्तिसंग्राम में बालकों की वानर सेना का निर्माण किया। शास्त्री जी के प्रधानमंत्री कार्यकाल में यह सचिव के पद पर कार्यरत थी। शास्त्री जी जब पाक शासन प्रमुख अयूब खान से समझौता करने ताशकन्द गए वहीं उनका देहावसान हो गया। अचानक ही शास्त्री जी के स्वर्ग गमन से कांग्रेस को पूर्णतया हिला के रख दिया। उन्होंने पूर्ण समर्थन देते हुए इंदिरा जी को प्रधानमंत्री पद पर बिठाया। इंदिरा जी के शासन काल में श्रमिकों, कृषकों हेतु अनेक योजनाएँ चलाई गईं। गरीबी हटाओं का नारा लगातार दिया जाता रहा। राष्ट्र की ओर से गरीबों व कृषकों के हित के लिए 20 प्रतिशत तक अंश वित्तकोष से दिया गया। फ्रेंच, अमेरिका जैसे मित्रों के उन्माद में बांग्लावासियों को पीडा पहुंचाता रहा तब बांग्लावासियों ने इंदिरा जी के समक्ष मदद की याचना की और इंदिरा जी ने चण्डी दुर्गा का रूप लेकर बांग्लामुक्ति संग्राम की गाथा लिखी। लोगों की मुक्ति के लिए किया गया यह अब तक का सबसे बड़ा संग्राम था। तत्पश्चात् इंदिरा जी द्वारा उच्च न्यायालय की अवहेलना करते हुए देश में आपातकाल लागू किया। जिसका नतीजा उन्हें सत्ता को गवाकर भरना पड़ा। आपातकाल जैसे पाप को अपने हितों की पूर्ति हेतु इन्होंने जारी रखा। सत्ता की प्राप्ति का ऐसा दुरुपयोग शायद ही विश्व की जनता ने पहले कभी देखा होगा। कांग्रेस की वर्षों पुरानी सत्ता धराशायी हो चुकी थी अब जनता दल द्वारा सरकार बनायी गई। लेकिन आपसी मतभेदों के कारण अल्पकाल (26 माह) में ही पुनः निर्वाचन करवाया गया। जिसमें इंदिरा जी को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ। उनके कृत्यों को आज भी याद किया जाता है ऐसी अतुल्य क्षमताओं वाला नेतृत्व पुनः प्राप्त होना मुश्किल मालूम होता है।

वृत्त - मन्दाक्रान्ता

(iii) वैशिष्ट्य

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने मकरसंक्राति के पावन दिवस पर 14. 01.1989 को “काव्योन्मेषः” नामक काव्यग्रन्थ की रचना की थी। इस काव्य ग्रन्थ में रेणापुरकर जी ने द्वाचत्वारिंशत् काव्यों का समावेश किया है यह काव्य धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजकीय विषयपरक है। इन काव्यों के विषय आधुनिक है किन्तु छन्दों का प्रयोग प्राचीन ही है। अनेक काव्य व्यक्तिपरक है जो कि कालिदास, दयानन्द, विवेकानन्द, गांधी, सावरकर, सातवलेकर, जवाहर लाल, इंदिरा गांधी, शास्त्री, लाजपतराय इत्यादि महान व्यक्तियों से सम्बन्धित है। कुछ काव्य देश प्रेम की भावना को जागृत करने वाले है यथा – “सा खलु धन्या भारतभूमिः” भो दैशभक्तोत्तमा, भो पाकभूशासकाः आदि। आदर्श राज्य का उल्लेख करने हेतु “जीवेच्चिरं भारतलोकराज्यम्” तथा “तावत्स्वराज्यं नहि लोकराज्यम्” नामक काव्यों की रचना की गयी। संस्कृत भाषा के मान सम्मान को ध्यान में रखते हुए संस्कृत को बढ़ावा देने हेतु “सा देववाणी खलु सेवनीया” आलम्बयतामक्षर दिव्यवाणी, “श्रयत विश्वशुभङ्कर संस्कृतम्” नामक काव्यों की रचना की गयी। ये काव्य रेणापुरकर जी के संस्कृत स्नेह को दर्शाने का एक माध्यम भी है। कुछ रचनाएँ उस समय की परिस्थितियों को भी दर्शाती है और घटनाक्रमों को प्रस्तुत करने वाली है यथा – “भीषणं दुर्भिक्षम्” तथा “सन्नागरा एव यथार्थ राष्ट्रम्”। वहीं “कर्मगतिविचित्रा” जैसे काव्य कर्म को आधार बनाकर रचे गये है। प्राचीन तत्व ज्ञान की समीक्षा करने हेतु “विना तेन मानुष्यजन्मैव मोघम्” काव्य की रचना रेणापुरकर जी ने की थी। “काव्योन्मेषः” नामक काव्य संग्रह में प्राचीन एवं आधुनिक सभी प्रकार के विषयों का समावेश दृष्टिगत होता है।

‘काव्योन्मेषः’ नामक काव्य संग्रह में अनेक छन्दों, अलंकारों का प्रयोग किया है जो निम्नानुसार है।

छन्दप्रयोग :-

1. शार्दूलविक्रीडितम् -

लक्षण - सूर्याश्चैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ।।
येनाकारि विशालपाररहितं ब्रह्माण्डमत्यदभुतं
संज्ञाबुद्धिगतिक्रमादिलासितं सोदेश्यसङ्कल्पितम् ।
संख्यातीत सुसूच्यगाढनियमैः सन्दृब्धस चालितं
तर्कातीत विशाल वैभववते तस्मै नमो ब्रह्मणे ।।

2. वसन्ततिलका -

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।
प्राप्य प्रसादकणिकामपि यन्मघोनः
पड.गुः प्रयाति निमिषे गिरिशृङ्गपारम् ।
अन्धोऽपि पश्यतितरां बधिरः शृणोति

मूकश्च वाग्मिवरतां लभते स पूज्यः॥

3. भुजंगप्रयातम् -

लक्षण - भुजंगप्रयातम् चतुर्भयकारैः
कृता मानवेनोन्तभौतिकी सा
यया पक्षि वहेवमार्गेण याति ।
गभीरं जलं गाहते मीनवच्च
धारयां तु वस्तुं नरेर्नैव वेति ।

4. रुक्मवती -

लक्षण - रुक्मवती सा यत्र भमरगाः ।
स्वार्थविचारं भोगविलासं
केवलमात्रं स्वात्मरतित्वम् ।
मानव नूनं वर्जय नित्यं
वाञ्छसि सत्यं प्रेम यदि त्वम् ॥

5. द्रुतविलम्बितम् -

लक्षण - द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ
भरतखण्डमखण्डमिदं पुनः
खलु विधायकघायक सूत्रकम् ।
वितत माहिव मज्जतधेः समं
श्रयत सर्वशुभङ्कर संस्कृतम् ॥

6. उपजाति -

लक्षण - अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥
यस्याः प्रसूताः किल विश्वभाषा
रत्नाकरा दूत्नगणा इवैते ।
यथोष्णरश्मेश्च समस्ततेजः
सा देववाणी सकलैः सुसेव्या ॥

7. मन्दाक्रान्ता -

लक्षण - मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।
भोगासक्ता विषयनिरता देहमात्रं भजन्तो
न ध्यायन्तः किमपि वपुषोऽन्यात्मतत्त्वं विविक्तम् ।
चार्वाकाणामसुरसरणीं भावयन्तो वरिष्ठा
मुद्दृत्तोच्छृड खलयुवजना राष्ट्रचिन्तानिमित्तम् ॥

8. इन्द्रवज्रा -

लक्षण - स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ।

प्राप्तं स्वराज्यं न तु रामराज्यं
मुक्तः स्वदेशो न तु देशपाशः ।
यातः फिरङ्गी न फिरङ्गी रीति
रुत्सृष्ट निर्मोकमहिर्हि याति ।।

9. शिखरिणी -

लक्षण - रसे रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ।
निसर्गादौ लीलाजनित जगदाधारविधिना
जगत्कल्पणार्थ परमकरुणापूर्णमतिना ।
मुनीनामाद्यानां विमलहृदयेषु प्रकटितं
श्रुतेर्नाम्ना ख्यातं जयति भुवने ज्ञानममरम् ।।

अलंकार प्रयोग :-

1. दृष्टान्त अलंकार -

लक्षण - दृष्टानस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम् ।
परं कामक्रोधाग्निना ज्वालिता सा
परिदित्यरूपा त्वया मूढबन्धो ।
यथा काष्ठिकश्चन्दनं मूढबुद्धिः
क्षिप्यग्निमध्ये स चाङ्गारहेतोः ।

प्रस्तुत श्लोक में अज्ञानी मनुष्य व मूर्ख मनुष्य को बताया है जैसे अंगारों के लिए चन्दन की लकड़ी को जलाने वाला व्यक्ति अज्ञानी ही होगा। अतः दृष्टान्त अलंकार है।

यस्याः प्रसूताः किल विश्वभाषा
रत्नाकरद्रव्णगणा इवैते ।
ययोष्णरश्मेश्च समस्त तेजः
सा देववाणी सकलैः सुसेव्या ।।

प्रस्तुत श्लोक में बताया है जिस प्रकार रत्नाकर से समस्त रत्नों की उत्पत्ति हुई है, सूर्य की किरणों समस्त जगत को प्रकाशित करने वाली है। उसी प्रकार इसी भाषा से समस्त भाषाओं की उत्पत्ति हुई है अतः दृष्टान्त अलंकार है।

2. स्वाभावोक्ति अलंकार -

लक्षण - स्वाभावोक्तिरसौ चारु यथावद् वस्तुवर्णनम् ।
सिन्धु तरङ्गे निर्झरनीरे, वायुविहारे पक्षिविरावे ।
मर्मर शब्दे मेघनिनादे, त्वं शृणु बन्धो सुस्वरगीतम् ।।

यहाँ प्रकृति का सुन्दर स्वाभाविक वर्णन किया है अतः स्वाभावोक्ति अलंकार है।

3. अनुप्रास अलंकार

लक्षण अनुप्रासः शब्द साम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्

“प्रेम कुरुध्वं प्रेम कुरुध्वं, प्राणिन्” इत्थं गायति नित्यम्।
 स्थावरजीवः स्निग्धनिसर्गो रे! कुरु कर्णे मानव प्रस्तुत मूढ।।
 श्लोक में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।
 सर्वसुखाप्तैर्निजरवृन्दैर्भाषितभूतिं कीर्तित कीर्तिम्।
 नन्दितनादां वन्दितपादां, भारतभूमिं गायतलोकाः।।

प्रस्तुत श्लोक में अनुप्रास अलंकार है। यहाँ नन्दितनादां, वन्दितपादां भावितुभूतिं, भारतभूमिं इन शब्दों में भा, भू, न्, द की आवृत्ति है।

4. विरोधाभास अलंकार -

लक्षण - विरोधः सोऽविरोधेऽपि विरुद्धत्वेन यद्वचः।
 पापं करोति सततं सुखमेघते च
 पुण्यं करोति बहुधा परितप्यते च।
 इत्थं परस्परविरुद्धगतिं विलोक्य
 ज्ञातुं न शक्यमिह कर्मगतिर्विधिना।।

प्रस्तुत श्लोक में पाप करने वाले मानव का सुख पाना पुण्य करके भी दुःख अनुभव करना ऐसी विरोधाभास की स्थिति का वर्णन है अतः विरोधाभास अलंकार है।

5. अर्थान्तरन्यास अलंकार -

लक्षण - सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते
 तत्र सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणतरेणवा।।
 यावद्भि राज्यपदमाङ्गलगिरा डधिरूढ
 यावच्च सर्वविधरीक्षण माध्यमं सा।
 तावन्न सम्भवति लोकगिरां विकासः
 संवर्धते वटतले नहि बालवृक्षः।।

प्रस्तुत श्लोक में अर्थान्तरन्यास अलंकार है यहाँ बताया है कि जब तक संस्कृत को राजकार्य की भाषा, शिक्षण की भाषा नहीं बनाया जाएगा तब तक इसका विकास उसी प्रकार सम्भव नहीं है जैसे वट वृक्ष के नीचे छोटे पौधे विकसित नहीं हो सकते हैं।

6. रूपक अलंकार

लक्षण - द्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः
 स्वापूर्वं माधुर्यगुणेन नूनं, सुधामपि स्वर्गगतां विधात्री।
 भूमण्डली यामृत कामधेनुः, सम्पूज्यतामक्षर दिव्यवाणी।।

निम्नांकित श्लोक में रूपक अलंकार है यहां संस्कृत भाषा पर कामधेनु का आरोप है।

7. अतिशयोक्ति अलंकार -

लक्षण - सिद्धत्वेऽध्यावसायस्यातिशयोक्तिर्निगद्यते।
 भागीरथी पुण्य जलाभिषिक्तं देवाङ्ग नागीतयश प्रगाथम्।

असंख्य देवर्षिसमिद्धतेजो जीवेच्चिरं भारत लोकराज्यम् ।।

यहाँ पर भारत देश के लिए विशेष वर्णन प्रस्तुत है गंगा के पवित्र जल से तथा अप्सराओं द्वारा भारत यशोगान किया जाता है। अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने अपने “काव्योन्मेषः” नामक ग्रन्थ में अनेक विषयों को सम्मिलित कर पाठक गणों के हृदय को चमत्कृत किया है। प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी संस्कृत पाठकों के लिए चिरपरिचित नाम है। इनकी रचनाएँ समय-समय पर भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। इन्होंने अपने ग्रन्थ में ब्रह्मविद्या परमात्म रहस्य के विषय में बताया है। कविवर के अनुसार ब्रह्मसाक्षात्कार ही मानव का परम प्रयोजन है। कविवर ने संस्कृत भाषा को नए आयाम तक पहुँचाया है लोगों को देवभाषा के सीखने व जानने का महत्त्व बताया है। इन्होंने आंग्लभाषा के स्थान पर देवभाषा को राजकार्य की भाषा बनाने पर जोर दिया है। इन्होंने आंग्लभाषा को पाशों के समान बताया है। संस्कृत भाषा को आम बोलचाल की भाषा बनाने तथा शिक्षा व्यवस्था में भी गीर्वाणी के प्रयोग को महत्त्वपूर्ण बताया। रचनाकार ने अपने काव्यों के माध्यम से राष्ट्र के प्रति अपने अगाध प्रेम को प्रकट किया है देश भक्ति की भावना को जीवित करने का सफल प्रयास किया है। साथ ही साथ भारत के महापुरुषों महात्मागांधी, जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, दयानन्द सरस्वती, सातवलेकर जी, विवेकानन्द जी आदि की सामाजिक व चारित्रिक विशेषताओं को बताते हुए भारतभूमि के लिए इनके योगदान को संसार के समक्ष लाने का प्रयास किया है। कवि रेणापुरकर जी के लिए यह कहना उचित होगा कि वे प्रौढ बुद्धि के धनी हैं। धर्मतत्व की समीक्षा करते हुए उन्होंने बताया “अन्तरंग गुणोत्कर्षसिद्धिः धर्मः” यह धर्म का तात्त्विक निष्कर्ष है। उन्होंने मानव मात्र के साधारण धर्म को भी यमनियम आदि के माध्यम से स्पष्ट किया।

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने अपने काव्योन्मेष में पुरातन व आधुनिक विषयों का समावेश किया है। इस काव्य ग्रन्थ में छन्द व अलंकारों का सुन्दर प्रयोग दृष्टिगत होता है जो कवि प्रतिभा को दर्शाने वाला है।

“भाई शङ्कर पुरोहित” जी के शब्दों में “काव्योन्मेष हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी के काव्यों को पुञ्ज स्थल है। जिसमें रचनाकार ने यथासम्भव प्राचीन व अर्वाचीन विषयों को समाहित किया है। “बाङ्गलामुक्तिसंग्राम” के विषय में रचित यह पद्य -

त्रिंशल्लक्षमिता जना अकरुणं व्यापादिता निष्ठरैः

प्राचार्या भिषजो विधिज्ञमुखरा धीमत्तमाः पण्डिता ।

तत्तच्छास्त्रकलादिकोविदजना बुद्ध्या रहो घातिताः

वासोत्पाटितकोटि सङ्ख्यजना निर्वासिता भारते ।।

इस श्लोक में वैदर्भी रीति तथा प्रसाद गुण को कविवर ने प्रकट किया है।

“वि. पां. देऊलगावकर” जी रेणापुरकर जी के मित्र है जो रेणापुरकर जी के काव्यों के प्रथम वाचक व श्रोता है। इन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रेणापुरकर जी के काव्यों को पढ़ा है। ये केवल औपचारिक पाठक न होकर रसास्वादन करने वाले पाठक है। दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन में कर्णाटक का प्रतिनिधित्व कर रहे रेणापुरकर जी से इनका परिचय हुआ। वहीं से इनकी मित्रता का आरम्भ हुआ। तब श्री देवलगावकर जी इनके काव्यों के प्रथम वाचक व श्रोता हुए।

सन्दर्भ

1. काव्योन्मेषः, 1-2/1
2. ऋक् सूक्त संग्रह, 129-7/438, डॉ. हरिदत्त शास्त्री
3. भीष्मपर्व, 47
4. भीष्म पर्व, 27
5. काव्योन्मेषः, 2-7/3
6. काव्योन्मेषः, 3-7/5
7. काव्योन्मेषः, 5-2/8
8. काव्योन्मेषः, 5-14/10
9. भगवद्गीता द्वितीय अध्याय 2-22/34 डॉ. श्री कृष्ण ओझा
10. काव्योन्मेषः, 6-9/12
11. काव्योन्मेषः, 7-2/13
12. भगवद्गीता द्वितीय अध्याय 2-61/79 डॉ. श्री कृष्ण ओझा
13. काव्योन्मेषः, 8-8/17
14. भगवद्गीता द्वितीय अध्याय 2-47/61 डॉ. श्री कृष्ण ओझा
15. काव्योन्मेषः, 10-1/21
16. काव्योन्मेषः, 10-17/23
17. काव्योन्मेषः, 11-12/26
18. काव्योन्मेषः, 13-11/32
19. काव्योन्मेषः, 13-16/32
20. काव्योन्मेषः, 14-4/33
21. भगवद्गीता द्वितीय अध्याय 2-31/43, 44 डॉ. श्री कृष्ण ओझा
22. काव्योन्मेषः, 14-18/36
23. भगवद्गीता द्वितीय अध्याय 2-30/32 डॉ. श्री कृष्ण ओझा
24. काव्योन्मेषः, 15-12/42
25. काव्योन्मेषः, 16-2/43
26. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी पृ. 136
27. काव्योन्मेषः, 17-7/46
28. काव्योन्मेषः, 20-1/54
29. काव्योन्मेषः, 20-9/55
30. काव्योन्मेषः, 21-5/57
31. काव्योन्मेषः, 25-4/72

तृतीय खण्ड
सांस्कृतिक महाकाव्य -
प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्

तृतीय खण्ड

सांस्कृतिक महाकाव्य - प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्

(i) सामान्य परिचय

भारतीय संस्कृति तो भारत की प्राणस्वरूप ही है। संस्कृति के बिना भारत की क्या पहचान है? वस्तुतः पूरे विश्व में भारतदेश की जो गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा सुशोभित है उसमें मूल कारण भारतीय संस्कृति ही है। इस प्रकारके भारत की आत्मा विषयक महनीय तत्व को प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर महोदय ने अपने “प्राचीनभारत-संस्कृतीयम्” नामक महाकाव्य में गुम्फित किया है। “प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्” सत्रह सर्गों और पन्द्रह सौ श्लोकों में भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ गुणों का वर्णन करने वाला महाकाव्य है। इसके प्रथम सर्ग “संस्कृतिः सभ्यता च” में 65 श्लोकों में भारत के महान व चारित्र्य गुरु होने का गौरव गान किया है। आध्यात्मिक मौनमार्ग व प्रेयमार्ग इनके फलों के वर्णन के साथ है। संस्कृति तथा सभ्यता क्या है? इसका भी वर्णन किया है। द्वितीय सर्ग “पूर्वपीठिका” में 127 श्लोकों में अध्यात्मवाद के विषय में लिखा गया है। कवि कहते हैं कि हमारी संस्कृति त्याग प्रधान है। न की भोग प्रधान। हम लोग जीवे और सब लोग भी जीवें। यह भारतीय संस्कृति का मूलमन्त्र है। तृतीय सर्ग “पुरुषार्थ चतुष्टयम् - तत्र धर्मः” में 65 श्लोकों में पुरुषार्थचतुष्टय के प्रथम अंग में धर्म एक ही है अनेक नहीं यह स्पष्ट किया है। मानव यही ब्रह्मभाव को प्राप्त करता है और नर से नारायण के दिव्य भाव को प्राप्त करता है। यही संसार में धर्म है इस भाव को प्रकट किया है। चतुर्थ सर्ग “अर्थः” में 102 श्लोकों में कहा है कि धन साध्य नहीं केवल साधन है। साध्य तो मोक्षसुख की प्राप्ति है। पंचम सर्ग “कामः” में 86 श्लोकों में काम विषयक वर्णन किया है। षष्ठ सर्ग “मोक्षः” में 92 श्लोकों में कहा गया है कि जीवन में भोगवृत्ति का अन्तत्याग में है और प्रवृत्तिमार्ग का अन्त निवृत्ति मार्ग में है उसी प्रकार धर्म, अर्थ काम इन तीनों का अन्त भी स्वाभाविक रूप से चतुर्थ मोक्ष पद में हैं। सप्तम सर्ग “आत्म-तत्त्वम्” में 130 श्लोकों में आत्मा, परमात्मा विषयक वर्णन है। “कर्मतत्त्वरहस्यम्” नामक अष्टम सर्ग में 89 श्लोकों में कर्म विषयक श्लोकों को उद्धृत किया है। नवम सर्ग “निष्काम कर्मयोगः” में 69 श्लोकों में फल की आशा किए बना, कर्तव्य बुद्धि से किया जाने वाला श्रेष्ठ कर्म ही निष्काम कर्म है इस उज्ज्वल रत्न का वर्णन है। दशम सर्ग “वर्णाश्रमव्यवस्था” में 118 श्लोकों में चारों आश्रमों का वर्णन किया है। “वर्ण व्यवस्था” नामक एकादश सर्ग में 143 श्लोकों में जन्म पर आधारित न रहने वाली तथा गुण और कर्म पर आधारित भारत की वर्णव्यवस्था का वर्णन है। द्वादश सर्ग “भारत संस्कृतेः पञ्चावष्टम्भाः” नामक में 146 श्लोकों में भारतीय संस्कृति के पाँच आधार स्तम्भों का वर्णन है। “शिक्षा” नामक त्रयोदश सर्ग में 50 श्लोकों में प्राचीन तथा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था प्रमुख विषय को बनाया गया है। “यज्ञः” नामक चतुर्दश सर्ग में 50 श्लोकों में यज्ञानुष्ठान की विधि तथा महत्त्व

को स्पष्ट किया है। “संस्कारैर्मानव निर्माणम्” नामक पञ्चदश सर्ग में 56 श्लोकों में संस्कारों द्वारा श्रेष्ठ मानव के निर्माण का वर्णन है। षोडश सर्ग “शासन व्यवस्था” में 33 श्लोकों में शासन की भिन्न-भिन्न पद्धतियों का वर्णन है। अन्ततः “प्राचीनभारते विज्ञानम्” नामक सप्तदश सर्ग में 80 श्लोकों में स्पष्ट किया गया है। कि संपूर्ण विज्ञान यहीं पर उन्नत हुआ था।

(ii) सर्गानुसारी विवेचन एवं विश्लेषण

प्रथम सर्ग - संस्कृति: सभ्यता च

“प्राचीन भारत संस्कृतीयम्” दीर्घकाव्य के प्रथम सर्ग में संस्कृति और सभ्यता से जुड़े प्रश्नों के उत्तर ढूँढने का प्रयास किया गया है कवि “प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी कहते हैं हमारा देश दीर्घकाल तक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा रहा है आज जब हमारा भारत वर्ष परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त हो गया है तब हमें अपना मार्ग निर्धारण करना है। हमारे सम्मुख दो मार्ग हैं एक आध्यात्मिक मौनमार्ग है जो सर्वश्रेष्ठ है और दूसरा भौतिक प्रेममार्ग है। इन दोनों मार्गों के फल का भी निर्देश किया गया है। भौतिक प्रेममार्ग पर चलकर तो घोर युद्ध और हाहाकार को संसार ने अनुभव किया है। इसलिए संसार के कल्याण की कामना करने वाले ऋषिमुनियों ने मैत्री, दया, स्नेह, परोपकार आदि शाश्वत तत्त्वों के मूल पर ही विश्व के पुनःनिर्माण की अभिलाषा की है। इनके अनुसार अहिंसा, अस्तेय, सत्य, विद्या, मैत्री, दया, स्नेह और सहिष्णुता आदि गुणी की संसार में आज सबसे अधिक आवश्यकता है नहीं तो विनाश अपरिहार्य है।

अहिंसानामोषणसत्य विद्यामैत्री दयास्नेह सहिष्णुतानाम्।

सर्वाधिकावश्यकता ऽस्ति लोके नो चैद्विनाशोऽपरिहार्य एव ॥ (1.8)

प्राचीनकाल से चली आने वाली भारत की आध्यात्मिक शक्तिशाली, भव्य, दिव्य परंपरा एवं संस्कृति तथा सभ्यता को भुलाकर राष्ट्र का उत्थान कदापि शक्य नहीं है। संस्कृति क्या है? इस प्रश्न का उत्तर लेखक इस प्रकार देते हैं - किसी देश की जनता किसी विशिष्ट भूखंड पर निवास करने वाले लोगों के द्वारा परस्पर मिलकर प्रदीर्घकाल तक साथ रहकर प्रारम्भ की गयी आचार, संस्कार चिंतन की प्रक्रिया अपने अंदर और बाहर का विकास, संस्कार और परिष्कार ही उनकी संस्कृति है। हृदय और मन की कोमल महाभावनाओं का विकास उच्च संस्कृति कहलाता है संस्कृति के साथ प्रमुख रूप से जुड़ा हुआ शब्द है सभ्यता। संस्कृति क्या है? इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट कर देने के उपरान्त प्रश्न उठता है कि सभ्यता क्या है? सभा में जो अच्छा होता है वही सभ्य कहलाता है। इस प्रकार सभा में सुशोभित सम्य पुरुष संस्कृति युक्त ही होता है। अपनी बुद्धि की शक्ति द्वारा प्रकृति पर विजय प्राप्त कर नाना प्रकार के आविष्कार करके जीवन में भौतिक सुख की प्राप्ति और बाहरी विकास की सभ्यता है।

तुल्यार्थकौ संस्कृतिसभ्यताख्योशब्दौ भव्यतामपि भिन्नभावौ।²

आभ्यान्तराध्यात्मिकभावमेको धत्ते बहिर्भौतिक भावमन्यः ॥ (1.19)

संस्कृति और सभ्यता ये शब्द समानार्थक होते हुए भी भिन्न भावों के द्योतक हैं एक मनुष्य के आंतरिक आध्यात्मिक भावों का वाचक है तो दूसरा बाहरी भौतिक भावों का

द्योतक है। संस्कृति को जनजीवन की अन्तरात्मा कहा है जबकि सभ्यता बाह्य शरीर है इसलिए सभ्यता का तो त्याग किया जा सकता है किंतु संस्कृति का नहीं। वेगवान विमानों में दौड़ने वाले लोग यदि निष्पाप लोगों पर अस्त्रों की वर्षा करते हैं तो उनकी वह सभ्यता व्यर्थ है जबकि घास की झोपड़ी में रहने वाला और वल्कल वेश धारण करने वाला, शिक्षा विहीन, बैलगाड़ी में जाने वाला किंतु भाईचारा और स्नेह, दयदि से युक्त हो तो असभ्य भी श्रेष्ठ है। अपने आप को दुनिया में सभ्य समझने वाले पाश्चात्य राष्ट्रों ने अपने विजित और शासित देशों पर जो भयंकर और दारुण अत्याचार किए वे संस्कृति के माथे पर कलंक का टीका है। सार्थक नाम धारण करने वाली श्रेष्ठ संस्कृति वही है जो मानव की आत्मिक दिव्य शक्ति को जगाकर पूर्ण विकसित करती है जैसे किसान बीज को सुविशाल वृक्ष में विकसित करता है।

अन्तर्बहिः पूर्णाविकाससिद्धः संस्कारसम्पन्नरोह्यभ्रीक्षणम्।

विज्ञायते कृष्टिपदेन वेदे ततः समौ संस्कृतिकृष्टिशब्दौ।। (1.35)

अन्दर-बाहर पूर्ण विकसित और संस्कार संपन्न मनुष्य ही वेदों में अनेक बार कृष्टि शब्द से जाना जाता हूँ। अतः संस्कृति और कृष्टि शब्द समानार्थक ही हैं। ऋग्वेद की निम्न पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है -

उत नः सुभगाँ अरिवौचेयुर्यद स्म कृष्टयः।¹

श्यामेदिन्द्रस्य शर्माणि।। (ऋग्वेद 1-4-6)

मित्रः कृष्टीरनिमिष भिचष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत।² (ऋग्वेद 3-29-1)

कृषि, कृष्टि, कृषक, कर्षण आदि सभी शब्द हल चलाना अर्थवाले कृष् धातु से ही निकले हैं अंग्रेजी का कल्चर शब्द भी खेती में मेहनत करने का ही वाचक है। संस्कृति और कल्चर ये दोनों शब्द मनुष्य के सर्वांगीण विकास के द्योतक हैं। किसान के अनेक कार्यों में बीज का संवर्धन ही प्रमुख कार्य है, उस प्रकार श्रेष्ठ संस्कृति के अनेक कार्यों में मनुष्य की आत्मा की उन्नति ही मुख्य कार्य है। मनुष्य को सारा विश्व, विश्व के लिए प्रिय नहीं है बल्कि आत्मा के लिए प्रिय है। मानव के सारे क्रियाकलापों का केन्द्र निश्चय ही उसकी आत्मा ही है। वन को प्रस्थान करने वाले महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपनी मुमुक्षु पत्नी मैत्रेयी को उपदेश देते हुए कहा था कि बन्धु-बान्धव, पति, पुत्र, पत्नी आदि सब आत्मा के लिए ही प्रिय होते हैं।

वनं प्रयास्यन् मुनियाज्ञवल्क्यो मुमुक्षुपत्नीं निजगाद पूर्वम।

यद् बन्धुवर्गः पतिपुत्रद्वारा लोके समस्तं प्रियमात्महेतोः।। (1.43)

संदर्भ - याज्ञवल्क्य मैत्रेयी संवादः।

बृहदारण्यकोपनिषद् याज्ञवल्क्यः मैत्रेयी कथैयति स होवाच न वा अरे पत्युः

कामाय पतिः प्रियो भवति आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति । न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति अत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति । न वा अरे पुत्राणां कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति । आत्मनस्तु कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति आत्मनस्तु कामाय सर्व प्रियं भवति । .
.....आत्मा वा अरे दृष्टव्यः श्रोतव्यः मन्तव्यः निदिध्यासितव्यः ।

आत्म तत्व की सत्ता सभी मनुष्यों में समान रूप से विद्यमान है उसी आत्मा के कल्याण और मुक्ति के लिए ही संसार की सभी वस्तुएँ हैं । इसीलिए केवल आत्मा का ही निरंतर अनुशीलन, ध्यान, चिंतन और विचार होना चाहिए । जब तक शरीर में आत्मा है तब तक ही इन्द्रियाँ कार्यप्रवण होती हैं । भस्म होने वाला यह शरीर हम नहीं हैं, और न बुद्धि, मन और इन्द्रियाँ ही हम हैं किन्तु जन्म मरण से रहित और सचिदानन्द स्वरूप अमर और निर्जर आत्म तत्व ही हम हैं ।

संदर्भ - न जायते म्रियते वा कदाचिन्⁴
नायं भूत्वाऽभविता वा न भूयः
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।। (भगवद्गीता 2.20)

इस प्रकार याज्ञवल्क्य मुनि ने यथार्थ कल्याण चाहने वाली अपनी पत्नी को उपदेश दिया, यम ने नचिकेता को दिया और ऐसा ही उपदेश सनत कुमान ने नारद को दिया ।

संदर्भ - यमनचिकेता संवादः - कठोपनिषद् (द्वितीयवल्ली)
न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् ।⁵
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।। (2-18)
नारदाय सनतकुमारोपदेशः । छान्दोग्योपनिषद्⁶ (7-1-26)

इसी क्रम में संस्कृति व सभ्यता के विषय में अपने विचारों को प्रकट करते हुए कह रहे हैं कि प्रकृति में अस्तित्व का संघर्ष शुरू होने पर केवल बलवान ही जीवित रह सकता है इस प्रकार पशुपक्षियों की हीन नीति का ही उन सभ्य समझेजाने वाले लोगों ने अनुसरण किया है । उसी का परिणाम है कि मनुष्य ने मनुष्यों का ऐसा घोर शोषण किया है जो पशुओं ने भी नहीं किया । यह संस्कृति का दूषण और कलंक है । श्रेष्ठ संस्कृति मनुष्यों को प्रेमपूर्वक ओर बंधुभाव से रहने का उपदेश देती है वह दुर्बलों की रक्षा के लिए स्वार्थ छोड़कर परोपकार करने के लिए अवश्य ही आदेश देती है ।

सब प्राणियों में समान रूप से अद्वैत का अनुभव करने वाली और सबको मित्र की दृष्टि से देखने वाली हमारी श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति संसार में अद्वितीय है । संसार के

सभी प्राणिमात्र को परमपिता परमात्मा के समान पुत्र होने की घोषणा कर सबको सहोदरत्व स्थापित करने वाली हमारी संस्कृति वास्तव में परम धन्य है।

समस्तभूमण्डलभूतमात्रानुदघोष्य तुल्यान् जगदीशपुत्रान्।

प्रस्थापयन्ती च सहोदरत्वं सुधन्यधन्या अलु संस्कृतिनः।। (1.65)

विशेष - प्रथम सर्ग में समस्त श्लोकों में उपजाति वृत्त का ही प्रयोग किया गया है।
सर्गान्त में भी उपजाति वृत्त का ही प्रयोग किया है।

द्वितीय सर्ग - पूर्वपीठिका

प्रथम सर्ग में संस्कृति और सभ्यता के तारतम्य को बतलाकर पूर्वपीठिका नामक दूसरे सर्ग में कवि संस्कृति के प्राचीन इतिहास को बता रहे हैं कि प्राचीनकाल में इस पृथ्वी पर ग्रीक रोमन असीरियन, मिश्र, चीन, सुमेरियन, हिट्टाईट, खाल्डियन इत्यादि अनेक शक्तिशाली संस्कृति और सभ्यताएँ थी किन्तु काल के अंतराल में सब लुप्त हो चुकी हैं। हमारी अनन्य साधारण भारतीय संस्कृति आज भी जीवित है। बड़े-बड़े आक्रमणों तथा उग्र और क्रूर आततायियों के कठोर प्रहारों को सहन करके भी हमारी अनश्वर संस्कृति आज भी अक्षुण्ण है। चंगेज खान, तैमूर लंग, सिकंदर, नादिरशाह, मंगोलो, मुगलों आदियों के क्रूर आक्रमण के बाद आज भी संस्कृति की जीवन्तता से यह अनुभव होता है कि निश्चय ही यहाँ कोई अद्भुत कारण और शक्तिशाली तत्त्व होना चाहिए जिसके कारण यह निर्जर, अजर, अमर है। हम भारतीयों को इस बात पर विचार अवश्य ही करना चाहिए, तभी हमारा यह महान देश फिर से तेजस्वी तथा कल्याण और ऐश्वर्य के शिखर पर आरूढ़ होकर पुनः संसार का अद्वितीय दीक्षा गुरु और दिग्दिगन्त में कीर्तिशाली होगा, किन्तु दुख से कहना पड़ता है कि राष्ट्र के निर्माण में लगे सभी नेताओं और जनता ने आज उसी संस्कृति को भुला दिया है। उसके परिणाम स्वरूप आज देश में न सुख है न शान्ति है।

हा हन्तः । तद्विस्मृतमद्य सर्वे राष्ट्रस्य निर्माणविद्यौ निलीनेः तस्यैव नूनं परिपाक
एष यदद्य देशे न सुखं न शान्तिः ॥ (2.10)

आधुनिक युग के वैज्ञानिक ने केवल साधारण कारणों की खोज की है जबकि आध्यात्मिक दिव्य आर्षदृष्टि से युक्त और ध्यान में निमग्न ऐसे हमारे सार्वभौम ऋषि मुनियों ने जिस महनीय तत्व का साक्षात्कार किया था वह वास्तव में बड़ा अपूर्व और अद्भुत था।

संदर्भ - हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पति रेक आसीत् ।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कर्त्तुं देवाय हविषा विधेम् ।।

(ऋग्वेदः 10-12-1)

राष्ट्र का निर्माण करने वाले देश के कर्णधारों को आज भी उसी मार्ग पर चलना चाहिए। चारों तरफ दिखाई पड़ने वाला यह विशाल विश्व ही मात्र अंतिम तत्त्व नहीं है उसके पीछे परमात्म तत्त्व है और वही मुख्य है न कि यह विश्व। हमारा शरीर भी अंतिम सत्य तत्त्व नहीं है उसके पीछे भी चेतन आत्मतत्त्व है। इस विश्व में यथार्थ सत्ता उसी की है। हमारा शरीर और ब्रह्माण्ड भी यदि सत्त्ववान सत्तान्वित और प्राणगुणों से युक्त है तो उसी के कारण है और उसी से हमारे शरीर की शोभा व सुन्दरता भी उसी आत्मतत्त्व के कारण ही है। सुन्दरवेश, आभूषणों उबटन से विभूषित यह शरीर भी आत्मतत्त्व के चले जाने क्षीण है।

सन्दर्भ - अस्य विस्त्रंसमानस्य शरीरस्य देहिनः।^१
देहाद्विमुच्यमानस्य किमत्र परिशिष्यते एतद्वै तत्।। (कठोपनिषद् 2-2-4)

न प्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति कश्चन।
इतरेण तु जीवति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ।। (कठोपनिषद् 2-2-5)

अयोध्या कहलाने वाले हमारे नव द्वारों से युक्त शरीर का आत्म तत्व चले जाने पर शरीर का क्या मूल्य है इस पर विचार आवश्यक है -

संदर्भ - अष्टचक्र। नवद्वारा देवानां पूर्योध्या।^१
यस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषाःऽवृत्तः।। (अथर्ववेद 10-2-31)

यह जगत् स्वाभाविक और स्वयं बना हुआ है उसका न कोई कर्ता है न हर्ता। इस देह के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है यह भौतिकवादी तत्व है। केवल आत्मा ही सत्य है और जगत् मिथ्या है, शरीर ओर उसके भोग भी मिथ्या ही है, आत्मा को छोड़कर बाकी सब त्याज्य है यह आध्यात्मिक दृष्टि भी एकांगी ही है। यह दोनों दृष्टियां सत्य नहीं है शरीर और आत्मा इन दोनों में से कोई भी त्याज्य नहीं है। उनकी स्थिति साधन और साध्य की है अत्यन्त रमणीय और अद्भुत विश्व को विधाता ने भोग के लिए रचा है। किन्तु भोग में लिप्त लोगों को यह नहीं भूलना चाहिए कि उन दोनों का वियोग भी अनिवार्य है। दुनिया में सभी सुख चाहते हैं और वह भोगों में है किन्तु उनमें लिप्त होने में नहीं है। निर्लिप्त भाव से और ममत्व को छोड़कर उनका भोग करना चाहिए यही सुख का मार्ग है। न त्यागवाद न भोगवाद, कोई भी अकेला सुख का कारण नहीं है उन दोनों का समन्वय ही वास्तव में हितकारी और सुखदायक हो सकता है। भस्म होने वाला शरीर हम नहीं है किन्तु जन्म-मृत्यु से रहित और सत्य तथा चैतन्य स्वरूप अमर और निर्जर आत्मतत्व ही हम है।

संदर्भ - ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीया मा गृह्यः कस्य रियद्धनम्।। (यजुर्वेद 40-1)

यदि संसार है तो भोग समुदाय भी है। उनसे न डरना है न भागना है। उनमें निःसंग और निर्लिप्त वृत्ति से डटे रहना है जैसा कीचड़ में कमल और पानी में तेल होता है। आत्म अपने साधन रूप शरीर को धारण कर परमात्म तत्त्व को प्राप्त करना चाहता है। वहीं उसका परम निधान और साध्य है और गन्तव्य पद भी वहीं है। नदियाँ अपने केन्द्र समुद्र की ओर दौड़ती हैं। अग्नि की ज्वाला भी अपने केन्द्र सूर्य की ओर जाती है। ऊपर फेंका हुआ मिट्टी का ढेला भी पृथ्वी की ओर चला आता है उसी प्रकार आत्मतत्त्व भी अपने केन्द्र परमात्मतत्त्व को प्राप्त करना चाहता है।

धावन्ति नद्यो जलधिं स्वकेन्द्रं सूर्यं प्रयात्यग्निशिखात्मकेन्द्रम्।
उत्क्षिप्तलोष्ठोऽपि घरां प्रयाति प्रेष्युस्तथाऽऽत्मा परमात्म तत्त्वम्।। (2-44)

संदर्भ - आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु ।¹⁰

बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ।। (कठोपनिषद् 1-3-3)

असंख्य जन्मजन्मांतरों एक चलने वाली आत्मतत्त्व की लंबी यात्रा तब तक चलती रहेगी जब तक परमात्म तत्त्व की प्राप्ति नहीं होगी। प्राचीन मुनिवरो ने उच्च स्वर में यह घोषित किया था कि इस दुर्लभ मनुष्य योनि में ही उस महदात्मतत्त्व का साक्षात्कार हुआ तो कल्याण है, नहीं तो महाविनाश है, धन से मनुष्य की तृप्ति नहीं हो सकती और न धन से आत्म तत्त्व की प्राप्ति हो सकती है। आत्मज्ञान के बिना न सुख है न शांति। यही वेदादिशास्त्रों का सार है।

संदर्भ - इह चेदवेदीहथ सत्यमस्ति ।

न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः ।।

(केनोपनिषद् 2-5, बृहदारण्यकोपनिषद्) (4-4-14)

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तम अदाक्ष्म चेत्या¹²

(कठोपनिषद् 1-3-3)

धन के लिए संसार को लूटने वाले नादिर, सिकंदर, तैमूरो की तथा अत्यन्त विकराल अंत के भागी साम्राज्य धुरंधरो की कथा भी इससे भिन्न नहीं है परमशांति और कल्याण ही कामना करने वालों को मन से आत्मा का ही चिंतन और मनन करना चाहिए। उसी से समस्त दुखों का अंत होगा।

संदर्भ - वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।

तमेव विदित्वाऽमृष्युमेति नान्यः पन्था विद्यते ऽ यनाय ।। (यजुर्वेद 31-18)

अनात्मवादि और भयानक जीवन दर्शन का ही यह परिणाम है कि आज सर्वत्र हिंसा, घृणा, चोरी और लूटपाट का मुक्त साम्राज्य है। शरीर का सुख ही यदि अंतिम साध्य है और वही केवल वित्त पर अवलंबित है तो कोई आश्चर्य नहीं। मानव केवल धन के लिए ही पागल होकर धन में ही लग जाता है इसलिए आज देश में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, चोरी और मिथ्याचार, विद्वेष, हत्या, लूटपाट आदि अनिर्बाध रूप से देखे जाते हैं। क्योंकि जैसा बोया जाता है वैसा ही अनाज प्राप्त होता है।

ईर्षाघृणास्तेय वितथ्यचर्या विद्वेषहत्यावधलुण्ठनानि ।

निरर्गलं सन्ति समस्तदेशे सस्यं यथोप्तं हि जना लभन्ते ।। (2.65)

समस्त वेदों उपनिषदों, वेदान्त गीता आदि शास्त्रकारों ने घोषणा की थी कि यह चराचर विश्व उस परमात्मा के द्वारा ही व्याप्त है, निर्मित है वहीं सबका माता-पिता है। अतः उन सबका भाईचारा, बंधुत्व भी जन्मसिद्ध ही है -

संदर्भ - सः न पिता जनिता स उत बन्धुर्धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।

(अथर्ववेद 2-3)

अध्यात्मवाद के बिना विश्वबन्धुत्व और सौहार्द के विकास की सिद्धि कभी नहीं हो सकती और संसार में विश्व बंधुत्व का विशाल लक्ष्य आध्यात्मवाद के बिना प्राप्त नहीं हो सकता। हमारी संस्कृति त्यागपूर्वक भोग करते हुए निर्लोभी सबके साथ शांति और प्रेम से रहना सिखाती है।

त्यागेन भोक्तुं भवितुं ह्यगध्वं स्थातुं समैः शास्त्यनुरागपूर्वम् ।। (2.73)

विश्वात्मा ने ही विश्व की रचना कर भोग के लिए उसे प्रजा को प्रदान किया है। ममत्व रहित हो कर उसका भोग करना चाहिए। त्याग ही प्रकृति का विधान है, त्याग ही त्रिभुवन की नाभि है निश्चित रूप से त्याग ही मानव धर्म का मूल है और मानव संस्कृति भी त्याग प्रधान ही है। त्याग की प्रतिष्ठा संसार में सर्वश्रेष्ठ है। त्याग के लिए ही सूर्य समुद्र का जल ले लेता है त्याग के लिए ही नदियाँ निरंतर बहती हैं, त्याग से ही बीज का विशाल वृक्ष हो जाता है। स्वार्थान्ध लोकायत और भोग प्रधान पाश्चात्य देशों की आसुरी सभ्यता से अत्यन्त खिन्न संसार सुख और शांति के लिए भारत की ओर ताक रहा है। तीसरे प्रचंड महायुद्ध की विभीषिका से भयभीत और कंपित इस विश्व की रक्षा करने में हमारी मानवनिष्ठ संस्कृति के अतिरिक्त ओर कोई संस्कृति समर्थ नहीं है। समस्त भूमण्डल के प्राणियों को परमात्मा की समान संतान घोषित कर संसार में बन्धुत्व की स्थापना करने वाली हमारी संस्कृति सचमुच धन्य है।

संदर्भ - शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः ।¹⁵ (ऋग्वेद 10/13/1)

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह यह अध्यात्मक मार्ग के श्रेष्ठ तत्व हैं और संसार के सौख्य और शांति के संवाहक पंचशील हैं।

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः ।¹⁶ (योगदर्शनम् 2-30)

संसार में शांति के मूलाधार यह विशिष्ट और श्रेष्ठ तत्व जो मुनिवर्यो द्वारा बहुत पहले उपदिष्ट थे, उनका मूसा, ईसा और गौतमबुद्ध ने बाद में केवल पुनरुच्चार किया। जीवों में न कोई उच्च है न कोई श्रेष्ठ और न कोई कनिष्ठ है। उनका भाईचारा और बन्धुत्व भी समान है ऐसा आध्यात्मकवाद का आदेश है।

संदर्भ - मूसा - यहूदीधर्मोपदेष्टा ¹⁷

ईसा - ख्रिस्तधर्मस्थापकः

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधः सौमगाय (ऋग्वेद 5-60-5)

संसार में अस्तित्व का युद्ध शुरू होने पर केवल बलवान ही यहाँ रहने में समर्थ हैं इस पशुनीत को योग्य समझकर संसार में आज तक असंख्य युद्ध हो गये हैं। हमारी

संस्कृति मत्सयनीति को छोड़कर दूसरों के लिए आत्म समर्पण करने की नीति को मानव जन्म के योग्य घोषित करती है। त्याग से यदि भोग ही श्रेष्ठ है परमार्थ से भी स्वार्थ ही महान और यदि हिंसा ही सृष्टि का श्रेष्ठ विधान है तो फिर अहिंसक और त्यागपरायण व्यक्तियों की पूजा क्यों होती है।

**त्यागादूरीयान् यदि भोग एव स्वार्थो यदि श्रेष्ठतरः परार्थात्
हिंसैव चेत्सृष्टिविधानमुच्चैरहिंसकं त्याग परार्हणा किम्। (2.99)**

ऋषियों को आध्यात्मिक व भौतिक दोनों मार्गों का ज्ञान था। प्रकृति प्रधान और विज्ञाननिष्ठ भौतिक मार्ग संपूर्ण प्रकृति को जीत कर भी पूर्ण वैज्ञानिक सिद्धिशाली मानव यदि अपने आत्मा को नहीं जानता तो वह महाधनवान होकरभी महादरिद्र है।

**विजित्य सम्पूर्णमपि प्रधानं निःशेषवैज्ञानिक सिद्धिशाली।
नरो भवेच्चेन्न निजात्मवेत्ता महादरिद्रोऽस्ति महाधनोऽपि।। (2-104)**

प्रचण्ड वेग वाले उत्कट यानों के कारण सारा विश्व आज एक कुटुंब बन गया है। जैसे कोई एक घर से दूसरे घर में जाता है। वैसे ही मनुष्य आज दूरदराज देशों में सहज संचार करते हैं। किन्तु क्षणार्थ में सारे विश्व को जलाकर भस्म करने में समर्थ भयानक शस्त्रास्त्र और प्रचण्ड विस्फोटकास्त्र भी आज उसी मानव ने निर्मित किए हैं। कुबेर के जैसी अपरिमेय सोख्यसिद्धि मिलने पर भी और हिमालय जैसी सुख की राशियाँ प्राप्त होने पर भी उसके आगे यह प्रचंड प्रश्न वैसा ही अनुत्तरित सामने खड़ा हो जाता है हम क्या सच्चित्स्वरूप आत्मतत्त्व है या शरीर से भिन्न नहीं है। कहां से आये हैं और कहां जा रहे हैं। हमारा साध्य क्या है और साधन क्या है? ये सारे प्रश्न वास्तव में बड़े ही गूढ़, गहन और मानव जीवन के प्राण भूत हैं। मननशील मनुष्यों को इन पर गंभीरता से विचार करना चाहिए ऐसा भारतीय संस्कृति का आदेश है। प्राकृतिक विजय से अत्यधिक भौतिक सांख्य सिद्धि हो सकती हैं। त्रिभुवन का संपूर्ण साम्राज्य भी मिल सकता है यह मान्य है किन्तु आत्म शांति तो बिल्कुल अशक्य है। ऐसी ही यथार्थ कल्याण की इच्छा करने वाली अपनी पत्नी को याज्ञवल्क्य ने कहा था और यम में नचिकेता को ऐसा ही उपदेश दिया था और सनतकुमार ने नारद को भी यही कहा था। संपूर्ण आनन्द की प्राप्ति आनंद रूप परमात्म तत्व के बिना अशक्य है इसीलिए मनुष्यों को चाहिए की परमात्म तत्व का साक्षात्कार अवश्य करें।

संदर्भ - याज्ञवल्क्यमैत्रेयी संवादः वृहारण्यकोपनिषद्।¹⁸ (2-4-5)

नारदाय सनत्कुमारोपदेशः छान्दोग्योपनिषद्। (7-1-26)

वेदाहमेतं पुरुषंमहात्मादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।

तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।(यजुर्वेद 31-18)

धन से पंचभूतात्मक देह की शांति हो सकती है किन्तु भौतिक साधनों से आध्यात्मिक शान्ति नहीं हो सकती। इसीलिए वेदों का उपदेश है कि धन से मनुष्य की तृप्ति कभी नहीं हो सकती। किन्तु आजकल सबकुछ उल्टा हो गया है। आज शरीर ही सबकुछ हो गया है। शरीरी आत्मा को छोड़कर उस शरीर की तृप्ति में ही सब लोग निमग्न हैं।

विशेष - सर्गारम्भ से सर्गान्त तक उपजाति छन्द का प्रयोग किया गया है।

तृतीय सर्ग - पुरुषार्थ चतुष्टयम् - तत्र धर्मः

हमारी श्रेष्ठ भारतीय संस्कृति अध्यात्मनिष्ठ होते हुए भी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की प्राप्त को मानव जीवन का सर्वोच्च साध्य घोषित करती है। मनुष्य क्योंकि मन, शरीर, आत्मा, बुद्धि इन चारों का समूह है इसलिए इन में से प्रत्येक को इन चार पुरुषार्थों में से एक की आवश्यकता है। शरीर के लिए अर्थ अनिवार्य है मन के लिए भी काम भी अभीष्ट है आत्मा के लिए मोक्ष की आवश्यकता है बुद्धि के लिए धर्म अपेक्षित है। धर्म, अर्थ, काम में भी धर्म ही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है अर्थ और काम भी उसी के द्वारा निग्रहीत होकर मोक्ष प्रदान करने वाले और कल्याण परक होने चाहिए।

सुभाषितम् - धर्मार्थकाममोक्षाणां यस्त्यैकोऽपि व विद्यते।¹⁹
अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम्।।

धर्म - धर्म के बारे में संसार में देखे जाने वाले मतभेद और विसंगति ही प्रायः दुनिया में वैर और कलह का कारण है। इसलिए धर्म ही सर्वप्रथम विचारणीय है। विशिष्ट प्रकार की पूजा, अर्चना और भक्तिमार्ग, भस्म और उबटन लगाना, व्रत और यज्ञ यागादि करना, तीर्थाटन, स्नान, जपादि करना ये सब धर्म न हो केवल कर्मकांड है। जो सृष्टि के धारण और पोषण के लिए आवश्यक है, जो प्राणिमात्र का हित करने वाला है और जो सबका कल्याण करने वाला तत्त्व है। वहीं संसार में सार्वभौमधर्म है।

धारणाद्धर्ममित्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः।²⁰

यः स्यद्धारणसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः।। (म.भा.शांति पर्व 109.11)

जो सब प्राणी मात्र और मनुष्य के साथ बन्धुभाव से रहने का उपदेश देता है, स्नेह कारुण्य और दर्याद्रभाव का विस्तार कर लोगों के मन से विद्वेष मत्सर ईर्ष्या और घृणादि दोषों को दूर करता है, जो लोगों के मन में दयादि सद्गुणों की सरिता बहाकर पृथ्वी पर प्रत्यक्ष स्वर्ग का निर्माण करता है वही मनुष्यों का धर्म है। जिसके कारण यह नरदेहधारी मर्त्य मानव यहीं पर ब्रह्मभाव को प्राप्त कर नर से नारायण दिव्यभाव को प्राप्त करता है वास्तव में वहीं धरती पर मनुष्यों का धर्म है। जिससे मनुष्यों के पारलौकिक कल्याण के साथ इहलौकिक उत्कर्ष भी साथ में सिद्ध हो जाता है वही मनुष्यों का धरती पर धर्म है। ऐसा महर्षि कणाद ने भी वैशेषिक दर्शन में कहा है -

यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धि स धर्मः। (वैशेषिकदर्शनम् 1-1-2)

वेदोक्त सत्कर्म करने के लिए जो सदैव मानवों को प्रेरणा देता है वही श्रुतिशास्त्र मूलक धर्म है मीमांसक शार्दूल श्री जैमिनी महर्षि ने भी अपने मीमांसा दर्शन में कहा है -

चोदनालक्षणोर्धर्मः।²² (पूर्व मीमांसा 1-1-2)

धृति, क्षमा, संयम, सत्य, विद्या, अस्तेय, बुद्धि, शुद्धि, इन्द्रियनिग्रह और क्रोध न करना इन दश लक्षणों से युक्त मनुमहाराज का कहा हुआ धर्म भी वास्तव में सार्वभौम धर्म है -

धृतिः क्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।²³

धीविद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम्।। (मनुस्मृति 6-12)

जिसको हम खुद अच्छा व्यवहार नहीं समझते और दूसरों को भी उससे दूर रखना चाहते हैं वही दूसरों के साथ व्यवहार करते समय त्याग देना मनुष्यों का यथार्थ धर्म है। महर्षि व्यास ने भी महाभारत में कहा है जो व्यवहार अपने लिए पंसाद नहीं हो वह दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए।

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।²⁴

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

आहारनिद्रा, भय, मैथुनादि से सभी प्राणी एक समान है किन्तु विशिष्ट बुद्धि से परिलक्षित मनुष्यों को अन्य प्राणियों से अलग करने वाला केवल धर्म ही है। पूजा व्रत, यज्ञयागादि ये सब धर्म के ब्राह्मण-आवरण हैं धर्म नहीं है। ये सभी धर्म के साधन होने से गौण है। मनुष्य का विशुद्ध और पवित्र आचरण सबके साथ सौहार्द और दयार्द्रभाव ही धर्म के अस्तित्व के सूचक जैसे अंधकार का दूर होना ही सूर्योदय का सूचक है।

दीपक के अस्तित्व के सूचक तेल और बाती नहीं अपितु प्रकाश ही होता है। उसी प्रकार मनुष्य के धर्मात्मा होने का निदर्शक यज्ञ, पूजा पाठ नहीं बल्कि उसके आसपास के वातावरण में अच्छा परिवर्तन है।

मनुष्य इस विशाल, भव्य और अतिअद्भुत विश्व को देखकर सचमुच आश्चर्ययुक्त महासागर में डूब जाता है। अपरम्पार और समझ में न आने वाली इस विचित्र सृष्टि की विशालता और अपनी बुद्धि की लघुता को देखकर मनुष्य उस दिव्य और महाशक्ति के समक्ष नतमस्तक हो जाता है। मैं कौन हूँ और इस सृष्टि का कर्ता कौन है? मनुष्य के अन्दर उत्पन्न होने वाला यह विचार ही धर्म का मूल है। इस विश्वास से प्रेरित मनुष्य का आचार-विचार ही धर्म कहलाता है। विश्वशक्ति के बारे में लोगों के विचारों में भिन्नता के कारण ही परस्पर मतभेद और अनेक धर्म इस धरती पर उत्पन्न हुए। धर्म की वास्तविकता को न समझने वाले लोगों ने मर्त्य मानवों के द्वारा निर्मित संप्रदायों को ही अज्ञानवश धर्म समझकर वास्तविक धर्म का ही तिरस्कार कर दिया। यह पृथ्वी चपटी न होकर गोल है और नित्य सूर्य के चारों ओर

घूमती है इस सत्य को प्रगट करने वाले महान वैज्ञानिक गैलेलियो की उन्होंने क्रूर हत्या कर दी। तब से ही विज्ञान और धर्म परस्पर विरुद्ध है। ब्रह्माण्ड के अन्दर वर्तमान सूक्ष्ममातिसूक्ष्म नियमों का बारीकी से अध्ययन ही विज्ञान का प्रमुख लक्ष्य है। विधाता और सृष्टि नियमों के परस्पर संबंध की खोज धर्म का कार्य है। अतः धर्म और विज्ञान में विरोध के बिना धर्म भी लंगडा है। वे दोनों मिलकर ही एक-दूसरे के लिए हितकर हो सकते हैं। श्रुतिस्मृति, और सज्जनों का सद्व्यवहार तथा अपनी आत्मा के लिए प्रिय व्यवहार या कार्य ये ही चार धर्म के लिए प्रमाण है ऐसा मन्वादि शास्त्रकारों ने घोषित किया है।

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य न प्रियमात्मनः।²⁵

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्॥ (मनुस्मृति 2.12)

इन चारों में भी परस्पर विरोध दृष्टिगत होने पर धर्म के लिए महाप्रमाण के रूप में श्रेष्ठ पुरुष जिस मार्ग से गये हैं। उसी को महर्षि व्यास ने प्रमाण स्वीकार किया है।

श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना नैको ऋषिर्यस्य वचः प्रमाणम्।²⁶

धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्था॥ (महाभारत)

विशेष - सम्पूर्ण सर्ग में उपजाति छन्द का प्रयोग किया गया है।

चतुर्थ सर्ग – अर्थ:

त्याग प्रधान और मोक्ष ही जिसका साध्य है ऐसी हमारी वैदिक संस्कृति भौतिक सौख्यसिद्धि के विरुद्ध नहीं है इसीलिए अर्थ और काम भी उसके पुरुषार्थ हैं। मोक्ष की प्राप्ति और आत्मोन्नति ही जीवन का लक्ष्य है और शरीर भी उसका केवल साधन है। शरीर के लिए अर्थ भी आवश्यक है अतः अर्थ प्राप्ति भी पुरुषार्थ है। अर्थ या धन के बिना शरीर यात्रा नहीं और शरीरयात्रा के बिना पुरुषार्थ भी नहीं। और पुरुषार्थ के बिना मोक्ष की सिद्धि भी नहीं। अतः अर्थ प्राप्ति पुरुषार्थ है। शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन अनिवार्य और अपरिहार्य हैं उसके लिए धन की प्राप्ति और रक्षा दोनों मनुष्य के कर्तव्य हो जाते हैं अतः मनुष्य की धन तो कमाना ही चाहिए किन्तु वह धार्मिक मार्ग से कमाना चाहिए। ऐसा धर्मशास्त्र का आदेश है। दोनों के विरोध होने पर धर्म शास्त्र को अर्थशास्त्र से श्रेष्ठ और श्रेयस्कर समझा गया है।

अर्थो हि प्रधान इति कौटिल्यः।²⁷

अर्थमूलौ हि धर्मकामौ इति। (कौ. अर्थशास्त्रम् 1-7)

अर्थशास्त्रात्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थितिः।²⁸ (याज्ञ.स्मृ.2.21)

यत्र विप्रतिपत्तिः स्याद्धर्मशास्त्रार्थशास्त्रयोः²⁹

अर्थशास्त्रमसृज्य धर्मशास्त्रोक्तमाचरेत्।। (नारद-स्मृ1-39)

शरीर के धारण पोषण के लिए धन नितान्त आवश्यक है यह मान्य है किन्तु उसी को सब कुछ समझना गलत है। वह तो आत्मोन्नति का एक साधन मात्र है। किन्तु आज केवल धन की प्राप्ति में ही आसक्त और लोभ से पागल लोग धन के बिना किसी और चीज का विचार ही नहीं करते। इस दुष्ट और दुर्वत्त धन के कारण ही यहाँ आज तक असंख्य युद्ध हुए हैं और असंख्य निष्पाप और निरागस, निरपराध लोगों के खून के बहने से पूर्व का इतिहास रक्त रंजित हुआ है। शायद इसीलिए मानव जन्म के साध्य का विचार करने वाले श्री शंकराचार्य ने (अपनी चपटमंजरी में) अर्थ को अनर्थ कहा है। अधर्ममार्ग से कमाया हुआ धन आगे आने वाले अनर्थ के लिए जरूर कारण होता है क्योंकि आज का साधन भूत कर्म भविष्य में अवश्य ही फलदाय होगा। धन वास्तव में साध्य न होकर केवल साधन है। साधन और साध्य की एकता निश्चित है। मनुष्य को उतना ही धन कमाना चाहिए जितना जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। दूसरों के अधिकारों का हनन किए बिना अत्यधिक मात्रा में धन कमाना शक्य नहीं है।

यात्रामात्रप्रसिद्ध्यर्थं स्वैः कर्माभिरगर्हितैः।³⁰

अक्लेशेन शरीरस्य कुर्वीत धनसञ्चययम्।। (मनुस्मृति 4-3)

धन के आवश्यकता से अधिक संचय से भोगों का अतिरेक हो जाता है और भोगों के अतिरेक से दुःख बढ़ जाता है। साथ ही समाज में ईर्ष्या, धृणा, वैर और विलसिता के बढ़ जाने से राष्ट्र का विनाश होता है इसलिए शास्त्रों में धर्म के मार्ग से ही धन कमाने की बात कही गई है। इसलिए महर्षि मनु ने भी कहा है कि अर्थ की शुद्धता ही सर्वश्रेष्ठ शुद्धता है। जो मनुष्य धन से शुद्ध है वही शुद्ध है। जो मिट्टी और पानी से शुद्ध है वास्तव में शुद्ध नहीं है।

येऽर्था धर्मेण ते सत्या येऽधर्मेण धिगस्तु तान् ।³¹⁻³²

धर्म वै शाश्वत लोके न जह्यादद्धनकाङ्क्षया ।।

अतिक्लेनशेन ये अर्थाः स्युर्धर्मस्यातिक्रमेण वा ।

अरेर्वा प्रणिपातेन मा स्म तेषु मनः कथाः ।।

(म.भा.शान्तिपर्व, उद्योगपर्व)

सर्वेषामेव शौचनामर्थशौचं परंस्मृतम् ।³³

योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृद्धारिशुचिः शुचिः ।। (मनु. 5-106)

अर्थ से ही जब सब सुख सुविधा मान प्रतिष्ठा और गौरव मिलने लग जाये और जब पूरा राजतंत्र ही अर्थ प्रधान हो जाय तो स्पष्ट है कि लोग भी धन लोलुप और अर्थ प्रधान हो जायेंगे। इस स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए आर्थिक सार पर अवलंबित वर्तमान सामाजिक और आर्थिक रीति नीत पूर्णतया बदलनी चाहिए। केवल धन ही मानव प्रतिष्ठा का स्थान न होवे। वरन् उज्ज्वल आचार और चारित्र्य के धनी तथा विद्या, त्याग तप और शुद्ध भाव वाले लोग ही पूजासत्कार आदि के पात्र होवे। धन से केवल भौतिक देह की शान्ति होती है किन्तु आध्यात्मिक शांति श्रुति उपदेश से होती है। धन के समुद्र में तैरना बुरा नहीं है किन्तु उसमें डूब जाना बुरा है। मन की नाव में धन का पानी प्रवेश न कर पाये। जिसमें पानी का प्रवेश हुआ है ऐसा नौका सुरक्षित नहीं होती।

मनुष्य को लक्ष्मीपति बनना चाहिए ना कि लक्ष्मी का सेवक, क्योंकि लक्ष्मी विष्णु की चरण सेविका है स्वामिनी और शिरोमणी कभी नहीं। सुरसा के मुख के समान नित्य बढ़ने वाली धन की यह अति भयंकर लिप्सा वित्त से कभी शान्त नहीं होती जैसे अग्नि की ज्वाला घृत की आहुती से शांत नहीं होती। धन तो संसार में किसी का भी नहीं हुआ है वह तो केवल प्रजापति परमेश्वर का ही रहा है। समस्त संसार को जीत कर अन्त में एक कौड़ी भी साथ ले जाने में असमर्थ सिकंदर अपने खाली हाथ को शवपेटिका के बाहर रखकर अपनी विवशता को लोगों को प्रकट कर रहा था। यह चंचल धन आता और जाता है पर मनुष्य का चरित्र एक बार जाकर फिर नहीं आता। अतः चंचल और अस्थिर स्वभाव वाले तथा जाने वाले धन को छोड़कर अपने चरित्र की रक्षा करनी चाहिए। नश्वर और भ्रमर जैसे अस्थिर चित्त और स्वभाव वाले अर्थ के लिए मननशील मनुष्य को कभी भी अकार्य नहीं करना चाहिए। अमेरिका जैसे

समृद्ध देश में भी सकल ऐश्वर्य के समुद्र में डूबे हुए, लभ्य सुखों से पूर्ण होते हुए भी वहाँ के लोग नींद की गोली खाये बिना सो नहीं पाते। यह विषमता है कि ऊँचे-ऊँचे महलों, गगनचुंबी अट्टलिकाओं का निर्माण करने वाले लोगों को झोपड़ी भी बड़ी मुश्किल से मिलती है। धनवान के कुत्ते, बिल्ली द्वारा पिया जाने वाला दूध भी गरीबों को स्वप्न में भी नहीं मिलता। यह महाभयानक वैषम्यपूर्ण अर्थनीति भविष्य में बिल्कुल टिकने वाली नहीं है अहिंसा से नहीं तो हिंसा से यह दुर्व्यवस्था अवश्य ही नष्ट भ्रष्ट हो जायेगी। वेदों में भी सर्वत्र समानता के सौश्रात्र, सद्भाव और विशालता के मनुष्य जाति को एकता के उदात्त और महान उपदेश रत्न पाये जाते हैं। धन के स्वामित्व के विषय में चलने वाले प्रचण्ड विषाद का समाधान करते हुए यजुर्वेद का एक मंत्र घोषणा करता है कि यह विश्व विधाता ने निर्मित किया है और उसी के द्वारा व्याप्त है। अतः त्याग भाव से ही मनुष्यों को उसका भोग करना चाहिए। किसी को भी धन का लोभ नहीं करना चाहिए। प्रजापति 'कः' का ही यह सब धन है।

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।³⁴

समानं मन्मभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।

(ऋग्वेद 10-191-3)

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।³⁵

तेन त्यक्तेन भुञ्जीयाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।। (यजु. 40-1)

प्रजापतिर्वै कः (शतपथ. ब्राह्मण)³⁶

मनुष्य का अधिकार केवल भोगने मात्र का है। मालिक के समान किसी को भी उस पर अपना अधिकार नहीं जताना चाहिए। वास्तव में यही सुख और शान्ति का सच्चा मार्ग है।

विशेष -उपजाति छन्द है।

पञ्चम सर्ग - कामः

पुरुष और स्त्री का एक-दूसरे के प्रति तारुण्य अवस्था में प्राप्त होने वाला आकर्षण और गाढ़ अनुराग तथा परस्पर मिलन की उल्कट लालसा को ही काम कहते हैं अत्यन्त दुर्दमनीय, दुर्जय और वश में करने में कठिन ऐसा यह काम ऐसा य काम बड़ा ही कष्टदायक है, स्वर्गस्थ देवों के द्वारा भी यह अत्यन्त दुर्जय है तो पृथ्वीस्थ मर्त्यमानवों का क्या कहना। घोर और कठोर तप करने वाले वीतराग मुनिश्रेष्ठ भी काम शक्ति के कारण मार्ग से विचलित हो गये।

स्त्रीषु जातो मनुष्याणां स्त्रीणां च पुरुषेषु वा।³⁷

परस्परकृतः स्नेहः काम इत्यभिधीयते।। (शाङ्गधर 1-6)

यह काम सबसे पहले पृथ्वी पर उत्पन्न हुआ, उसका पार न देव न ही मनुष्य के पास है यह काम सबका संहार करने वाला प्रबल शत्रु है। अतः सबके द्वारा यह नमस्कार करने योग्य है ऐसा वेद कहता है। संसार के दुःखों का यथार्थ मूल और लोगों की संपूर्ण विपत्ति का कारण यह अनिर्बन्ध और अनियंत्रित काम ही है इसलिए इस पर विजय प्राप्त करना भी पुरुषार्थ कहा गया है -

कामो जज्ञे प्रथमो नैनं देवा आपुः पितरो न मर्त्याः।³⁸

ततस्त्वमसि ज्यायान् विश्वहा महास्तरमै ते काम नम इत्कृणोमि।।

(अथर्ववेद 1-2-19)

प्रजा प्रसूति के कारण संसार के सातत्य का निमित्त होने से स्वाभाविक रूप से निर्मित काम कभी भी निन्दनीय नहीं है। किन्तु जो जानबूझकर उद्दीपित किया जाता है। वह निन्दनीय है। मनुष्य की अच्छी और बुरी वासनाओं का शुभाशुभ भावनाओं का और उसके दसों इन्द्रियों की सभी चेष्टाओं का उद्भव स्थान उसका मन ही मुख्य है। काम की उत्पत्ति भी मन से ही हुई है। उसके अनेक नामों के साथ मनोज भी उसका प्रमुख नाम है। बिजली अर्थात् मन जिस प्रकार मनुष्य के सुख-दुःख का कारण तथा शत्रु और मित्र समान रूप से है उसी प्रकार प्रयोजकाधीन मन भी मनुष्य के बन्धन और मुक्ति का कारण है।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।³⁹

(ब्रह्मबिन्दूपनिषद्-2 महाभारत)

किन्तु काम का विमुक्त और प्रचण्ड विस्तार करने वाले अत्यन्त अश्लील और काम को बढ़ावा देने वाले साधन आज देश में सर्वत्र प्रसारित हो रहे हैं। अत्यन्त कामोत्तेजक और श्रृंगारिक साधनों से पर्यावरण के विषाक्त हो जाने पर कोई भी जितेन्द्रिय नहीं हो सकता।

अग्नि के समीप घी पिघलता ही है। अपने किनारों को तोड़कर बहने वाली नदी के समान सारे नीतिबन्धों को नष्टकर सद्वत् और चरित्र्य का विनाश करने वाला काम निरंकुश ओर मदोन्मत्त हाथी के समान प्रतीत होता है। उद्दाम और अनिर्बन्ध काम मनुष्य के महाविनाश के लिए कारण होता है। इसी लिए पूर्व पुरुषों ने संयम को ही मुख्य और मानव कल्याणकारी समझा था। मनुष्य में पशुत्व तो जन्म सिद्ध ही है। उससे इसका ऊंचा उठना नरत्व है और उससे आगे नारायण पद की प्राप्ति संस्कृति का श्रेष्ठ लक्ष्य है। फ्रायड नामक मनोविज्ञान वेता के विचारनुसार विषयोपभोगो से प्रतिबंधित काम गुप्त रूप से अंतरमन में प्रवेश कर अनेक विकारों को उत्पन्न करता है। दूसरों की पत्नी माता के समान होती है ऐसी शिक्षा यदि बालकों और युवकों को दी जाए तो किसी युवती को देखकर युवक कभी भी अनिष्ट हरकत नहीं करेगा। वन में सुगीव के द्वारा प्राप्त आभूषण क्या सीता के द्वारा प्रयुक्त किए हुए हैं? ऐसा राम के द्वारा पूछे गए प्रश्न का लक्ष्मण ने जो उत्तर दिया वह हमारी महासंस्कृति का भव्य शिखर है। लक्ष्मण ने कहा कि मैं सीता माता के यूर और कंडल नहीं जानता उसके तो केवल नूपुर ही जानता हूँ। मेरे उनके चरणों का वंदन करने से ऐसी पवित्र उज्ज्वल हमारी संस्कृति थी। यह निश्चय ही केवल कवि कल्पना नहीं है वरन् एक वास्तवविक सत्यता है। संसार का चरित्र गुरु होने की घोषणा स्वयं मनु ने की थी -

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।⁴⁰

नूपुरे त्भभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।।

(वारा. किष्किन्धा 6/22)

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादरजन्मनः।⁴¹

स्व स्वं चरित्रं शिक्षेरन् प्रथिव्यां सर्वमानवाः।। (मनु. 2-20)

काम के वेग को जीतने वाले अमोघवीर्य और आजन्म ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले ऐसे असंख्य मुनिवर्य प्राचीनकाल में इस देश में हुए हैं। शाक्यवंश में जन्मे गौतमबुद्ध को भी बुद्ध यह पदवी तब तक प्राप्त नहीं हुई जब तक उन्होंने मार नाम के काम नहीं जीता। उससे ही उसने मारजित संज्ञा प्राप्त की। इस कलियुग में भी महात्मा गांधी और महर्षि दयानन्द जैसे महापुरुषों ने ब्रह्मचर्य और इन्दिय निग्रह द्वारा संसार में महान कार्य संपन्न किए। जहाँ सूर्य भी अस्त होने की हिम्मत नहीं करता था ऐसे प्रचंड आंग्ल साम्राज्य को भी महात्मा गांधी ने शस्त्र के बिना परास्त किया तो उसमें उनका आत्मनिग्रह ही कारण था। अपने प्रचण्ड कामाग्नि को प्रज्वलित कर अनंत दुःखों की आग में जलने वाले मानव बचने का कोई उपाय न पाकर बिल्कुल उल्टे मार्गों का अनुसरण करते हैं। अधिक संतुति के कारण प्रथम तो उनकी पर्याप्त अन्न, वस्त्र और आवास नहीं मिलता। फिर अज्ञान और दारिद्र्यरूपी राक्षस से पीड़ित और भूख से रोगों से लोग त्रस्त रहते हैं। देवर्षि और ब्रह्मर्षियों की इस भूमि में ब्रह्मचर्य

और इन्द्रिय संयम आदि महान तत्त्वों को छोड़कर आज लोग उदाम का मातुरता और विलासिता का आश्रय करते हैं यह बड़ा आश्चर्य है। इसलिए दुर्वासनाओं के मूल अनिर्बंध काम को रोक देना चाहिए। संस्कार और चरित्र को बढ़ाकर तथा देश में आध्यात्मिक परिवेश का निर्माण करना चाहिए। इसी कारण मानव निर्माण की भावना से प्रेरित सार्वभौम मुनियों ने मनुष्य के जन्म से मरण पर्यंत 16 संस्कारों की सोपान परंपरा का निर्माण किया था। विधाता की सर्वश्रेष्ठ रचना और विवेक प्रधान मनुष्य को इस भली प्रकार विचार करना चाहिए कि सह दुर्लभ मानवजन्म क्या केवल वासना की पूर्ति के लिए ही मिला है। तब क्या विवेक बुद्धि से युक्त मनुष्य और पशुओं में कोई भेद नहीं। क्या केवल भौतिक वासनाओं की पूर्ति ही मनुष्य जन्म का लक्ष्य है? जबकि महामुनियों ने कहा है जन्म जन्मांतरों के दुःखों से संतप्त मानव की मुक्ति के लिए यह मनुष्य जन्म परमात्मा के द्वारा प्रदान की हुई सुवर्ण वेला है। प्रमाद से मनुष्य को उसे हाथ से जाने नहीं देना चाहिए।

तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नाम्य पन्था विद्यतेऽयनाय ।⁴²

(यजु. 31-1)

जीव केवल इस मनुष्य जन्म से ही अपनी इच्छानुसार कर्म करने में स्वतंत्र हैं। मनुष्य योनी को छोड़कर बाकी सब योनियाँ कम योनियाँ न होकर केवल भोग योनियाँ हैं। यहीं पर इस दुर्लभ योनि में आकर भी यदि उसका दर्शन न हो सका तो महाविनाश होगा ऐसा सभी आर्ष शास्त्रों का अभिमत है। विषयों के उपभोग से काम की शान्ति होती है ऐसा नूतन मानसशास्त्रियों का विचार है। किन्तु भोगों से काम और प्रचंड होता है जैसे धृताहुति से अग्नि, ऐसा मुनियों का विचार है -

इहैव चेदवेदीवथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः ।⁴³

(केनोपनिषद् 2-5)

न जातु कामः कामानामुपनोगेन शाम्यति ।⁴⁴

हविषा कृष्णवर्त्मव भूय एवाभिवर्धते ।। (मनु 2-14)

अपनी पूर्ण आयु और अपने पुत्रों की आयु में काम भोग करके भी तृप्ति को न प्राप्त करने वाले ययाति की कथा वास्तव में कभी तृप्त न होने वाले काम की कथा है। इसीलिए धर्मानुकूल अर्थ और काम ही व्यक्ति और समाज के सुख के कारण होकर औचित्य की सीमा को कभी पार न करने पाए। किनारों का उल्लंघन कर बहने वाली नदी सुखदायक नहीं होती। अर्थ और काम धर्मानुकूल और मोक्षदायक हों इसलिए अर्थ और काम शब्दों को मुनिवरो ने दूरदृष्टि से धर्म के बाद और मोक्ष से पहले रखा है। संसार के सातव्य का कारण और गृहस्थाश्रम का भी मूलाधार यह काम अध्यात्मवाद की दृष्टि से नवमानव के निर्माण का हेतु

होने से श्रेष्ठ समझा गया था। काम की तृप्ति के लिए यह गृहस्थाश्रम नहीं था। संतान की प्राप्ति के लिए यथार्थ रूप में वह था। पुत्र की प्राप्ति से पितृऋण से मुक्त होने के लिए गृहस्थाश्रम की कल्पना की गई थी। इसलिए सोलह संस्कारों में एक-एक संस्कार को गर्भस्थ संतान के पूर्ण विकास के लिए नियुक्त किया था। फ्रायड जैसे आधुनिक मानस वैज्ञानियों ने भी यह स्वीकार किया था कि प्रबल काम को भोग के बिना भी उसके उदात्त रूपांतरण से नियंत्रण में रखा जा सकता है। राष्ट्र के कल्याण की कामना करने वाले नेताओं और राष्ट्रनायकों के द्वारा उद्दाम काम के नियंत्रण हेतु कोई राष्ट्रीयस्तर का महान उपाय अवश्य करना चाहिए।

विशेष - उपजाति छन्द।

षष्ठ सर्ग - मोक्ष

संपूर्ण दुःखों के विनाश के साथ अर्थ और काम के त्यागपूर्वक आनन्दमय परमात्मा की प्राप्ति ही मोक्ष नाम की सर्वोच्च पुरुषार्थ सिद्धि है। जीवन में भोगवृत्ति का अन्त त्याग में है और प्रवृत्ति मार्ग का अन्त निवृत्ति मार्ग में है। उसी प्रकार धर्म, अर्थ और काम इन तीनों का अन्त भी स्वाभाविक रूप से चौथे मोक्ष पद में है।

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुराषार्थः।⁴⁵ (सांख्य दर्शन 1-1)

बाधनालक्षणं दुःखम्।⁴⁶ (न्यायदर्शनम 1-21)

अनुकूलवददनीय सुखं प्रतिकूलवदनीयं दुःखम्।

सर्व परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।⁴⁷

एतद्विधात्मसासेन लक्षणं सुखदुःखयोः॥ (मनु 4-160)

तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः।⁴⁸ (न्याय 1-22)

अभयमजरममृत्युपदं ब्रह्मक्षेमप्राप्तिरिति।⁴⁹ (वात्स्यायनभाष्यम्)

एकान्तिक आनंद और सुख की प्राप्ति तथा संपूर्ण दुःख की समाप्ति ही मानव जीवन का सर्वोच्च साध्य है। जिसको निःश्रेयस कैवल्य और मोक्ष कहते हैं। प्रातःकाल से लेकर सांयकाल तक अनेक चिंताओं और दुःखों से युक्त इस मानवजीवन में विचारशील मनुष्य के लिए पूरा दुःख ही दुःख है। ऐसा मुनिवर्य पतंजलि के योगदर्शन में कहा जाता है। जीव का गर्भ में आना ही पहला दुःख है फिर बुढ़ापा, रोग और वियोग का दुःख है। फिर अन्त में करालमृत्यु के भय का दुःख है। इस प्रकार पूरा जीवन ही दुःख से भरा हुआ है। ज्वाला की लपटों से घिरे घर के समान और दुःखों की परंपरा से युक्त इस मृत्युलोक में सुख की आशा करना ही बहुत बड़ी मूर्खता है ऐसा तथागत भगवान बुद्ध का कहना है।

परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधा दुःखमेव सर्वविवेकिनः।

(पातंजल योग दर्शन साधनापाद 2-15)

चतुर्ष्वार्यसत्येषु दुःखमेव प्रथमार्य सत्यमिति बुद्धः।

दृष्टव्यः मज्झिमनिकाये भिक्षुभ्यः प्रदत्तो भगवतो बुद्धस्योपदेशः॥

प्रकृति प्रधान इस संसार और शरीर में संपूर्ण सौख्य मिलना कदापि संभव नहीं है क्योंकि मनुष्य के दुःख का मूल उसका यह प्राकृतिक शरीर ही है ऐसा शास्त्र का मत है। यह अविद्या ही मनुष्य के समस्त दुःखों और जन्ममृत्यु का कारण है। यथार्थ ज्ञान के

द्वारा ही उस अविद्या से छुटकारा मिल सकता है और मोक्ष भी उससे ही मिल सकता है ऐसा शास्त्र कहते हैं।

अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्चक्लेशाः।⁵¹

(योगदर्शन-साधनपाद)

अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातरिविद्या।⁵²

(योगदर्शन - साधनपाद)

जीव प्रकृति के सहवास में आकर और उसके गुणधर्मों को अपने गुण धर्म समझकर और इस प्रकार अविद्या से प्रकृति के साथ अपनी एकरूपता समझकर देह के गुणधर्मों को अपने समझने लगता है। जीव या प्राणी सुषुप्ति (गाढनिद्रा) अवस्था में इन्द्रियों के व्यापार से मुक्त होकर तथा बाहरी संसार से संबंध विच्छेदकर आनन्द के महासागर में निमग्न होकर परमशान्ति और तृप्ति को प्राप्त करता है। मैं उस महानपुरुष (परमात्मा) को जानता हूँ जो अत्यन्त तेजस्वी और अंधकार से परे है। उसको जानकर ही मनुष्य मृत्यु से पार जाकर अमृत होजाता है। मुक्ति के लिए और कोई मार्ग नहीं ऐसा वेदादेश है। प्रत्येक रात्रि में सभी प्राणियों के द्वारा अनुभव की जाने वाली यह सुषुप्ति अवस्था वास्तव में निद्रा तमोगुण अज्ञान और शरीर से युक्त ऐसे मोक्ष की मानो कुछ प्रतिकृति है।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।⁵³

तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

(यजुर्वेदः 31-18)

समाधिसुषुप्तिमोक्षेषु ब्रह्मरूपता।⁵⁴ (सांख्यदर्शनम् 5/79)

सर्वथा आनन्द रहित जड़ पञ्च महाभूतों के संग से किसी को भी सुख नहीं मिल सकता अन्यथा सभी प्राणी सुखी हो गए होते। तेल केवल तिलो से मिल सकता है रेत के कणों से नहीं। अज्ञानी मानव भौतिक वस्तुओं में सुख समझकर उनको इकट्ठा करता रहता है। किन्तु सुख तो उससे आगे ही चला जाता है जैसा मृगमारीचिका से जल आगे ही चला जाता है वास्तव में देखा जाए तो जब चित्त की वृत्ति बाहरी विषयों से हटकर अपने अंतरात्मा में रहने वाले परमात्मा पर केन्द्रित हो जाती है तभी मानव को सुख की अनुभूति होती है। सुख तो चित्त की एकाग्रता और तादत्म्य के कारण ही होता है। यदि जड़ वस्तुओं में सुख होता हो अधिक वस्तुओं के उपभोग से अधिक सुख होना चाहिए किन्तु सर्वाधिक प्रिय स्तु के भी अधिक उपभोग करने पर सुख तो दूर रहा बहुत धृणा हो जाती है। सर्वथा विनश्वर भौतिक वस्तु पर चित्त की एकाग्रता से क्षणिक सुख उत्पन्न होता है किन्तु अनाद्यनन्त और शाश्वत परमतत्त्व पर चित्त की एकाग्रता से शाश्वत सुख और शांति की प्राप्ति होती है।

चित्त को विषयों के अनुसरण करने से रोककर उसका परमात्मा में केन्द्रित करना ही वेदादिक समस्त शास्त्रों ने मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य समझा था। महर्षि पतंजलि ने इसीलिए अपने योगदर्शन में अष्टांगयोग का सविस्तार वर्णन किया है। उन्होंने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन यम संज्ञक संसार में शांति के संवाहक पाँच यमों को पंचशील और योग की भित्ति घोषित किया है। आगे उन्होंने शौच संतोष, तप स्वाध्याय और ईश्वर पणिधान इन पाँच नियमों को व्यक्ति के उत्थान के साधक तत्त्व घोषित किया है।

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।⁵⁵ (योगदर्शनम् समाधिपादः 1-2)

तदा दृष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्।⁵⁶ (योग समाधिपाद 3)

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधरणाध्यानसमाधयोऽध्वटावङ्गानि⁵⁷
(योगदर्शनम् साधनपाद 2-29)

अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः।⁵⁸ (योगदर्शनम् 1-12)

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः।⁵⁹ (योग. साधन. 2-30)

शौचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।⁶⁰
(योगदर्शन-साधनपादः 2-31)

चित्त को जड प्रकृति से लौटाकर और मन को निविषय करके मनुष्य आँखों को अन्तर्मुख करके जब ध्यानस्थ हो जाता है तभी आत्मा और परमात्मा का मिलन हो जाता है। अष्टांग योग के अभ्यास से शुद्ध और पवित्र जीवात्मा में उस आनन्द रूप अद्भुत दिव्य शक्ति का भव्य रूप उसी प्रकार प्रगट होता है जिस प्रकार पानी में छाया और दर्पण में प्रतिबिंब प्रगट होता है। चराचर में व्यापक सर्वसाक्षी, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर और सर्वाशक्तिमान वह परमात्मा सर्वत्र व्यापक होते हुए भी तीर्थस्थानों में प्राप्य नहीं है क्योंकि परमात्मा शरीर के बाहर कहीं नहीं है परमात्मशक्ति तो सर्वत्र व्यापक है किंतु जीवात्मा तो केवल शरीर में ही है। उन दोनों का मिलन तो मानव शरीर में ही हो सकता है जहाँ जीवात्मा और परमात्मा दोनों का वास्तव्य है। इसीलिए आठचक्रों और नवद्वारों से युक्त दिव्यपुरी और ब्रह्मपुरी कहलाने वाला युग देह अत्यन्त प्रकाशमय सुवर्णकोष से पूर्ण है और वास्तव में अयोध्या कहलाता है।

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।।⁶¹

तस्या हिरण्ययः कोशाः स्वर्गो ज्योतिषाऽऽवृत्तः।। (अथर्ववेदः 10-2-31)

यहीं पर और इसी मनुष्य शरीर में ही उस परमात्म महाशक्ति का साक्षात्कार संभव है। जिससे मनुष्य अपने जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष का भागी

बनता है। इसके लिए ही असंख्य जन्मों को पार करके मनुष्य यहाँ आता है। यहाँ से अपने शुभकर्मों के कारण की प्राप्ति होगी नहीं तो जन्म मृत्यु का वही चक्र फिर शुरू होगा। उस अभौतिक और अप्राकृतिक तथा निराकार और निरीन्द्रिय ऐसे परमात्मा का इन भौतिक स्थूल इन्द्रियों से अनुभूति और साक्षात्कार होना कैसे संभव है ? यह विचारणीय है। जो जिसका विषय ही नहीं है वह उसके द्वारा कभी ग्राह्य नहीं हो सकता। आँख न रस को ग्रहण कर सकती है न शब्द को और न कान रस और गंध को ग्रहण कर सकते हैं आनंद स्वरूप और चैतन्यमय परमात्म तत्त्व जो पंचेन्द्रियों का विषय ही नहीं है और जो अभौतिक और विषयों से बिल्कुल भिन्न है वह मनुष्यों के इन्द्रिय द्वारा कैसे ग्रहण किया जा सकता है।

परमात्म तत्त्व सर्वमागी है, वह शरीर रहित तथा नसनाड़ियों से विहीन और शुद्ध व तेजस्वी है। वह कान्तदर्शी, विचारक, सर्वव्यापक, स्वयंभू है। उसकी कोई प्रतिमा नहीं ऐसा वेदों ने कहा है वह अणु से भी छोटा और बड़े से भी बड़ा हो से मनुष्य की हृदय की गुफा में भी विद्यमान है और जीव होने से प्रभु के दर्शन की उसकी लालसा भी वहीं पर पूर्ण हो सकती है। उस परमात्मा के शरीर रहित और नसनाड़ियों से विहीन होने से कोई भी उसको बाहरी आँखों से देख नहीं सकता। केवल योग के द्वारा अपने अंतःकरण में उसका केवल अनुभव ही कर सकता है।

स पर्यागाच्छुक्रमकायमग्नमरुनाविरं शुद्धमपापविद्धम्।⁶² (यजु. 40-8)

न तस्य प्रतिमा अस्तित्यस्यनाम महघशः।⁶³ (यजुः 32-3)

अणोरणीयान् महतो महीयात्माऽस्य जन्तोर्निहितो गुहायान्।⁶⁴
(कठो. 2-3-9)

न सन्दृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्।⁶⁵
(कठो. 3-9)

सारा त्रिभुवन उस परमेश्वर के द्वारा ही व्याप्त है। उसके अंदर बाहर वही विद्यमान है। फिर भी उसके जीवात्मा के हृदय में स्थित होने से वह हृदय ही उसके दर्शन की दिव्यभूमि है। अष्टांग योग के अनुष्ठान से मलविक्षेपादि दोषों से मनुष्य को अपने हृदय शुद्ध और निर्मल करना चाहिए। तभी जीवात्मा और परमात्मा इन दोनों का उसमें संगम हो सकता है। समाधियोग से परमात्मा के साथ सायुज्य को प्राप्त कर सारी शंकाओं को दूर कर हृदय की वासना की गांठ को छिन्न-भिन्न कर और सारे कर्मों को समाप्त कर मनुष्य संसार के मृत्यु पाश से मुक्त हो जाता है। अज्ञान के नाश से मलविक्षेपादि दोषों का नाश हो जाता है। दोषों के नाश से प्रवृत्ति रुक जाती है। कर्म में प्रवृत्ति के अभाव से शरीर का भी अभाव हो जाता है और शरीरादि के अभाव से दुःख का नाश हो जाता है।

भिद्यतेहृदयग्रन्थिच्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः ।

क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥⁶⁶ (मुंडको 2-2-8)

दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः ।

न्यायदर्शनम् अध्याय । आङ्गिक । सूत्र 2

अस्य न्यायसूत्रस्योपरि न्यायमंजर्या जयनत भट्टस्य भाष्यं द्रष्टव्यम् ।⁶⁷

संसार में लोकोपकार के लिए किए जाने वाले श्रेष्ठ कर्म ही पूर्वकाल में किए गए छोटे कर्मों को प्रभावहीन बना देते हैं और शरीर के उत्पत्ति की शक्यता ही नष्ट कर देते हैं। संसार की उत्पत्ति स्थिति और नाश के कारण परमात्मा के सत्य ज्ञान से तदनुरूप कर्म करने से और उपासना से मनुष्य मोक्ष को प्राप्त करता है। न केवल ज्ञानयोग से न कर्मयोग से और न मात्र भक्तियोग से मोक्ष कभी संभव है। उन तीनों के समुच्चय से ही प्राप्त हो सकता है। यथार्थज्ञान से सारासार में विवेक की प्राप्ति होती है, और कर्म योग से देहादि का अभाव होता है। उपासना से आत्मा और परमात्मा का मिलन होता है। इस प्रकार यह तीनों मिलकर ही मोक्ष के कारण है। निष्काम भाव से सदैव कर्म करते हुए ही मनुष्य को सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए। ऐसा करने से ही मनुष्य कर्मों में लिप्त नहीं और वह मृत्यु से मुक्त होगा ऐसा वेदादेश है।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।⁶⁸

एवं त्वयि नान्ययेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ (यजुर्वेद 40-2)

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ॥⁶⁹ (गीता 2-47)

इस निःसार संसार से महाविरक्ति और अत्यन्त तीव्र मोक्षभिलाषा यह पूर्व जन्म के संस्कारों से युक्त पुण्यशाली मनुष्यों का ही अहोभाग्य होता है।

विशेष - वृत्तं - उपजाति ।

सप्तमः सर्ग - आत्मतत्त्वम्

हम कहां से आये हैं और कहाँ जाना चाहते हैं तथा हम कौन और हमारा उद्देश्य क्या है ? क्या हम एकाएक यही पर पैदा हुए और क्या इस शरीर के साथ ही हमारा भी नाश होगा ? क्या हमारे जीवन का स्रोत जन्म के साथ यही पर निर्मित हुआ और क्या वह पहले के और बाद के चिन्हों को मिटाकर यही पर मृत्यु के साथ सूख जायेगा ?

ब्रह्मवादिनो वदन्ति -

किं कारणं ब्रह्म कुतः स्म जाता जीवाम केन क्व च सम्प्रतिष्ठाः ⁷⁰

अधिष्ठिताः केन सुखेतरेषु वार्तामहे ब्रह्मविदो व्यवस्थाम् ।

(श्वेताश्वतरोपनिषद् अध्या.1 मं)

कालः स्वभावो नियतिर्यदृच्छा भूतानि योनिः पुरुष इति चिन्त्यम् ।⁷¹

संयोग एषां न त्वानात्मभावादात्माप्यनीशः सुखदु र्व होतोः । ।

(श्वेता. अ. 1-मं-2)

इन अत्यन्त गूढ़ और गहन प्रश्नों पर भारतीय शास्त्रकारों ने विचार किया है और अपने दीर्घ चिंतन का परिणाम ही विचारपूर्वक उन्होंने घोषित किया है जीवन नाम की नदी का अनादिकाल से अनंतकाल तक प्रवाह बह रहा है। उसका थोडा सा अंश ही सामने नजर आता है उस नदी के समान जो सामने बह रही होती है जिस प्रकार नदी का वही प्रवाह पर्वतों में ऊँचों, नीचे भूमि भागों में वनों में गिरी कंदराओं में और समतल भूमि पर देखा जाता है उसी प्रकार जीवन का प्रवाह भी अनेक जन्म जन्मांतरों में तथा योनियों में से अपने कर्मों के कारण प्रवास करता हुआ वही अनेक प्रकार से प्रगट होता है। न नदी के किनारे और न उसका पात्र नदी कहलाते हैं बल्कि उनमें बहने वाला जल का प्रवाह ही नदी कहलाता है। उसी प्रकार शरीर जीवन नहीं है किंतु उसमें रहने वाला चेतन आत्मतत्त्व ही जीवन है जिस प्रकार यह शरीर सत्य है उसी प्रकार आत्म तत्त्व भी सत्य ही है किन्तु वे परस्पर भिन्न है। आत्मकर्ता है और शरीर उसका साधन है संसार में दो तत्त्व विचारशील मनुष्य की नजर से आते हैं। एक यह विशाल जड जगत है और दूसरा चेतन प्राणिसृष्टि और वह चेतन भी स्पष्ट रूप से दो प्रकार का दृष्टिगत होता है। सब प्राणियों में देखा जाने वाला एक आत्मा है और पूरी सृष्टि में देखा जाने वाला दूसरा परमात्मा है। असंख्य शरीरों में नजर आने वाला, अल्पज्ञ, अव्यापक, एकदेशी तथा कर्तव्य और भोक्त्व से युक्त अर्थात् कर्म करने वाला और फल भोगने वाला जो व्यष्टि का आत्मा है वह असंख्य है जैसा यह शरीर आत्मा द्वारा अधिष्ठित है वैसा ही पूरा ब्रह्माण्ड भी परमात्मा से अधिष्ठित है। हमारे इस प्राकृतिक शरीर में आज देखता है जो सूंधता है, जो सुनता है, बोलता है, चखता है और जानता है वही चैतन्यत आत्मा है।

एष हि दृष्टा श्रोता स्पृष्टा घ्राता रसयिता मन्ता बोद्धा कर्ता विज्ञानात्मा
पुरुषः।⁷¹ (प्रश्नोपनिषद् चतुर्थः प्रश्नः मंत्र 9)

जिसके बिना मन मनन नहीं करता तथा सारी इन्द्रियां शून्य हो जाती हैं वही आत्मा है। आत्मा भोक्ता है भोग्य नहीं। आत्मा कर्ता है कार्य नहीं। आत्मा दृष्टा है दृश्य नहीं आत्मा वक्ता है वाच्य नहीं है। आत्मा के प्रवाह के रुक जाने से पूरा शरीर रुक जाता है और संज्ञा शून्य हो जाता है।

किं मस्तिष्कमेवात्मतत्त्वमस्ति।

भौतिकवादी लोग मस्तिष्क को ही शरीर के सारे कार्य कलाप का केन्द्र समझते हैं। वे देह को एक स्वचालित यंत्र और मस्तिष्क को उसका नियामक समझते हुए आत्मा को मानने से इनकार करते हैं। उनके विचार से मस्तिष्क ही बाहरी इन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त करके उस पर अपनी सहज स्वाभाविक प्रतिक्रिया करता है वहाँ चेतन आत्मतत्त्व का कोई प्रयोजन नहीं है। ज्ञानेन्द्रियों द्वारा पहुँचाये हुए ज्ञान की प्रतिक्रिया इस जड़ शरीर में यंत्रवत् बिल्कुल सुनिश्चित सी नहीं होती अपितु बहुत ही सोची समझी और विवेक पूर्ण नहीं होती है। अनेक विकल्पों में से विचारपूर्वक एक को ही चुनने में जड़ मस्तिष्क कैसे समर्थ हो सकता है इसीलिए शरीर में चेतन आत्मतत्त्व है। सुषुप्ति अवस्था में सारे इन्द्रिय और मन के भी अपने कार्य से विरत होने पर भी 'मै' बहुत सुखपूर्वक सोया ऐसा ज्ञान जिसको होता है वही चेतन आत्मतत्त्व है।

आत्मतत्त्वसिद्धौ सांख्याचार्यस्य पञ्च हेतवः।

सांख्य सिद्धांत के प्रवक्ता महामुनि कपिल ने आत्मा और परमात्मा की सिद्धि में पांच महत्वपूर्ण कारण दिए हैं -

संघातपरार्थत्वात् त्रिगुणादिविपर्ययादधिष्ठानात् ⁷³
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थप्रवृत्तेश्च।। (सांख्यकारिका-7)

जड़परमाणुओं के समुदाय का दूसरे के लिए होने से प्रकृति के सत्, रज, तम इन तीन गुणों के विपरीत सत्ता के देखे जाने से, किसी के द्वारा अधिष्ठित होने से, उनके भोग्य भाव से, और उनमें मुक्ति की उत्कट लालसा होने से चेतन आत्मा अवश्य ही है। सत्, रज और तम इन तीन गुणों से मुक्त और जन्म, मरण से रहित चेतन तत्त्व वही आत्मतत्त्व है, जैसे सभी जुड़ वस्तुएँ किसी चेतन सत्ता से अधिष्ठित होती हैं वैसे ही आत्मा और परमात्मा से यह जड़ शरीर और ब्रह्मांड अधिष्ठित है। महर्षि गौतम ने भी अपने न्यायशास्त्र में इच्छ, सुख, दुःख, द्वेष प्रयत्न और ज्ञान यह शरीर में प्रस्फुरित होने वाले चैतन्यशील आत्मा के लक्षण कहे हैं -

इच्छद्वेषप्रयत्नसुखदःखज्ञानान्यात्मनोलिङ्गम्।⁷⁴ (न्याय 1-10)

सांख्यशास्त्र के अनुसार यह सारी सृष्टि मूल प्रकृति में विकृति उत्पन्न होने से बनी है। पहले प्रकृति से महत् तत्त्व उत्पन्न हुआ और उससे अहंकार नाम का तत्त्व उत्पन्न हुआ। उस अहंकार तत्त्व से पाँच तन्मात्राएँ उत्पन्न हुईं और उनमें पंच महाभूत उत्पन्न हुए फिर दश इन्द्रियाँ उत्पन्न हुईं और फिर मन उत्पन्न हुआ। इस प्रकार प्रकृति से 24 तत्त्व हुए इस प्रकार सृष्टि के उपादान कारण रूप प्रकृति के 24 तत्त्वों को साथ लेकर 25 वाँ आत्मा इस संसार की यात्रा करता है।

सत्त्वरजस्तमसां साभ्यावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान्
महतोऽहङ्कारात्पञ्चतन्मात्राण्यु- भयमिन्द्रियं तन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि पुरुष इति पञ्चविंशतिर्गणः।⁷⁵
(सांख्यकारिका 26)

प्रकृतेर्महांस्ततोऽहङ्कारस्तमाद गणश्च षेडशकः।

तस्मादपि षोडशकात्पञ्चभ्यः पञ्चभूतानि। (सांख्य का. 22)

व्यक्ति का आत्म सच्चित्स्वरूप और नित्य शुद्ध बुद्ध होते हुए भी प्रकृति के सहयोग के बिना कुछ भी करने में असमर्थ है। अतः सदा ही वह प्रकृति के द्वारा उपकृत है। आत्मा लंगड़े के समान असमर्थ है और प्रकृति अन्धे के समान शक्तिहीन है। अत एव वे दोनों पंग्वधन्याय अर्थात् लंगड़े और अंधे के न्याय का अवलंबन कर पार जाने में असमर्थ होते हैं। आत्मा की प्रकृति की घनिष्टता के कारण देह और आत्मा की एकरूपता प्रकल्पित कर आत्मा को ही शरीर समझकर उसके दुःखों से दुःखी होता है बुद्धि के द्वारा प्रस्तुत किए हुए सुख दुःखादि भावों को प्रकृति के विकार समझकर और अपने शुद्धस्वरूप को जानकर जब आत्मा उनसे अलिप्त रहता है तब वह मुक्त हो जाता है।

आत्मतत्त्वस्य पञ्चकोशात्मको विकासः।

व्यक्ति का आत्मतत्त्व अपने विकास मार्ग पर जाने के लिए प्रकृति के सहयोग से ही समर्थ हो सकता है। उसमें प्रथम विकास लता वृक्ष वनस्पतियों में दिखने वाला अन्नमय कोश का विकास है। उसके बाद प्राणमय कोश का विकास है। यह निश्चित रूप से अन्नमय कोश के विकास से श्रेष्ठ है। इस विकास में नजर आने वाला मनोमय कोश का विकास है क्योंकि मन तन्व का विकास मनुष्य योनि में ही हुआ है। इसके पश्चात् विज्ञानमय कोश का विकास हुआ जो ज्ञान विज्ञान से पूर्ण नरश्रेष्ठों में देखा जाता है। उसके आगे महर्षियों ने जिस पाँचवें आनन्दमय कोश के विकास की चर्चा की है। उसमें व्यक्ति का आत्मतत्त्व परमात्मतत्त्व के साथ सामंज्य को प्राप्त होता है अपने यथार्थ शुद्ध स्वरूप को तथा आनंदमय आत्मतत्त्व को भूलकर व्यक्ति के आत्मतत्त्व का प्रकृति के साथ तादात्म्य ही उसके दुःख का कारण है।

अहङ्कारात्मतत्त्वयोः संघर्षः

जैसा पहले कहा गया है इस जगदादि की सृष्टि मूल प्रकृति के विकार से हुई है। प्रकृति से महत् तत्त्व उत्पन्न हुआ और उस महत् तत्त्व से वह प्रसिद्ध अहंकार उत्पन्न हुआ। उस अहंकार नाम के तत्त्व से यह समस्त ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ। इसीलिए यहाँ देखा जाने वाला मद और दर्प से पूर्ण अपने स्वत्व का गर्व और अहंकार प्रकृति का ही विकार है।

माण्डूक्योपनिषद् 2-1, बृहदारण्यकोपनिषद् 4-2,
3-छान्दोग्योपनिषद् अष्टमप्रपाठक 1-2-3-4

प्रत्येक वस्तु में देखा जाने वाला अहंकार और स्वत्व और ममत्व की भावना और स्वतंत्र सत्ता का अभिमान यह अहंकार नाम का प्रकृति का ही विशेष गुण है। उस आत्मतत्त्व के विकास के लिए प्रकृति के साथ उसका संग भी आवश्यक है और उससे अहंकार और चैतन्यमय आत्मतत्त्व के बीच संघर्ष और संख्य भी अनिवार्य है। संसार में लोगों जातियों और राष्ट्रों में विद्वेष मत्सर, घृणा आदि का मूल यही अहंकार है जो प्रकृति का विकार है न कि चिदात्मा की सृष्टि है। आत्मतत्त्व को पूर्णतया भुलाये हुए और इस संसार में आज स्वार्थ ही मानव जीवन का साध्य मुख्य प्रवृत्ति और लक्ष्य बन गया है। मेरी पत्नी, मेरा शरीर, मेरा घर सब कुछ मेरा अपना खुद का इस प्रकार आज का मनुष्य पूर्णतया स्वार्थ और अहंकार से भर गया है। शरीर में यह कौन है जो मेरा, अपना और स्वतः का ऐसा बारंबार कहता रहता है। क्या यह केवल भौतिक शरीर ही है या शरीर से अलग कोई आत्मतत्त्व है। वन को प्रस्थान करने वो महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपनी मुमुक्षु पत्नी को पहले कहा था कि दुनिया में बंधुबाधव पति, पुत्र और पत्नी सभी आत्मा के लिए ही प्रिय होते हैं। माता की कामना के लिए माता प्रिय नहीं होती प्रत्युत अपनी कामना के लिए माता प्रिय होती है पुत्र की कामना के लिए प्रिय नहीं होता बल्कि अपनी कामना के लिए पुत्र प्रिय होता है।

बृहदारण्यकोपनिषद् 2-4-5 याज्ञवल्क्य मैत्रेयी संवादः । 77

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्या सितव्यो मैत्रेय्यात्मनो
वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम्। (बृ.अ. 2 ब्रा.5)

निश्चित ही आत्मा सब में समान है। उस आत्मा का सबप्रकार से विकास ही सब का साध्य है वास्तव में यही अर्थ अपने लिए प्रिय है। उसी आत्मा के लियाण और मुक्ति के लिए ही सब पदार्थ होते हैं इसीलिए आत्मा का ही सदा अनुशीलन ध्यान चिंतन दर्शन और मन होना चाहिए। प्रपंच में आत्मतत्त्व को ही प्रमुख समझकर ओर नर जीवन का साध्य समझकर व्यवहार करेंगे तो निश्चित ही हमारा विकास उर्ध्वगामी होगा विपरीत अवस्था में अधेमुखी होगा। इसीलिए अहंकार गुण को दूर कर उस आत्म तत्त्व का विकास कर संसार के सुख और कल्याण की कामना ही करने वाले लोगों को प्रयत्नपूर्वक साध्य करना।

विशेष - उपजाति छन्द।

अष्टम सर्ग - कर्मतत्त्वरहस्यम्

हम कहाँ से आये हैं और यहाँ से कहाँ जा रहे हैं ? यहाँ जन्म ग्रहण करने से हमारा क्या हेतु है ? ऐसे गहन और गूढ प्रश्न बुद्धिानों के सामने अनेक बार उत्पन्न होते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि इस संसार का कोई निर्माता नहीं है। इस दुनिया के साथ वस्तुतः असंख्य जीव आकस्मिक रीति से प्रकृति से ही प्रगट हुए और कुछ लोग कहते हैं कि परमात्मा ने ही उन्हें बनाया है। भौतिकवादियों का कहना है कि गोबर से जैसे कीड़े उत्पन्न होते हैं वैसे ही जीव भी प्रकृति से ही उत्पन्न हुए और दूसरे पुनर्जन्म न मानने वालों का कहना है कि वे परमात्मा ने ही बनाये हैं।

पृथिव्यप्तेजोव्यायुरिति तत्त्वानि ।⁷⁸
तत्समुदाये शरीरेच्छिन्दय विषय संज्ञा ।
तेभ्यो भूतेभ्यश्चैतन्यम् ।
चैतन्यविशिष्टः कायः पुरुषः ।
स्वभावं जगतः कारणमाहुः ।
न परमेश्वरोऽपि कश्चित् ।
परलोकयायी जीवः प्रत्यक्षेण नानुभूतये ।
पर लोकिनोऽभावात्परलोकाभावः इति चार्वाकसूत्राणि ।।
जडभूतविकारेषु चैतन्यं यत्तु दृश्यते ।
ताम्बूलपूगचूर्णानां योगद्रागं इवोत्थितम् ।

(सर्वदर्शनसिद्धान्तसंग्रहः)

भाव से अभाव और अभाव से भाव की उत्पत्ति को सर्वथा अशक्य समझने वाले वैज्ञानिक भी यदि केवल जड पंच महाभूतों से चैतन्य की उत्पत्ति मानते हैं तो यह बहुत ही आश्चर्य है। जडभूतों से चैतन्य उत्पन्न ही कैसा हुआ ? क्योंकि कार्य में कारण से भिन्न गुण नहीं होते। जीव की उत्पत्ति भी जड से कदापि शक्य नहीं क्योंकि कार्य सदा कारण के गुणानुरूप ही होता है विज्ञान के शोध और उन्नति का मूलाधार कार्यकारण भाव यदि सत्य है तो चेतनता की उत्पत्ति को भी निष्कारण और अकस्मात् नियम को छोड़कर उत्पन्न होना मानना शक्य नहीं है।

कारणाभावत्कार्याभावः ।⁷⁹ (वैशेषिक अ.2 आ 2 सू.1)
कारणगुणपूर्वकः कार्यगुणो दृष्टः । (वैशेषिक अ.2 आ 1 स 1 24)
भावे चोपलब्धेः । सत्त्वचावरस्य । (ब्र.सू. 1 अ. 2 पा.1 सू.1)
नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः । (गीता 2-16)

नासदुत्पातो नृशृङ्गवत् । (सांख्यदर्शनम् अ.1 सू.79)

कथमसतः सञ्जयेत । (छान्दोग्योपनिषद् 6-2-2)

किसी पूर्व पर संबंध, संगति और सूत्र के बिना यहीं पर यदि चैतन्य तत्त्व की उत्पत्ति हो जाती है तो विभिन्न जाति के प्राणियों में देखी जाने वाली सुख दुख की विषम स्थिति सर्वथा अगम्य है। कुछ (प्राणी) यहाँ पशु-पक्षी कैसे बने और कुछ उनमें सर्वश्रेष्ठ मनुष्य कैसे बने ? यहाँ जन्म से ही कुछ सुखशाली कैसे है और कुछ दुख सागर में मग्न कैसे है ? कुछ अत्यंत तीव्र बुद्धिवाले और कुशल है और कुछ मंदबुद्धि और ग्रहण करने में असमर्थ है। इस प्रकार की विषमता क्या स्वयं ही शक्य है या इसका कोई यहाँ कारण होगा ? एक यहाँ गौतम बुद्ध हो गया तो दूसरा महर्षि कणाद। कोई ईशुमसीह तो कोई कपिल हो गया कोई महात्मा गांधी हुआ तो कोई शिवाजी क्या ये सब घुणाक्षर न्याय से अकरस्मात् हो गए ? क्या नब्बे-सत्तर साल पूर्व हमारा जीवन यहाँ एकदम प्रगट हुआ ? क्या यहीं पर वह शून्य में से बिना किसी योजना के और बिना किसी कारण के उत्पन्न हुआ ? क्या यहीं उसका अंत होगा ? महर्षि व्यास, ईशु मसीह, शंकर, सिंकदर, गांधी और बुद्ध क्या पूर्व बिना एकदम और अकरस्मात् केवल माता-पिता के समागम मात्र से और पहली बार ही यहाँ उत्पन्न हुए ?

कर्मवैचित्र्यात्मसृष्टिवैचित्र्यम् । ⁸⁰ (सांख्यदर्शन 6-41)

वैषम्यनैर्घृण्ये न सापेक्षत्वात् तथाहि दर्शयति ।। (ब्र.सू. 2-1-39)

चैतन्य जैसी अल्पदभूत दिव्यवस्तु कारण के बिना ही एकाएक शून्य से यहाँ कैसे उत्पन्न होगी और पूर्णता को प्राप्त होकर क्या विनाश को प्राप्त होगी इस पर विज्ञानवादि सुजनों को विचार करना चाहिए। आत्मा का पूर्व का और बाद का जन्म मानने वालों ने निष्कारण ही विषमता उत्पन्न करने से उस परमेश्वर को अन्यायकारी और बहुत विषय दृष्टि वाले स्वच्छन्द राजा के समान सिद्ध किया है। जिस प्रकार नदी के तेज प्रवाह में बहने वाला जल तेजी से आगे निकल जाता है उसका थोड़ा भाग ही हम देख पाते हैं। उसी प्रकार जीवन नदी के तीव्र प्रवाह में थोड़े अंशों को हम देख पाते हैं उससे अनंत गुना तो अदुश्य ही रहता है। मनुष्य असंख्य योनियों में घूमकर अपने कर्मों से अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य जन्म में आकर जीव ऋषियों में आसक्त न होकर मुक्ति को प्राप्त करता है नहीं तो फिर उसको जन्मधारण करना पड़ता है।

योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः । ⁸¹

स्थणुमान्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम् ।। (कठोपनिषद् 2-2-7)

जीवात्मा की यह लंबी यात्रा चल रही है जन्मांतरों में अपने कर्म फलों को भोगकरवह इस मानव जन्म से शुभकर्मों को करने और चिरसौख्य धाम मोक्ष को प्राप्त करने के लिए आया है।

पुण्यौ वै पुण्येन कर्मणा पापः पापेन ।⁸² (बृहदारण्यकोपनि 3-2-13)

पुण्येन पुण्यं लोकं नयति पापेन ⁸³

पापमुभाभ्यामेव मनुष्यलोकम् (प्रश्नोपनिषद 3-7)

यहाँ पर केवल मनुष्य योनि ही कर्मयोनि है और बाकी सब भोग योनियाँ हैं। प्राणी उन से में कर्म करने में स्वतंत्र नहीं है। वहाँ वह स्वाभाविक और नियुक्त कर्म ही करता है। दूसरे जन्मों में किए हुए कर्म का फल मनुष्य को परमात्मा को साक्षी रखते हुए निश्चित रूप से भोगना ही पडता है कर्मानुसार वह कर्मफल जाति आयु और भोग होता है ऐसा शास्त्रविहित कर्म तत्त्व है। प्रारब्ध संचित और क्रियमाण ऐसे मानव कर्म के तीन रूप होते हैं मनुष्य इस समय जो कर रहा होता है उसे क्रियमाण कर्म कहते हैं वहीं सिद्ध होने पर वह संचित कहलाता है। वहीं संचित कर्म जब फल देने लगता है तब प्रारब्ध कहलाता है ।

सति मूले तद्धिपाको जात्यामुर्भोगाः ।⁸⁴ (पातंजलयोग 1-13)

पूर्वकृतकलानुबन्धात्तदुत्पत्तिः । (न्यायदर्शनम् 2-3-64)

ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माकल्यदर्शनात् । (न्यायदर्शनम् 4-1-19)

कार्य का कारण होना अपरिहार्य है। उसे पुनः दूसरा कार्य हो जाता है और वह फिर दूसरे कार्य का कारण हो जाता है और वह फिर अगले का। इस प्रकार कार्य कारण का चक्र यहाँ निरंतर चलता है। आज अनुभव किया हुआ कर्म फल कदाचित् दूसरे कर्म को जन्म देता है और उससे फिर दूसरा कर्म उत्पन्न होता है उस कार्य कारण के शाश्वत चक्र के समान कर्म चक्र भी चक्र के आरों की पंक्ति के समान सदैव चलते रहता है। यह संपूर्ण विश्व और जड़भूत सृष्टि प्रकृति के कार्यकारण नियम के अधीन है। अतः कार्यकारण का नियम वहाँ अनिवार्य है। किन्तु चेतन आत्मतत्त्व के विषय में वैसा नहीं है अनेक बंधनों में जकड़ा हुआ और कार्यकारण के नियमों में बंधा हुआ यह जीवलोक उनसे मुक्त होने और परमसौख्य निधान परात्म तत्त्व को पाने के लिए सदैव प्रयासरत रहता है। उस कार्यकारण के बंधन में बंधे प्राणी की पूर्ण बंधन से मुक्त होने की प्रबल इच्छा केवल इसी मानुष जन्म कहलाने वाली अद्भुत कर्मयोनि में ही कार्यान्वित हो सकती है। दूसरी असंख्य योनियों में प्राणी केवल भाग्य के निर्देश पर ही कार्य करता है। उसने अपने अत्यद्भुत बुद्धि वैभव से सचमुच जड़ भौतिक प्रकृति को जीतकर मानव के जीवन में निश्चय ही अत्यद्भुत और दिव्य भव्य क्रान्ति का सूत्रपात किया है। उसकी इस परमोत्कर्ष की साधकतीव्र और सूक्ष्म गुणों से युक्त बुद्धि के साथ उसके सारे बंधनों को काटकर मुक्त होने उसकी आत्मा की उत्कट और दुर्निवार इच्छा भी है। जन्म और मृत्यु के दुख का कारण यह कर्म चक्र यहाँ कैसे चलता है इसका विचार करने पर दुर्दम्य, काम, मद, मोह आदि विकार ही उसके कारण हैं ऐसा निश्चित रूप से प्रतीत होता है। काम क्रोधादि

मानसिक विकारों के जाल में निबद्ध होकर मनुष्य स्वतंत्र कर्ता के समान कर्म करने में असमर्थ होकर यहां दुष्कर्म चक्र को चलाता है। और उसी में बद्ध होकर मकड़ी की तरह मर जाता है। प्रायः लोग अपने प्रबल मानसिक विकारों के अधीन होकर और अपने चेतन ओर शुद्ध आत्म तत्व को भूलकर उन भोग योनियों के गर्हित जीवों के समान बुद्धि और विवेक को छोड़कर पशु के समान आचरण करते हैं। आनंदधाम परमात्मा की विशाल शक्ति का साक्षात्कार यदि मनुष्य जन्म में ही हुआ तो महान कल्याण है। नहीं तो विनाश महान है।

इह चेदवेदीदथ सत्यस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनिष्टिः।^{१५} (केनोपनिषद्

2-5)

इसलिए सौ बड़े कामों को छोड़कर भी परमपुरुष परमात्मा के दर्शन का महान प्रयत्न मनुष्यों को अष्टांग योग के द्वारा करना चाहिए। मनुष्य जन्म का वहीं परम साध्य है।

विशेष - वृत्तं वसन्ततिलका

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभ्रजा जगौ गः।

नवम सर्ग - निष्कामकर्म योग

फल की आशा किए बिना तथा स्वामित्व की भावना से रहित और किसी प्रकार की अभिलाषा के बिना केवल कर्तव्यबुद्धि से किया जाने वाला श्रेष्ठ कर्म ही निष्काम कर्मयोग नाम का वह उज्ज्वल रत्न है। जो प्राचीन वैदिक ऋषिमुनियों ने ब्रह्माण्ड चिंतन रूप गहरे सागर के मंथन से प्राप्त किया था। निष्काम भाव से कर्म करते हुए ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए इस वेद के आदेश को मध्यकाल में लोगों ने बिल्कुल भुला दिया था। केवल ब्रह्म ही सत्य है और संसार झूठा है तथा आत्मा ही सत्य है और शरीर मिथ्या है और ज्ञान ही सत्य है कर्म बिल्कुल झूठा है ऐसी एकदेशी और असत्य विचारधारा संसार में फैल गई है।

कुर्वन्नेवेह कर्मणि जीजीविषेच्छतं समाः।⁸⁶

एवं त्वयि नान्ययेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। (यजु. 40-2)

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।⁸⁷ (शंकराचार्यः)

संसार का कल्याण सुख और शान्ति का नाश करने वाली यह वेदादिशास्त्र विरुद्ध विचारधारा संसार में वेदों के ही नाम से फैल गई और वेदान्त ऐसी प्रसिद्ध संज्ञा उसको प्राप्त हुई। उसी लोक और परलोक का नाश करने वाली विचारधारा को जड से उखाड़ फैंकने वाले महान ऋषिमुनि हो गये ओर ईक्ष्वाकवंश के बड़े-बड़े राजा महाराजा तथा जनक जैसे राजर्षि हो गए। अर्जुन जैसा धुनधारियों में श्रेष्ठ वीर की इसी कर्म की भावना से युद्धभूमि पर शास्त्र छोड़कर हताश हो गया था। उसी के खंडन के लिए भगवान श्री कृष्ण ने गीता का समरांगण में वह संदेश सुनाया था। गीता नाम के संसार में निष्काम कर्म का प्रतिपादन करने वाले उस अद्भुत उपदेश में अर्जुन का मोहजाल एकदम छिन्नभिन्न हो गया। जैसे सूर्यकिरणों से अंधकार हो जाता है।

इमं विस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्यम्।⁸⁸

विवस्वान् मनवे प्राह मनुर्दिक्षाकवेऽब्रवीत्।। (गीता 4-1)

समुपोदेष्वनीकेषु करुपाण्डवयोर्मृधे।⁸⁹

अर्जुने विमनस्कै च गीता भगवता स्वयम्। (म.भा. 348-8)

कर्मण्येवाधिकरस्ते मा फलेषु कदाचन।⁹⁰

मा कर्मफल हेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि। (गीता 2-47)

इस ब्रह्मांड चक्र को चलाने वाले उस परमात्म शक्ति ने निश्चय ही हमको झूठे इन्द्रियों के कूट जाल में दुःख भोगने के लिए नहीं फेंक दिया वह शक्ति ऐसी निर्दय और निर्विवेकी नहीं है। मानव जन्म के सर्वोच्च साध्य मोक्ष को प्राप्त करने के लिए यह संसार ही

कर्म भूमि है और यह दिव्य मानव देह ही आठ चक्रों वाला रथ है। इस प्रकार यह शरीर संसार बिल्कुल मिथ्या नहीं है।

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।⁹¹

तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषाऽऽवृत्त ।। (अथर्ववेद 10-2-3)

अगर शरीर है तो भूख व प्यासादि उसके धर्म भी है ही उनकी पूर्ति भी अवश्य ही करनी चाहिए। उनके पीछे प्रस्फुरित होने वाला जो आत्मतत्त्व है उसके प्रति भी सावधान होना चाहिए यही हमारी वैदिक संस्कृति है। संसार का भोग करना चाहिए किन्तु लिप्तवृत्ति से नहीं। समय आने पर उसका त्याग भी स्वयं ही करना चाहिए। त्याग भोग तथासहयोग और समन्वय ही वैदिक संस्कृति का व्यावर्तक लक्षण है। कर्म के विषय में संसार में हो दृष्टियाँ रही हैं। एक कर्मविरत सांख्यदृष्टि है तो दूसरी निष्काम कर्मयोगात्मक केवल ज्ञान में ही निष्ठावाली प्रथम है तो निष्काम कर्मवाली दूसरी है।

लोकेऽस्मिन् द्विविधा निष्ठापुरा प्रोक्ता मयाऽनघ ।⁹²

ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् । (गीता 3-3)

दुःख का मूल होने से कर्म ही नहीं करना चाहिए यह एकांगी और भ्रममूलक विकल दृष्टि है और ब्रह्म ही सत्य है और बाकी जगत् मिथ्या है इस अवैदिक विचार की ही वह सिद्धि है। कर्म का विरोध करने वाले मनुष्यों को तनिक विचार करना चाहिए कि क्या कर्म न करते हुए मनुष्य क्षणभर भी जीवित रह सकते हैं। खाना, पीना, साँस लेना वह सभी कर्म ही हैं।

नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत ।⁹³

कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ।। (गीता 3-4)

मैं यह कर्म करता हूँ इसलिए उसका फल भी मुझे निश्चित रूप से ऐसा ही मिलना चाहिए ऐसी प्रबल आशा और अभिलाषा ही वास्तव में मनुष्य के दुःख का मूल कारण है। कर्म का त्याग करना शक्य नहीं ठीक भी नहीं। किन्तु उसके फल की इच्छा का त्याग किया जा सकता है। इसलिए निःसंग, निर्मम और निरीच्छ कर्म ही श्रुति शास्त्रों को जानने वालों ने श्रेष्ठ समझा है।

नहि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः ।⁹⁴

यस्तु कर्मफल त्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ।। (गीता 18-11)

विश्वात्मा की इस विशाल और दुर्बोध सृष्टि में उसके अत्यंत गूढ और दुर्बोध तंत्र को मानव की अल्पमति समझ नहीं सकती। यदि यदि हम कर्मगति न समझ सके

तो आश्चर्य क्या हैं ? मनुष्यों का अधिकार केवल कर्म करने में है किन्तु फलप्राप्ति में कदापि नहीं। इसलिए मनुष्यों को फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए और न कर्म से ही विरत होना चाहिए ऐसा भगवान श्री कृष्ण का कहना है दुनिया में फल की आशा ही दुःख का कारण है क्योंकि फल सदैव आशानुरूप नहीं होता। मनुष्य का फल प्राप्ति के विषय में अधिकार नहीं है और अनाधिकार चेष्टा दुःख का ही कारण होती है। आशाकर्ता के हृदय में विषयों के बारे में आसक्ति निर्माण करती है और आसक्ति से उसमें बलवान संग निर्मित होता है और संग से बलिष्ठ काम का पदार्पण होता है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।⁹⁵

मा कर्मफलहेतुर्भूर्माते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ (गीता 2-47)

ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गःस्तेषपजायते ।⁹⁶

सङ्गत्सङ्गजायते कामः कामात्क्रोधोऽभियते ॥ (गीता 2-62)

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।

स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशा प्रणश्यति ॥ (2-63)

एक अत्यंत दक्ष और कुशल वैद्यराज बड़ी तन्मयता से रोगी का इलाज करता है किन्तु उसमें आसक्ति रहित होने से रोगी के मरने पर भी दुःखी नहीं होता किन्तु किन्तु उसके पुत्र के मरने पर वैसा नहीं होता। इस प्रकार इस लौकिक जीवन में भी निष्काम कर्म की महत्ता सब को ज्ञात है। केवल यज्ञ की भावना से कर्म करने वाले लोग ही सभी सुखों को प्राप्त कर धन्य होते हैं। और पापमल को धोकर और निर्मल होकर मोक्ष पदवी को प्राप्त करते हैं।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबंधनः ।⁹⁷

तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर ॥ (गीता 3-9)

त्याग ही संसार में सर्वश्रेष्ठ तत्त्व है, लेना, देना सहयोग और समन्वय ही सुखशांति का आधारभूत तत्त्व है। उस त्याग भाव की शिक्षा के लिए ही मुनियों ने द्रव्य यज्ञ की कल्पना की है। यज्ञरोष का भोग करने वाला ही संसार में पाप मुक्त और कल्याण का भागी होता है। और जो पापी है वह अपने लिए ही पकाता है वह अकेला ही खाने वाला कंजूस और महापापी होता है।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुध्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।⁹⁸

भुञ्जते ते त्वघं पापा मे पचन्त्यात्मकारणात् ॥ (गीता 3-13)

विशेष - वृत्तं = वसन्ततिलका

दशम सर्ग - वर्णाश्रम व्यवस्था

समाज का संधारण और पोषण करे वाली वर्णाश्रम नाम की अभूतपूर्व ऐसी सामाजिक सुव्यवस्था प्राचीन समाजशास्त्रियों ने यहाँ परिकल्पित की थी। मनुष्य के आत्मतत्त्व के विकास की प्राप्ति के साथ अंत में परमात्वतत्त्व की प्राप्ति ही जीवन का लक्ष्य रहा है। उसके लिए संसार, शरीर और भोग केवल साधन के रूप में आवश्यक है। मनुष्य के भौतिक विकास के साथ उसका आत्मिक विकास भी समुचित मात्रा में साध्य करने के लिए ही प्राचीन ऋषियोंमुनियों ने वर्णाश्रमों की श्रेष्ठ पद्धति का विकास किया था।

चतुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्।⁹⁹

भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति।। (मनु 12-17)

संसार के कल्याण की विशाल दृष्टि रखने वाले प्राचीन समाजशास्त्रियों ने मानव जीवन को चार पड़ावों से युक्त ऐसी एक प्रदीर्घ यात्रा ही समझा था। उसमें ब्रह्मचर्य पहला पड़ाव, गृहस्थाश्रम दूसरा पड़ाव, वानप्रस्थ तीसरा, चौथा पड़ाव संन्यासाश्रम था।

ब्रह्मचर्य आश्रम -

पूर्वकाल में सात-आठ वर्ष के बालक को उसका पिता विद्या ज्ञान और तप में श्रेष्ठ गुरु के पास विद्या, वेद तथा धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा था। शिष्य की प्रवृत्ति को भली प्रकार जांचकर और उसके यथा योग्य वर्ण का निश्चयकर और तदनु रूप उसका उपनयन कर और शिक्षा देकर गुरु उसको योग्य बनाता था। विद्याभिलाषी बालक जितेन्द्रिय होकर तथा कठोर व्रत का पालन करते हुए और अपने गुरु के प्रति पूरी श्रद्धा भक्ति रखते हुए ज्ञान की प्राप्ति की इच्छा से दीर्घकाल तक आश्रम में रहकर गृहस्थाश्रम के लिए पूर्णतया समर्थ होता था। ब्रह्मचारी बालक अपने वर्णानुकूल उत्तम शिक्षा, सदाचार और चरित्र की दीक्षा को प्राप्त कर विद्या ओर तप से यथार्थ दृष्टि की प्राप्ति कर तेजस्वी बनकर घर लौटता था। गुरुकुलों में बालकों को शहर से दूर जंगल में तप करते हुए और व्रतस्थ रहकर परिश्रम पूर्वक जीवन बिताते हुए और सेवा करते हुए गुरु के पास बैठकर विद्या सीखनी पडती थी वहाँ शुद्ध और सादा तथा बिना तीखा और कडवा रहित भोजन करना पडता था। वहाँ न अभ्यंगतेल या न सुगंधित द्रव्य, न छता, न जूता, न शीशा, न पलंग, कुछ भी नहीं होता था। इस प्रकार अत्यंत कठोर साधनमय बटुका जीवन होता था।

वर्जयेन्मधु मांसं च गन्धमाल्यं रसान् स्त्रियः।¹⁰⁰

शुक्तानि यानि सर्वाणि प्राणिनां चैव हिंसनम्।। (मनु 2-152)

अभ्यङ्गमञ्जनं चाक्षोरुपानच्छन्धारणम् ।

कामं क्रोधं च लोभं च नर्तनं गीतवादनम् ।। (मु: 153, 154)

यहीं इस जन्म में ब्रह्म का साक्षात्कार किया तो ठीक है क्योंकि सत्यासत्य का विवेक लक्षणवाली तथा करने और न करने में समर्थ, प्रभावशाली और दुर्लभ मेधाबुद्धि जो दूसरे प्राणियों को दुर्लभ है केवल इस मनुष्य योनि में ही प्राप्त होती है। गुरु शिष्य का समावर्तन संस्कार तथा दीक्षान्त विधि सपन्नकर उसको गुरुतर और विशाल गार्हस्थ्यभार को स्वीकार करने की आज्ञा देता था। इस दीक्षांत संस्कार विधि के अवसर पर गुरु तैत्तिरीय उपनिषद् में दिया हुआ जो महान उपदेश शिष्य को देता वह आज भी स्मरणीय है। ब्रह्मचर्य नाम का वह तत्त्वरत्न प्राचीन दिव्यार्थ दृष्टिवाले मुनियों का एक दिव्य और अद्भुत आविष्कार ही है जिसका वर्णन वेदों में पाया जाता है।

वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति । सत्यं वद् । धर्मधर स्वाद्या यायान्मा प्रमदः । आचार्याय प्रियं धनमाहात्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः । सत्यान्न प्रमदितव्यम् । धर्मान्न प्रमेदितव्यम् । कुशलान्न प्रमादितव्यम् । भूत्यै न प्रमदितव्यम् ।¹⁰¹

(तैत्तिरायोपनिषद् 1.11.1-3)

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति ।¹⁰²

आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणामिच्छते ।।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्देत पतिम् ।

(अथर्ववेद-कां 11 सू. 5-17, 18)

नश्वर इन्द्रियार्थों से मन को रोककर ब्रह्म नाम की महती चेतन परमात्म शक्ति में विचरण या विहार करना ब्रह्मचर्य नामक सर्वश्रेष्ठ तप है।

गृहस्थाश्रम -

विद्याध्ययन समाप्त वह ब्रह्मचारी गुरु की आज्ञा से पिता के घर आकर और उन से विचार विमर्श कर अनुरूप पत्नी के साथ गृहस्थाश्रम में पदापर्ण करता था। हम धन के स्वामी हों। और सौ वर्ष तक सुखपूर्वक जीवें ऐसी उन्नत आशा को धारण करने वाली संस्कृति भोगों के विरुद्ध कभी नहीं हो सकती।

गृहणामि ते सौभागत्वाय हस्तं मया पत्या जरदृष्टिर्यथासः ।¹⁰³

भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ।।

(अथर्ववेद 14-1-50)

पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदं शतं ¹⁰⁴

प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।

(वज्रु 36-24)

सांसारिक भोगों के विशाल महासागर को पारकर मनुष्य को आगे निकल जाना चाहिए न कि उस में लिप्त रहना चाहिए। इसी के लिए गृहस्थाश्रम या जैसे समुद्र सब नालों और नदियों और वृक्ष, लतावल्लियों के आश्रय होते हैं वैसे ही गृहस्थ आश्रम सभी आश्रमों का आधार होने में सब में श्रेष्ठ है, क्योंकि धन के उपार्जन का अधिकार केवल इसी में है यह गृहस्थाश्रम प्रवासी की लंबी यात्रा में एक पडाव होता था। यह एक विश्रामावस्था न होता था, न कि निवास स्थान। किन्तु यह सब भूलकर आज सब मृत्युपर्यंत उसी में टिके रहते हैं। चारों वेदों में ब्राह्मण ग्रन्थों में, उपनिषदों में स्मृतिग्रन्थों में इन वर्णाश्रमों का वर्णन है। गृहस्थाश्रम में रहते हुए माता, पिता बहन भाई आदि सदस्यों से किस प्रकार स्नेह, प्रेम, सौहार्द पूर्ण व्यवहार करना चाहिए वेदों में बड़ा ही सुन्दर वर्णन है।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।¹⁰⁵

जार्या पत्ये मधुमती वाचं वदतु शान्तिवाम् ।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।

सभ्यञ्चः सप्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।। (अथर्ववेद 3.30 - 2-3)

वानप्रस्थ आश्रम -

गृहस्थ अपन बढ़ती आयु के कारण शरीर पर झुर्रियाँ और सिर के बाल सफेद देखकर घर गृहस्थी का भार पुत्र पर सौंपकर तप करने के लिए वन जाता था। वानप्रस्थ प्रपंच से भाग जाना नहीं था। संसार के भोगों की नश्वरता को देखकर और उनसे अपने वियोग को अनिवार्य जानकर उनसे स्वयं निवृत्त होना ही वानप्रस्थ था। सबकाखुद ही त्याग करना बुद्धि और विवेक से युक्त उत्तम मार्ग है। त्याग, निवृत्ति और अपरिग्रह ही वानप्रस्थ के मूल तत्त्व हैं।

गृहस्थस्तु यदापश्येद् वलीपलितमात्मनः ।¹⁰⁶

अपत्यस्यैव चापत्यं तदारण्यं समाश्रयेत् ।। (मनु. 6-2)

आ नचैतमारभस्व सुकृता लोकमपि गच्छत प्रजानन् ¹⁰⁷

तीर्त्वा तमांसि बहुधा महान्त्यजो नामां क्रमता तृतीयम् ।

(अथर्व. कां. 9-5-1)

ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेद् गृहीभूत्वा वनी भवेद् वनी भूत्वा प्रव्रजेत् ।¹⁰⁸

(शतपथब्राह्मण.कां-14)

त्याग की उस महनीय भावना के निर्माण और संवर्धन के लिए संस्कार, वर्णाश्रम, यज्ञ और पूजा पर्व के ऋषिमुनियों ने संस्कृति रूपीलता के आधार वृक्ष के समान प्रचलित किए थे।

संन्यासाश्रम -

परार्थ के लिए स्वार्थार्पण की यह दिव्योज्ज्वल भावना चौथे संन्यास आश्रम में अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुंच जाती है। निश्चय ही संन्यासी संसार से एक रूप हो जाता है। पुत्रैषण, लोकैषणा और वितैषणा इन तीनों वासनाओं को हृदयके किसी अज्ञात कोने में से भी दूर कर निःसंगवृत्ति में संसार में विहार करना ही संन्यास मार्ग है। आसक्ति, विद्वेष और ममत्व का त्याग ही संन्यासी का आभ्यन्तर लक्षण है। संन्यासी को लोकहित के लिए निःस्वार्थ भाव से सदैव कर्म करते रहना चाहिए और कभी भी उनको कर्म किए बना नहीं रहना चाहिए यह शास्त्रोक्त उपदेश है।

यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेत् वनाद्वा गृहाद्वा ।¹⁰⁹ (शतपथब्राह्मण)

वनेषु च विहृत्यैवं तृतीय भागमायुषः ।¹¹⁰

चतुर्थमायुषो भागं व्यक्त्वा संगान् परिव्रजेत् ।। (मनु. 6.33)

प्रजापत्यां निरुप्येष्टिं तस्यां सर्ववेदसं हुत्वा ब्राह्मणः प्रव्रजेत् ।।¹¹¹

(यजु. वेद ब्राह्मण)

पुत्रैषणायाश्च वितैषणायाश्च लोकैषणायाश्च व्युत्यायाथ भिक्षार्थं चरन्ति ।¹¹²

(शत का. 14 प्र.5 ब्रा. 2 क 1)

आज भी ऐसे ही निष्पाप तथा वीतराग तथा संपूर्ण मानव मात्र के कल्याण में दीक्षित संन्यासी ही संसार का कल्याण करने में समर्थ हो सकते हैं।

विशेष - वृत्तं - उपजाति।

एकादश सर्ग - वर्ण व्यवस्था

मनुष्य के तीन प्रकार के दुःख हैं। प्रथम अज्ञान, दूसरा अन्याय, तीसरा अभाव। इन तीनों दुःखों से पीड़ित मानवों के सुख के लिए उनमें से किसी एक के निवारण के लिए अपनी योग्यता बुद्धि और बल के अनुसार दृढ़ प्रतिज्ञा ही वर्ण है।

“गुणकर्मायर्त्ता वर्णव्यवस्था न जन्मायत्ता” जन्म की अपेक्षा न करते हुए गुणकर्म से, सिद्ध मनुष्य की नैसर्गिक वृत्ति पर आधारित वर्ण व्यवस्था ही भारत की सामाजिक व्यवस्था थी। व्यक्ति के स्वभाव और गुणकर्मानुसार मनुष्यों को चार वर्णों में विभक्त किया है। वे ही क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र इन नामों से प्रसिद्ध हैं।

ब्राह्मणाः

जो लोग विद्याध्ययन और ज्ञान के प्रचार प्रसार से तथा अनेक प्रकार के आविष्कारों से समाज के अज्ञान दुःख का निवारण करते हैं। वे ब्राह्मण कहलाते हैं। जो अपने ज्ञान और विद्या की सूर्य किरणों से समाज का अज्ञानान्धकार दूर कर अपने राष्ट्र को सदैव प्रकाशित करते हैं ऐसे विद्याव्रती लोग ब्राह्मण वर्ण के कहलाते हैं।

क्षत्रियाः

अन्याय मात्र का प्रतिकार ही जिनका धर्म है ऐसे वे लोग जो देश की बाह्य और आंतरिक शत्रुओं से अपने बाहुबल से रक्षा करते हैं वे यशोधन लोग क्षत्रिय वर्ण के कहलाते हैं। अपने क्षात्र तेजोबल रूप साधन रूप से समाज की रक्षा के व्रत का पालन करने वाले राष्ट्र के लिए ही जिन्होंने अपने प्राण अर्पण किए हैं ऐसे लोग क्षत्रिय वर्ण के कहलाते हैं।

वैश्याः -

व्यापार खेतीबाड़ी ओर कारीगरी आदि के द्वारा धनधान्य की वृद्धि से अभाव नामक शत्रु से राष्ट्र की रक्षा का व्रत धारण करने वाले लोग वैश्य वर्ण के कहलाते हैं। राष्ट्र की सामाजिक और भौतिक समृद्धि के लिए निष्काम, निःस्वार्थ और निरीह वृत्ति से दिन-रात कार्यरत रहने वाले व्रतस्थ और उधमशील लोग वैश्यवर्ण के होते हैं।

शूद्राः

विद्या, कलाकौशल और ज्ञान से हीन और बिल्कुल निर्बद्ध और पढ़ाने पर भी ग्रहण करने में असमर्थ ऐसे केवल सेवा परायण मूढ़ लोग शूद्र कहलाते हैं। उत्तम मेधाबुद्धि और शक्तिहीन लोग जो अपनी वाणी शरीर और मन से केवल साम्राज्य सेवा ही कर सकते हैं ऐसे सेवापरायण शिष्ट जन ही शूद्र कहे जाते हैं।

वैदिक वर्ण व्यवस्था वैशिष्ट्यम्

राष्ट्र को एक पुरुष समझकर और चारों वर्णों को उसके अवयव समझकर उनके महत्त्व और उपयोगिता का वेदों में बहुत ही सुंदर रीति से वर्णन है। शरीर में मुख के समान समाज में ब्राह्मण का स्थान है। भुजाओं के समान क्षत्रिय होते हैं। वैश्य पेट के समान है। शूद्र पैरों के समान है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।¹¹³

ऊरु यदस्य तद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।। (यजुर्वेद 31-11)

इन वर्णों में न कोई हीन है न कोई दीन है और कोई भी महत्त्वहीन नहीं है। अपने-अपने स्थान पर सभी मुख्य हैं। शूद्र भी आर्य है, दीन-हीन नहीं है।

गुणकर्माश्रितवर्णाः परिवर्तनार्हाः

वर्ण जन्म से सिद्ध नहीं है और निश्चित रूप से वे परिवर्तन के योग्य है। मनुष्य के ज्ञान, कर्म और प्रयत्नों से उनमें परिवर्तन हो सकता है ऐसा मनु ने भी कहा है। मनुवंश में अनेक राजा ब्राह्मण हो गए और बहुत से शूद्र हो गए। कौशिक विश्वामित्र को कौन नहीं जानता जो अपने क्षत्रिय वर्ण को अपने विद्या ज्ञान और तपोबल से निरस्तकर श्रेष्ठ ब्राह्मण महर्षि बन गए।

शूद्रोब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।¹¹⁴

क्षत्रियाञ्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।। (मनु 10-64)

आज सब विपरीत हो गया है। न कोई छात्र की वृत्ति को देखता है न मानसिक प्रवृत्ति को। शिक्षा का उद्देश्य वास्तव में आदर्श और श्रेष्ठ मानव निर्माण था। किंतु आज वह केवल उदरभरण के लिए और धन कमाने के लिए ही दी जाती है। इसीलिए प्राचीन शास्त्रकारों ने वर्णों के अधिकारों को निश्चित करके और राज्य के द्वारा उनका नियंत्रण कराकर वर्ण व्यवस्था निर्धारित की थी।

स्वे स्वे धर्मे निविष्टानां सर्वेषामनुपूर्वशः।¹¹⁵

वर्णानामाश्रमाणां च राजा सृष्टोऽभिरक्षिता।। (मनु 7-35)

सम्पूर्ण विश्व का परमात्मा ने ही निर्माण किया है और वह उसमें व्यापक है इसलिए यह सब उसी का है और मनुष्य का कुछ भी नहीं है। अतः ममत्वहीन होकर उसका भोग करना चाहिए।

भीषणा जातिप्रथा व वर्णरीति:

वर्तमानकालीन पापमय जाति प्रथा का मूल न वर्ण है और न वह वर्ण से उत्पन्न हुई है। वर्ण तो चार ही हैं किंतु जातियां तो हजारों हैं। वर्ण तो गुणकर्म पर आधारित हैं। जातियाँ तो जन्म पर ही अधिष्ठित हैं। ऊँच-नीच के व्यर्थ भेदभाव उत्पन्न पर वर्णयुद्ध की भीषण ज्वाला को प्रदीप्त करके मनुष्यों का मनुष्यों से अलग करने वाले वर्तमान जाति पद्धति ही निन्दनीय है न कि वर्णरीति प्राचीन काल में वर्णों में ऊँच-नीचपन नहीं था। अस्पृश्यभाव भी बिल्कुल नहीं था, क्योंकि शूद्र भी द्विजों के घर में पाक कार्य करते थे ऐसा अनेक शास्त्रकारों ने लिखा है -

आर्यधिष्ठता वा शूद्राः संस्कर्तारः स्युः।¹¹⁶

(आप. धर्मसूत्र प्रपा. 21 पठ 2 खं 2 सू. 4)

अपनी योग्यता गुण और कर्म के अनुरूप मनुष्य का वृत्ति चयन ही वर्ण है। वर्ण शब्द चुनना अर्थवाले 'वृत्' धातु से निकला है। अतः वर्ण जन्मसिद्ध नहीं है इसलिए पहले मनु ने भी कहा है कि अपने गुणकर्म के अपकर्ष के कारण ब्राह्मण भी शूद्रत्व को प्राप्त होता है। शूद्र भी अपने कर्मों से ब्राह्मण बन सकता है। काल के बीत जाने पर गुण कर्म से प्रवर्तित होने वाले वर्ण जन्म से सिद्ध होने लगे हैं। ज्ञान से शून्य ब्राह्मण पुत्र भी यहाँ ब्राह्मण ही होने लगे हैं। केवल जन्म के कारण ब्राह्मणोचित कर्मों से युक्त होते हुए भी जन्म के कारण शूद्र, शूद्र ही रहता है। व्यक्ति के विकास का विरोध करने वाली यह दुर्व्यवस्था नष्ट करनी ही चाहिए।

जातिवर्णयोर्भेदः।

भिन्न-भिन्न वस्तुओं में जो चीज साम्यबुद्धि उत्पन्न करती है वहीं जाति है। गौओं में जैसे गौत्व जाति होती है वैसे ही मनुष्यों में भी मनुष्य जाति नियति के द्वारा निर्मित है। "समान प्रसवात्मिका जातिः" इस महर्षि गौतम की व्याख्यानुसार जो प्राणी अपने जैसे ही सन्तति को उत्पन्न करते हैं वे सजातीय कहलाते हैं। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र भी अलग जातियाँ नहीं हैं। वे सब एक ही मनुष्य जाति के हैं क्योंकि उनकी संतति भी परस्पर भिन्न नहीं होती। कोई भी व्यक्ति केवल उसके जन्ममात्र से किसी अधिकार को न प्राप्त करें प्रत्युत् अपने गुणकर्म से ही प्राप्त करें यही वर्णाश्रम पद्धति का मूलविचार है।

विशेष - वृत्तं उपजाति।

द्वादश सर्ग - भारतीय संस्कृते: पञ्चावष्टम्भाः

मनुष्य ने अपनी प्रखर और सूक्ष्म गुणावली श्रेष्ठ बुद्धि से प्रकृति की समस्त विभूतियों को जीतकर मानों भौतिक एवं सभी सुखों से युक्त पृथ्वी पर स्वर्ग का ही निर्माण किया है। असत्यवर्तन, छलकपट, लालच विषयभोग, द्वेष और धन की लालसा जैसे हृदय के अन्दर रहने वाले जघन्य शत्रुओं को जिसने जीता है वास्तव में वहीं विजयी है। भारतवर्ष की महान संस्कृति को प्रकृति की महान विजय भी विजय के रूप में मान्य नहीं। उसी प्रकार बाहर के शत्रु की विजय भी विजय नहीं। षड्रिपुओं की विजय ही विजय है। सकल विश्व को जीतने वाले महाराजाओं को भी जीतने वाले, हृदय के अंदर रहने वाले, छः शत्रुओं को नियंत्रित करने के लिए मुनियों ने यम नाम का परम तत्त्व अविष्कृत किया था। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच यमों को मुनिवर्य पतंजलि ने जीवन को आधारभूत तत्त्व घोषित किया था।

अहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।¹¹⁷ (योगदर्शनम् 2.30)

मुनिवरों ने नियमों से यमों को अधिक महत्त्व दिया था, क्योंकि कोई मनुष्य नियमों का पालन करने की अपेक्षा उनका ढोंग भी कर सकता है किन्तु यम के बारे में वैसा कर नहीं सकता। अतः उनको महाव्रत कहा गया है।

1. अहिंसा -

किसी को शारीरिक कष्ट देना ही हिंसा नहीं अपितु वाणी से किसी को मानसिक दुःख देना और अपने स्वार्थ के लिए परार्थ की हानि करना भी हिंसा ही है। यह अहिंसा तत्त्व ही है जो सब के द्वारा अपरिहार्यता और नियत रूप से पालनीय है। महर्षियों ने सार्व-जनीन महाव्रत के रूप में घोषित किया है। दुनिया में हिंसा को रोकने के लिए ही यदि भयंकर महायुद्ध होते हैं और इस प्रकार घोर रण भी हिंसा को रोकने के लिए होते हैं, तो निश्चित रूप से अहिंसा तत्त्व की ही जीत है। बलवान ही यहाँ पर रह सकता है और यदि दुर्बल को यहाँ रहने का अधिकार नहीं है तब तो मत्स्यन्याय ही मनुष्यों में भी चलने लगेगा और श्रेष्ठमानव प्राणी पशुकोटि को प्राप्त होगा। मुनिवरों की वैदिक संस्कृति ने ऊंचे स्वर से घोषित किया है यह नियम केवल भोग योनि वाले पशुपक्षियों में जरूर होते तथा किंतु महामतिशाली मनुष्यों में कभी नहीं हो सकता। भारत की प्राचीन संस्कृति ने मनुष्य को बारम्बार यह उपदेश दिया है कि क्रोध से क्रोध का शमन नहीं होता और न हिंसा का प्रतिकार हिंसा से हो दुनिया में हिंसा को अहिंसा से ही जीता जा सकता है। क्रोध को प्रेम से और काम को संयम से ही जीता जा सकता है ऐसी हमारी पुरातन संस्कृति का संदेश है।

अक्रोधेन जयेत्क्रोधमसाधुं साधुना जयेत् ।¹¹⁸

जयेत कदर्यं दानेन जयेतसत्येन चानतम् ।।

(म.भा.उद्योग 38-73-74)

इस महा अद्भुत तत्त्व का परीक्षण सचमुच इस युग में महात्मा गांधी जी ने किया। भारतवर्ष के मुक्ति संग्राम में संसार का श्रेष्ठ और विशालतम साम्राज्य अहिंसा से जीता। मनुष्य का चित्त यदि सच्ची अहिंसा और करुणा से भरपूर हो जाए तब कहते हैं कि पशु भी वहाँ उसके पास स्वाभाविक शत्रुता को त्याग कर रहने लगते हैं।

अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः ।¹¹⁹ (योग-साधनपाद-2-35)

2. सत्यम् -

सत्य ही वह महान् और उज्ज्वल तत्त्व है जिसके द्वारा विश्व का धारण और पोषण होता है और जो सब मनुष्यों के द्वारा पालन करने योग्य महाव्रत है और जिसकी भारत के ऋषिमुनियों ने बहुत प्रशंसा की है। जिसके मन, वाणी और कर्म में सदा एकरूपता रहती है वही मनुष्य ध्रुव, सत्य पथ का पथिक, संसार में सत्कार, पूजा और गौरव का पात्र होता है। इस संसार में केवल सत्य की ही विजय होती है और असत्य की कभी भी नहीं। यह महान तत्त्व पुरातन वैदिक मुनिवरो ने प्रकट किया था।

सत्यमेव जयते नानृतम् सत्येन पन्था विततो देवयानः ।¹²⁰ (मुण्डक 3-1-6)

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात्सत्यमिन्नियम् ।। (मनु 4-138)

सूर्य के तेज के समान तेजस्वी और दीप्तिमान सत्य भी यहां छुपकर और ढककर नहीं रह सकता गाढ़ अंधकार से छुपे सूर्य किरणों के समान अपने तेज के साथ स्वयं चमक उठता है परमसत्य का आचरण मानो परमतत्त्व परमेश्वर की पूजा ही है। संसार का श्रेष्ठ तत्त्व परमेश्वर वास्तव में सत्य से भिन्न नहीं हैं। अहिंसा की महत्ता के बारे में लोगों मतभेद हो सकता है। किंतु सत्य के महत्त्व के विषय में लोगों में जरा भी भिन्नता नहीं है। हे प्रभो! मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अंधकार से प्रकाश की ओर चलो, हे पिता। मुझे मृत्यु से अमृत की ओर ले चलो ऐसी परमोज्ज्वल वैदिक प्रार्थना है।

असतो मा सद्गमय तमसो सा ज्योतिर्गमय¹²¹

मृत्योर्माऽमृतं गमय । (श ब्रा. 14-3-1-30)

झूठ के पर्वत के नीचे छुपाया हुआ भी सत्य स्वयं प्रकट ही हो जाता है, पानी के तह में डाला हुआ तेल भी स्वतः ही तैरने लगता है।

3. अस्तेयम् -

तत्पश्चात् वैदिक मुनियों के द्वारा श्रेष्ठ विश्वजनीन महाव्रत और संसार का संधारक श्रेष्ठ तत्त्व के रूप निरूपित महातत्त्व चोरी न करना है। दूसरे की वस्तु को उसकी अनुमति के बिना अपने लिए ले लेना ही चौर्य के रूप में दुनिया में प्रसिद्ध संसार के सुख शांति को नष्ट करने वाला दुष्कृत्य है। चोरी छोटी या बड़ी नित्य सभी करते हैं। नियत कर्म के करने में किया जाने वाला प्रमाण भी चारी ही है यदि वह जानबूझकर किया गया हो तो अपनी इच्छा और आकांक्षाओं को रातदिन बढ़ाते रहना ठीक नहीं है अपितु बहुत कम करना ही हितकारी है यह भारतीय संस्कृति का संदेश है।

4. ब्रह्मचर्यम्

महामुनि पतंजलि ने संसार के कल्याण और शांति को मूल और सार्वभौम महाव्रत के रूप में ब्रह्मचर्य का उल्लेख किया है। इन्द्रिय के निकृष्ट सुख चैन की अपेक्षा ब्रह्मानन्दरूप सर्वश्रेष्ठ सुख को प्राप्त करने हेतु ब्रह्मरूप परमात्मा में विचरण करना और वासनाओं पर विजय पाना ही ब्रह्मचर्य है। काम शत्रु पर विजय ही ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य से केवल उपस्थेन्द्रिय का निग्रह ही अभिष्ट नहीं है। यथा योग्य सभी इन्द्रियों का संयम उसमें वांछित है। योम आदिमूल स्थिर आरोग्य के कारण और यह मानव की उत्पत्ति का बीज और शरीर के सारसर्वस्व रूप वीर्य की रक्षा ही सुख के ब्रह्मचर्य का भौतिक अभिधेय है। परब्रह्म में संचार करने वाला संकल्पशील मनुष्य अत्युत्प सुखदायक इन्द्रियों में कैसे मग्न हो सकता है। समुद्र को छोड़कर छोटे से तालाब में कौन कैसा विहार कर सकता है। ऐसे दुष्ट और दुर्दमनीय कामरूपी नाग को जिसने जीत लिया वहीं वास्तव में विजयी है। इसलिए ब्रह्मचर्य दुःसाध्य कठोर तप है। अपने अंदर के षड् रिपुओं पर विजय प्राप्त करना और दुष्ट वासनाओं का विरोध कर अपनी आत्मा की चैतन्य रूप धारा को परब्रह्म में प्रवाहित कर उसके साथ तादात्म्य की अनुभूति ही ब्रह्मचर्य है। संसार के सुख और कल्याण में नित्य संलग्न और उसी के लिए ब्रह्मचर्यव्रत का आजीवन पालन करने वाले दयानंद गांधी, ईसा मसीह और गौतम बुद्ध तथा तीर्थकरादि महात्मा दुनिया में वंदनीय हो गए।

5. अपरिग्रह -

संसार में सुख शांति का आश्रय और साधन ऐसा पांचवा तत्त्व अपरिग्रह ही पतंजलि मुनि ने संसार में घोषित किया था। चारों तरफ से वस्तु को दृढ़ता से पकड़ना ही ग्रहण कहा जाता है और यह मनुष्य का स्वाभाविक गुण है उससे अलग जो होगा वहीं अपरिग्रह है। अर्थात् वस्तुओं का जमा न करना। आवश्यकता से अधिक संग्रह के करने से संसार अभाव से पीड़ित हो जाता है और विपन्न ओर संपन्न इन दो वर्गों के बीच शांति का नाश करने वाले

घोर कलह का निर्माण करता हे। संसार का नियम भी परिग्रह न होकर अपरिग्रह ही है। जगत की परिणति भी अपरिग्रह में ही है और अंत में दुनिया से जाना भी खाली हाथ ही है। दूसरे की वस्तु का अपने लिए न लेना यह आचार्य महाव्रत है किंतु दूसरे के लिए अपनी वस्तु का त्याग यह उपरिग्रह महाव्रत है। संसार में पुरातन भारतीय संस्कृति का विधान वितरण ही था न कि संग्रहः। दूसरे की हानि के किए बिना उचित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वस्तु का ग्रहण आचार्य महाव्रत है और सबका त्याग अपरिग्रह है। पानी में कमल के समान दुनिया में निर्मम, निस्पृह और निश्चल सीमित आशा आकांक्षाओं का जीवन की अपरिग्रह निधि का फल है। त्याग प्रधान और अति अद्भुत संस्कृति न शरीर का, न प्रपंच का न विश्व का, किसी का भी त्याग या निषेध नहीं करती। सर्वोच्च साध्य मोक्ष प्राप्ति के लिए उनको केवल साधन घोषित करती है।

विशेष - 1. पूर्ण सर्ग में द्रुतविलम्बित छन्द का प्रयोग किया गया है किन्तु चतुर्थभाग ब्रह्मचर्यम् में भुजंगप्रयात छन्द का प्रयोग किया है तथा अपरिग्रह नामकथा पंचम भाग के अन्तिम श्लोकों में वसन्ततिलका छन्द का प्रयोग किया है।

त्रयोदश सर्ग - शिक्षा

शिक्षा नाम की नर का निर्माण करने वाली, उसकी वृत्ति को शुद्ध करने वाली, हृदय मस्तिष्क और मन के कमलों को सूर्य के समान प्रफुल्लित करने वाली, उसके अन्दर सुप्त दिव्य मानव गुणों को प्रकाशित करने वाली और पशु और मानव में भेद उत्पन्न करने वाली अद्भुत महा साधना है। जिस प्रकार एक अच्छा कलाकार अपनी छेनी की तीक्ष्ण नोक से पत्थर में लीन आकृति को उजागर करता है और जैसे माली पानी, खाद इत्यादि से बीज में छुपे हुए महान वटवृक्ष को प्रकट करता है उसी प्रकार दुनिया में अच्छी शिक्षा संस्कार और सुशीलता की सहोदरी जैसी मनुष्य की आत्मा में सुप्त सुंदर और उत्कृष्ट गुणों को प्रगट करती है।

गुरुकुलशिक्षा पद्धति:

शिक्षा शास्त्र में निपुण और चिरकाल तक ध्यानावस्थित मुनिवरो ने शिक्षा की गुरुकुल नामक प्रणाली का आविष्कार किया था। जहाँ ऊँचे वृक्षों और गुफाओं से युक्त आकाश को छूने वाले पर्वत हों और जहाँ ऊँची लहरों से युक्त संगमवाली पवित्र सलिला नदियाँ बहती हों ऐसे शांत मनोहर नैसर्गिक पवित्र वातावरण में प्राचीन आर्ष परंपरा वाले गुरुकुल पहले भारत में होते थे। उनके आश्रमों में बड़े बड़े महाविद्यालय जहाँ ज्ञानार्थी छात्र दूर-दूर से भ्रमर समान खिंचे चले आते थे।

गुरुकुल शिक्षा वैशिष्ट्यानि -

वे धन मुनिवर आए हुए उन छात्रों को निःशुल्क ही पढाया करते थे, और माता जैसे अपने शिशु को प्रेम से गर्भ में धारण करती है वैसे वे भी छात्रों को प्रेम से अपने निकट रखते थे और शिष्य भी बड़े धार्मिक सेवाव्रती और ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गुरु की सेवा करते हुए विद्याभ्यास करते थे। गुरु के निकट रहने वाला वह बटु जिसका उपनयन हो गया होता है कठोर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करते हुए और कठोर संयम का जीवन बिताते हुए अनेक शास्त्रों और विद्याओं का गंभीर अध्ययन कर वेदज्ञान का पंडित और अनेक कलाओं में निपुण होता था।

आचारं ग्राह्यत्याचिनोति वाऽर्थान् स आचार्यः।¹²² (निरुक्तम् 1-4)

गुरुकुले विविधविद्यानामध्यापन विषये छान्दोग्योपनिषदि सप्तमप्रपाठके प्रथमखण्डे नारदसनत्कुमारयोः संवादः दृष्टव्यः।¹²³ (अथर्व. कां 11-सू 5-मं-3)

धनिक का पुत्र हो या गरीब का या राजा का उसका खाना पीना और रहना-सहना सब के साथ समान ही होता था। कोई उच्च कुल का है और कोई नीच कुल का इस प्रकार का भेदभाव वहाँ नहीं था। वास्तव में प्राचीन काल की गुरुकुल पद्धति की शिक्षा विधि का यह वैशिष्ट्य था।

गुरुशिष्यसान्निध्यम् -

शिष्य और आचार्य परस्पर अप्रतिम प्रेम सूर्य और कमल के समान था। गुरु और शिष्य के सख्य से उत्पन्न पवित्र गंगाजल के समान पावन था। गुरुशिष्य का सान्निध्य भी अत्यधिक था और इनका एक्य पानी और दूध के समान था। भारत में सर्वोकृष्ट अवस्था प्राचीन काल में थी जहाँ जन्म से शूद्र जन भी अपने गुणकर्मों से ब्राह्मण होता था। जहाँ उसका चरित्र ही मुख्य होता था ना कि उसकी जाति या कुल।

शिक्षायामाध्यात्मविद्याप्रधान्यम् -

गुरु दो प्रकार की विधाएँ शिष्यों को पढ़ाता था एक परा और दूसरी अपरा। ब्रह्मविद्या को परा विद्या कहा जाता था जो सब विधाओं में श्रेष्ठ और जो मुक्ति के लिए कारण होती थी वास्तव में मनुष्य जन्म जिसके बिना व्यर्थ है। दूसरी विद्या जो लौकिक और भौतिक होती है जो मनुष्य के पाँच भौतिक शरीर की साधिका और पोषिका होती है और सांसारिक भौतिक सुख के लिए आवश्यक है। जो भौतिक विद्या है वह केवल नश्वर है, जिसने असंख्य सूर्यचन्द्र और तारों का निर्माण कर आकाश में लटकाया है। जिसके कारण यह ब्रह्माण्ड चक्र सैव चलता रहता है उसको जानने के लिए कोई विरला ही चिंतनशील मनुष्य प्रयत्नशील नजर आता है। आत्मज्ञान ही यहाँ पहले मनुष्य जीवन का परम पावन लक्ष्य था। आत्मज्ञानी गुरु स्वयं ही अपने शिष्य को वह गुप्तज्ञान प्रदान करता था मुण्डकोपनिषद् के अनुसार शौनक नामक भौतिक विद्याओं के पंडित वेद वेदांगों में पारंगत होते हुए भी आध्यात्मिक तत्त्वबोध से रहित होने से आचार्य अंगिरस के पास आत्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए गए। यह कथा अध्यात्म ज्ञान की श्रेष्ठता को ही सिद्ध करती है। शिक्ष के अंत में अपने घर को जाने के इच्छुक प्रिय छात्र के लिए तैत्तिरीयोपनिषद् के वचनों में सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, माता पिता को देवता समझो आदि जो आर्ष उपदेश गुरु शिष्य को करता था वह आज भी स्मरणीय है। संसार में वास्तव में शिक्षा विधि का सार है। पूर्वकाल में आचार्य छात्र से, 'हे छात्र मैं तुझे मेरे पवित्र हृदय में व्रत के लिए धारण करता हूँ। तेरा चित्त मेरे शुद्ध चित्त के अनुसार ही रहे और तू मेरा वचन दक्षता से सुने' इस प्रकार गुरु शिष्य के चरित्र मन और मस्तिष्क का निर्माण करता था।

छन्द - शार्दूलविक्रीडितम्।

चतुर्दश सर्ग - यज्ञः

वास्तव में संसार के मांगल्य हेतु, विश्व का कल्याण करने में निरत तथा त्यागशील और अद्भुत तथा संसार में पूजित आदर्श दिव्योज्ज्वल तथा विश्वविख्यात प्राचीन भारतीय आर्ष संस्कृति की महानता और श्रेष्ठता का प्रतीक है। देवपूजा संगति करण और दान इन तीन अर्थों वाले यज्ञ धातु से यज्ञ शब्द सिद्ध होता है। अतः निश्चित रूप से उसका आशय भी देवों की पूजा विद्वानों का सत्कार, सम्मेलन, दान, त्याग तथा संसार का कल्याण करने वाली सभी शुभ और श्रेष्ठ क्रियाओं में होता है।

दान्यागोज्ज्वलभावनैव यज्ञसाध्यम् -

यज्ञ में डाली हुई छोटी सी आहुति को अग्नि क्षर्णाध में असंख्य गुना बड़ी बनाकर और अंतरिक्ष में फैलाकर सब में समान रूप से वितरित कर दान, त्याग, तेज और अंधकार को दूर करने की महनीय और उदात्त शिक्षा को प्रदान करता है। यजमान स्वाहा इव वचन के साथ आहुति देवताओं को प्रदान कर यह देवताओं के लिए है और मेरे लिए नहीं है ऐसी घोषणा करता है। यज्ञ की ज्वाला से दूर हुएगहन अंधकार के समान आत्मजयोति की प्रखर किरणों से जिसका चित्त उद्भासित हुआ और मायामोह का प्रबल अंधकार जिसके अंतःकरण से दूर होगया उस धन्य पुरुष का यज्ञ ही दुनिया में वास्तव में पूर्ण सफल हुआ। सृष्टिकर्ता ने यज्ञ के साथ लोगों का निर्माण करके उनको आदेश दिया कि सर्वदेव और मनुष्यतम सब यज्ञ की भावना से परस्पर सम्मान करो। उससे ही तुम सबका कल्याण होगा। भगवान श्रीकृष्ण ने यज्ञ तत्त्व का ऐसा ही गीता में उपदेश दिया है -

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।¹²⁴

भुज्जते ते त्वद्यं पापाये पचन्त्यात्मकारणात् ।। (गीता 3-13)

प्रकृति के परमाणुओं को भिन्न-भिन्न प्रकार से एकत्रकर सृष्टि के आरंभ में उस परम पुरुष परमात्मा ने ही यज्ञ किया था उससे इस परम सुंदर सृष्टि का निर्माण हुआ।

यज्ञों को अपना परधर्म समझने वाले लोगों ने नाना प्रकार की लंबी अवधि के बड़े-बड़े यज्ञ किए। अन्त में पशुबलि ही पवित्र यज्ञ का लक्ष्य हो गया। जबकि वेदों में यज्ञ में पशु हत्या विषयक कोई प्रमाण नहीं है। वेदों में हिंसारहित यज्ञ का ही सर्वत्र उल्लेख मिलता है यज्ञ के अर्थ में अध्वर शब्द अनेक बार आता है। जिसका स्पष्ट अर्थ हिंसारहित ऐसा ही है। “तुम पशु की रक्षा करो”, तुम पशुओं की हिंसा न करो” वेदों में ऐसा कहा है धूर्त लोगों ने अपने जिह्वा लौल्य और स्वादपूर्ति के लिए हिंसा प्रचलित की थी।

अध्व्या इति गवां नाम क एता हन्वुमर्हति ।¹²⁵

महच्चकाराकुशलं वृषं गां वाऽलभेत्तुं यः ।। (म.भा.शा.प. 262-47)

यज्ञेन वातावरणशुद्धिर्भवति -

यन्त्रों के द्वारा बाहर फेंके गए विषैले मल से तथा घातक धुँए से संसार में पर्यावरण की विषाक्तता नित्य बढ़ती जाती है। उसकी शुद्धि बहुत जटिल और भीषण समस्या बन गई है। उसका एक सर्वोत्तम उपाय अग्नि होत्र ही है। औषधियों और वस्तुओं के गुण अग्नि से बहुत बढ़ जाते हैं अग्नि में डाली हुई आहुति धृत और औषधियों को उनके सूक्ष्म होने से असंख्य गुणा बनाकर और उसको व्यापक बनाकर रोग जन्तुओं का समूल नाशकर और पर्यावरण को शुद्ध कर प्राणि मात्र के आनंद और सुख को बढ़ाती है। अग्निहोत्र से प्राणों की लाभदायक वायु की सृष्टि होती है। मनुष्य को सुख देने वाली रोग से मुक्ति प्राणवायु की विशुद्धि और विश्व का सौख्य संपादन करने वाली प्रचर वृष्टि भी यज्ञ से होती है। इसीलिए पूर्व के श्रेष्ठ मुनियों ने जो पूरे संसार का कल्याण चाहते थे मनुष्यों को नित्य यज्ञ करना चाहिए ऐसा आदेश दिया था यज्ञ तो अग्निहोत्र से बहुत ही व्यापक अर्थ वाला शब्द है। विश्व के प्राणिमात्र को सुख देने वाला सबका कल्याण करने वाला, सभी कार्यानुष्ठान विद्वानों का पूजन, सत्कार तथा दान और श्रेष्ठकर्म का संपादन सभी यज्ञ ही है।

यज्ञाद् भवति वर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ।¹²⁶ (गीता 3-14)

यः समिधा य आहुती यो वेदेन ददाश मर्तो अग्नये यो नमसास्वध्वरः ।¹²⁷

(ऋ. 8-19-5-6)

छन्द - मन्दाक्रान्ता तथा अन्त में शार्दूलविक्रीडितम् का प्रयोग किया गया है।

पञ्चदश सर्ग - संस्कारैर्मानवनिर्माणम्

अनेक दुःखों से पीडित संसार के भद्र और कल्याण की कामना करने वाले पूर्वाचार्यों ने धरती पर मानव के निर्माण का वास्तव में अपूर्व और अद्वितीय प्रयत्न किया था। खानो से उत्पन्न सोना भी अग्नि में तपकर चमक उठता है। समुद्र से उत्पन्न रत्न भी उस पर संस्कार करने से ही चमकने लगता है, माता-पिता से उत्पन्न शिशु भी यहाँ संस्कार युक्त होने पर ही परिष्कृत हो उठता है, क्योंकि संस्कार मनुष्यों में श्रेष्ठ गुणों का संधारण करने में प्रमुख हेतु है। इसलिए दूरदृष्टियुक्त श्रेष्ठ मुनियों ने मानव के निर्माण में संस्कारों का महत्व जानते हुए जन्म से मृत्यु पर्यन्त मानव के जीवन में सोलह संस्कारों की प्रतिष्ठा की थी।

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्।¹²⁸

कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्यचेहच ।। (मनु 2-26)

माता-पिता के पर्यावरण से होने वाले प्रभाव को स्वीकार करके ही बालक यहाँ अच्छा या बुरा होता है इसलिए बच्चों पर अच्छे संस्कार हो इसी विचार से उनको अच्छे संपर्क में और वातावरण में रखने का सब प्रयत्न करते हैं। मनुष्य जन्म में किये कर्मों के संस्कार नामक प्रभाव को उसके सूक्ष्म शरीर पर अंकित होते हैं। मनुष्य जन्म में किये जाने वाले नूतन शुभ संस्कारों से पूर्व के अच्छे संस्कारों का रक्षण और वर्धन तथा दूसरे अशुभ और बुरे संस्कारों का प्रक्षालन इस प्रकार संस्कारों का दो प्रकार का विशिष्ट कार्य होता है। जीवात्मा जन्म जन्मांतरों में किये हुए असंख्य कर्मों की संस्कार नामक रेखा या चित्त को अत्यंत सूक्ष्म रूप में सूक्ष्म शरीर पर अंकित करता है जिस प्रकार सूक्ष्म बीज विशाल वट वृक्ष को धारण करता है उसी प्रकार मनुष्य जन्म धारण करने के लिए दूसरे शरीर में प्रवेश करता है। बार-बार वही पापाचरण करने से वह उसकी प्रवृत्ति बन जाती वही उसका दृढ़ संस्कार ओर वास्तविक स्वभाव बन जाता है। उन सबका पूर्ण परिवर्तन और पूरे कर्म का बदलना और वृत्ति का संस्करण और शोधन ही संस्कारों का साध्य है।

गर्भाधान ही पहला और प्रमुख संस्कार है। यह संस्कार वस्तुतः एक अद्वितीय यज्ञ ही है। जिसमें नये शिशु की प्राप्ति के लिए पति-पत्नी के द्वारा संसार के सुख और शांति के लिए संघर्ष और साभिप्राय नव शिशु के लिए आह्वान किया जाता है। उसके बाद पुंसवन नामक द्वितीय संस्कार होता था। बालक के शरीर का विकास निश्चित होने पर और गर्भस्थापना के दो-तीन मास के पश्चात् पुत्र की प्राप्ति के लिए यह संस्कार विधिपूर्वक किया जाता था। उसके पश्चात् सीमांतोन्नयन नामक तृतीय संस्कार होता था। बालक के मानसिक विकास के निश्चित हो जाने पर उसके मन, मति बुद्धि आदि शक्तियों के विकसित होने के उद्देश्य माता केश संस्कार के साथ यह संस्कार होता था। बच्चे के जन्म के बाद मृत्युपर्यन्त 13 संस्कार आत्मा के शुद्धीकरण के लिए किए जाते थे उनमें प्रमुख उपनयन, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ,

संन्यास और अंतिम अंत्येष्टि अर्थात् दाह संस्कार ये प्रमुख होते थे। बालक के जन्म के 101 वें दिन उसका विधिपूर्वक नामकरण संस्कार किया जाता था उसके पश्चात् निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुंडन, कर्णवेध, उपनयन, वेदारंभ फिर समावर्तन और विवाह संस्कार होते हैं। उसके बाद वानप्रस्थ संन्यास और अंत में मरने पर दाहकर्म या अंत्येष्टि संस्कार होताथा। इस प्रकार संसार के कल्याण की कामना करने वाले ऋषि मुनियों ने जगत् के त्रिविध दुःखों को दूर करने की इच्छा से यहीं पर श्रेष्ठ मानव के निर्मिति की सदिच्छा से सब योजनाओं का मूल संसार में अद्भुत और अपूर्व ऐसा संस्कारों द्वारा श्रेष्ठ मानव के निर्माण की योजना का सूत्रपात किया था।

वृत्त - मन्दाक्रान्ता

षोडश सर्ग - शासन व्यवस्था

संसार में शासन की अनेक पद्धतियाँ थी। साम्राज्यं भौज्यं, पारमेष्ठ्यं, वैराज्यं, स्वराज्यं अधिपतिमय शासनं आदि। इनमें से जिसकी महिमा वेदों में अनेक प्रकार से गाई जाती है वह बहुमत के बल पर चलने वाला स्वराज्य ही सर्वश्रेष्ठ था। जो सदैव लोगों के कल्याण के लिए सावधान रहता था।

स्वस्ति, साम्राज्यं, भौज्यं, स्वराज्यं, वैराज्यं, पारमेष्ठ्यं राज्यं, महाराज्यं, आधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्।¹²⁹ (ऐत.ब्रा. 8 पंचिका)

भारतवर्ष में निःसंदेह राजतंत्र ही था। किन्तु वह राजपद दंशपरंपरागत आने वाला नहीं था प्राचीन काल में यहाँ राजा लोकनिर्वाचित होता था। इसलिए वह अपने घोर अपराध के कारण पदच्युत भी होता था। यहाँ पहले राजा पूर्णतः कर्मचारी नहीं होता था। उसके कर्तव्य और अधिकार पूर्णतः निगृहीत होते थे उसके राजगद्दी पर आने के पहले राजा के ब्राह्मण क्षत्रियादि जनों के द्वारा उसका पूर्ण समर्थन और अनुमोदन आवश्यक था। अनेक संस्था समिति और परिषदों के द्वारा नियंत्रित अधिकार वाला राजा इच्छानुरूप कुछ भी नहीं कर सकता था। जनता के द्वारा निर्वाचित समितियाँ और सभाएँ राजा के ऊपर बड़े कड़े बन्धन और निग्रह थे। राजगद्दी ग्रहण करते समय धीरोदात्त जो प्रतिज्ञा करता था वह निश्चय ही सब राजा के कर्तव्य बोध का परिचायक था। अपराध करने पर प्रजा के द्वारा स्वयं दण्डनीय राजा इच्छा हेतु भी अपराधी का दंड वेदविद ब्राह्मण के परामर्श के बिना क्षमा नहीं कर सकता था। शास्त्र की दृष्टि से धर्म ही प्रजा का शासक होता है। उसका महान दंड धारक और रक्षक राजा होता है राजा को चाहिए कि वह शुद्ध चरित और स्वाधिन इन्द्रिय वाला हो। राजा अपने को राज्य का स्वामी नहीं समझता था राज्य का विश्वस्त समझता था। राजा मंत्रियों की श्रेष्ठ परिषद् की सलाह से ही विधिवत् राज्य में शासन वेदादेश के अनुसार ही करता था। देश में विधिविधान पहले संसद के द्वारा ही होता था। उस संसद के दो सदन होते थे। एक को समिति और दूसरे को सभा कहते थे। राष्ट्र की श्रेष्ठविधि निर्मात्री संसद का सदस्य कौन हो सकता था? ऐसा पूछने पर ऋग्वेद की ऋचा कहती है कि केवल सूर्ययं ही श्रुति निगमवित् विद्वान जो मित्र दृष्टि से युक्त है वहीं संसद का सदस्य हो सकता था। यहाँ राजा का निर्माण राजसूय यज्ञ द्वारा होता था। और सम्मट के लिए किया जाने वाला यज्ञ वाजपेय कहलाता था। सारी पृथ्वी के अधिपति के लिए अश्वमेध यज्ञ होता था। और दूसरे भी सवमेधादिक यज्ञ हुआ करते थे। राजा राज्य में लोक हितार्थ कार्यों के लिए जनता के आय से सोलवां हिस्सा करके रूप में लेने का अधिकारी है। साथ ही सज्जनों की रक्षा और दुर्जनों के दंड के लिए तथा जनता की सुख शांति के लिए उसका व्यय करने के लिए राजा को कहा गया है। राजा जाति मत धर्म और लिंग को भुलाकर सबके साथ समान न्याय करे यदि कोई सखा, बन्धु और मित्र भी द्रोह करे तो वह भी राजा के लिए दण्डनीय है ऐसा श्रुति का आदेश है। आगे श्रुति का आदेश है राज्य के मंत्रियों को लोगों का मंगल करके और आत्मज्ञानी होते हुए दीक्षा और तपोधनी होना चाहिए और राष्ट्र के लिए आत्म समर्पण की भावना से युक्त होना चाहिए।

विशेष - छन्द - मन्दाक्रान्ता

सप्तदर्श सर्ग - प्राचीनभारते विज्ञानम्

जो ज्ञान प्रत्यक्ष पर आधारित ओर प्रयोगात्मक होता है उसको ही वैज्ञानिक विज्ञान कहते हैं आज का मानव जीवन सर्वथा विज्ञान पर आश्रित है। विज्ञान मानव जीवन को सुख सौविध्य प्रदान करने वाला साधन है। विज्ञान ने ही पञ्चमहाभूतों को सेवापरक बना दिया है। विज्ञान निश्चय ही सांसारिक सुख के लिए वरदान है। किन्तु यह तब तक ही है जब तक वह धर्म, संस्कृति और सदाचार से युक्त होता है वरना संसार की शान्ति के लिए वह एक शाप ही है। नागासाकी और हिरोशिमा नगरों का विनाश ही इसका निदर्शक है प्राचीन भारत में विज्ञान का स्वरूप कैसा था इस विषय में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही मत हैं। प्राचीन भारत में केवल आध्यात्मिक ज्ञान ही प्रमुख था। वहाँ भौतिक ज्ञान का उत्कर्ष नहीं था। यह धारणा पूर्णतया मिथ्या और असत्य मालूम होती है। शंकर बालकृष्ण दीक्षित नाम के प्रसिद्ध महाराष्ट्रीय ज्योतिष शास्त्री ने अपने अनेक प्रबल प्रमाणों से यह पूर्णतया सिद्ध किया था कि ज्योतिष शास्त्र अंकगणित और नक्षत्र विद्या का ज्ञान भारत से ही पूरे संसार में फैला था।

गणित विज्ञानम् -

वेद-ब्राह्मण ओर कल्पसूत्रों के साथ शूल्ब सूत्रों में भी गणित विषय के अत्यन्त उद्बोधक संकेत प्राप्त होते हैं। शून्य का आविष्कार भारत का ही योगदान है उसमें ही दशमलव पद्धति का निर्माण हुआ। महर्षि ब्रह्मसमद ने शून्य का आविष्कार किया था।

ज्योतिर्विज्ञानम् -

भारत में जन्में ज्योतिषशास्त्र के महाविद्वान श्री आर्यभट्ट ने ही बतलाया था कि सूर्य आकाश में स्थिर है और पृथ्वी उसके चारों ओर घूमती है और इसी से दिन और रात होते हैं। दिल्ली, वाराणासी, जयपुर, उज्जैन आदि स्थानों पर निर्माण वैद्य शालाएँ ज्योतिष शास्त्र विषयक ज्ञान के लिए पूर्व प्रमाण है।

आयुर्विज्ञानम् -

अनेक व्याधियों की सफल औषधियाँ वेदों में दी गई हैं। और आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपांग कहा गया है। आयुर्वेद की अनेक महाश्चर्यकारक चिकित्सा विधियों का उल्लेख ऋग्वेद के औषध सूक्त में किया हुआ है आगे सुश्रुत संहिता - चरक संहिता - माधवनिदानु - वागभट्ट कृत अष्टांगहृदय - शारंगधरसंहिता - भैषज्य रत्नावली - काश्यप संहिता जैसे असंख्य ग्रन्थ लिखे गये।

नाडीविज्ञानम् -

संसार में नाडी विज्ञान भी केवल भारत में ही उपलब्ध था। शरीर में नाडियां तो असंख्य हैं। उनमें तीन इडा - पिंगला और सुषुम्ना मुख्य हैं, उनके सूक्ष्म गति विज्ञान से शारीरिक रोगों का बोध होता है।

नौविज्ञानम् -

वेद में सौ चप्पुओं के द्वारा चलाये जाने वाली नौकाओं का वर्णन मिलता है। युक्तिकल्पतरु नाम का एक प्राचीन महानग्रन्थ मिला है जिसमें नौका रचना विषयक पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। मार्को पोलो जैसे प्रसिद्ध विद्वान ने लिखा है कि प्राचीनकाल में नौ विज्ञान में भारत ने बहुत उन्नति की थी। वहाँ पर अन्यत्र कहीं भी देखी न जाने वाली विशाल नौकाओं का निर्माण होता था।

विमानविज्ञानम् -

क्या प्राचीन भारत में विमान भी थे इस प्रश्न का उत्तर भी पूर्ण सकारात्मक ही है। वास्तव में पुष्पक विमान के बारे में हम रामायण से ही जानते हैं। जिसमें श्री राम लंका से भारत वापस आये थे। भागवत् में भी शाल्व राजा के एक विशाल विमान का वर्णन है। जो आकाश, समुद्र और पर्वतों पर जाने में पूर्ण समर्थ था। राजा भोज लिखित समरांगण सूत्रधार ग्रन्थ में पारे पर चलने वाले विमान का वर्णन मिलता है।

युद्धविज्ञानम् -

परमकुशल पूर्वाचार्यों को युद्धास्त्रों में अग्नेयास्त्र, गरुडास्त्र, पन्नगाष्प, वर्णन्यास और महनीय नारयणस्त्र तथा वायव्यः स्त्र और पाशुपतास्त्र और सबसे प्रबल ब्रह्मास्त्र ये सभी उनको ज्ञात थे।

दूरदर्शन विज्ञानम् -

प्राचीन भारत में कौरव पाण्डवों का प्रसिद्ध महासंग्राम वास्तव में इन्द्रप्रस्थ से बहुत दूर कुरुक्षेत्र में हुआ था। किन्तु उसका वर्णन तो संजय ने धृतराष्ट्र के सामने जैसा हुआ वैसा ही किया था। वास्तव में संजय की दिव्यदृष्टि वर्तमान कालीन दूरदर्शन ही था।

अर्वाचीनवेदविदुषामाभिप्रायः -

वेदशास्त्रों के विख्यात पण्डित श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने वेद भष्य में अनेक ऋचाओं और सूक्तों के भाष्य करते समय वेदों में किस प्रकार विज्ञान भी था

इसका उल्लेख किया है। सामग्री जैसे श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न सत्यव्रत नाम के संस्कृत के एक श्रेष्ठ पंडित ने स्पष्ट लिखा है कि विज्ञान और तंत्र ज्ञान विषय में भी भारत संसार में सर्वोच्च शिक्षर पर आरुढ़ था।

पाश्चात्यवेदविदुषामपि वेदे विज्ञान समर्थनम् -

जेकोलायीत नामक फ्रेंच विद्वान ने घोषित किया कि दुनिया में केवल वेद ही परमेश्वर कृत ग्रन्थों में ऐसे ग्रन्थ हैं जो विज्ञान के द्वारा आविष्कृत विचारों का समर्थन करते हैं। व्हीलर नामक अमेरिकन विदुषी महिला ने कहा भारत ही वेदों की भूमि है जो केवल सत्य धर्म का ही बोध नहीं कराते हैं बल्कि विज्ञान के द्वारा आविष्कृत तत्वों को भी सत्य सिद्ध करते हैं।

मुस्लिमविदुषां वेद गौरवगानम् -

लावी नाम के अरब देश के प्रसिद्ध विद्वान जो मोहम्मद पैगंबर के भी दो हजार साल पहले हो गये थे वेदों की भूमि भारत को वन्दन करते हैं जहाँ विधाता ने ऋषियों के हृदय में वेदज्ञान प्रगट किया था। वेद त्रिलोक के स्वामी परमेश्वर का संविधान है और संसार के सुख शान्ति के कारण हैं। उनमें एक ईश्वर की भक्ति का विधान है ऐसी दाराशिकोह ने घोषणा की थी इस श्रेष्ठ और महनीय रहस्य को ही परमात्मा की वाणी का अनुवाद समझकर जो परम भाग्यशाली मनुष्य उसका अध्ययन करेंगे वे निश्चित रूप से संसाररूपी दुःखसागर से सदा के लिए मुक्त हो जायेंगे। ऐसा उस दृढ़ निश्चयी दाराशिकोह ने कहा।

जैकोलियट नामक प्रसिद्ध विद्वान ने - Bible in India नामक पुस्तक में लिखा ¹³⁰

"Astonishing fact I the Hindu revelation (वेद) is of all revelations the only one whose ideas are in perfect harmony with modern science as it proclaims the slow and gradual formatin of the world. (Bible in India - Vol-II)

व्हीलर विलॉक्स ने लिखा है - ¹³¹

We have all heard and read about the ancient religion of India it is the land of great vedas - the most remarkable works containing not only religious ideas for a perfect life, but also facts wich all the science has since proved true. Electricity, Radium, Electrons Airships all seem to be known to the seers who found the vedas.

(iii) प्राचीनभारतसंस्कृतीयम् का महाकाव्यत्व

समीक्ष्य 'प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्' का महाकाव्य की कसौटी पर सम्यक् परीक्षण करने से पूर्व काव्यशास्त्रियों द्वारा दिये गये महाकाव्य के लक्षणों पर विमर्श करना अधिक आवश्यक है। प्राचीन महाकाव्य लक्षणकारों भामह, दण्डी, अग्निपुराणकार, रुद्रट, भोजराज, हेमचन्द्र तथा विश्वनाथ ने अपने पूर्ववर्ती महाकाव्यों रामायण, महाभारत, रघुवंश, कुमारसम्भव, शिशुपालवध, किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम् आदि लक्ष्यग्रन्थों के रूप में रखकर जिन गुणों को बाहुल्य से पाया, उन्हें अपने लक्षण ग्रन्थों में परिभाषित कर दिया, क्योंकि लक्ष्य-ग्रन्थों के निर्माण के बाद ही लक्षण ग्रन्थों का निर्माण होता है प्रायः सभी आचार्यों ने कथावस्तु, नायक, रस और उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए महाकाव्य के लक्षणों का संयोजन किया है।

प्राचीन काव्यशास्त्रीय लक्षणों के आधार पर "प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्" का महाकाव्यत्व

-

1. सर्गबन्ध व सर्ग सङ्ख्या - "भामह, दण्डी, विश्वनाथ आदि काव्यशास्त्रियों ने 'सर्गबन्धो महाकाव्यम्' द्वारा कहा है जिसमें सर्गों का निबन्धन हो तथा कम से कम आठ से अधिक सर्ग सङ्ख्या हो वह महाकाव्य होता है।"³²

आलोच्य कृति "प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्" महाकाव्य एक सर्गबन्ध रचना है। इसमें कुल 17 सर्ग हैं तथा 1500 श्लोक हैं। लघुतम सर्ग षोडश (35 श्लोक) तथा दीर्घतम सर्ग द्वादश (130 श्लोक) है। कवि ने प्रतिपाद्य विषय के अनुसार ही सर्ग और पद्य सङ्ख्या दोनों का उचित संयोजन किया है।

2. कथानक - "विश्वनाथ" 'दण्डी' आदि के अनुसार महाकाव्य में ऐतिहासिक या लोकप्रसिद्ध सज्जन सम्बन्धी कथा का निवेश होना चाहिए जबकि रुद्रट तथा आनन्दवर्धन के अनुसार महाकाव्य में उत्पाद्य (कविकल्पित) तथा अनुत्पाद्य (इतिहास-प्रसिद्ध) दोनों प्रकार के कथानक हो सकते हैं।"³³

प्राचीनभारतसंस्कृतीयम् महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक तथा लोकप्रसिद्ध भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित है। भामह ने 'सदाश्रयम्' तथा विश्वनाथ ने सज्जनाश्रयम् कहकर महाकाव्य की कथावस्तु में सज्जन सम्बन्धी कथा को आधार बनाए जाने की बात भी कही। प्राचीनभारतसंस्कृतीयम् में महाकाव्य की कथावस्तु भारतीय संस्कृति रूपी देव पर आधारित है।

3. नायक - 'विश्वनाथ' दण्डी आदि आचार्यों के अनुसार धीरोदात्त गुणों से युक्त देवता विशेष या सत्कुलीन क्षत्रिय या एक वंश में उत्पन्न कुलीन अनेक क्षत्रिय भी नायक हो सकते हैं।"³⁴

“प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्” महाकाव्य में भारतीय संस्कृति को नायक के रूप में वर्णित किया गया है। जो भारतीय जनमानस के हृदयों में बसी हुई है।

4. मङ्गलाचरण - “प्रायः सभी काव्यशास्त्रियों द्वारा महाकाव्य के प्रारम्भ में आशीर्वादात्मक नमस्कारात्मक या वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण के विधान की बात कही गई है।”³⁵

इसके अनुसार प्रो. रेणापुरकर जी ने अपने ‘प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्’ महाकाव्य में मङ्गलाचरण की परम्परा को न अपनाते हुए सर्गारम्भ विषयवस्तु निर्देशात्मक किया है।

अस्मद्विशालो महनीयदेशः संसारचारित्र्यगुरुश्चिराय ।

दासत्वपाशान् सहसा निकृत्य जातः स्वतन्त्रो भुवि भारताख्यः ।। (1.1)

5. छन्द - विश्वनाथ’ ने साहित्यदर्पण में “एकवृत्तमुयैः पद्यैस्त्रसानेऽन्यवत्कैः” द्वारा कहा है कि महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग में प्रायः एक ही छन्द का प्रयोग करना चाहिए तथा सर्गान्त में छन्द परिवर्तन कर देना चाहिए। आगे विश्वनाथ ने “नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते” द्वारा कहा है कि कहीं कहीं तो एक ही सर्ग में अनेक छन्द मिलते हैं।³⁶

“प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्’ महाकाव्य इस परम्परा को पूर्ण रूपेण नहीं मानता है। इस महाकाव्य में प्रथम सर्ग से सप्तम सर्ग तक एक ही छन्द उपजाति का प्रयोग किया गया है। अष्टम व नवम सर्ग में वसन्ततिलका तथा दशम् व एकादश सर्ग में उपजाति छन्द का प्रयोग किया है। द्वादश सर्ग में द्रुतविलतम्बित, भुजंगप्रयातं तथा सर्गान्त में वसन्ततिलका छन्द का प्रयोग किया है। त्रयोदश सर्ग में शार्दूलविक्रीडितम् तथा चतुर्दश सर्गारम्भ में मन्दाक्रान्ता तथा सर्गान्त में शार्दूलविक्रीडितम् का प्रयोग किया है। पञ्चदश सर्ग में मन्दाक्रान्ता तथा षोडश सर्ग में मन्दाक्रान्ता तथा अन्तिम सप्तदश सर्ग में वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडितम्, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी अनेक छन्दों का प्रयोग है।

6. सर्ग-नाम - महाकाव्य में सर्गों के नाम उस सर्ग में वर्णित कथा के आधार पर होना चाहिए।³⁷

प्रस्तुत महाकाव्य में भी सर्गों का नामकरण उसकी कथावस्तु के आधार पर ही हुआ है। यथा प्रथम सर्ग ‘संस्कृतिः सभ्यता च’ में संस्कृत व सभ्यता का प्रारम्भ समझाया है। द्वितीय सर्ग पूर्व पीठिका में भारतीय इतिहास से संस्कृति को जोड़ा तृतीय सर्ग - पुरुषार्थचतुष्टयम् - तत्र धर्मः में चारों पुरुषार्थ का संक्षिप्त वर्णन कर धर्म को विस्तार प्रदान किया है इसी प्रकार सर्गों का नाम भी कथावस्तु के आधार पर ही है।

7. अलंकार – भामह ने 'सालङ्कारं' द्वारा तथा अन्य महाकाव्य लक्षणकारों ने भी महाकाव्य में अलंकारों के प्रयोग की बात कही है।¹³⁸

प्राचीनभारतसंस्कृतियम् में भी अलंकार का स्वाभाविक व हृदयग्राही ही प्रयोग हुआ है। कवि के प्रिय अलंकार उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, विशेषोक्ति है।

8. भावी कथा की सूचना – “महाकाव्य के सर्गों के विषय में काव्यशास्त्रियों द्वारा एक बात कही गई गई है कि सर्ग के अन्त में आगामी सर्ग की कथा की सूचना देनी चाहिए।”¹³⁹

कवि प्राचीनभारतसंस्कृतियम् काव्य में इस नियम का लगभग पालन किया है यथा – पुरुषार्थ चतुष्टय का वर्णन करते हुए तृतीय सर्ग में ही आगे आने वाले अर्थ, काम, मोक्ष आदि की पूर्व सूचना दे दी गई है।

9. महाकाव्य का नामकरण – “विश्वनाथ’ आदि महाकाव्य लक्षणकारों के अनुसार महाकाव्य का नामकरण कवि कथावस्तु (वर्ण्य चरित) या चरित – नायक के नाम पर होना चाहिए”¹⁴⁰

‘प्राचीनभारतसंस्कृतियम्’ महाकाव्य का नामकरण महाकाव्य के प्रधान नायक संस्कृति को ध्यान में रखकर ही किया गया है। यह महाकाव्य महिला नायक प्रधान महाकाव्य है। जिसमें भारतीय संस्कृति की नायक मानकर यह महाकाव्य रचा गया है। प्राचीन भारत की संस्कृति के प्रमुख विषयों को प्रकाश में लाने के लिए महाकाव्य को कविवर ने लेखनी प्रदान की है।

10. वर्ण्य विषय – महाकाव्य में वर्णनीय विषयों को ‘भामह’ ने ‘ऋद्धिमत’ द्वारा अभिव्यञ्जित किया है ता दण्डी, विश्वनाथ आदि ने एकाधिक कारिकाओं द्वारा इन वर्ण्य विषयों की सूची उपस्थित की है।” दण्डी विश्वनाथ आदि इन वर्ण्य विषयों को महाकाव्य में अनिवार्य नहीं माना है, वे इनके यथायोग प्रयोग पर बल देते हैं।¹⁴¹

“प्राचीनभारतसंस्कृतियम्” महाकाव्य में प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ने महाकाव्यशास्त्र द्वारा प्रदर्शित वर्ण्य – विषयों का यथायोगप्रयोग किया है, जो इस प्रकार है।

प्रकृति वर्णन – द्वादश सर्ग में अपरिग्रह को प्रकृति से जोड़ा गया है।

जगतिः निर्ममनिः स्पृहनिश्चलं
निवसनं शतपत्रमिवाम्भासे ।
मितसमीहितकाक्षितजीवनं
फलमभूदपरिग्रहशेवधेः ॥ (12-135)

उषसिराज्यपदे ह्ययेभिषेचन -
मितिनिशम्य सुखावहवाचिकम्।
अपि निशम्य ततो गमनं वने
रघुवरे विक्रतिर्हि लक्षिता ॥ (12-137)

अद्यापि घोरवनपर्वतकन्दरासु
प्राचीनविश्वगुरुभारतवर्षधाम्नः।
कर्णातिथिभ्रवति तत्प्रतिनादितं य -
दध्यात्मवर्जमिह नैव सुखं न शान्तिः ॥ (12-146)

11. उद्देश्य या प्रयोजन - 'भामह' से लेकर 'विश्वनाथ' पर्यन्त प्रायः सभी काव्यशास्त्रियों ने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूप पुरुषार्थ - चतुष्टय के सङ्ग्रथन के साथ किसी एक के महाकाव्य का प्रयोजन या उद्देश्य होने की बात कही है।¹⁴²

'प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्' में इन सभी का यथास्थान वर्णन हुआ है क्योंकि पुरुषार्थ चतुष्टय भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग है।

12. मौलिभूतप्रयोजन - 'दण्डी' अग्निपुराणकार आदि के अनुसार काव्य का मौलिभूत प्रयोजन रसास्वाद सिद्ध होना चाहिए, भले ही महाकाव्य लक्षण के पालन में कुछ न्यूनता आ जाए।¹⁴³
यथा -

न्यूनमप्यत्र यैः कैश्चिदङ्गैः काव्यं न दुष्यति।
यद्युपात्तेषु सम्पतिराराधयति तद्विदः ॥

'वाग्वैदग्ध्य प्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम्।

'प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्' महाकाव्य में सहृदय रसिक को राष्ट्रीयता के भाव का आस्वादन होता है।

अर्वाचीन काव्यशास्त्रियों लक्षणों के आधार पर प्रो. रेणापुरकर के काव्य -

संस्कृत साहित्य में महाकाव्य, नाटक और कथा की जिस महनीय एवं कमनीय परम्परा का आरम्भ संरक्षण तथा संवर्धन महाकवि कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट, माघ तथा श्री हर्ष जैसे रससिद्ध कवीश्वर की अमर लेखनी से हुआ वह परम्परा आज भी किसी न किसी रूप में जीवित है। इतना अवश्य है कि सम्प्रति प्राचीन परम्परा शैली और मूल्यवत्ता में किञ्चित् परिवर्तन अवश्य आया आधुनिकता के नूतन सन्दर्भों में ये परिवर्तन न केवल उचित, प्रत्युत व्यावहारिक भी है। साहित्य क्षितिज की परिधि में अपरिमित उतार चढ़ाव एवं अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को

यथोचित स्वीकार करने की भागदौड़ में वर्तमान कालीन संस्कृत लेखकों ने काव्य के विविध आयामों में जो निरंतर वृद्धि की है वह अत्यन्त श्लाघनीय है।

1. सर्गबन्ध प्रबन्धकाव्य - आचार्य रहस बिहारी द्विवेदी (सर्गवृत्तेश्च बद्धं) द्वारा तथा प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र (सर्गबन्धो महाकाव्यं लोकवन्द्य जनाश्रियम्) द्वारा कहते हैं कि महाकाव्य लोकवन्द्य नायक पर आश्रित, विश्वबन्धुत्व को प्रख्यापित करने वाला तथा विश्वमङ्गल की कामना करने वाला सर्गबद्ध व छन्दोबद्ध प्रबन्धकाव्य होता है।¹⁴⁴

प्रो. रेणापुरकर की कृतियों में प्राचीनभारतसंस्कृतीयम् महाकाव्य विश्वबन्धुत्व को प्रख्यापित करने वाला तथा विश्व मंगल की कामना करने वाला है।

2. जीवन के समग्र रूप का निरूपण - प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने 'पद्यात्मकं समग्रजीवन निरूपण महाकाव्यम्' कहकर महाकाव्य में समग्र जीवन के निरूपण की आवश्यकता प्रतिपादित की है।¹⁴⁵

इस लक्षण से समन्वय बैठते हुये कह सकते हैं कि 'प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्' में भारतीय संस्कृति, सभ्यता, समाज का साङ्गोपाङ्ग चित्रण हुआ है।

3. सहृदयहृदयाह्लादकारिता - आचार्य 'रहस बिहारी द्विवेदी' ने "सहृदयहृदया हृदयाह्लादिशब्दार्थम्यं" द्वारा कहा है कि महाकाव्य सहृदय के हृदय को आह्लादित करने में क्षम शब्दों और अर्थों में रमणीय होना चाहिए।¹⁴⁶

'प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्' महाकाव्य में भी कवि द्वारा सर्वत्र रमणीय शब्दार्थों का संयोजन किया गया है कि सहृदय उत्तरोत्तर आह्लादित होते रहते हैं। पाठक जब एक बार महाकाव्य को पढ़ना प्रारम्भ कर देता है तो सम्पूर्ण पढ़ लेने पर ही निवृत्त होता है।

4. शिल्पविधान - आचार्य 'रसबिहारी द्विवेदी' ने "उच्चशिल्पैः" के माध्यम से कहा है क महाकाव्य के शिल्पविधान उच्चस्तरीय होने चाहिए।¹⁴⁷

"प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्" महाकाव्य में वास्तव में शिल्पविधान उच्चस्तरीय है। कवि ने भाषा शैली को उत्कृष्टता प्रदान की है। अनेक सुभाषितों, भावगर्भित सूक्तियों के माध्यम से जीवन को जीने का दङ्ग बताया है। यह महाकाव्य भारत की संस्कृति, सभ्यता आदि का प्रतीक रूप वर्णन करता है।

5. यथार्थ और औचित्य - आचार्य 'रहस बिहारी द्विवेदी' ने "लोकस्वभाव" द्वारा महाकाव्य में लोकोचित स्वभाव अर्थात् यथार्थ और औचित्य से समन्वित होने की बात कही है।¹⁴⁸

इस महाकाव्य में लोक की जो स्थिति है उनका यथार्थ व उचित वर्णन किया गया है। अबला स्त्री की दुर्दशा की जा रही है। राजनीति दिशा रहित हो रही है। इन सबका यथार्थ व औचित्य से परिपूर्ण वर्णन कवि ने प्रस्तुत किया है।

6. **अक्लिष्टता** - आचार्य 'रहस बिहारी द्विवेदी' ने अपने महाकाव्य लक्षण में 'ग्रन्थिमुक्तं' द्वारा कहा है कि महाकाव्य सुकुमारमति पाठकों के अर्थावबोध में बाधक शब्दों, अर्थों और शास्त्रीय गुणधर्मों से रहित होना चाहिए।¹⁴⁹

'प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्' तथा ऐसे क्लिष्ट प्रयोगों से मुक्त है इन काव्यों की भाषा सरल है। न ही कहीं कवि ने गूढ़ व्याकरण का ज्ञान प्रदर्शन किया है।

7. **कल्याणकारी व सत्य घटनाओं का वर्णन** -

प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने 'यच्छिवं यच्च सत्यं स्यादथवा लोकमङ्गलम्' द्वारा कहा है कि कल्याणकारी व सत्य घटनाओं को मूलकथा का अंश बनाकर वर्णन करना चाहिए भले ही उनकी कल्पना ही क्यों न करनी पड़े।¹⁵⁰

प्राचीनभारतसंस्कृतीयम् कल्याणकारी व सत्य घटनाओं पर ही आधारित है महाकाव्य में भारतीय संस्कृति का वर्णन कल्याणकारी है।

निष्कर्ष -

यदि हम प्राचीन तथा अर्वाचीन काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों में महाकाव्य के लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन करें तो यह सुस्पष्ट हो जाएगा कि लक्षणों में बहुत कुछ समानता है। यथा - महाकाव्य एवं सर्ग के नामकरण महाकाव्य का उद्देश्य, छन्द व अलंकार आदि। युगानुरूप कुछ असमानता भी आ गई है। यथा - प्राचीन आचार्य प्रायः ऐतिहासिक कथावस्तु पर अधिक प्रकर्ष देते हैं, परन्तु अर्वाचीन आचार्य ऐतिहासिक और उत्पाद्य दोनों को समकोटि रखते हैं। प्राचीन आचार्य महाकाव्यों का नायक प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुष को स्वीकार करते हैं, जो अनेक मानवीय गुणों से मण्डित हो, परन्तु अर्वाचीन आचार्य महाकाव्य में नायिका को भी प्रधान पात्र के रूप में स्वीकार करते हैं। लक्षणों के निकष पर किसी भी कृति का मूल्याङ्कन असम्भव सा प्रतीत होता है। समीक्ष्य 'प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्' महाकाव्य इन प्राचीन व अर्वाचीन लक्षण ग्रन्थों का अनुसरण भी करता है। इसमें सद्यः परिनिवृत्ति भी है तो कान्तासम्मित उपदेश भी है। इस प्रकार 'प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्' एक श्रेष्ठ महाकाव्य है।

(iv) वैशिष्ट्य

बहु प्रसवा लेखनी वाले, वैदग्ध्य संपन्न महाकवि प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने सप्तदश सर्गों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। महाकवि के अन्यत्र न देखे जाने वाले विशेष गुण यहाँ दृष्टिगत होते हैं। जो कवि केकाव्य में अनुभव में आने वाली विचार प्रधानता है।

डॉ. देवी प्रसाद खरवंडीकर के शब्दानुसार 'प्राचीनभारतीयसंस्कृतीयम्' नामक यह महाकाव्य संस्कृति का सांगोपांग अध्ययन करके लिखा गया है। जिसके अंतर्गत महाकवि का प्रज्ञा विलास स्थान-स्थान पर प्रकट होता है। यद्यपि कवि ने काव्य पर दीर्घकाव्य ऐसी नाम मुद्रा अंकित की है तथापि यह केवल दीर्घकाव्य मात्र नहीं है और न भारतीय संस्कृति का इतिहास ही है अपितु भारतीय संस्कृति का महात्म्य प्रकट करने वाला परिप्लुत महाकाव्य है।

जयन्त हरिकृष्ण दवे जी के विचारानुसार भारतीय संस्कृति तो भारत देश के प्राण ही है उसके बिना भारत की क्या पहचान ? वस्तुतः पूरे विश्व में हमारे भारतदेश की जो गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा सुशोभित होती है उसमें मूल कारण भारतीय संस्कृति है। कविवर ने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति को विषय बनाकर के उसे नए आयाम दिए हैं।

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी द्वारा सत्रह सर्गों में इस दीर्घकाव्य का निर्माण किया गया है। यदि महाकाव्य के लक्षण को देखा जाए तो "सर्गबन्ध महाकाव्यम्" यह लक्षण दृष्टिगत होता है यह काव्य इस परंपरागत महाकाव्य के लक्षणों को प्रकट करने वाला काव्य ही नहीं है। वरन् महान विचारार्थ को प्रगट करने वाला महाकाव्य ही है।

डॉ. मो. दि. पराडकर के शब्दों में कविवर द्वारा प्रत्येक सर्गान्त में दिए हुए संदर्भ इस ग्रन्थ का विलोभनीय वैशिष्ट्य है।

"प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्" नामक दीर्घकाव्य सत्रह सर्गों में प्राप्त होता है किन्तु अन्तिम सर्ग इस मूल रचना का हिस्सा नहीं है इस सर्ग को सानुवाद पुस्तिका में बाद में जोड़कर प्रकाशित किया गया है। कविवर्य द्वारा दीर्घकाव्य में अनेक छन्दों का प्रयोग किया गया है जिनका उल्लेख स्वयं कविवर ने सर्ग के प्रारम्भ में किया है प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्द का प्रयोग किया है जो कि महाकाव्य की विशिष्टता को दर्शाने वाला है किन्तु परवर्ती सर्गों में कुछ श्लोको की रचना एक छन्द में की गई है तथा अन्य की रचना किसी अन्य छन्द में की गयी है। सर्गान्त में पुनः प्रारम्भ वाले छन्दों का प्रयोग नहीं किया गया है। अन्तिम सर्ग में भिन्न-भिन्न विज्ञानों का वर्णन किया गया है। जिसके द्वारा कविवर यह प्रमाणित करना चाहते हैं कि विज्ञान के साथ सारे विषय प्राचीन काल में इस देश में मौजूद थे। जहाज विमान निर्माण जैसे सर्वश्रेष्ठ शोध पांच हजार वर्ष पूर्व इस भारत देश में विद्यमान थे।

छन्द प्रयोग - इस दीर्घकाव्य में निम्नलिखित छन्दों का प्रयोग निम्न सर्गानुसार किया है।

1. उपजाति छन्द -

लक्षण - अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ, पादौ, यदीयावुपजातयस्ताः।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, स्मरन्ति जातिष्विदमेव नाम।।

उदाहरण अस्मत्पुरः सम्प्रति राजामार्गावुपस्थितौ तौ विततौ विशालौ
एको वरोऽध्यात्मिकमौनिमार्गः प्रेयान् परोभौतिक लौकिकारण्य।। (1.4)

2. वसन्ततिलका छन्द -

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गाः।

उदाहरण केचिद्वदन्ति भुवनस्य न कोऽपि कर्ता
त्रैलोक्यसार्धमिह नूनमसंख्यजीवाः।
आकस्मिकं प्रकृतितः प्रकटीबभूव -
देवेन ते विरचिता इति केचिदन्ये।। (8.2)

3. द्रुतविलम्बित छन्द -

लक्षण - द्रुतविलम्बिताह नभौ भरौ।

उदाहरण प्रस्तरसूक्ष्मगुणोत्कटबुद्धिना
जितसमस्तनिसर्गभूतिना।
सकल भौतिक सौख्यायमन्यतो
भुवि नरेण कृतोऽन्नसुरालयः।। (12.2)

4. भुजङ्गप्रयातं छन्द -

लक्षण - भुजङ्गप्रयातं चतुर्भ्यकारैः

ततो ब्रह्मचर्यं महामौनिवर्यं-श्चतुर्थं यमं मानवानां शशास।
जगत्क्षेमकल्याणशान्त्यादिमूलं व्रतं सार्वभौमं महामौलिकं तत्(12.82)

5. शार्दूलविक्रीतम् छन्द -

लक्षण - सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्

उदाहरण शिक्षा नाम नरस्य निर्मितिकरी तद्वत्तिसंशोधिनी
हृन्मस्तिष्कमनः सरोरुहगणं ह्युन्मीलयन्त्यर्कवत्
तस्यान्तर्हित दिव्यमानवगुणानुदभाष्यन्त्यद्भुता
तिर्यग्मानवयोर्षिभेदजननी नूनं महासाधना । (13.1)

6. मन्दाक्रान्ता छन्द -

लक्षण - “मन्दाक्रान्ता जलधिषड्भ्रमैर्भो नतो तादगुरु चेत् ।

यज्ञो नूनं भवति भुवने लोकमाङ्गल्यहेतो -
विश्वक्षेमावहन निरतत्यागशीलाद्भुतायाः ।
विख्याताया भुवनमहितादर्श दिव्योज्ज्वलाया
आर्षेयप्राक्तनभरतभूसंस्कृतेः सत्प्रतीकम् ॥ (14.1)

7. शिखरिणी छन्द -

लक्षण - रसै रुदैश्छन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ॥

गुरुत्वाकर्षाविष्कृतिरपि च सा न्यूटनकृति -
रिति प्रोच्चैर्घुष्टं भवति नवविज्ञानिपरमैः ।
परं तस्मात्पूर्वं विदितमभवद् भारकरबुधै -
रिति स्पष्टं तेषां सुविदित महाग्रन्थपरमात् ॥ (17.16)

इस प्रकार इस दीर्घकाव्य में उपजाति, वसन्ततिलका, द्रुतविलम्बित तथा भुजंगप्रयात, शार्दूलविक्रीडितम्, मन्दाक्रान्ता छन्दों का प्रयोग किया है जिसका उल्लेख स्वयं कविवर द्वारा सर्ग के प्रारम्भ में किया गया है ।

डॉ. देवीप्रसाद खरवंडीकर के शब्दानुसार इस दीर्घकाव्य में कवि के पाण्डित्य के साथ भाषाप्रभुत्व शब्द प्रयोग सामर्थ्य और वृत्त प्रयोग क्षमता निरपवाद है मुनि के स्थान पर “मौनि” शब्द का प्रयोग देखने को मिलता है प्रथम सर्ग के चतुर्थ श्लोक में मौनि शब्द दृष्टिगत हैं । प्रथम सर्ग के चतुर्थ श्लोक में मौनि शब्द दृष्टिगत है गाढपोतः (घर का मूलाधार) जैसे अप्रचलित शब्दों का भी प्रयोग किया गया है । खरवंडीकर महोदय के अनुसार काव्य में कुछ स्थानों पर मुद्रण दोष, व्याकरण दोष, वृत्तभंग दोष भी दृष्टिगत होता है ।

अलंकार प्रयोग -

1. उपमा अलंकार -

लक्षण - प्रस्फुटं सुन्दरं साम्यमुपमेत्यभिधीयते ।

उदाहरण भवोऽसिचेद्भोगसमुच्चयोऽपि भयं न तेभ्यो पलायनं च
स्थेयं च निसङ्गनिरीहवृत्त्या पङ्के यथाऽब्जं सलिले च तैलम् ।।

प्रस्तुत श्लोक में उपमा अलंकार का प्रयोग करते हुए स्पष्ट किया है कि जिस प्रकार की कीचड़ में कमल तथा पानी में तेल स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है उसी प्रकार संसार हे तो भोग समुदाय भी है उनसे न डरना न भोगना उनमें निःसंग और निर्लिप्त वृत्ति से डटे रहना है।

2. उत्प्रेक्षा अलंकार -

लक्षण - भवेत्संभावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना

विश्वात्मना विश्वमिदं विरच्य भोगार्थमेवोपनतं प्रजाभ्यः ।
भोगो विधेयोऽस्य ममत्त्वहीनं यात्रीव विश्रामगृहस्य मार्गं ।

इस श्लोक में भोगों को भोगने की प्रवृत्ति की समानता मार्ग में यात्री विश्राम से करते हुए इव के द्वारा उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग किया गया है।

कवि द्वारा काव्य में समान अलंकारो उपमा, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, आदि का प्रयोग किया है किन्तु एक ही बात को पुनः-पुनः दोहराने की प्रवृत्ति काव्य में दृष्टिगत होती है यथा -

सर्ग- 8-74 श्लोक

बद्धश्च तत्र मृतिमेति यथोर्णनाभः

सर्ग 9-69 (श्लोक)

रन्ते घ्रुवं निघनमेति यथोर्णनाभिः

दोनों ही पंक्तियों में कर्म फँसे व्यक्ति को मकड़ी के समान मरने की बात कही है।

सर्ग- 2-84 (श्लोक)

“त्यागप्रधाना न तु भोगविघ्ना प्राचीनभव्योज्ज्वलसंसकृतिर्न”

सर्ग - 10-55 (श्लोक)

“अध्यात्मिकी भारतसंस्कृतिर्नस्त्यागप्रधानाऽपि च मोक्षसाध्या”

दोनों ही श्लोकों में संस्कृति को भोगप्रधान न होकर त्याग प्रधान होना बताया है।

सर्ग 16 के श्लोक 8 तथा 27 में श्रेष्ठ नदियों और सागरों के जल से राजा का राज्याभिषेक करने की बात कही गई है।

सर्ग 17 के श्लोक 76 व 80 में दोनों ही स्थानों पर दाराशिकोह की घोषणा का वर्णन है जिसमें वेदों को परमात्मा की वाणी बताया है तथा उनका अध्ययन करके ही सुख शांति को प्राप्त किया जा सकता है ऐसा वर्णन मिलता है।

इस प्रकार भिन्न-भिन्न छन्दों व अलंकारों का प्रयोग करते हुए प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने अपने भावों तथा विचारों को इस काव्य माला में पिरोया है। वचनों की पुनरावृत्ति से सर्गों का बहुत अधिक विस्तार दृष्टिगत होता है फिर भी रेणापुरकर जी द्वारा अपनी संस्कृति व सभ्यता की विशेषताओं को प्रकट करते हुए इस दीर्घकाव्य का निर्माण सुचारु रूप से किया है।

वर्तमान संस्कृत कवियों के विरोध में यह आक्षेप किया जाता है कि आधुनिक घटनाओं के प्रति प्रायः उदासीन और पराङ्गमुखी होते हैं किन्तु रेणापुरकर जी महाकवि उसके अपवाद है “जयन्त हरिकृष्ण दवे जी” के विचारों में तो प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी के अन्तःकरण में वर्तमानकालीन घटनाओं के बारे में भावना युक्त प्रतिबम्ब काव्यरूप में तत्काल प्रकटित होता है इसलिए वैचारिकता ही इस महाकवि के काव्य का स्थायी भाव है। इस महाकाव्य में सर्वत्र बड़ी निपुणता से स्पष्ट किया हुआ प्रसाद गुण चित्ताकर्षक है। डा. मो. दि. पराडकर जी के शब्दों में दूसरे की हानि किए बिना उचित और वांछित वस्तु का ग्रहण करना ही आचार्य महाव्रत है यह वाक्य निश्चित रूप से सबके लिए हितकारक है इसमें सन्देह नहीं है।

अनेक विद्वत्तजनों के विचारों को जानकर तथा इस दीर्घकाव्य का अध्ययन करने पर केवल यही निष्कर्ष निकलता है कि प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी महोदय ने इस काव्य का निर्माण करके भारतीय संस्कृति के विषय में आम जनता को जानने का अवसर प्रदान किया है जिसमें हमारी संस्कृति व सभ्यता से जुड़े समस्त विषयों को समेकित किया है इस काव्य में कविवर की भाषा शैली अत्यन्त सरल व सरस है जो पाठक के हृदय को आकर्षित करने वाली है वचनों की पुनरावृत्ति चाहे सर्गों को विस्तार देने वाली है, किन्तु चित्त को मोहित करने वाली है। सर्गारम्भ में ही वृत्त बतलाने की प्रवृत्ति पाठक को काव्यास्वादन में मदद कराने वाली है। काव्य के सानुवाद पुस्तिका में जोड़ गए अन्तिम सर्ग में समस्त विज्ञानों का वर्णन भारतीय संस्कृति की विशालता को प्रकट करने वाला तो है ही साथ ही साथ जानकारी प्रदान करने वाला भी है।

सन्दर्भ

प्रथम सर्ग

1. ऋग्वेद 1/4/16
2. ऋग्वेद 3/29/1
3. याज्ञवल्क्यमैत्रेयीसंवाद
4. भगवद्गीता 2/20
5. कठोपनिषद् - यमनचिकेता संवाद - द्वितीयवल्ली 2/18
6. छान्दोग्योपनिषद् 7-1-26

द्वितीय सर्ग

7. ऋग्वेद 10/121/1
8. कठोपनिषद् - 2/2/4, 2/2/5
9. अथर्ववेद 10/2/31
10. कठोपनिषद् - 1/3/3
11. केनोपनिषद् 2-5, बृहदारण्यकोपनिषद् 4-4-14
12. कठोपनिषद् - 1/3/3
13. यजुर्वेद 31/18
14. अथर्ववेद 2-3
15. ऋग्वेद 10/13/1
16. योगदर्शनम् 2/30
17. ऋग्वेद 5/60/5
18. बृहदारण्यकोपनिषद् 2-4-5, छान्दोग्योपनिषद् 7-1-26, यजुर्वेद 31/18

तृतीय सर्ग

19. सुभाषितम्
20. महाभारत शांति पर्व 109-11
21. वैशेषिक दर्शनम् 1-1-2
22. पूर्णमीमांसा 1-1-2
23. मनुस्मृति 6-12
24. महाभारत
25. मनुस्मृति 2-12
26. महाभारत

चतुर्थ सर्ग

27. कौटिल्यअर्थशास्त्रम् 1-7
28. याज्ञवल्क्यस्मृति 2-21

29. नारद-स्मृति 1-39
30. मनुस्मृति 4-3
31. महाभारत शान्ति पर्व
32. महाभारत, उद्योग पर्व
33. मनुस्मृति 5-106
34. ऋग्वेद 10-191-3
35. यजुर्वेद 40-1
36. शतपथब्राह्मण

पंचम सर्ग

37. शर्ङ्गधर 1-6
38. अथर्ववेद 1-2-19
39. ब्रह्मबिन्दुपनिषद् - 2
40. वा.रामायण किष्किन्धा 6/22
41. मनुस्मृति 2/20
42. यजुर्वेद 31-1
43. केनोपनिषद् 2-5
44. मनुस्मृति 2-14

षष्ठ सर्ग

45. सांख्यदर्शन 1-1
46. न्यायदर्शनम् 1-121
47. मनुस्मृति 4-160
48. न्यायदर्शन 1-22
49. वात्स्यायनभाष्यम्
50. पातंजल योगदर्शन - साधनापाद 2-15
51. पातंजल योगदर्शन - साधनापाद 2-15
52. पातंजल योगदर्शन - साधनापाद 2-15
53. यजुर्वेद 31-18
54. सांख्यदर्शनम् 5-79
55. योगदर्शन - समाधिपाद 1-2
56. योगदर्शन - समाधिपाद 1-3
57. योगदर्शन - साधनापाद 2-29
58. योगदर्शन - समाधिपाद 1-12
59. योगदर्शन - साधनापाद 2-30

60. योगदर्शन - साधनापाद 2-31
61. अथर्ववेद 10-2-1
62. यजुर्वेद 40-8
63. यजुर्वेद 32-3
64. कठोपनिषद् 2-3-9
65. कठोपनिषद् 3-9
66. मुण्डकोपनिषद् 2-2-8
67. न्यायदर्शनम्, आंगिक 1 सूत्र 2 अध्याय 1
68. यजुर्वेद 40-2
69. भगवतगीता 2-47

सप्तम सर्ग

70. श्वेताश्वतरोपनिषद् (अध्याय 1 मंत्र 1)
71. श्वेताश्वतरोपनिषद् (अध्याय 1 मंत्र 2)
72. प्रश्नोपनिषद् (चतुर्थ प्रश्न 1)
73. सांख्यकारिका 7
74. न्यायदर्शन 1-10
75. सांख्यकारिका 26
76. सांख्यकारिका 22
77. बृहदारण्यकोपनिषद् (2-ब्रा. 5)

अष्टम सर्ग

78. सर्वदर्शन सिद्धान्त संग्रह
79. वैशेषिक, ब्रह्मसूत्र, गीता, सांख्यदर्शन, छान्दोग्योपनिषद्
80. सांख्यदर्शन ब्रह्मसूत्र
81. कठोपनिषद् 2-2-7
82. बृहदारण्यकोपनिषद् 3-2-13
83. प्रश्नोपनिषद् 3-7
84. पतंजलयोग, न्यायदर्शन
85. केनोपनिषद्

नवम सर्ग

86. यजुर्वेद 40-2
87. शंकराचार्य
88. भगवतगीता 4-1
89. महाभारत 348-8

90. भगवतगीता 2-47
91. अथर्ववेद 10-2-31
92. भगवतगीता 3-3
93. भगवतगीता 3-4
94. भगवतगीता 18-11
95. भगवतगीता 2-47
96. भगवतगीता 2-62, 63
97. भगवतगीता 3-9
98. भगवतगीता 3-13

दशम सर्ग

99. मनुस्मृति 12-17
100. मनुस्मृति 2-152, 153, 154
101. तैत्तरीयोपनिषद् 1-11-1.3
102. अथर्ववेद का. 11 सू. 5 -17, 18
103. अथर्ववेद का. 14-1-50
104. यजुर्वेद 36-24
105. अथर्ववेद 3-30, 2-3
106. मनुस्मृति 6-2
107. अथर्ववेद का. 9-5-1
108. शतपथ ब्राह्मण का. 14
109. शतपथ ब्राह्मण
110. मनुस्मृति 6-33
111. यजुर्वेद ब्राह्मण
112. शत. का. 14 प्रा. 5 ब्रा. 2 कं. 1

एकादश सर्ग

113. यजुर्वेद 31-11
114. मनुस्मृति 10-64
115. मनुस्मृति 7-38
116. आप. धर्मसूत्र प्रपा. 21 पठ 2 एवं 2 सू. 4

द्वादश सर्ग

117. योगदर्शन 2-30
118. महाभारत उद्योग पर्व 38-73,74
119. योगदर्शन साधनपाद 2-35

120. मुण्डकोपनिषद 3-1-6

121. शतपथ ब्राह्मण 14-3-1

त्रयोदश सर्ग

122. निरुक्तम् 1-4

123. अथर्ववेद का. 11 सू. 5 - म 3

चतुदश सर्ग

124. गीता 3-13

125. महाभारत शान्ति पर्व 262-47

126. भगवतगीता 3-14

127. ऋग्वेद 8-19-5-6

पञ्चदश सर्ग

128. मनुस्मृति 2-26

षोडश सर्ग

129. ऐतरेय ब्राह्मण 8 पंचिका

सप्तदश सर्ग

130. जेकोलियट Bible In India

131. व्हीलर विलॉक्स

तृतीय खण्ड (iii) महाकाव्यत्व

132. काव्यालंकार 1/19, काव्यादर्श 1/14, अग्निपुराण 337/24, साहित्यदर्पण 6/311

133. 'तत्रोत्पाधे' काव्यालंकार 16/7, ध्वन्यालोक 3/11

134. साहित्यदर्पण 6/316, काव्यादर्श 1/15

135. साहित्य दर्पण 6/319, काव्यादर्श 1/14

136. सा.द. 6/320

137. सा.द. 6/324

138. काव्यालंकार 1/19

139. सा.द. 6/321

140. सा.द. 6/324

141. काव्यालंकार 1/20, काव्यादर्श 1/16-17, सा.द. 6/322-324

142. सा.द. 6/322-324

143. काव्यादर्श 1/20 अग्निपुराण 337/33

144. संस्कृत महाव्यों का समालोचनात्मक अध्ययन, रहसबिहारी द्विवेदी पृ. 43

145. अभिनव काव्यालंकार सूत्र 3/1/3

146. संस्कृत महाकाव्यों का समालोचनात्मक अध्ययन, रहस बिहारी पृ. 43
147. संस्कृत महाकाव्यों का समालोचनात्मक अध्ययन, रहस बिहारी पृ. 43
148. संस्कृत महाकाव्यों का समालोचनात्मक अध्ययन, रहस बिहारी पृ. 43
149. संस्कृत महाकाव्यों का समालोचनात्मक अध्ययन, रहस बिहारी पृ. 43
150. अभिराज यशोभूषणम् 4/71

चतुर्थ खण्ड
राष्ट्रीय काव्य संग्रह -
काव्योद्यानम् एवं
काव्यनिष्यन्दः

प्रथम अध्याय
काव्योद्यानम्

द्वितीय अध्याय
काव्यनिष्यन्दः

चतुर्थ खण्ड

राष्ट्रीय काव्य संग्रहः काव्योद्यानम् एवं काव्यनिष्पन्दः

प्रथम अध्याय - काव्योद्यानम्

(i) सामान्य परिचय -

प्रो. रेणापुरकर जी ने वर्ष 2006 में राष्ट्रीय काव्यसंग्रह “काव्योद्यानम्” को कल्पनाप्रसूत किया। यह 1125 श्लोकात्मक काव्य संग्रह है। इस राष्ट्रीय काव्य संग्रह की विषयानुक्रमणिका को नवविंशति भागों में विभक्त किया है। 113 श्लोकात्मक “राष्ट्रीय प्रवाहेऽन्तरायास्तन्निवारणं च” प्रथम काव्य में राष्ट्रीय समस्याओं को प्रस्तुत किया है। 125 श्लोकात्मक “पंजाबराज्यीयमहासमस्या” नामक द्वितीय काव्य में पंजाब राज्य की समस्याओं का वर्णन किया है। तृतीय काव्य “आर्यसमाजगौरवम्” में द्वाषष्टि श्लोकों में आर्य समाजी दयानन्दसरस्वती जी के धार्मिक सुधार तथा वेद प्रचार का वर्णन है। चतुर्थ काव्य “राष्ट्रीयैक्य समस्या” चतुःपञ्चाशत् श्लोकों में लिखा राष्ट्रीय समस्या प्रधान काव्य है। 17 श्लोकात्मक पञ्चम काव्य “आरक्षणाभिशापः” में आरक्षण को अभिशाप माना है। षष्ठ काव्य “रूसदेशे महाक्रान्ति” में 35 श्लोकों में रूस में होने वाली क्रान्ति का वर्णन है। सप्तम काव्य में अष्टादश श्लोकों में “अयोध्याघटनोदरक” में अयोध्या की घटना का वर्णन है “कश्मीरकूटम्” काव्य में कश्मीर समस्या का वर्णन है। “भीषण स्फोटकाण्डम्” में 32 श्लोकों में आतंकियों द्वारा मुम्बई पर किये हमले का वर्णन है। “राष्ट्रीयचरितपातः” में त्रयोविंश श्लोकों में गिरते राष्ट्रीय चरित को वर्णित किया है। “भ्रष्टाचारपराकाष्ठा” में एकादश श्लोकों में भ्रष्टाचार की अत्यधिकता का वर्णन है। 38 श्लोकात्मक “भूकम्पलहरी” नामक काव्य में महाराष्ट्र में आए भूकम्प का वर्णन है। “राष्ट्रीयघोरपतनम्” नामक काव्य में द्वाविंशति श्लोकों में राष्ट्रीय मूल्यों के हास का वर्णन है। चतुर्दश काव्य धर्मराजनीतिविच्छेदवादः में 16 श्लोकों में प्राचीन भारत की धर्मपूर्ण राजनीति तथा आधुनिक भारत की अधर्म पूर्ण राजनीति का वर्णन है। पञ्चदश काव्य में 18 श्लोकों में “न्यायालयोऽत्रविषये नहि साधिकारः” में राममन्दिर घटना के लिए न्यायालय के अधिकारों का वर्णन है। “हजरतबलप्रकरणम्” में 64 श्लोकों में हजरत साहब का बाल चोरी होने की घटना का वर्णन है। “वर्णभेदावसादः” में 16 श्लोकों में वर्णभेद से उत्पन्न होने वाले अवसाद का वर्णन है। “सर्वोच्चसंसदवमानः” में अष्टदश श्लोकों में संसद की अवमानना को वर्णित किया है। “हुबलीकाण्डम्” में नवदश श्लोकों में हुबली में हुए गोली प्रहार का वर्णन है महाराष्ट्रे महापरिवृत्तिः में 21 श्लोकों में शिवसैनिकों के आन्दोलन का वर्णन है। “व्यर्थ कोलाहलम्” नामक काव्य में पञ्चदश श्लोकों में पाकिस्तानी नागरिकों का बलात् भारत में प्रवेश कर हुडदंग मचाने को वर्णित किया है। “पञ्जाबदिव्यम्” काव्य में पंजाब की समस्या का वर्णन है “न्यायालयस्य विचित्रा परावृत्तिः” में न्यायालय की नीतियों में अन्तर का वर्णन है। “अभिनन्दनीयं

महाराष्ट्रशासनम्” में महाराष्ट्र शासन के अभिनन्दन का वर्णन है। “साधु भो! महामात्याः साधु!” में अष्टादश श्लोकों में प्रधानमंत्री नरसिंह राव का अभिनन्दन है “ऐतिहासिकोर्णयः” में त्रयोदश श्लोकों में हिन्दुत्व के विषय में ऐतिहासिक निर्णय का वर्णन है। अमरिकाष्ट्रय्य भारतद्रोहः में अमरीका की भारत के लिए द्रोहपूर्ण नीति का वर्णन है। “अम्नीकाशाढ्यम्” नामक अन्तिम काव्य में अमरीका की धूर्तता को उदधृत किया है।

(ii) विवेचन एवं विश्लेषण

1. राष्ट्रीयताप्रवाहेऽन्तरायास्तन्निवारणं च

किसी भी देश की संस्कृति धर्म, भाषा, भूगोल वेशभूषा आदि मिलकर राष्ट्र का निर्माण करते हैं। इतिहास, साहित्य, विचार, परम्पराएँ ही राष्ट्रीयता का प्रतीक हैं। जो भारत को अपनी प्राणप्रिया धार्मिक पुण्यभूमि मानते हैं। वे इसकी रक्षा के लिए कृतप्रतिज्ञ रहते हैं। इसकी स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन स्वातन्त्र्य बलिवेदी में होम कर दिया है। हमारी संस्कृति में कर्माधारित वर्णव्यवस्था, आश्रम व्यवस्था थी। प्राचीन वैदिक सनातन धर्म में ज्ञानार्जन कराने वाले को ब्राह्मण कहा जाता था। कुछ समय बाद यह वर्ण व्यवस्था कर्माधारित न रहकर जातिगत आधार पर हो गई। हमारे देश में आचार्य शङ्कर वेद के ज्ञाता, मीमांसक, कुमारिल आदि शास्त्रार्थ में पारंगत थे। समय व्यतीत होते हुए वैदिक विचार परम्पराओं में भी परिवर्तन होने लगा। कर्मकाण्ड पर विशेष बल दिया जाने लगा। जिस प्रकार कोई भी छोटी या बड़ी नदी अकेले न बहते हुए विशाल नदियों के समागम से आगे बढ़ती है। उसी प्रकार राष्ट्रीयता का प्रवाह भी सभी के साथ से है। तेरहवीं शताब्दी का काल जब आचार्य शङ्कर कुमारिल ने धर्म कीर्ति प्रसारित की थी, वह राष्ट्र उत्कर्ष का सर्वोत्तम काल था। उससे पूर्व आठवीं शताब्दी में इस्लामिक आक्रमणों ने भारत की सभ्यता, संस्कृति को नुकसान पहुँचाया था। 16वीं शताब्दी की समाप्ति तक फ्रेंच, आंग्ल, पुर्तगाली व्यापार की दृष्टि से भारत आए। 19वीं शताब्दी में देश में सुधारवादी आन्दोलन हुए ब्रह्म समाज, आर्यसमाज जैसी संस्थाओं का उदय हुआ। तत्पश्चात् अंग्रेजों ने कूटनीति से हिन्दु मुस्लिमों में फूट डालकर भारत पर राज किया। इसके पश्चात् हिन्दुस्तान के बंटवारे का समय भी आया जब भारत व पाकिस्तान दो पृथक राष्ट्र घोषित हुए।

वृत्त - वसन्ततिलका

2. पञ्जाबराज्यीयमहासमस्या

भारत के उत्तर दिशा में देश की भुजाओं के रूप में पञ्जाब नामक धनधान्य से परिपूर्ण कीर्तिशाली राज्य है। जो वैदिक काल में सप्तसिन्धु के नाम से प्रसिद्ध था। समय बीतने पर पाँच नदियों के नाम से पञ्जाब कहा गया। सप्त सिन्धु से वेद के ज्ञान रूपी किरणों के निकलने पर मानों तीनों लोक ही प्रकाशित हो गए थे। ग्रीक, शक, हूण, मुहम्मद, सिकन्दर, नादिर, तैमूर, म्लैच्छ आदि आक्रमणकारियों ने भारतीय संस्कृति, सभ्यता को क्षीण करने का पूर्ण प्रयास किया। हिन्दु नरेशों में आपसी फूट डलवाकर उन पर राज किया। देवालयों को ध्वस्त कर दिया। असंख्य लोगों के धर्मपरिवर्तन कराए। इस विकट समय में पंजाब राज्य में गुरुनानक देव के प्रयासों ने लोगों को विपत्ति रूपी अब्धकार से बाहर निकाला। तत्पश्चात् अंग्रेजों की विभेद नीति ने भारत को टुकड़ों में बाँट दिया। इस नीति के तहत पंजाब और बंगाल

को भी टुकड़ों में विभक्त कर दिया गया। जब इस्लाम को मानने वालों के लिए पृथक राष्ट्र पाकिस्तान का बँटवारा कर दिया तो जाति अनुराग के कारण सिक्ख मतावलम्बियों ने भी पृथक राष्ट्र निर्माण की इच्छा व्यक्त की। इस इच्छा को स्वीकार न करते हुए पंजाब को स्वतन्त्र राष्ट्र नहीं बनाया गया। हिन्दू और सिक्ख धर्म को मानने वालों को अलग-अलग नहीं माना गया। सिक्ख गुरुगोविन्द सिंह जी ने अनादिकाल से चली आ रही कुरीतियों, रुढ़ियों को दूर करने हेतु अनेक प्रयास किये। देश और धर्म की रक्षा के लिए गुरु गोविन्द सिंह का योगदान अतुल्य था।

वृत्त - उपजाति

3. आर्यसमाज-गौरवम्

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज नामक संस्था के जन्मशताब्दी अवसर पर कविवर ने इस काव्य की रचना की। मैकाले द्वारा प्रस्तावित आंग्ल शिक्षा पद्धति को सर्वप्रथम सफलतापूर्वक दूर करने का श्रेय गुरुकुल कांगड़ी को ही जाता है। आर्य समाज ने ही वेदों के प्रति श्रद्धा भक्ति निर्माण की और संसार के वेद ज्ञान की गौरव गरिमा को प्रस्थापित किया। लोकोपकारी धार्मिक कार्य में मूक पशुओं की निर्मम हत्या को सप्रमाण रोका। वेदोक्त गुणकर्म आधारित वर्णव्यवस्था को पुनः आरम्भ करने का श्रेय आर्य समाज को ही है। गौमाता की रक्षा के लिए भारतीयों को प्रेरित किया। हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाकर राष्ट्रभाषा के गौरवन्वित पद पर स्थापित करने का प्रयास किया। मूढ़ परम्परा से जकड़े रुढ़ियस्त भारतीयों को तर्क, बुद्धि और विवेक से जोड़ा। वेद सर्वज्ञानमय, समस्त विधाओं का भंडार है। मनु के पश्चात् ऐसी धीरोदात्त घोषणा करने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती संसार में पहले और धन्यतम व्यक्ति थे।

सर्वज्ञानमयी श्रुतिर्भगवती निःशेषविद्यानिधि -¹
रित्योजरिवदिगन्तगामिमहनीयोर्जस्वलोद्घोषणम्।
धीरोदात्तरं मनोर्भगवतो वैवस्वतर्योत्तरं
कुर्वन् धन्यतमो बभूव हि दयानन्दर्षिवर्यो महान्।। (3-6)

अपार वेदसागर को पार करने के लिए संस्कृत एक अनिवार्य नौका है। वेदोद्धार और वेद प्रचार के लिए कटिबद्ध पुरुषों को चाहिए कि वे सर्वप्रथम प्रयत्नपूर्वक संस्कृत का रक्षण करें।

वृत्त - शार्दूलविक्रीडितम्

4. राष्ट्रीयैक्यसमस्या

किसी भी राष्ट्र के लिए भूमि, धर्म, नदी, पर्वत, तीर्थ, भाषा, संस्कृति सभ्यता आदि एकता के प्रतीक हैं। इतिहास की बात करें तो वेदकाल से हमारी संस्कृति अक्षुण्ण रही है केवल बाह्य आक्रमणों से हमारी संस्कृति और सभ्यता को नुकसान पहुँचाने का प्रयास किया गया है। इन समस्त बाह्य आक्रमण से छुटकारे के लिए हमारे वीरों ने आत्मबलिदान दिया है। धूर्त आज्ञाल शासकों की विभेद नीति को मानते हुए जात्यन्ध मुस्लिमों ने स्वयं को पृथक कर लिया। राष्ट्रीय नायकों की दूर दृष्टि के अभाव में हमारा प्रिय भारत खण्डों में बँट गया।

धूर्ताङ्गलशासकविभेदक कूटनीत्या ²
जात्यन्धमुस्लिममतीयविभक्तिवादात्
राष्ट्रीयनायकगणस्य च दृष्ट्यभावात्
हा हन्त् ! खण्डनमभत् प्रियभारतस्य ।। 4-5 ।।

भारत देश में तमिल, केरल, महाराष्ट्र, कन्नड़, बिहारी आन्ध्र आदि राज्यों में भिन्न भाषाओं को बोलने वाले लोग रहते हैं। जब पाक ने स्वयं को पृथक राष्ट्र घोषित करवा लिया तो उसकी अनुवृत्ति करते हुए पंजाब, बङ्ग, उड़ीसा, कश्मीर ने भी स्वायत्ता की माँग करना प्रारम्भ कर दिया। जिससे भयंकर आन्दोलन प्रारम्भ हो गए। सिक्ख समुदाय ने विगत दस वर्षों में अपनी बात मनवाने हेतु निर्दोष हिन्दुओं को अपनी क्रूरता का शिकार बनाया। इस कार्य के लिए पाकिस्तान ने उनका सहयोग किया। मार्ग में ही बस आदि यानों को रोकर लोगों को नुकसान पहुँचाया जाने लगा। जबकि भारत में अल्पसंख्यक समुदाय के लिए विशेष स्थानों की व्यवस्था भी भारत सरकार द्वारा की गई है। इसी प्रकार की अनेक समस्याओं से हमारा देश त्रस्त है।

वृत्तं - वसन्ततिलका

5. आरक्षणाभिशापः

आज भारत के लिए दुर्भाग्य का दिन है जब राष्ट्र के नायकों ने अपने मान, पद, गौरव की रक्षा हेतु जातिगत आधार पर आरक्षण की घोषणा की। पूर्व मुख्य सचिव वी.पी. सिंह जी ने निज गौरव दर्शाने के लिए अपनी सभा में इसकी घोषणा की। जातिगत आरक्षण को भारत के विनाश का मूल कहा जाना उचित है। मति, कर्म, गुणों को छोड़कर जाति के आधार पर लोगों को लाभ देना उचित नहीं है। आज भारत में भीषण जातियुद्ध प्रारंभ हो गए हैं। जिससे लोगों ने निराश होकर स्वयं की देह को जला लिया है। जाति को छोड़कर दुःख पीड़ितों को वस्त्र, अन्न, शिक्षा, निवास के आधार पर सुख पहुँचाना चाहिए। शुल्कमाफी उचित है, किन्तु

नियुक्ति के लिए पूर्णरूप से परीक्षा के आधार पर चयन किया जाना चाहिए। आरक्षण भारत के लिए अभिशाप रूप है।

जाति विहाय खलुः दुःस्थितपीडितेभ्यो³
वस्त्रान्नशिक्षण निवासेसमस्तसौख्यम्।
देयं ह्यशुल्कमिह किन्तु नियुक्तिकाले
सम्यक् परीक्ष्य गुणवच्चयन विधेयम्।। (5-9)

आरक्षण जातिगत नहीं होना चाहिए, क्योंकि जाति के आधार पर कोई धनी या निर्धन नहीं होता है। सभी जातियों के लोग धनसम्पन्न तथा दरिद्र दोनों होते हैं। आरक्षण आर्थिक दृष्टि के आधार पर होना चाहिए।

वृत्त - वसन्ततिलका

6. रूसदेशमहाक्रान्ति:

इस विश्व में होने वाली क्रान्तियों में सबसे बड़ी और महान क्रान्ति रूस की क्रान्ति है यह विश्व इतिहास की अद्वितीय घटना है जिसमें साम्यवाद का अंत होकर रूस साम्राज्य की स्थापना हुई। इससे पूर्व रूस में श्रमिक, कृषि वर्ग के द्वारा रक्त क्रान्ति भी हुई जिसमें असंख्य निर्दोष लोगों की क्रान्ति के नाम पर हत्या कर दी गयी। राजतन्त्र को समाप्त कर लोकतन्त्र की स्थापना के लिए कदम उठाये जाने लगे। स्वाधीनता प्रिय लोगों ने जन्मभूमि का भी त्याग कर दिया। कारावास की सजा को भुगतने को तैयार हो गये।

वृत्त - मन्दाक्रान्ता

7. अयोध्याघटनोदकः

कविवर ने 6 दिसम्बर 1992 की अविस्मरणीय घटना का उल्लेख यहाँ किया है। जब कारसेवको ने अयोध्या में तथाकथित बाबरी मस्जिद को ध्वस्त कर अस्थायी राम मंदिर का निर्माण वहाँ कर दिया। इतने वर्षों से चले आ रहे इस युद्ध की मुक्ति के लिए, रामभक्तों ने अश्वमेघ यज्ञ कर रामजन्मभूमि पर मंदिर निर्माण कर ही दिया। अपने अभिमान, निज गौरव की रक्षा के लिए आलस्य को छोड़ते हुए हिन्दुओं ने यह कार्य कर दिखाया। अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए हिन्दु भी आक्रामक रवैया अपना सकते हैं आज यह बात पूर्णतया सिद्ध हो गयी है। श्री राम, कृष्ण, शिवादि देवताओं के तीर्थ स्थलों के अपमान से तिरस्कृत तप्त हिन्दुओं ने उसी प्रकार जवाब दिया जिस प्रकार श्री कृष्ण ने शिशुपाल के सौ अपराध होने पर सुदर्शन चक्र उठाया।

श्रीरामकृष्णशिवदैवततीर्थधाम्नां ⁴
घोरावमाननतिरस्कृतितप्तहिन्दुः।
पूर्ति गतेषु शिशुपालशतापराधे -
ष्वद्योद्यतः खलु सुदर्शनचक्रहस्तः।। (7-10)

वृत्तं - वसन्ततिलका

8. काश्मीरकूटम्

धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले भारत का अभिन्न अंग, काव्यसाहित्य का केन्द्र क्षेमेन्द्र आदि कवियों की जन्मस्थली कश्मीर वर्तमान में दुख से व्याप्त है। कश्मीर भारत का शीर्ष भाग है जिसे हथियाने के लिए पाक निरन्तर कूटनीति कर रहा है। पाकिस्तान तीन बार कश्मीर के लिए भारत पर असफल आक्रमण कर चुका है। शास्त्रों से सज्जित, भूमित युवक, हमेशा ही कश्मीर में अत्याचार के लिए पाक द्वारा भेजे जाते हैं। हिन्दु मन्दिर, मठ, गुरुद्वारा पूजास्थलों पर इन धूर्तों द्वारा आक्रमण कर इन्हें लूटा जाता है। इन दुष्ट आतंकियों ने बार-बार आक्रमण कर कश्मीरी पण्डितों को कश्मीर छोड़ने पर विवश कर दिया है। देवताओं की भूमि कहा जाने वाला कश्मीर मानो आतंकी रूपी दैत्यों की भूमि बन गया है। कश्मीरी मुख्यमंत्री की पुत्री रुबिया को अपहरण मुक्त कराने हेतु केन्द्र सरकार द्वारा आतंकियों को मुक्त करने का निर्णय किसी अपराध से कम नहीं है। ये वही आतंकी है जो सैंकड़ों लोगों की हत्या कर चुके हैं। आंग्ल अमरीका आदि देश पाक की धूर्तता जानते हुए भी उससे मित्रता निभाते हुए पाक की अस्त्र-शस्त्रों से मदद करते हैं। यह कश्मीर में होने वाली कूटनीतियों के प्रमुख कारण हैं। पाक अधिकृत कश्मीर की मुक्ति के लिए यूनो रक्षा समिति भी दृढ़ संकल्प है।

यूनोरक्षासमीतिदृढसङ्कल्पसर्गानुसारं ⁵
मुक्तिः पाकाधिकृतविषयस्तास्ति मुख्या समस्या।
तद्वायित्वं समुचिततया राष्ट्रसंघेनवोदुः
नूत्ना नीतिः समरसरणिर्भारतेनानुसार्ये।। (8-45)

वृत्तं - मन्दाक्रान्ता

9. भीषणं स्फोटकाण्डम्

श्री सम्पन्न भारत की आर्थिक राजधानी कही जाने वाली मुम्बई नगरी के लिए 12 मार्च 1993 का दिन दुर्भाग्य लेकर आया। राष्ट्र की एकता, सुख शान्ति को भंग करने के लिए आतंकवादियों ने मुम्बई नगर से भयानक विस्फोट किए। इस दिन मुम्बई स्टाक एक्सचेंज की इमारत से धमाकों का प्रारम्भ हुआ। इसके बाद धमाकों का यह क्रम रुका नहीं

कुछ-कुछ समय अन्तराल में भिन्न-भिन्न स्थानों जैसे कार्यालयों, इमारतों, रेल व बस अड्डे, नरीमन पॉइन्ट, शिवसेना कार्यालय आदि आतंकियों ने विस्फोट किए।

नूनं विशे मसिहशतके द्वादशे वै दिनाङ्के ⁶
मुम्बापुर्या त्रिनतितमे वत्सरे मार्चमोसे।
अत्युग्रा भीषणतममहाघातुका ध्वंसकाश्च
विस्फोटाः षोडशपरिमिता नैकाभागेष्वभूवन् ॥ (9-4)

ये विस्फोट इतने भयावह थे, कि जहाँ धमाके हुए वहाँ आस-पास का इलाका क्षतिग्रस्त हो गया। जमीन में गहरे गड्ढे हो गए। प्रत्येक स्थान पर लोगों का करुण क्रन्दन ही सुनाई दे रहा था। सैकड़ों निर्दोष लोगों की जान चली गई। हर्ष, उल्लास, की नगरी में दुःख पीडा ने घर बना लिया। करोड़ों रूपयों की हानि भारत सरकार को हुई।

हाहाकारः करुणरुदितं दीनदुःखार्तनादः ⁷
त्राहि त्राहि प्रतिदिशमभूच्छिन्नगार्तारवः।
हर्षोहला सप्रचुरनगरी दुःखशोकालयोऽभू
दासीदित्यं परमविकला दुःस्थितिर्मोहमय्याः ॥ (9-11)

वृत्तं - मन्दाक्रान्ता

10. राष्ट्रीयचरित्रपातः

किसी भी राष्ट्र के मुख्य नायक, सचिवों के चरित्र से ही उस देश का राष्ट्रीय चरित्र दृष्टिगत होता है। किसी भी कारण से यदि नायक के चरित्र का हास होता है तो वह राष्ट्र के चरित्र को भी कलंकित करने वाला होता है। भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी की निर्मल छवि भी बोफोर्स काण्ड के कारण कलुषित हो गयी थी। यही कारण था कि राजीव गांधी के दल को भंग करना पड़ा।

राजीवगान्धिरपि भारतमुख्यमन्त्री ⁸
बोफोर्सकाण्डमलिनीकृतशुभ्रकीर्तिः।
राष्ट्रावमानपरिवादसहैव नूनं
निर्वाचने स्वदलभङ्गनिमित्तकोऽभूत् ॥ (10-2)

प्राचीन काल में तो राजा राम ने शुद्ध चरित्र सीता को जानते हुए भी परित्याग कर दिया था। लेकिन आज के नायक वर तो चरित्रपात हो जाने पर भी स्वयं की उज्ज्वल छवि प्रदर्शित करने में लगे रहते हैं। स्वीडन की हथियार कंपनी बोफोर्स के साथ तोपों के लिए हुए सौदे में भारतीय मुख्य सचिव का नाम उजागर होना राष्ट्रीय चरित्र के पतन को

इंगित करता है। इस घोटाले में खरबों रूपयों की दलाली की बात सामने आयी। केन्द्रीय गुप्तचर संस्था जो इस मामले की जांच कर रही थी उनके दस्तावेजों को भी सबके समक्ष प्रस्तुत नहीं होने दिया गया।

वृत्त - वसन्ततिलका

11. भ्रष्टाचारपराकाष्ठा

सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए दुःसाध्य समस्या के रूप में भ्रष्टाचार को बताया है। आज देश विकट समस्या से जूझ रहा है। कार्यालयों, सचिवालयों प्रत्येक स्थान पर भ्रष्टाचार व्याप्त है। यहाँ तक की राष्ट्र के प्रधान सचिव के निवास स्थान पर भी इसी ने प्रवेश कर लिया है। राष्ट्र के सबसे भ्रष्ट काण्ड को भला कोई कैसे भूला सकता है। बोफोर्स घोटाले ने देश को कलंकित करके रख दिया। हर्षद मेहता शेजर बाजार घोटाले को भी लोग भुला नहीं सकते। करोड़ों रूपयों की हेरा-फेरी सामने आयी। राव ने तो अपने स्थान की रक्षा के लिए मतदान से पूर्व ही सांसदों की खरीद फरोख्त कर ली थी। यह भ्रष्ट शासन के कुछ उदाहरण मात्र है। भ्रष्टाचार जनतन्त्र विरोधी महा अपराध के समान है। राष्ट्रनायकों को तो शुद्ध चरित्र वाला होना चाहिए। उससे ही उनकी धवल उज्ज्वल कीर्ति विश्व आकाश में फैलेगी।

राष्ट्रस्य नायकवरेण सदैव भाव्यं⁹
सीतेव शुद्धचरितेन विनिर्मलेन
तेनैव तस्य धवलोज्ज्वलचारुकीर्ति
विश्वस्य भव्यगगने प्रखरं चकारित।। (11-11)

वृत्त - वसन्ततिलका

12. भूकम्पलहरी

महाराष्ट्र में अनायास ही घटित इस घटना से प्रतीत होता है जैसे महाकाल रुष्ट हो गए हैं या यमराज कुपित हो गए हैं। तभी तो इतनी अधिक तीव्रता का भूकम्प महाराष्ट्र के लातूर जिले में आया। 30 सितम्बर 1993 का दिन लातूर के इतिहास में सबसे दर्दनाक मंजर लेकर आया। प्रकृति का घोर उग्र, विकट रूप यहाँ देखा गया। मृत्यु का रोद्र रूप महाराष्ट्रवासियों ने महसूस किया। प्रज्ञायुक्त मनुष्य भी प्रकृति के आगे परवश हो गए। यह दुनिया क्षणभंगुर है इस बात को महाराष्ट्र त्रासदी ने स्पष्ट कर दिया।

कियत्क्रूराघोरा नियतिरपिशक्नोति भवितुं¹⁰
कथं प्रज्ञायुक्तोऽप्यतिपरवशो मानवगणः।
क्षणध्वंसी चाय कथमिव भवो बुदबुद इव

समं स्पष्टीभूतं पुनरिह महाराष्ट्रविपदा ।। (12-3)

चतुर्थी के दिन गणेशोत्सव सम्पन्न कर लोग गहन निद्रा में सोये हुए थे, तभी प्रबल भूकम्प से लोग चिरनिद्रा में लीन हो गए। रात्रि में भूकम्प आने से जान माल की हानि अधिक हुई। इस भूकम्प की तीव्रता हाइड्रोजन बम की शक्ति के समकक्ष थी। क्षणभर में ही सैंकड़ों निवास स्थल, इमारतें धराशायी हो गईं। असंख्य लोग तथा पशु, काल का घास बन गए। अनेक शिशु सहसा ही अनाथ हो गए। जो लोग समृद्धशाली थे आज उनके पास अपना कहने को कुछ शेष नहीं रहा। भविष्य में इतनी भयावह स्थिति दृष्टिगत न हो तो ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है।

वृत्तं - शिखरिणी

13. राष्ट्रीयघोरपतनम्

सदाचार और सत् चारित्र्य का उज्ज्वल मानदण्ड संसार का धर्मगुरु भारत देश आज घोरतम हीन दशा को प्राप्त हुआ है। जिस देश के बारे में महाराज मनु ने कहा कि संसार के मनुष्यों को चरित्र की शिक्षा भारतीयों से लेनी चाहिए। हेन्सांग नामक चीनी यात्री ने यहाँ के लोगों द्वारा घरों में ताले न लगाने पर आश्चर्य व्यक्त किया था। उस स्वर्ग समान भारत देश में आज चोर, डाकू और दुष्टों का साम्राज्य है। लोगों की जान माल सुरक्षित नहीं है। भ्रष्ट अधिकारियों और जननायकों ने सत्ता के मद में अन्धे होकर देश को घोर विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया है। अनेक कुलीन और निष्पाप नवविवाहित महिलाएँ धन के लिए पागल युवकों के द्वारा दहेज के नाम पर निर्दयतापूर्वक मार दी जाती हैं। आश्चर्य है कि ऐसे घोर अपराधों को देखकर भी लोग उनका प्रतिकार नहीं करते। आज धर्म, नीति और चरित्र की शिक्षा लुप्त हो गई है। चरित्र और उज्ज्वलशील के बन्धन टूट गए हैं। इसलिए आज देश के विद्यार्थी बालक और युवक उच्छृंखल और स्वेच्छाचारी हो गए हैं।

लुप्ताऽद्य धर्मनयनीतिचरित्रशिक्षा ¹¹

भग्नाश्च चारुचरितोज्ज्वलशीलबन्धाः

विद्यार्थिबालयुवका अत एव देशे

ह्युच्छृंखलाः खलु भवन्ति च कामचाराः ।। (13-19)

वृत्तं - वसन्ततिलका

14. धर्मराजनीतिविच्छेदवादः

इस काव्य में कविवर धर्म को राजनीति से पृथक करने की विचारधारा रखने वाले व्यक्तियों को प्रत्युत्तर दे रहे हैं। धर्म को राजनीति से पृथक करना, मछली को पानी

से, रक्त को हृदय से, प्राण को शरीर से, चाँदनी को चाँद से अलग करने जैसा है। व्यर्थ के आडम्बर करने वालों तथा कर्मकाण्ड को मानने वालों को राजनीति से पृथक करना चाहिए। धर्म ही जिसके प्राण हैं ऐसे महान देश में धर्म पालन के लिए शिवि, भगवान राम राजा हरिश्चन्द्र ने महान आत्म त्याग किया। वहाँ धर्म से राजनीति को अलग करने की बात मूर्खता है।

धर्मप्राण इति प्रथां भुवि गतो देशो महान् भारतो ¹²
धर्माज्ञापतिपालनाय विहितो यत्रात्मयज्ञो महान्।
विख्यातैः शिवि-रावणात्मक-हरिश्चन्द्रादिभिराजकै -
मौर्ख्यं तत्र हि धर्मराजनययोर्विच्छेदवादः खलु।। (14-4)

धर्म इस प्रजा, त्रिभुवन और ब्रह्माण्ड को धारण करने वाला महान तत्व है। धर्म, शाश्वत नियम और विश्व को धारण करने वाली नीति का नाम है। उसके बाहर मानव जीवन का कोई भी विषय रह नहीं सकता। इसलिए राजनीति भी धर्म से अलग नहीं की जा सकती।

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

15. न्यायालयोऽत्र विषये नहि साधिकारः

प्रस्तुत काव्य के माध्यम से कविवर प्रसिद्ध राममन्दिर व बाबरी मस्जिद के लिए न्यायालय के निर्णयों को अधिकारिक नहीं मानते हैं। रेणापुरकर जी कह रहे हैं कि यहाँ अयोध्या में पूर्व काल में मस्जिद थी या मन्दिर इस बात कोई प्रमाण नहीं है। अतः न्यायालय इस विषय में कोई भी निर्णय करने में कैसे समर्थ हो सकता है? भारतीय इतिहास में आर्य या द्रविड कौन प्रारम्भ से था यह निर्णय करना मुश्किल है। अतः न्यायालय इस राममन्दिर विवाद के विषय में निर्णय कर पाने में कैसे समर्थ है यह बात विद्वतजनों के चिन्तन का विषय है -

आर्याबभूवुरिह भारतमूललोकाः ¹³
किं द्राविडाः समभवन्निति निर्णयार्थम्।
न्यायालयोऽत्र भविता कथमेव शक्तः
इत्येव विज्ञसुजनेः खलु चिन्तनीयम्।। (15-3)

जिस निर्णय से अनेक लोगों की धार्मिक भावनाएँ जुड़ी हुई हैं उस पर न्यायालय विचार विमर्श करके निर्णय देने में सक्षम नहीं है। न्यायालय के निर्णय से दोनों पक्षों को सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता है। यह स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है कि यहाँ बाबरी मस्जिद के स्थान पर राम मन्दिर था, क्योंकि उत्खनन में जो ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं - वो यहाँ राम मन्दिर होने को प्रमाणित करते हैं। इतिहासकारों की बातों पर भी नजर डालें तो

यह दृष्टिगत होगा कि बाबर जैसे वैदेशिक आक्रमणकारियों ने मन्दिरों को ध्वस्त किया था। उसी क्रम में राम मन्दिर को भी ध्वस्त कर मस्जिद का निर्माण किया गया।

वृत्त - वसन्ततिलका

16. हजरतबलप्रकरणम्

कश्मीर में स्थित हजरत साहब का पवित्र स्थान अनेक मुस्लिमों के धार्मिक आस्था का केन्द्र है। बल का तात्पर्य स्थान से है वह स्थान जहाँ हजरत साहब का पवित्र बाल रखा है। सभी देशों के मुस्लिम जन यहाँ इस पवित्र स्थान के दर्शनार्थ आते हैं। कश्मीर भारत के उन्नत शीर्ष के समान है। उसे पाने के लिए पाकिस्तान विभाजन के समय से ही इसको प्राप्त करने की इच्छा रखता आया है। तीन बार आक्रमण करके पराजित हो जाने पर भी पाकिस्तान निरन्तर ही कश्मीर में आतंकवाद को प्रेरित करता रहा है। इसी आतंकवाद के प्रसारित होने से कश्मीर में रहने वाले जनसामान्यों को परेशानियाँ उठनी पडती है तभी अचानक यह बात प्रकाश में आयी कि दरगाह से हजरत साहब का पवित्र बाल गुम हो गया है। इस बात से मुस्लिम समुदाय में आक्रोश व्याप्त हो गया। अनेक लोग सड़को पर प्रदर्शन के लिए उतर आए। इस विकट परिस्थिति को देखकर आला अधिकारियों ने विश्वासपात्र नेतागण को इस बात की पडताल करने के लिए कश्मीर भेजा। जब हजरत साहब का पवित्र बाल मिल गया, तब कहीं लोगों में शान्ति की स्थापना हुई।

वृत्त - मन्दाक्रान्ता

17. वर्णभेदावसादः

दक्षिण अफ्रीका में 350 वर्षों से रंगभेद की नीति चली आ रही थी। रंगभेद नीति को अपार्थीड कहा जाता है। अफ्रीकी भाषा में अपार्थीड का मतलब अलगाव या पृथकता से है। अनेक वर्षों से चली आ रही इस कुनीति को समाप्त कर काले अंधेरे को हटाया गया है। गांधी जी ने अफ्रीका में रंगभेद की नीति से जनता को मुक्त कराने हेतु संघर्ष किया। उन्होंने मण्डेला महोदय के साथ मिलकर सत्य, अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए इस महासंग्राम में विजय हासिल की थी। इस रंगभेद नीति के कारण श्वेत वर्ण व्यक्तियों ने कृष्ण वर्ण मनुजों को प्रताडित किया। उन लोगों पर अनेक अत्याचार किये गए। यह बहुत ही उग्र भीषण भयंकर दानवीय नृशंस था। अफ्रीका की राष्ट्रीय परिषद् के अध्यक्ष पद पर विराजमान नेल्सन मंडेला महोदय ने इस विषय पर मुक्ति के लिए 28 से अधिक वर्षों तक संघर्ष किया।

अफ्रीकाराष्ट्रियपरिषदोऽध्यक्षवर्यैः प्रवीरै -¹⁴
र्मण्डेलाभिः स्वविषयविमुक्त्यर्थसंघर्षकृद्भिः ।
अष्टविंशत्यधिकशरदो जीवनस्य व्यतीताः
श्वेताङ्गानामसितमनसां बन्धने क्रूर घोरे ॥ (17-5)

रंगभेद नीति के निवारण हेतु नेल्सन मंडेला को नोबेल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। वर्ण भेद नीति से छुटकारा मिल जाने पर लोगों में हर्षोल्लास उत्पन्न हुआ।

वृत्त - मन्दाक्रान्ता

18. सर्वोच्चसंसदवमानः

जनता द्वारा निर्वाचित सांसद गण तथा अन्य राजनैतिक प्रतिनिधि यदि राष्ट्र विरोधी कृत्यों में संलिप्त हो तो यह संसद की अवमानना ही मानी जानी चाहिए। पाँच अरब रूपयों की ढगी का यह काण्ड राष्ट्र के इतिहास में सुरक्षा यन्त्रों की खरीद फरोख्त का सबसे बड़ा विवाद रहा था। समस्त राष्ट्र ने इसके प्रति अपना रोष प्रकट किया था। पी.वी. नरसिंहा राव के प्रधानमंत्री कार्यकाल में डॉ. मनमोहन सिंह जी को भारत का वित्तमंत्री बनाया गया था। ऐसा कहा जाता कि कांग्रेस शासन के अनेक मंत्री इसमें लिप्त थे। उसी समय हर्षद मेहता का एक करोड़ से अधिक राशि का घोटाला भी चर्चा में रहा था। कविवर के अनुसार इन घोटालों के कारण तत्कालीन वित्तमंत्री द्वारा अपना त्यागपत्र स्वीकार नहीं किया गया।

दायित्वमत्रविषये स्वकमेव मत्वा¹⁵
त्याज्या बभूव पदवी स्वयमेव रावैः ।
दूरेऽस्तु तत्पुनरसौ मनमोहनस्य
तत्यागपत्रमपि स्वीकृतवान्नः ॥ (18-9)

इस बात की सत्यता की जाँच की जाए तो इतिहास में कहीं भी माननीय वित्तमंत्री मनमोहन सिंह जी के त्यागपत्र का उल्लेख नहीं मिलता है। यदि संसदीय समिति द्वारा सहमति से कोई निर्णय लिया जाए परन्तु उस निर्णय की पालना नहीं की जाती तो वह संसद की अवमानना के ही समान है।

तत्संसदीयसमितेः कृतमेकमत्या¹⁶
सन्निर्णयं यदि जना नहि मानयन्ति ।
तत्संसदीयजनतन्त्रविरोधिकार्यं
सर्वोच्चसंसदवमाननमेव नूनम् ॥ (18-15)

वृत्त - वसन्ततिलका

19. भारतीयजनतापक्षस्य पराजयः

श्री राम मन्दिर भूमि पर स्थित मस्जिद के विध्वंस ने चुनावों में दलगत राजनीति के अलग ही समीकरण बना दिए। भारतीय जनता पक्ष ने राममन्दिर विवाद को लोगों के अपने पक्ष में करने का साधन समझ लिया था। भारतीय जनता पक्ष इसी संदर्भ में लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाते रहे। जब भारतीय जनता दल ने अपने वादों को पूर्ण नहीं किया तो उन्हें ग्याहरवीं लोकसभा के लिए हुए चुनावों में पराजय का सामना करना पड़ा। न्यायालय के द्वारा मस्जिद पक्ष में निर्णय दिये जाने पर भी दल द्वारा कोई विशेष प्रयास नहीं किए गए। राष्ट्र को दिए गए वचनों को दलवालों ने ही भङ्ग कर दिया। भारतीय जनता भावुक होने के साथ ही साथ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक भी है। इसका परिणाम पूर्व में भी दृष्टिगत हो चुका है। जब शक्तिशाली इंदिरा जी को जनता पक्ष के विरुद्ध पराजय का सामना करना पड़ा। दरिद्रता, निरक्षरता, भ्रष्टाचार जैसे प्रमुख मुद्दों को छोड़कर मंदिर, मस्जिद के विवादों को राजनीतिक मुद्दा बना लिया गया।

दारिद्यवृत्तिरहितत्वनिरक्षरत्व - ¹⁷

भ्रष्टत्वदैन्यदलितत्वमहार्घतानाम्।

उच्चाटनं भवति मुख्यतमा समस्या

मस्जिदमन्दिर विवाद इहास्त्यमुख्यः।। (19-30)

धर्म संस्कृति, सत्य के रक्षक होते हुए भी विवेक हीन कार्यो से जनता पक्ष पराजित हुआ।

वृत्तं - वसन्ततिलका

20. हुबलीकाण्डम्

कर्णाटक में हुबली नामक शहर में ईदगाह नामक एक प्रसिद्ध स्थान है। स्वाधीनता दिवस के दिन इस खुले मैदान में राष्ट्रीय ध्वज फहराने को रोक दिया गया। राष्ट्र के गौरवमय ध्वज को फहराना ही अपराध मान लिया। इस पवित्रस्थल पर भीषण गोलियों से प्रहार कर 6 लोगों को मार दिया गया।

तस्मिन् स्थले भरतवर्षपवित्रकेतो -¹⁸

रारोहणाय रभसा प्रचलज्जनौघे

कृत्वाऽतिभीषणमं गुलिकाप्रहारं

हा हन्त! निष्पूरतया निहताजनाः षट्।। (20-3)

कविवर यहाँ यह प्रश्न करना चाहते हैं कि क्या हुबली भारत का हिस्सा नहीं हैं ? इसलिए स्वाधीनता दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्व पर ध्वजारोहण को जघन्य अपराध बना दिया गया। इंदगाह के मैदान में ध्वजारोहण करने से उसे साम्प्रदायिकता से जोड़ दिया गया। मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगों की सान्त्वना प्राप्त के लिए इस जघन्य गुलिका काण्ड को अंजाम दिया। जिस राष्ट्र में स्वतंत्रता प्राप्त हेतु, रक्षा के लिए असंख्य वीरों ने बलिदान दिया वहाँ ऐसी घटना होना आश्चर्य का विषय है। हमारी भारतभूमि पवित्र है। इसका राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत हमारे मान-सम्मान का विषय है। यह समस्त भारतीयों को भलीभाँति समझना चाहिए।

वृत्तं - वसन्ततिलका

21. महाराष्ट्रे महापरिवृत्तिः

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत का प्रमुख राज्य महाराष्ट्र दिनोंदिन नवीन उपलब्धियों को प्राप्त कर रहा था। महाराष्ट्र राज्य की राजधानी बॉम्बे आर्थिक वृद्धि का स्थान बन गया। तब ही वहाँ अतुलनीय, अद्भुत क्रान्ति हुई। चतुर्दशक काल से चले आ रहे कांग्रेस शासन का अन्त हुआ। भारतीय जनता पार्टी तथा शिवसेना ने बहुमत हासिल किया। इससे पूर्व सत्ता के मद में अन्ध राजनेता देश के इस राज्य को कलंकित कर रहे थे। रिश्वत ही उनका विशेष गुण बन गया था। जनता इस कुशासन से त्रस्त हो गयी थी। इसके परिणामस्वरूप ही कांग्रेस शासन को जनता द्वारा निरस्त किया गई। इस क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे नमनीय हैं। उन्होंने स्वयं को मंत्रिपद से दूर रखते हुए जनता के हित में कार्य करने का प्रयास किया। बी.जे.पी. नायक एवं शिवसेना ने संयुक्त मंत्रिपरिषद् का निर्माण किया मनोहर जोशी को मुख्यमंत्री तथा गोपीनाथ मुण्डे को उपमुख्यमंत्री बनाया गया। बॉम्बे का नाम परिवर्तित कर मुम्बई रख दिया गया। भा.ज.पा. तथा शिवसेना की संयुक्त मंत्री परिषद् का लोगों ने उत्साह पूर्वक स्वागत किया।

बी.जे.पी. नायकवरैः शिवसैनिकैश्च^{१९}

संयुक्त मन्त्रिपरिषन्निमायि तत्र।

जोशीत्युपाह्यमनोहर-मुख्यमंत्री

मुण्डेऽभिघश्च समभूदुपमुख्यमंत्री।। (21-16)

वृत्तं - वसन्ततिलका

22. व्यर्थः कोलाहलः

इस काव्य की रचना का उद्देश्य वरिष्ठ नेतृगणों का ध्यान, प्रमुख समस्याओं की ओर आकृष्ट करना है। यह समस्या आवाञ्छनीय व्यक्तियों के भारत में निवास

करने की है। भारत में पाकिस्तान तथा बांग्लादेश आदि देशों से आये हुए नागरिक बिना किसी सहमति के यहाँ रह रहे हैं। मुख्यतौर पर देखा जाए तो महाराष्ट्र की राजधानी मुम्बई में ही दो लाख से अधिक ऐसे नागरिक रहते हैं जो उस नगर का हिस्सा नहीं है। इससे भारत के अर्थतन्त्र पर बहुत विपरीत प्रभाव दृष्टिगत होता है ये ही कारण भारतीय सुरक्षा तंत्र को भी हानि पहुँचाने वाले हैं। सत्ता की इच्छा रखने वाले नेता स्वार्थपूर्ति के कारण इनके निष्कासन का प्रयास नहीं करते हैं। क्या भारत कोई धर्मशाला है ? जहाँ मुस्लिम बिना भय प्रवेश करते हैं। विस्फोट आदि दुष्कृत्य कर भारतीयों को दुख पहुँचाते हैं। इनके विरुद्ध महाराष्ट्र शासन द्वारा कठोर कदम नहीं उठाया जाता। ये केवल व्यर्थ ही कोलाहल करते रहते हैं। शिवसेना प्रमुख ठाकरे साहब इनके विरुद्ध अपनी वाणी के लिए प्रसिद्ध हैं। ठाकरे साहब या अन्य कोई भी मुस्लिम समुदाय का शत्रु नहीं है अपितु भारत विद्रोही जनों के शत्रु हैं चाहे वो मुस्लिम समुदाय से हो या हिन्दु समुदाय से हो। ठाकरे साहब तो सिख समुदाय के उन व्यक्तियों के विरोधी हैं जिन्होंने निष्ठुरता से इंदिरा जी की हत्या कर दी। निष्पाप लोगों की हत्या को देखकर भी स्वार्थपरक राजनेता राष्ट्रहित में कार्य नहीं करते हैं।

राष्ट्रप्रतीपनिजनीतिवशात्परास्तैः ²⁰
 स्वार्थान्धनायकजनैः प्रतिकारसिद्धैः।
 सासूयमत्सरमयैश्च हताशखिन्नै
 राष्ट्रहित न करणीयमिहात्मनुष्ट्यै ।। (22-15)

वृत्तं - वसन्ततिलका

23. पञ्जाबदिव्यम्

इस काव्य में कविवर ने त्रयः सप्तति श्लोकों में पंजाब का वर्णन प्रस्तुत किया है पंजाब धनधान्य से परिपूर्ण पाँच नदियों का राज्य है। अनेक विदेशी आक्रमणकारियों ने यहाँ आक्रमण कर इसकी सभ्यता व संस्कृति को हानि पहुँचाने का प्रयास किया था। भारतीयों तथा गुरु जनों के अदम्य साहस से दुर्विचार वाले मनुष्यों की इच्छाएँ पूर्ण नहीं हो सकी। पाकिस्तान के पृथक राष्ट्र बनाए जाने की घोषणा के साथ ही पंजाब में भी पृथक राष्ट्र “खलिस्तान” बनाने की इच्छा प्रबल होती गई। केन्द्र सरकार द्वारा इस प्रस्ताव को टुकरा देने से लोगों में रोष व्याप्त हो गया। दंगे भडक गए। जब पंजाब में राष्ट्रपति शासन के दौरान सिक्खों के पवित्र स्थल स्वर्ण मंदिर में सेना ने प्रवेश कर लिया तो यह पंजाब निवासियों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला था। इसी प्रकार के काव्य “पंजाब राज्तीय महासमस्या” का वर्णन कविवर इसी काव्य ग्रन्थ में पूर्व में भी कर चुके हैं।

वृत्तं - मन्दाक्रान्ता

24. न्यायालयस्य विचित्रा परावृत्तिः

प्रस्तुत काव्य के माध्यम से कविवर पाठकों का ध्यान न्यायालय की विचित्र परावृत्ति की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। भारत राष्ट्र के गौरवमय, उज्ज्वल संविधान में प्रत्येक नागरिकों हेतु नियम उद्धृत हैं। न्यायालय के निर्णयानुसार ही भारत की धूरी घूमती है। हमारे देश में दण्ड, कानून की समानता दृष्टिगत होती है किन्तु नागरिकों के लिए निर्धारित कानूनों में एक्य नहीं देखा जाता है। त्याग के विषय में, विवाह बन्धन के विषय में बहुत अन्तर मिलता है। 'यथा - हिन्दु धर्म को मानने वाले लोगों को दो पत्नियाँ रखने का अधिकार नहीं है अपितु मुस्लिम समुदाय के लोग चार पत्नियाँ रख सकते हैं। यहाँ भारतीय समाज में मतभेद दिखाई देता है। तीन बार तलाक शब्द बोलकर मुस्लिम अपनी पूर्व पत्नी को छोड़ सकते हैं बिना कोई भरणपोषण दिए। यह महिलाओं पर अन्याय है। भारतीय कानून के अनुसार हिन्दुओं के लिए दो पत्नियाँ वैध नहीं है, जबकि मुस्लिमों के लिए चार पत्नियाँ वैध है। इससे निरन्तर मुस्लिम समुदाय के लोगों की वृद्धि हो रही है। भारतीय न्याय व्यवस्था में समान नागरिक कानून लागू किया जाना चाहिए।

वृत्त - वसन्ततिलका

25. अभिनन्दनीयं महाराष्ट्रशासनम्

महाराष्ट्र शासक जनों का अनेक बार अभिनन्दन है। जिन्होंने राष्ट्र को बाँटने वाली अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक की विषाक्त नीति हटा दिया। राज्य में इस नीति को समाप्त करके सम्मानीय कार्य किया। न्यायालय के वचनों को मानते हुए मुख्य सचिव ने समान कानून सभी नागरिकों के लिए तथा गौ हत्या निषिद्ध ये निर्णय सुनाया। मुस्लिम सान्त्वना परायण लोगों ने राज्य में अल्पसंख्यक समुदाय के लिए जो विशिष्ट आयोग स्थापित किया उसको भी निरस्त कर दिया। जब सभी नागरिकों हेतु समान कानून लागू है तो अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यक का भेद मिथ्या है। भारतीय संविधान के अनुसार किसी भी वंश, कुल, जाति, लिंग, धर्म, मत, जन्म के आधार पर लोगों में भेद नहीं किया जाएगा। किसी भी सार्वजनिक पद, सरकारी सेवा में भेदभाव नहीं किया जाएगा। किसी भी पारसी, ईसाई, धर्मावलम्बी ने महाराष्ट्र शासन में विरोध दर्ज नहीं किया। क्या ये देश में अल्पसंख्यक समुदाय नहीं है? केवल मुस्लिम समुदाय द्वारा ही विरोध क्यों किया जाता रहा है? ये समुदाय इसके माध्यम से देश को पुनः टुकड़ों में बाँटना चाहता है। भारतीय संविधान में सामाजिक, आर्थिक रूप से वंचित लोगों के लिए आरक्षण की व्यवस्था है ना की किसी धर्म, जातिगत आधार पर स्वार्थपरक राजनेता मत प्राप्ति की आशा से इन बातों को तोड़ मरोड़कर पेश करते हैं।

वृत्त - वसन्ततिलका

26. साधु! भो! महामात्या: साधु!

इस काव्य में कविवर भारत के नवें प्रधानमंत्री श्री पी.वी.नरसिंहा राव जी का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए उनके स्पष्ट वकतव्यों को प्रकट कर रहे हैं। कोलम्बिया में हुए महासभा के सम्मेलन में सम्मिलित देशों के समक्ष नरसिंहा राव जी ने कश्मीर विषय पर अपनी बेबाक राय प्रस्तुत की – उनका कहना था कि कश्मीर में होने वाले इन युद्धों से निष्पाप लोग प्रभावित होते हैं। अनेक बालक व महिलाएँ घायल होती हैं। कश्मीर में शान्ति बनाए रखना प्रमुख विषय है। इसी सभा की बैठक में पाक की मुख्य सचिव बेनजीर भुट्टो ने कहा कि कश्मीरवासी मुक्ति के लिए निरन्तर युद्ध करते रहे हैं। कश्मीर तो शान्ति के लिए कलंक के समान है। इसके प्रत्युत्तर में नरसिंहा राव जी ने स्पष्ट कर दिया कि कश्मीर केवल भारत का ही भाग है। किसी में भी यह शक्ति नहीं कि वो कश्मीर को भारत से अलग कर दे। राव की इस घोषणा का संयुक्त राष्ट्र सदस्यों ने भी समर्थन किया। पाक ने जबरन ही कश्मीर के जिस भाग पर अधिकार कर लिया है वो उसे यथाशीघ्र छोड़ दें।

उद्घुष्टमेव किल तत्र सधीरमेभि -²¹

र्यत्कश्मिरं भवति भारतवर्षभागः।

संयुक्तराष्ट्रसदसाऽपि समर्थित तत्

शक्तिर्न कापि भवतीह वियोक्तमेतत्।। (26-8)

चीन, अमेरिका जैसे विश्व के वरिष्ठ देश भारत का विकास नहीं चाहते हैं इसलिए ही पाक को विकराल अस्त्र शस्त्र प्रदान कर रहे हैं ताकि युद्ध चलता रहे लेकिन भारत किसी भी कीमत पर कश्मीर किसी को नहीं देगा।

वृत्तं - वसन्ततिलका

27. ऐतिहासिको निर्णयः

हिन्दुत्ववाद को ध्यान में रखते हुए 1995 में न्यायालय ने रूढ़िवाद को त्यागते हुए नवीन ऐतिहासिक निर्णय लिया। मनोहर जोशी जी ने महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री पद को ग्रहण करते ही हिन्दुत्व को नई दिशा प्रदान की। न्यायालय ने यह निर्णय सर्वधर्म सम्भाव को ध्यान में रखकर ही लिया। इस निर्णय ने हिन्दुत्व को उसी प्रकार नवीन चमक प्रदान की जिस प्रकार अग्नि में जलकर स्वर्ण भी नयी चमक धारण करता है। न्यायालय ने निर्णय में स्पष्ट किया – यहाँ हिन्दुत्व कोई संप्रदाय नहीं है या किसी धर्म विशेष में इसका संकुचित अर्थ नहीं है। अपितु यह विशालतम जीवन पद्धति का द्योतक है। हिन्दुत्व तो विशाल सागर का प्रतीक है जिसमें सभी प्रकार की नदी, तालाब, सरोवर आकर मिल जाते हैं। हिन्दुत्व में भी समस्त धर्म, मत, मतान्तर, सम्प्रदाय का एकाकार है। इसके लिए कोई उद्भव कर्ता, ग्रन्थ, देव नहीं हैं यह तो संस्कार, संस्कृति, परम्परा को मिलाकर राष्ट्रीयता का प्रतीक है।

हिन्दुत्ववादविषये तु विघोषितं यद् ²²
हिन्दुत्वमत्र नहि कश्चन सम्प्रदायः।
धर्मोऽपि नैव खलु सङ्कुचितार्थरुद्धो
नूनं विशालतम जीवनपद्धतिस्तत् ॥ (27-5)

वृत्तं - वसन्ततिलका

28. अम्नीकाराष्ट्रस्य भारतद्रोहः

अमरीका विश्व के समृद्धशाली देशों में से एक है भौतिक सुख सुविधाओं से सम्पन्न यह देश स्वार्थपूर्ति में अद्वितीय विचारो वाला है। संयुक्त राष्ट्र सभा में हुए निर्णयानुसार आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले राष्ट्रों का सहयोग नहीं किए जाने पर भी अमरीका ने सहमती प्रकट की थी। इस प्रकार के आतंकवादी कार्यों के लिए अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग पर भी रोक लगाने का कार्य संयुक्त राष्ट्र सभा ने किया। लेकिन तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने आतंक विरोधी निर्णय का समर्थन करने के पश्चात् भी पाकिस्तान को महास्त्रों की पूर्ति करवायी। इससे यह स्पष्ट है कि अमरीका आतंकवाद को बढ़ा देने का कार्य कर रहा था। करोड़ों रूपयों के अस्त्र-शस्त्र पाक को यह जानते हुए भी पहुँचाना कि ये हथियार भारत के ही विरुद्ध प्रयोग किए जाने वाले हैं। अमरीका की द्रोहपूर्ण नीति को स्पष्ट करता है। अमरीका का भारत के प्रति यह व्यवहार मित्रवत न होकर शत्रुवत था। पंजाब और कश्मीर के समान सम्पूर्ण भारत में पाक ने उग्रवाद को प्रसारित किया। पाक के प्रशिक्षित आतंकियों ने भयानक घातक अस्त्र शस्त्रों के साथ भारत में प्रवेश कर निष्पाप, निर्मल लोगों पर गोलियों के प्रहार किए। अमरीका का यह दोहरी नीति युक्त व्यवहार अनेक वर्षों से यूँ ही चला आ रहा है। अमरीका प्रारंभ से ही पाकिस्तान का समर्थक रहा है।

नून्वो न भारतविरोधिनयोऽम्निकीयः ²³
प्रारंभतोऽस्ति खलु पाकसमर्थकं तत्।
न्याय्योऽपि भारतभुवो नहि कोऽपि पक्षः
संधारितोऽस्ति खलु पाकविरोधतिव्त्तैः ॥

वृत्तं - वसन्ततिलका

29. अम्नीकाशाठ्यम्

कविवर ने अपने पूर्व काव्य “अम्नीकाराष्ट्रस्य भारतद्रोहः” के समान ही यहाँ भी अमरीका की भारत विरोधि नीति का उल्लेख किया है। अमरीका प्रारम्भ से ही पाकिस्तान का समर्थक व भारत का विरोधी रहा है। इसका प्रमुख कारण भारत का रूस से

मैत्रीपूर्ण व्यवहार है। अमेरिका स्वयं को सर्वशक्तिशाली राष्ट्र साबित करने में निरन्तर प्रयास रहा है। इसलिए ही लगातार पाकिस्तान को करोड़ों, अरबों रूपयों के हथियार सौंपता आया है। जबकि रूस व भारत मित्रवत व्यवहार की अवधारणा को मानते हुए परस्पर सहयोगी की भावना के साथ आगे बढ़ रहे हैं। अमरीका पाकिस्तान के घोर, उग्रकृत्यों को जानते हुए भी पाकिस्तान का समर्थक बना हुआ है। वह साम्यवादी राष्ट्र रूस के प्रति विरोध प्रकट करने के लिए, स्वयं का वर्चस्व सम्पूर्ण संसार में स्थापित करने के लिए, दुष्कृत्यों में भी पाक को सहयोग प्रदान करता रहा है। अमरीका ने पाक को न केवल अस्त्र-शस्त्र ही प्रदान किए अपितु धन से भी पाक की मदद की है। रूस के साथ भारत के स्नेह सौहार्द से रूष्ट अमरीका अपने शत्रु रूस के मित्र भारत के साथ भी शत्रुवत व्यवहार करता आया है। बांग्लामुक्ति संग्राम के समय भी अमरीका ने पाक को समर्थन दिया। अमरीका ने हमेशा से यही प्रयास किया कि सम्पूर्ण कश्मीर भूमि पर पाक का कब्जा हो जाए राष्ट्र संघ की सभा में भी पाक ने यही प्रयास किए। लेकिन रूस ने अपने वीटो पावर का प्रयोग करते हुए तब भी भारत के प्रति अपनी मित्रता का प्रमाण दिया था। रूस की मदद से ही भारत बांग्ला मुक्ति संग्राम में विजय प्राप्त करने में समर्थ हो सका है।

पाकाधीना भवतु नियतं पूर्णकश्मीरभूमि -²⁴

रित्यर्थं तैः प्रयतितमभूदं राष्ट्रसङ्घे सदैव ।

रुसेनास्मत्सततसुहृदा तत्र तेषां विरुद्ध -

मस्मत्साह्यं विहितामभवत् स्वाधिकारं प्रयुज्य ।। (29-24)

वृत्तं - मन्दाक्रान्ता

(iii) वैशिष्ट्य

काव्योद्यानम् नामक राष्ट्रीय काव्य संग्रह में 125 श्लोकात्मक काव्य संग्रह है। इस काव्य संग्रह में 29 काव्यों को सम्मिलित किया गया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में राजकीय, सामाजिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भी दूरगामी, शुभ-अशुभ परिवर्तन हुए हैं। उन सभी में से कुछ महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखकर रचनाकार ने इन काव्यों की रचना की थी। आंग्लशासकों की कूटनीतियाँ सत्ताहस्तान्तरण के बाद भी भारतीयों को जाति के नाम पर लडाना जैसे आंग्लनीतियों को प्रकाशित करते हुए राष्ट्रीय काव्यों की रचना की गयी है। जिसमें प्रमुख रूप से पंजाब राज्य की समस्याओं, राष्ट्रीय समस्याओं, आरक्षण तथा अमरीका की धूर्तता का वर्णन दृष्टिगत होता है। काव्योद्यानम् में निम्नांकित छन्द व अलंकारों का प्रयोग किया गया है।

छन्द प्रयोग -

1. उपजाति

लक्षण - अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासुवदन्ति जातिष्विदमेव ।।

उदाहरण - अस्त्युत्तरस्यां दिशि भारतस्य
राष्ट्रस्य वज्रायितबाहुभूतः ।
पञ्जाबनामा बहुकीर्तिशाली
महान् प्रदेशो धनधान्यपूर्णः ।।

2. शार्दूलविक्रीडितम्

लक्षण - सूर्याश्वैयादि मः सजौ सततगा शार्दूलविक्रीडितम्
शिक्षाधर्मसमाजनीतिविषये, तत्रापि शिक्षाविधौ
क्रान्तिर्याऽऽर्यसमाजकार्यं वशतो जाता महापावनी ।
योगश्चार्यज नैरदायि समरे यो देशमुक्तेर्महान्
नूनं तत्सकलं सदैव भविता स्वर्णाक्षरैरंकितम् ।।

उदाहरण - सत्यास्तेयपरोपकारकरुणा स्नेहधक्षमाबन्धुता -
शान्त्यक्रोधदमात्मसंयमसदाचारत्मबोधैः समम् ।
सर्वेरात्मवदेव वर्तनमभूद् धर्मस्य तत्त्वं महद्
हिंसावैरघृणा भवन्ति सुतरां धर्मप्रतिद्वन्द्विनः ।।

3. वसन्ततिलका -

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।

उदाहरण - भू-धर्म-भूधर-नदी-वन-पर्व-तीर्थैः
साहित्यसंस्कृतिविचारपरस्पराभिः ।
तस्येतिहासजनरीतिविभूतिभश्च
तादात्म्यमेव खलु राष्ट्रियाप्रतीकम् ।।

उदाहरण - दौर्भाग्यमेव खलु भारतमातुरद्यु
यद्राष्ट्रनायकवरा अपि राष्ट्रसौख्यम् ।
क्षेमं च मानमपि सर्वमहो पणन्ते
स्वक्षुद्रमानपदगौरवरक्षणाय ।।

4. शिखरिणी

लक्षण - रसै रुद्रैश्छिन्नाः यमनसभला गः शिखरिणी ।

उदाहरण - महाकालो रुष्टः किमिव यमराजः प्रकुपितः
क्षमा स्वाख्यां किं सा स्मरणसरणेः सरितवती ।
समाप्तो मर्त्यानां किमिह सहसा पुण्यनिचयो
महाराष्ट्रे नूनं घटितामिह यस्मादघटितम् ।।

5. मन्दाक्रान्ता -

लक्षण - मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।

उदाहरण - कश्मीरे श्रीनगरकथिते पत्तने सप्रसिद्धे
पूजास्थानं परममहितं राजते मुस्लिमानाम् ।
विख्यातं तद् हजरतबलं नाम दर्गा स्थलं वै
पूतो यत्र प्रभवतितरां प्रेषितस्यावशेषः ।।

अलंकार प्रयोग -

1. अनुप्रास -

लक्षण - अनुप्रासः शब्द साम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्यत् ।

उदाहरण - तत्सिन्धुसागरसमागमककाननानि
नानानदीनगसरोवरकन्दराणि ।
हिन्दूजनाय खलु चेतनदैवतानि
तादात्म्यमत्र सकलैर्भवतीह तस्य ॥

प्रस्तुत श्लोक में त् तथा घ् वर्ण की आवृत्ति अनुप्रास अलंकार की द्योतक है।

सम्पूर्णराष्ट्रवपुषि प्रबलं प्रसर्पन्
दुःसाध्यदुर्धर दुरासददुर्निवारः ।
भ्रष्टत्वमेवं भवतीह महाधिकारो
देशोऽद्य येन विनिपातदशां प्रपन्नः ॥

प्रस्तुत श्लोक में 'दुर्' की आवृत्ति अनुप्रास की द्योतक है।

2. दृष्टान्त अलंकार -

लक्षण - दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्

उदाहरण - पूर्व हुताश नविघोषितशुद्धपूतां
मिथ्याऽपवादकलुषीकृतधर्मपत्नीम् ।
ज्ञात्वाऽपि शुद्धचरितां जनतन्त्रनिष्ठः
सीतां जहौ रघुपतिर्जनसान्त्वनाय ॥

प्रस्तुत श्लोक में प्राचीनकाल का 'सीता-राम' वर्णन करते हुए वर्तमान राजनेताओं के चरित्रपात को उनसे अलग बताया है। जहाँ राम ने जनता के लिए पवित्र सीता का परित्याग कर दिया था। वहीं दूसरी ओर वर्तमान राजनेता चरित्रपात होने पर उसे मानने को तैयार नहीं होते। श्लोक 112 व 119 दोनों में ही राजा अश्वपति की घोषणा को वर्णित किया है। जिसमें वे अपने राज्य को चोरों से मुक्त बता रहे हैं।

निष्कर्ष -

कवीश्वर ने प्राचीन छन्द व अलंकारों का प्रयोग करते हुए राष्ट्रीय काव्य संग्रह काव्योद्यानम् का निर्माण किया है। इस काव्यमें ज्वलंत समस्याओं को रचना का विषय बनाया है जिसमें भ्रष्टाचार की समस्या, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं, आरक्षण अभिशाप आदि प्रमुख हैं। प्रो. रेणापुरकर समसामयिक घटनाओं की रचना में सिद्धहस्त हैं।

द्वितीय अध्याय - 'काव्यनिष्यन्दः'

(i) सामान्य परिचय -

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने 2006 में 'काव्यनिष्यन्दः' नामक राष्ट्रीय काव्य संग्रह को लेखनीबद्ध किया। यह 658 श्लोकात्मक काव्य संग्रह है। इस राष्ट्रीय काव्य संग्रह की विषयानुक्रमिका को द्वाविंशति काव्यों में विभक्त किया गया है। "सेव्या सा सुरभारती भगवती" नामक प्रथम काव्य में सप्तविंशति श्लोकों में देवी सरस्वती की महत्ता को बताया है। द्वितीय काव्य 'प्राचीनार्वाचीनभारतचित्रम्' में षड्चत्वारिंशत् श्लोकों में प्राचीन व आधुनिक भारत को श्लोकों के माध्यम से चित्रित किया है। 'देशे युगपरिवर्तनप्रत्यूषः' नामक तृतीय काव्य में अष्टाविंशति श्लोकों के माध्यम से देश में युग परिवर्तन की घटना को वर्णित किया है। त्रयोविंश श्लोकात्मक चतुर्थ काव्य "दशमं विश्व-संस्कृत सम्मेलनम्" में दसवें विश्व संस्कृत सम्मेलन का वर्णन है। पंचम काव्य "साधु!भो!राष्ट्रपतिवर्याः। साधुः" में राष्ट्रपति महोदय के साधुवाद को वर्णित किया है। अष्टसप्तति श्लोकात्मक षष्ठ काव्य 'अद्योदितोऽस्ति परिवर्तनदीप्तभानुः' में परिवर्तन के सूर्योदय का वर्णन है। 'साधु ! भो ! महामात्यवर्याः। साधु! में प्रधानमंत्री महोदय के साधुवाद का वर्णन, नवत्रिंशत् श्लोकों में किया है। अष्टम काव्य 'हा। भारतीयजनतादलघोरभङ्गः' में अष्टाविंशति श्लोकों में भारतीय जनता दल के पराजय को वर्णित किया है। अष्टादशश्लोकात्मक "श्रीबाजपेयिनाममृतमहोत्वसाभिनन्दनम्" में बाजपेयी के 75 वें जन्मदिवस पर काव्य रचना की गयी है। दशम काव्य "पञ्चाशे गणतन्त्रदिवसावसरे किञ्चिच्चिन्तम्" में द्वापञ्चाशत् श्लोकों में पञ्चाशत् वें गणतन्त्र दिवस पर विचार करने योग्य बातों को वर्णित किया है। एकादशम काव्य में 'श्रीबाजपेयिनां लाहौर बस' में सप्तदश श्लोकों में बाजपेयी जी की लाहौर यात्रा का वर्णन है। सप्तदश श्लोकात्मक "नाटोराष्ट्रौद्धत्यम्" नामक द्वादशम् काव्य में नाटो राष्ट्रौ वर्णन हे। त्रयोदश काव्य "कार्गिलसंग्रामः" में प्रथम व द्वितीय भाग में क्रमशः षष्ठी श्लोकों में करगिल युद्ध को वर्णित किया है। अष्टाविंशति श्लोकात्मक 'देश पुनश्च त्रिर्बाजपेयिशासनम्' नामक चतुर्दश भाग में बाजपेयी जी के पुनः शासन का वर्णन है। पञ्चमदशम काव्य 'अहो! दौर्भाग्यमुत्कलानाम्' में अष्टादश श्लोको में समुद्रतटों पर आने वाले चक्रवातों का वर्णन है। षोडश काव्य में चत्वारिंशत् श्लोकात्मक 'पोपमहोदयस्य भारतयात्राप्रसंगेन' नामक काव्य में पोप महोदय के भारत आगमन का वर्णन किया है। 'भारतजनतापक्षस्यसत्तालोभः' नामक सप्तदशम काव्य में अष्टादश श्लोकों में भारतीय जनता पार्टी के सत्ता के लिए लालच का वर्णन है। 'करालं विमानापहारस्य नाट्यम्' नामक अष्टादशम काव्य में विमान अपहरण की घटना को अष्टादश श्लोकों में काव्यबद्ध किया है। नवदशकाव्य 'राष्ट्रपति क्लिष्टनस्य भारतयात्रा' में राष्ट्रपति क्लिष्टन की भारत यात्रा का वर्णन एकविंशति श्लोकों में किया है। विंश काव्य 'कश्मीर' में स्वायत्ता वाद के दोबारा आने का वर्णन किया है। 'नटराज-राजकुमापहारनाट्यम्' में कर्णाटकीय चलचित्र अभिनेता के अपहरण का वर्णन चतुर्दश श्लोकों में है। 'पाकिस्तानोग्रवाद पराकाष्ठ' में एकत्रिंशत् श्लोक में पाक की उग्रवाद की पराकाष्ठ का वर्णन है।

(ii) विवेचन एवं विश्लेषण

1. सेव्या सा सुरभारती भगवती -

जिस भाषा में समस्त धर्मशास्त्र वेद, उपनिषद्, उच्छ्वास, काव्यों महाकाव्यों, कथाग्रन्थों की रचना प्राचीन काल से ही की जाती रही है। ऐसी देव भाषा गीर्वाण वाणी, सुरवाक संस्कृत भाषा को संसार के कल्याण के लिए सेवित किया जाना चाहिए। इस सुरवाणी की रक्षा करना मनुष्यों का परम कर्तव्य है। तीनों लोकों में सबसे प्राचीन अमृततुल्य, विद्वतजनों के द्वारा पूजी जाने वाली भाषा संस्कृत है। अनेक शास्त्रों में गंभीर भाव, असंख्य नवीन शब्दों की रचना का सामर्थ्य रखने वाली इस भाषा के चमत्कार को देखकर तो पाश्चात्य देशों के विद्वान भी आश्चर्य चकित हैं।

नानाशास्त्रगभीरभावविशदीकर्तुं नितान्तं क्षमं
संख्यातीतनवीनशब्दरचनासामर्थ्यमत्यद्भुतम् ।
पाश्चात्यैर्विषुधैर्विलोक्य चकितैर्यस्याः शिरो नामितं
सेव्या सा सुरवाक सदैव मनुजैः संसारकल्याणकृत ॥ (1.4)

प्राचीन काल से ही संस्कृत भाषा में उज्ज्वल कार्य हुए हैं इसलिए ही भारत पूर्व में विश्वगुरु की पदवी धारण कर सका। विज्ञान में भी जिन गूढ़ प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया जा सकता, उनका समाधान संस्कृत भाषा के द्वारा ही सम्भव है। उपनिषद् के आध्यात्म ज्ञान को पढ़कर तो धर्म, जातिगत भेद भी मिट गए हैं। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी धर्मों को मानने वाले संस्कृत के महत्त्व को स्वीकारते हैं। लेवी, मूलर रॉथ, कीथ विलियं जोन्स आदि विद्वतगणों ने भी संस्कृत को सर्वोत्कृष्ट भाषा माना है। लाखों लोगों के द्वारा प्रयोग में ली जाने वाली संस्कृत भाषा का त्याग कर हिन्दी भाषा को आम बोलचाल की भाषा बनाने पर श्री काटजू ने कड़वे शब्दों में इसकी निंदा की है। संस्कृत भाषा में लिखे अद्भुत, रोमांचकारी ग्रन्थों के प्रमाण न केवल भारत में मिले हैं अपितु जावा, बाली, सुमात्रा, फीजी, रशिया, मंगोल, कम्बोडिया, सिकीयाङ्ग, सयाम, चीन आदि देशों में भी है। इण्डोनेशिया में प्राचीन समय में संस्कृत ही राष्ट्रभाषा थी। वहाँ अनेक संस्कृत काव्य, प्रकाश में आए हैं। इन सभी देशों की संस्कृति, काव्य, नाट्यकला साहित्य शिल्प आदि में संस्कृत की छवि दृष्टिगत होती है। रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों को कथा रूप में चित्रों का निर्माण इन देशों में मिलता है यह इस बात का प्रमाण है कि संस्कृत भाषा का सम्पूर्ण विश्व में कितना गहरा प्रभाव है।

तत्रस्थाः शिवविष्णुसौगतमहाकायप्रचण्डालया -²
स्तत्राप्यद्भुतभव्यबोरुबुदुराश्चाङ्गोरवाटोपमाः ।
तद्रामायणभारतादिककथाचित्राङ्किता भित्तयः
साक्ष्यं भारतसंस्कृतेः सुरगिरो गाढप्रभावस्य ॥ (1.24)

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

2. प्राचीनार्वाचीनभारतचित्रम्

हमारे देश की महिमा सम्पूर्ण भुवन पर व्याप्त है। भारत की कीर्ति रूपी धवल कान्ति तीनों लोकों में व्याप्त है। इस धरा पर जन्म लेने के लिए तो स्वर्गलोक के देवगण, भी लालायित रहते हैं। घोर तप करने के लिए तत्पर रहते हैं। यह देश प्रचुर धन धान्यादि से पूर्ण होने के कारण तीनों लोकों में सोने की चिड़िया नाम से प्रसिद्ध रहा है। प्राचीनकाल में ऐसे राजा हुए हैं जिनके राजकार्यों में कोई चोर या डकैत नहीं था। स्वप्न में दिए गए वचन का भी पालन करने वाले, लोकमर्यादा का पालन करने के लिए अपनी रानी का परित्याग करने वाले महान राजा इस धरती पर हुए हैं। पक्षियों की रक्षा के लिए जिन्होंने अपना शरीर त्याग कर दिया ऐसे मनस्वी हुए। प्राचीन काल से ही भारत त्रिभुवन का गुरु रहा। देश-विदेश से यात्रीगण यहां आकर शिक्षा प्राप्त करते हैं। यहाँ के लोग धर्माचरण करने वाले, शुद्ध चारित्रिक गुणों से परिपूर्ण थे। चाणक्य जैसे कूटनीतिज्ञ जिन्होंने मौर्य वंश को ऊँचाई तक पहुँचाया किन्तु स्वयं पर्णकुटीर में रहकर ही जीवनयापन किया। वहीं अर्वाचीन भारत की दशा व दिशा इसके विपरीत है। जहाँ सांसद, मन्त्रीगण राज्य की सम्पत्ति को अपनी पारिवारिक सम्पत्ति मानते हुए चुरा रहे हैं, व्यर्थ उडा रहे हैं। प्राचीन व अर्वाचीन सचिवों में आकाश पाताल का भेद है।

अर्वाचीनाः प्रकृतिपुरुषाः सांसदा मन्त्रिवर्या ³

मत्वा राज्यं निजापितृधनं लुण्ठयित्वा प्रमुक्तम्।

प्राज्यं वित्तं विपुलविभवं चिन्वते वीतलज्जाः

प्राचीनार्वाक्तनसचिवयोः स्वर्गपाताल भेदः।। (2-11)

भ्रष्टाचार प्रकरण में सैकड़ों करोड़ रुपये इन राजनीतिज्ञों ने अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए लगा दिए। इसी क्रम में बोफोर्स घोटाले में शस्त्र-अस्त्रों की खरीद फरोख्त में अरबों-खराबों की रिश्वत दी गई। तत्काल समय में राजीव गांधी जी प्रधानमंत्री पद पर आसीन थे। उन्होंने किसी को भी इसके लिए दण्डित नहीं किया था। श्री नरसिंह राव के समय में भी भ्रष्टाचार का मामला दृष्टिगत हुआ। इसी प्रकार अनेक प्रकरण भ्रष्टाचार के विषय में हैं। सत्य, अहिंसा, शम, दम, तप, अमोषण आदि प्रिय भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व थे। किन्तु आज सभी सचिव, मंत्री, सांसद इसके विपरीत कार्यों को करने वाले हो गए हैं। इनका ही अनुसरण करते हुए आमजन भी सत्य, अहिंसा आदि महाधर्म तत्त्वों को छोड़कर भ्रष्टाचार, धन की लालसा में लगा है। अनेक मामलों में दोषी पाये जाने पर भी मंत्रीगण, सचिवों को केवल अपने पद से हटा दिया जाता है उन्हें दण्डित नहीं किया जाता। न्याय भी संभव नहीं हो पाता है।

नैका अन्वेषणसमितयो ह्यद्ययावद् बभूवु - ⁴

नैके मन्त्रिप्रवरसचिवा दोषिणो घोषिताश्च।

मुक्तास्ते केवलनिजपदाद् दण्डितो नैव कश्चिन्

न्यायो नूनं नहि समभवत् सर्वलोका तुल्यः।। (2.25)

वृत्तं - मन्दाक्रान्ता, वसन्ततिलका

3. देशे युगपरिवर्तनप्रत्युषः

भारत देश परतंत्रता की बेडियों में जकड़ा हुआ था। अथक प्रयासों के बाद भारत देश स्वतंत्र हो सका। भारत की संसद में शान्तिपूर्ण तरीके से प्रजातंत्र के प्रतिनिधि विराजमान होते हैं स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संस्कृति के सूर्य का उदय हुआ। कांग्रेस पार्टी ने राजकीय कार्य की बागडोर संभाली। जवाहर लाल नेहरू के प्रतिनिधित्व में भारत प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा था। लगातार चालीस वर्षों तक कांग्रेस दल का शासन भारत पर रहा। इसी बीच राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने लगातार देश की प्रगति उत्थान हेतु प्रयास किया। उस बात का ही प्रभाव आने वाले वर्षों में देखा गया। भारतीयों ने कांग्रेस दल को दरकिनारा करते हुए भारतीय जनता पार्टी में अपना विश्वास दिखाया। कांग्रेस जातिवाद धर्म के नाम पर लोगों को भ्रमित करने में नाकाम नहीं। कांग्रेस के शासन में उच्च मन्त्रीगणों की एक अरब रूपयों की रिश्वत में लिप्त रहने की घटना भी लोगों को अन्य दल के बारे में सोचने पर विवश करने वाली थी। जो मन्त्री, सचिव थोड़े समय पहले तक सामान्य जीवन व्यतीत कर रहे थे अब शाही जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इन सभी घटनाओं से पीड़ित जनता ने भा.ज.पा. को सत्ता में लाने का निर्णय लिया। भा.ज.पा. ने बहुमत प्राप्त कर शासन की बागडोर सम्भाली है। श्री वाजपेयी जी की अगुवाई में भारत नए शिखर पर पहुँचने को आतुर हुआ।

वृत्तं - मन्दाक्रान्ता

4. दशमं विश्वसंस्कृतसम्मेलनम्

भारत में गीर्वाणवाणी के उत्कर्ष हेतु दसवें विश्व संस्कृत सम्मेलन का आयोजन 8 जनवरी 1997 को बैंगलौर के तरलबालू नामक धर्मकेन्द्र में किया गया। जहाँ श्री शिवमूर्ति जी ने सभी गणमान्यों का स्वागत किया। इस अखिल विश्व संस्कृत सम्मेलन का आयोजन भारत राष्ट्र शिक्षण महामन्त्रालय के आश्रय में किया गया। बैंगलौर के विधानसभा भवन में भारतीय प्रधानमंत्री एच.डी.देवगौडा जी ने इसके उद्घाटन की घोषणा की। राष्ट्रीय मुख्य संस्कृत महासंस्थान की सहायता से इस सम्मेलन का आयोजन किया गया। अनेक देशी, विदेशी संस्कृतवाणी के मूर्धन्य विद्वानों ने इस नगर की शोभा को बढ़ाया। समस्त भाषाओं की जननी संस्कृतभाषा के ज्ञाता इस सम्मेलन का हिस्सा बने। कावेरी यमुना समागम तो भारतवासियों ने पूर्व में ही देखा था, किन्तु आज तो कावेरी, यमुना के साथ-साथ व्होल्गा, टेम्स, मिसिसिपी, इन तीन भिन्न पथों की नदियों का समागम भी बैंगलौर में विद्वानों के माध्यम से देख लिया। पाश्चात्य विद्वानों के साथ ही भारतीय विद्वान भी इस आयोजन का हिस्सा बने। सभी अतिथिगण स्वागत सत्कार से अभिभूत हुए। इस प्रकार का विशाल संस्कृत सम्मेलन पूर्व में कभी आयोजित नहीं किया गया था जिसमें किसी भी प्रकार का कोई क्षेत्र दृष्टिगत न होता हो। इस सफल आयोजन के लिए शिवमूर्ति महोदय तथा उनके शिष्यों का हार्दिक आभार कवि के द्वारा प्रकट किया जा रहा है।

अस्यापूर्वविशालसंस्कृतमहासम्मेलनायोजनं ⁵
यावच्छक्यमनूनदोषरहितं निर्वर्तन्तोऽनघम्।
पूज्याः श्री शिवमूर्तिपादयस्तेषां च शिष्योत्तमाः
सर्वेषां खलु साधुवादपरमानर्हन्ति वै हार्दिकान्।।

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

5. साधु! भो! राष्ट्रपतिवर्याः! साधु!

भारत के दसवें राष्ट्रपति श्री के.आर.नारायण निर्भीक, पक्षपातरहित, धीरोत्कट, साहसी गुणों से युक्त ऐसे राष्ट्रपति हुए हैं जैसे इतिहास में कोई नहीं हुआ। श्री के. आर.नारायण ने हमेशा राष्ट्रहित में कार्य किए। दलित वर्गों, गरीबों को आगे लाने के लिए हमेशा प्रयासरत रहे। इन्होंने कांग्रेस पार्टी के लिए कार्य किया, किन्तु जब भा.ज.पा. सत्ता में आई तब भी विपक्षी सदस्य के रूप में इनका कार्य निरन्तर जारी रहा। वे एकमात्र राजनेता थे जो दलित समुदाय से राष्ट्रपति बने। के.आर.नारायण जी स्वयं को कार्यकारी राष्ट्रपति बताते थे। अपनी विवेकाधीन शक्तियों का उपयोग राष्ट्रपति के रूप में करते थे। वे पहले ऐसे राष्ट्रपति हैं जिन्होंने जनरल चुनाव के समय कार्यलय में ही मताधिकार का प्रयोग किया। श्री के.आर.नारायण जी ने रबड़ की मोहर वाले राष्ट्रपति के रूप में कार्य नहीं किया। बल्कि अपने विवेक का प्रयोग करते हुए केन्द्र सरकार के प्रस्तावों को पुनः विचार रखने के लिए लौटाया है। श्री नारायण जी ने केन्द्र सरकार के प्रस्तावों को ज्यों का त्यों ही नहीं मान लिया अपितु स्पष्ट निर्णय के लिए पुनः पुनः विचार किया।

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

6. अद्योदितोऽस्ति परिवर्तनदीप्तभानुः

16 मई 1966 से 1 जून 1996 तक सोलह दिनों के लिए श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने प्रधानमंत्री पद को सुशोभित किया था। केवल सोलह दिन पश्चात् ही बहुमत साबित नहीं कर पाने के कारण उन्हें प्रधानमंत्री पद त्यागना पड़ा। तत्पश्चात् दो वर्ष के अन्तराल में ही वाजपेयी जी पुनः 19 मार्च 1998 को प्रधानमंत्री पद पर आसीन हो गए। वाजपेयी जी का सत्ता में आना ही भारतीय राजनीति के लिए क्रान्तिकारी परिवर्तन था। यह परिवर्तन का समय नवीन प्रभातवेला का था। जिसमें राहु को हटाकर परिवर्तन का सूर्य उदय हो गया। इससे पूर्व दीर्घकाल के लिए भा.ज.पा. सत्ता में कभी नहीं थी। वाजपेयी जी आदर्शवादी राजनेता हैं जिनके धीर, गम्भीर वचनों को सुनकर तो संसद के सभी नेतागण मन्त्रमुग्ध हो जाते थे।

आदर्शवादिजननायकबाजपेयी ⁶
सत्तापदं परिजहत् सहसा सलीलम्।
गम्भीरधीरवचनं यदसौ जगाद
तेनापि संसदभवत् खलु मन्त्रमुग्धा ॥ (6-7)

भाजपा के शासन ने रात्रि में विद्युतलता की चमक के समान, अल्पकाल में ही, जनता में आश्वासन व परिवर्तन की चमक उत्पन्न कर दी थी। इससे पूर्व देवगौड़ा जी, इन्द्र कुमार गुजराल जी प्रधानमंत्री पद पर आसीन थे। 19 मार्च 1998 को जब वाजपेयी जी प्रधानमंत्री बने तब ही अन्य मंत्रीगणों को अपने साथ शपथ दिलाई। प्रथम बार भाजपा सरकार बनने से देशभर में आनन्द की लहर दौड़ पड़ी। श्री वाजपेयी जी स्वाधीनता के बाद प्रधानमंत्री बनने वाले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जो गैर कांग्रेसी दल से हैं। बाजपेयी जी जब विदेशी मंत्री थे तब विश्व महासभा में हिन्दी (राष्ट्र भाषा) में भाषण देकर सभी का ध्यान स्वयं की ओर आकर्षित किया। विदेश मंत्री के रूप में भी इनकी छवि उज्ज्वल थी। वाजपेयी जी अन्य देशों से मैत्रीभाव रखने वाले मन्त्री थे। बाजपेयी जी के साहित्य के ज्ञाता कवि, लेखक, पत्रकार होने के संकेत स्पष्ट दृष्टिगोचर होते थे। उनके ये मानवीय गुण राजनीतिक चरित्र में भी प्रकट हो जाते थे। देश में निस्वार्थ भाव से सेवा करने वाले, चाणक्य के समान मति वाले विलक्षण मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री रहे। इनके लिए सम्पूर्ण राष्ट्रवासी ही पुत्रवत् थे।

देशेन दीर्घ समयोत्तरमघ लब्धो ⁷
निःस्वार्थ निर्ममकलत्रकुटुम्बहीनः।
चाणक्य सन्निभविलक्षणमुख्यमंत्री
सम्पूर्ण राष्ट्रमिह यस्य कुटुम्बपुत्राः ॥ (6-50)

वृत्तं - वसन्ततिलका

7. साधु! भो! महामात्यवर्या! साधु!

नवत्रिंशत् श्लोकात्मक इस काव्य में कविवर ने श्री वाजपेयी जी के व्यक्तित्व के दूसरे पक्ष से अवगत कराने का प्रयास किया है। जहाँ एक ओर वाजपेयी जी धीर गम्भीर कवि साहित्यकार हैं वहीं दूसरी ओर साहसी निर्भीक देशभक्ति जैसे गुणों से परिपूर्ण हैं। आज भारत राष्ट्र का मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया है जब अन्य राष्ट्रों को आईना दिखाते हुए भारत ने सफल भूमिगत परमाणु परीक्षण कर लिया है। इससे पूर्व श्रीमती इंदिरा गांधी ने 18 मई 1974 को शान्तिपूर्ण तरीके से ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने हेतु परमाणु परीक्षण करवाया था। इंदिरा जी के साहसिक कदम से सम्पूर्ण विश्व चमत्कृत हो गया था। उसके बाद दीर्घकाल तक अन्य कोई महामन्त्री यह परीक्षण करने का साहस नहीं जुटा सका। बाजपेयी जी

धन्य है, जिन्होंने प्रधानमंत्री पद ग्रहण करने दो माह के बाद ही पोकरण में 11 व 13 मई को सफल परमाणु परीक्षण करने का साहस किया।

धन्यो धन्यतमो बभूव सुतरां श्री बाजपेयी सुधी^४
रारुडेण मोहच्चमन्त्रिपदवीं मासद्वयाभ्यन्तरे।
विस्फोटान् परमाणुशक्तिविषयान् कृत्वा महाभीषणहान्
दत्तं पाक सुदूरमारकमहाप्रक्षेपणा स्त्रोत्तरम्॥ (7.4)

भारत पाँच देशों-अमेरिका, रूस, फ्रांस, जापान, चीन के बाद परमाणु परीक्षण करने वाला छठा राष्ट्र बन गया है। भारत के द्वारा गुप्त तरे से इस कार्य को क्रियान्वित किया गया। जिसके फलस्वरूप भारत को विश्व के अन्य देशों के क्रोध का भागी बनना पड़ा। इन देशों ने भारत को आर्थिक सहायता देने से मना कर दिया। भारत ने जब स्वयं को परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र घोषित किया तो भारतीयों के हृदय में नवीन चेतना का चन्द्रोदय हुआ। भारतीय प्रधानमंत्री जी के इस साहसिक कदम से जनता में हर्षोल्लास की लहर दौड़ गयी। पहले ही परमाणु परीक्षण कर चुके पाँच राष्ट्र भारत पर परमाणु अस्त्रों को नष्ट करने का दबाव बनाने लगे, बाजपेयी जी ने इस सन्धि पर हस्ताक्षर करने से मना करते हुए कहा ये परीक्षण किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं है अपितु भारत की सुरक्षा की दृष्टि से किए गए हैं। ये परमाणु परीक्षण वर्तमान प्रसंगिकता में आवश्यक है।

एषोऽण्वस्त्रपरीक्षणस्य समयः किं निश्चितः शासकै -^९
रासीत् का निजदेशरक्षणकृते सा भीषणा तर्जना।
येनाण्वस्त्रपरीक्षणं समभवदावश्यकं सम्प्रति
ह्येवं पृष्टमभूद् विपक्षिमुखपरैरीर्षालुभिः संसदिः॥ (7.20)

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

8. हा! भारतीयजनतादलघोर भङ्गः

2004 में हुए लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को करारी हार का सामना करना पड़ा। इन चुनावों में बाजपेयी जी की सोच के विपरीत परिणाम देखने को मिले कांग्रेस दल की जीत हुई। भारत को शक्ति सम्पन्न बनाने हेतु परमाणु परीक्षण कराने का भी सकारात्मक प्रभाव दिखाई नहीं दिया। केन्द्र सरकार के रूप में भा.ज.पा. पराजित हो गयी। इन चुनावों में भारतीय जनता दल की हार दुर्भाग्य का ही परिणाम थी। उस समय पूरे देश में अतिवृष्टि हुई। सभी शाकादि पूर्ण रूप से नष्ट हो गए। सभी वस्तुओं की कीमत आकाश छूने लगी। बाजारों में खाद्यान्न, शाक, घर की जरूरत की सभी वस्तुएँ महंगी हो गए। व्यापारियों ने सभी वस्तुओं की कमी होने पर उनका संग्रह कर लिया। व्यापारियों ने मनचाहे दामों पर

प्याज बेचा, जिससे रातों-रात ब्याज की कीमत आसमान छूने लगी। इस तरह के छोटे-छोटे कारणों के मिलने से भाजपा को चुनावों में जनता से सहयोग नहीं मिला। फलस्वरूप भाजपा पराजित हुई। उसी समय कावेरी जल विवाद भी प्रकाश में आया था।

आकाशगामिविकरालमहार्घतां तां ¹⁰
दृष्ट्वाऽपि शासकजनैर्न कृतो ह्युपायः।
अन्ते बभूव वरणेऽतिकरालभङ्ग
नूनं पलाण्डुभिरिहाद्य जिताऽणुशक्तिः।। (8-10)

वृत्त - वसन्ततिलका

9. श्री बाजपेयिनाममृतमहोत्सवाभिनन्दनम्

हमारे गौरवपूर्ण भारत के महान मंत्रीगणों में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी धन्य हैं। बाजपेयी जी के 75 वें जन्मोत्सव पर आनन्दित होते हुए कविवर बाजपेयी जी का अभिनन्दन कर रहे हैं। उनके धीरललित काव्यात्मक भाषणों को लाखों व्यक्तियों ने सुना और मंत्रमुग्ध हो गए। बाजपेयी जी का जन्मोत्सव सभी के लिए हर्षोल्लास का विषय है। इनका व्यक्तित्व हिमालय के समान धवल कान्ति वाला, सूर्य के समान तेजस्वी, सागर के समान गहरा, चन्द्रमा के समान शीतल है। इनका चरित्र उन्नत, पारदर्शी है। ऐसे स्वार्थ त्याग, धीर्यगारी तपस्वी, निष्काम सेवारत, भ्रष्टाचार मुक्त, आदर्शचरित्र बाजपेयी जी अनेक वर्षों तक रहें। बाजपेयी जी श्रेष्ठ राजनेता के साथ ही साथ कमनीय, कान्त कविता की रचना करने वाले कवि हैं सभी लोगों के प्रति जातिगत भेद को भुलाकर सौहार्द प्रकट करने वाले हैं। प्रीति, स्नेह, दया आदि मानवीय गुणों से युक्त महामानव हैं। समस्तराष्ट्रवासी उनके दीर्घायु होने की कामना करते हैं।

विख्यातः कमनीयकान्तकवितानिर्माणदक्षः कविः¹¹
सौहार्द प्रकटकरोति सकलैर्जात्यादिभेदं विना।
प्रीतिरनेहदयादिमानवगुणैः संसिक्तहृन्मानसो
दीर्घायुर्भवतात् स राष्ट्रमुखः श्री बाजपेयी सुधीः।। (9-5)

वृत्त - शार्दूलविक्रीडितम्

10. पञ्चाशे गणतन्त्रदिनावसरे किञ्चिच्चिन्तनम्

एकोनपञ्चाशत् वर्ष पूर्व हमारा देश भारत गणतन्त्र बना। हमने आज ही के दिन अपना संविधान अंगीकार किया था। देश के कानूनी सलाहकारों ने बड़े-बड़े विधि ज्ञाताओं ने भारतीय संविधान का निर्माण किया। जिसे आज कार्यान्वित किया जाता है। जिसके

अनुसार ही भारतीयों को समानता, स्वतन्त्रता, वाकाभिव्यक्ति, सम्प्रदाय, विचारप्रेषण, मताधि-कार आदि अधिकार प्रदान किये हैं। आज पचासवें गणतन्त्र के अवसर पर सभी के चिन्तन का विषय है कि विगत 50 वर्षों में जिन बातों की घोषणा की गयी। आश्वासन दिए गए उनकी पूर्ति हो सकी है या नहीं। आज भी हमारे देश की आधे से अधिक जनता निरक्षर है, असंख्य लोग दरिद्रता का दंश झेलने को विवश हैं।

अर्धाधिकाः सन्ति जनाः स्वदेशे निरक्षरानिर्धनवासिनीनाः¹²

क्षुद्धित्तराहित्यदारिद्र्यताभिः प्रपीडिताः सन्ति जना असंख्याः ।। (10-5)

फिर भी देश में अनेक क्षेत्रों में अनेक कार्य हुए हैं देश का नाम विकासशील देशों की गिनती में गिना जाने लगा है। देश ने शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की है। देश की रक्षा के लिए परमाणु परीक्षण करके विश्व के समक्ष अपनी अदम्य शक्ति का परिचय दिया है। ये सभी भौतिक सिद्धियाँ हैं जो देश ने प्राप्त की हैं। सत्य, क्षमा, स्नेह, दया आदि संस्कृति, सभ्यता को भुलाकर लोग हिंसा, घृणा द्वेष, असहिष्णुता जैसी प्रवृत्तियों की ओर बढ़ रहे हैं। रिश्वत के बिना देश में कोई भी कार्य करवाना सम्भव नहीं है। सभी जगह भ्रष्टाचार फैल रहा है। कोई भी शुद्ध वस्तु प्राप्त नहीं हो रही है। चोरी के डर से लोग घरों में सो नहीं पा रहे हैं। धर्म के नाम पर झगड़े हो रहे हैं। अतः इन सभी विषयों पर चिन्तन करना आवश्यक है।

वृत्तं - उपजाति

11. श्री बाजपेयिनां लाहोरबसयात्रा

श्री बाजपेयी जी ने भारत-पाकिस्तान के सम्बन्धों को परिष्कृत करने हेतु, पाकाध्यक्ष नवाज शरीफ के आमंत्रण पर बस यात्रा से पाकिस्तान जाना तय किया। अटल जी की यह यात्रा साहसिक, गौरवपूर्ण तथा सौहार्द्र उत्पन्न करने वाली थी। विगत पचास वर्षों में दोनों देशों के मध्य जो वैर, हिंसा, घृणा, विनाश का दृश्य दृष्टिगत होता था आज वहीं दोनों देश सौहार्द्र, सख्यभाव से ओत-प्रोत नजर आ रहे हैं। हिन्दुत्व के समर्थक होते हुए भी अटल जी सभी धर्मों से ऊपर मानवता के धर्म को मानने वाले हैं। अटल जी ने सभी जाति, धर्म, सीमाओं को लौंघते हुए स्नेहपूर्वक अपने पूर्व बन्धु बान्धवों का आलिंगन करने के लिए इस यात्रा पर प्रस्थान किया। जब अटल जी बस यात्रा करते हुए लाहौर पहुँचे अनेक ग्रामवासी उनके दर्शन के लिए वहाँ उपस्थित हुए। पाकिस्तान के वासियों ने उल्लास पूर्वक अटल जी का स्वागत सत्कार किया।

लाहोरं बसयात्रया सगतवान् ग्राम्यान् दिदृक्षुर्जनान्¹³

ग्रामीर्णोर्विहितं प्रमोदभरितैस्तत्स्वागतं हार्दिकम्।

सेतुं भग्नचरं पुनश्चकृतवान् सद्भवनाया नवं

सौभ्रात्रं ह्युभयोः पुनर्घटयितुं यत्नं व्यघाद् धन्यधीः ।। (11-10)

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

12. नाटोराष्ट्रौद्धत्यम्

नाटो से तात्पर्य “नार्थ एटलान्टिक ट्रीटी ऑर्गेनाइजेशन” से है। यह एक प्रकार का सैन्य संगठन है जो सुरक्षा के दृष्टिकोण से 4 अप्रैल 1949 को ब्रूसेल्स (बेल्जियम) में बनाया गया। इस संगठन के सदस्य देश आक्रमण होने पर एक दूसरे को सहयोग प्रदान करते हैं। अमेरिका आदि इसके सदस्य देश हैं। शीतकालीन युद्ध के समय इसका गठन सुरक्षा दृष्टि से किया गया था किन्तु बाद में भी इसका विस्तार जारी रहा। बाद में इसको सकारात्मक रूख की ओर मोड़ दिया गया। मानवाधिकारों के हनन की स्थिति में नाटो राष्ट्र सदस्य कार्य करेंगे। वर्तमान समय में नाटोराष्ट्र अहंकारी प्रवृत्ति वाले हो गए हैं जो अन्य राष्ट्रों को निम्न समझते हैं।

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

13. कार्गील संग्रामः

श्री बाजपेयी की लाहौर बस यात्रा का उद्देश्य दोनों देशों के सम्बन्धों को सुधारना था। बाजपेयी जी ने सौहार्द, भाईचारा, स्नेह को बढ़ाने का कार्य बखूबी किया। पाकिस्तान में भी उनका हार्दिक स्वागत किया गया। भारतीय प्रधानमंत्री जैसे ही पाकिस्तान यात्रा से लौटे तब ही पाकिस्तान ने धूर्तता दिखाते हुए भारत पर गुपचुप तरीके से आक्रमण कर दिया। यह आक्रमण कारगिल नामक स्थान पर किया गया। यह स्थान उच्च पर्वत मालाओं से घिरा हुआ दुर्गम स्थान है। कश्मीर भूमि को प्राप्त करने के लिए पाकिस्तान ने अनेक आक्रमण किए। नियमानुसार कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। पाकिस्तान इससे पूर्व भी बलात् कश्मीर हथियाने के लिए आक्रमण करता आया है। इसकी समस्त योजनाओं तथा आक्रमणों को भारतीय वीर सैनिकों ने विफल कर दिया है। राष्ट्रसंघ के अनेक देशों के सामने सीमा के लिए किए सन्धि प्रस्तावों को स्वीकार करते हुए भी पाकिस्तान ने सीमा उल्लंघन किया। यह पाकिस्तान की धूर्तता को स्पष्ट करता है। तीन माह तक घोर युद्ध जारी रहा। अन्त में पराभव उन्मुख पाकिस्तान ने अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के उपदेशानुसार सेना को परावर्तित कर युद्ध को समाप्त किया। पाक के द्वारा आरोपित इस युद्ध में भारत की महान विजय हुई। यह केवल हमारे वीर सैनिकों के साहस, जोश का ही परिणाम है कि भारत ने विजय प्राप्त की।

अस्मीकामहनीयराष्ट्रपतिभिः पाकस्य मित्रैतमे¹⁴

नित्यं पाकसमर्थकैर तितरां स्पष्टं समुद्रघोषितम्।

यत्पाकः त्वरितं हि भारतभुवः सेनां परावर्तयेत्

संवादेन समस्तवादविषयानेवात्र संसाधयेत्।। (13-11)

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

14. देशे पुनश्च त्रिर्बाजपेयिशासनम्

देश में तेरहवीं लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता दल की पुनः विजय हुई। कांग्रेस दल को पराजय का सामना करना पड़ा। श्री बाजपेयी तृतीय बार भारत के प्रधानमंत्री पद पर आसीन हुए। इस विजय के कारणों को देखा जाए तो कारगिल विजय, लाहौर बस यात्रा इसके प्रमुख बिन्दु हैं। कारगिल युद्ध पाकिस्तान का छद्म व्यवहार प्रकट करने वाला है। इस संग्राम में भारत ने भले ही विजय हासिल कर ली है किन्तु जन-धन की हानि को विस्मृत नहीं किया जा सकता है। अत्यन्त दुर्गम पहाड़ि क्षेत्र में पाक को पूर्णतः परास्त कर दिया गया। विषम परिस्थितियों में जीत हासिल कर भारतीय सैनिकों ने एक बार फिर स्वयं को सिद्ध कर दिया है। भारतीयों ने अपनी विजय पताका कारगिल में पहरा दी। देश में समानान्तर रूप से चल रहे चुनावों में बी.जे.पी. ने जीत हासिल की। अटल जी तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री पर आसीन हुए। विशिष्ट प्रतिभा के धनी अटल जी सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

देशे समान्तरचलद् वरणावहं तद् ¹⁵

बी.जे.पी. संयुतिदलेन जितं पुनश्च।

राष्ट्रप्रधानसचिवश्च तृतीयवारं

श्रीबाजपेयिमतिमान् समभूतं सुधन्यः।। (14-8)

वृत्तं - वसन्ततिलका

15 अहो! दौर्भाग्यमुत्कलानाम्

25 अक्टूबर 1999 का दिन उडिसा राज्य के लिए दुर्भाग्य लेकर आया। हिन्द महासागर में अत्यन्त भीषण, भयानक चक्रवात आया। इस चक्रवात के दुष्प्रभाव से आंध्र प्रदेश से अधिक उडिसा राज्य जलमग्न हो गया। अनपेक्षित इस चक्रवात ने सब कुछ ध्वस्त कर दिया। प्रक्षुब्ध सागर की तरंगों ने बड़ी-बड़ी लहरों ने अनेक तरुवरों को उखाड़ फेंका। लाखों निवास स्थल जल से निमग्न हो गए। राज्य के 15 से अधिक मण्डलों में भीषण विनाश हुआ। ऊँची, मजबूत, विकराल लहरों के जाल में सैकड़ों पशु, मानव बह गए। हजारों की संख्या में लोग मारे गए। प्लावित लोगों की संख्या को जानना तो सम्भव ही नहीं था।

उत्तालतुङ्गविकरालमहोर्मिजालै ¹⁶

नीताः प्रवाह्य शतशः पशवो मनुष्याः।

व्यापादिताः कतिसहस्रत्रजना यथार्थ

ज्ञातुं न शक्यमिह तस्य जलाप्लुतत्वात्।। (15.4)

इस प्रकार चक्रवात के कारण अनेक स्थानों का मुख्यालयों से सम्पर्क कट गया। सभी स्थानों पे थोड़े समय पहले जहाँ फसल लहलहा रही थी, वहाँ दूर-दूर तक पानी के सिवा कुछ नजर नहीं आ रहा था। जो पशु जल प्लावित होने से प्राण त्याग चुके थे उनके शव पानी उतरने पर नजर आ रहे थे। सभी जगह दुर्गन्ध का वातावरण था। इस घोर विपदा का प्रतिकार करने के लिए केन्द्र सरकार ने धनधान्य, औषधियों से पूरा सहयोग प्रदान किया। यह चक्रवात उडिसा के लिए दुर्भाग्य का सूचक ही था। संसार रूपी रंगमंच के सूत्रधार ईश्वर हैं वो जैसे चाहते हैं नट, नटि को अपने इशारों पर चला सकते हैं। हम सब केवल ईश्वर के हाथ की कठपुतलियाँ हैं। ईश्वर हम सभी पर अपनी कृपा बनाए रखें।

वृत्त - वसन्ततिलका

16. पोपस्य भारतयात्राप्रसङ्गेन

भारत देश में सर्वधर्म समभाव इस बात की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की जानी चाहिए। ईसाई धर्मगुरु पोप महोदय के भारत आगमन पर भारतीयों द्वारा श्रद्धाभाव से उनका स्वागत सत्कार किया गया। ईसाई धर्म के अनुयायी अपने धर्म को प्रचारित प्रसारित करने के लिए लोगों का धर्मपरिवर्तन करके ईसाई बनने के लिए प्रेरित करते हैं। किसी भी व्यक्ति का धर्मपरिवर्तन कराना उसका मानवीय और महनीय अधिकार है। पोप महोदय के द्वारा इस प्रकार की घोषणा भारत की राजधानी में की गयी। कोई भी व्यक्ति यदि स्वेच्छ से बिना किसी डर या दबाव के धर्म परिवर्तन करता है तो किसी भी व्यक्ति विशेष या धर्म द्वारा उसका विरोध नहीं किया जाता है। किन्तु यहां धन, पद के लोभ तथा भय से लोगों का धर्म परिवर्तन पोप महोदय के अनुयायी करवा रहे थे। ये दण्डनीय अपराध है। पूर्वकाल में भी ईसाई धर्म गुरुओं ने दीन दलित लोगों को धर्मपरिवर्तन करवाकर ईसाई बना दिया था।

देशेऽत्र वत्सरुसहस्त्रसुदीर्घकाले ¹⁷
 क्रिस्तीयधर्मगुरुभिर्बलवच्च लोभात्।
 प्रच्याव्य तान् निजपवित्रविशालधर्मान्
 निःसंख्यदीनदलिताश्च कृता मसीहाः।। (16-7)

पोप महोदय के पक्षपाती रवैये को देखकर तो हिन्दू धर्म के समर्थकों को भी विचार करना चाहिए कि हम भी स्वयं के धर्म को प्रसारित करने का कार्य करें। अपनी अक्षुण संस्कृति को यथावत रखने का प्रयास करें। पोप महोदय के राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता, धर्म को नुकसान पहुँचाने की नीति को विफल करें।

वृत्त - वसन्ततिलका

17. भारतीयजनतापक्षस्य सत्तालोभः

भारतीय जनता दल सत्ता प्राप्ति के लिए इतने अधिक लालायित हो गये कि उन्होंने अपने मूल तत्त्वों, विचारों को ही पीछे छोड़ दिया। सत्ता के लिए त्रितय का त्याग कर दिया। हिन्दुत्व ही जिनकी सफलता प्राप्ति का मुख्य मुद्दा था, आज उसी को त्याग कर सत्ता प्राप्ति की इच्छा कर रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि संसद में भा.ज.पा. की सदस्य संख्या न्यून होती गए। देश के उत्तरप्रदेश भाग में तो भा.ज.पा. को सत्ता में आने के लिए अनेक दलों के सहयोग की आवश्यकता हुई। यह सम्भव नहीं हो सका। फलस्वरूप विपक्षी दल विजय प्राप्त कर सत्तारूढ़ हो गया। श्री राम मन्दिर के निर्माण के लिए विगत बीस वर्षों से भा.ज.पा. प्रचार कर रही थी। साथ ही रामरथ यात्रा का आयोजन कर लोगों का विश्वास जीता। अन्त में उसी कार्य को निरस्त कर लोगों के साथ विश्वासघात किया। यही प्रमुख कारण था कि उत्तर प्रदेश राज्य में भा.ज.पा. को भीषण तरीके से पराजय का सामना करना पडा। आश्वासन देकर उन्हें पूरा न करने का खामियाजा दल ने उठाया।

देशस्य चोत्तरसमाख्यमहाप्रदेशे ¹⁸

बी.जे.पि. भीषणपराभवकारणं वै।

श्री राममन्दिरसमं समसहिताया

आश्वासनाद् दलपराङ्मुखतैव नूनम्।। (17-17)

वृत्तं - वसन्ततिलका

18. करालं विमानापहारस्य नाट्यम्

करगिल में पराजय का मुख देखने के पश्चात् पाक ने विमान अपहरण का निन्दनीय कार्य किया। काठमांडू से उड़ान भरने वाले विमान को भारतीय मानक समय से 5:30 बजे, भारतीय सीमा क्षेत्र में प्रवेश करते ही अपहरण कर लिया गया। पाँच आतंकियों ने विमान यात्रियों को बन्दी बनाते हुए विमान यात्रा का मार्ग परिवर्तित कर दिया। विमान को अफगान के कन्धार में ले जाया गया। इसके बाद आतंकियों ने करोड़ों डॉलर की रकम भारतीय सरकार से माँगी। साथ ही उनके साथियों को जेल से छोड़ने की बात कही। पाक के इन आतंकियों को तालिबान से पूर्णतः समर्थन प्राप्त हो रहा था। तब दीर्घ संवाद के बाद तीन भीषण आतंकवादियों की रिहाई पर बात बनी।

तदादीर्घसंवादनिष्पत्तिरूपं ¹⁹

महाभीषणातङ्वादित्रयाणाम्।

विमुक्त्यर्थमैवेकमत्य बभूव

सहाय्यं कृतं तालिबानैश्च तत्र।। (18-5)

तीनों आतंकियों की रिहाई के बाद विमान के समस्त यात्रियों को स्वतंत्र कर दिया गया। फिर भी यह विचारणीय मुद्दा है कि आतंकी भारतीय विमानों में सशस्त्र कैसे पहुँच गए? यह बहुत ही गंभीर षडयन्त्र था। भारतीय सरकार को इस बात पर बारीकी से विचार करना चाहिए।

वृत्त - भुजङ्गप्रयातं

19. राष्ट्रपति - क्लिण्टनस्य भारतयात्रा

माननीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के कार्यकाल में अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिण्टन महोदय पांच दिवसीय भारत यात्रा पर आए। पचास वर्षों के कटुता पूर्ण सम्बन्धों के स्थान पर यह यात्रा दोनों देशों के मध्य सम्बन्धों को मधुर बनाने के प्रयास रूप थी। क्लिण्टन महोदय ने भारत आगमन पर संसद में दिए गए भाषण में भावपूर्ण, ओजस्वी सम्बोधन में भारत के शान्ति, संयम, सौहार्द, औदार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा करके समस्त सांसदगणों के हृदयों को जीत लिया।

स्वात्यन्तोत्कटभावपूर्णमहनीयोजस्विसम्बोधने²⁰

तस्यां भारतगौरवान्वितमहासंसतयभायां कृते।

नूनं भारतशान्तिसंयममहौदार्यप्रशंसां परां

कृत्वा तैर्विजितानि सांसदगणानां मानसानि ध्रुवम्।। (19-2)

क्लिण्टन की भारत यात्रा से पूर्व विकराल आतंकवादी असुर पाक ने कश्मीर में 36 निर्दोष सिक्खों को मार गिराया। इसके लिए क्लिण्टन महोदय ने पाक की भर्त्सना की। क्लिण्टन ने अपने मित्र पाक को यह उपदेश भी दिया कि युद्ध के द्वारा कश्मीरवाद को नहीं सुलझाया जा सकता है। इसलिए उग्रवाद को छोड़ो और सीमा का उल्लंघन मत करो। क्लिण्टन ने स्वयं इस बात को स्वीकार किया कि पाकिस्तान के कुशासन में ऐसे लोग हैं जो आतंकवाद को समर्थन देने वाले हैं। विगत पचास शरद काल में यह पहला अवसर था जब किसी अमरीकी राष्ट्रपति ने पाक को उग्रवादी राष्ट्र स्वीकार किया था।

वृत्त - शार्दूलविक्रीडितम्

20. कश्मीरे पुनः स्वायत्ततावादः

आज फिर से फारुख महोदय ने कश्मीर को स्वतंत्रता पूर्व की स्थिति में लाने की कोशिश की है। कश्मीरी विधानमण्डल में फारुख ने कश्मीर की स्वायत्ता का मुद्दा उठाया है। फारुख देश को टुकड़ों में बाँटने की कोशिश कर रहे हैं। स्वार्थ पूर्ति के लिए कश्मीर में स्वायत्ता की माँ को प्रेरित किया जा रहा है। केन्द्र के कुछ सचिवों ने इस स्वायत्त पोषक मुद्दे

को सही ठहराया, किन्तु केन्द्रीय मंत्रीसभा द्वारा इसकी आलोचना करते हुए इसे पूर्णतः निरस्त कर दिया गया था। इससे पूर्व शेख अब्दुल्ला जी के समय उनके अनुरोध पर कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा दिया गया था। जम्मू कश्मीर में धारा 370 के तहत ही कार्य किया जा सकता है। कश्मीर के विशिष्ट गौरव प्रदान करने तथा विशेष राज्य का दर्जा देने का विरोध श्यामाप्रसाद जी ने पूर्व में भी किया। आज पुनः जब यही मुद्दा उठाया गया है तो उसको समूल नष्ट किया जा रहा है।

वृत्त - शार्दूलविक्रीडितम्

21. नटराज - राजकुमारापहारनाट्यम्

कर्णाटक के प्रसिद्ध अभिनेता राजकुमार का अपहरण चन्दन तस्कर विरप्पन ने कर लिया था। हाथी दाँत की तस्करी करने के लिए उसने दो हजार हाथियों को मौत के घाट उतार दिया था। विरप्पन ने न केवल इस अभिनेता अतिपु अनेक अधिकारियों का अपहरण कर उनकी हत्या कर दी थी। जब अभिनेता राजकुमार का अपहरण किया गया तब कर्णाटक की जनता में रोष व्याप्त हो गया। जनता ने जगह जगह पर प्रदर्शन किए। एक स्वतंत्र राष्ट्र के वासी सुरक्षित नहीं है। मात्र एक व्यक्ति का खौफ इतना है कि कर्णाटक, तमिलनाडु सरकार भी उसके आगे घुटने टेक चुकी है। यह किसी भी राष्ट्र के लिए लज्जा का विषय है।

लज्जास्पदं भवति यन्महनीयराष्ट्रं²¹

स्वाधीनभारतसमं शतकोटिसंख्यम्।

एकेन घोरतमचन्दनतस्करेण

नीत्वा दशाभगतिकां विवशीकृतं च ॥ (21-14)

राजकुमार जी को छोड़ने के लिए वीरप्पन ने दशसूत्रीय सन्धि को पूर्ण करने की घोषणा सरकार के समक्ष की। जिसके तहत विवशता वश सरकार ने कुछ बातों को मानते हुए धनराशि वीरपन्न तक पहुँचायी। उसके कहे अनुसार दक्षिण भारतीय अभिनेता रजनीकांत जी स्वयं वीरपन्न से मिलने पहुँचे। तब 108 दिन के अन्तराल के पश्चात् राजकुमार जी को मुक्त किया गया।

वृत्त - वसन्ततिलका

22. पाकिस्तानोग्रावादपराकाष्ठा

पाकिस्तानी धूर्त आतंकियों ने विगत ग्यारह वर्षों में 30,000 निष्पाप बच्चों, महिलाओं लोगों की हत्या कश्मीर में कर दी है। ये आतंकी पाक के द्वारा ही पालित पोषित हैं। एक ही दिन में 100 से अधिक कश्मीरवासियों की हत्या नृशंस तरीके से कर दी गई। पाक

जब तक कश्मीर वासियों की निर्मम हत्याएँ करता रहेगा तब तक किसी भी प्रकार सम्बन्धों को मधुर नहीं बनाया जा सकता है। पहले भी भारत ने संवाद के माध्यम से शान्ति स्थापित करने का प्रयास किया था। जबकि इसके विपरीत पाकिस्तान ने इसके जवाब में भारत पर आक्रमण कर दिया था। इन आक्रमणों से पीड़ित कश्मीरी पण्डित भय से कश्मीर को छोड़कर दिल्ली आ गए। पचास हजार से अधिक कश्मीर के हिन्दू परिवारों ने कश्मीर को छोड़ दिया। इन सभी को पुनः वहाँ स्थापित करना दुष्कर कार्य है। पाक उग्रवादियों द्वारा बस, रेलयान आदि में विस्फोट पर सैकड़ों लोगों की निर्मम हत्या कर दी। पाक धूर्तों ने निष्पाप अमरनाथ यात्रियों का भी वध कर दिया। अब पाकिस्तान के उग्रवाद की निश्चित ही पराकाष्ठा हो गए हैं। आज इसके सौ से भी अधिक अपराधों का घडा भर गया है। जिस तरह श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को सौ अपराध करने तक ही सहन किया गया था आज उसी सुदर्शन चक्र के प्रयोग का समय आ गया है। श्रीकृष्ण के समय तो कोई भी भारतभूमि की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देख सकता था।

पाकस्योग्रकरालदुष्कृतिपराकाष्ठाऽद्य जाता ध्रुवं ²²
चेदीभूपशतापराधगणना प्राप्ताऽस्ति सम्पूर्णताम्।
नूनं चक्रसुदर्शनस्य समयः प्राप्तोऽस्ति निःसंशय
श्रीकृष्णस्त न कोऽपि भारतभुवि प्राप्नोति चक्षुः पथम्।।

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

(iii) वैशिष्ट्य

“काव्यनिष्यन्दः” 650 श्लोकात्मक राष्ट्रीय काव्य संग्रह है। इस काव्य संग्रह में प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने 22 कविताओं का संकलन किया है। यह समस्त काव्य राष्ट्रीय, राजकीय विषयों से सम्बन्धित है। अधिकांश काव्य भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के राजनैतिक जीवन को दर्शाने वाले हैं। इसके अतिरिक्त अन्य प्रमुख घटनाओं को रचना का विषय बनाया है। काव्यनिष्यन्द में प्रयुक्त प्रमुख छन्द, अलंकार निम्नानुसार हैं।

छन्द प्रयोग -

1. शार्दूलविक्रीडितम्

लक्षण - सूर्याश्वैर्यदिः नः सजौ सततगा शार्दूलविक्रीडितम्।

उदाहरण -
गैर्वाण्या दशमं महामहिमवत्सम्मेलनं वैशिवकं
त्र्युणे विंशशते तथा जनुवरीतार्तीयतो ह्यष्टमम्।
बेङ्गलोरे जनसेविते तरलबालूधर्मकेन्द्रे ह्यभूद्
यत्र श्री शिवपूर्तिपायतिभिः सुस्वागतं व्याहृतम्।।

2. मन्दाक्रान्ता

लक्षण -
आसीत् पूर्वं त्रिभुवनगुरुभरितं भूललाम
शिक्षां प्राप्तं भुवनमनुजा धर्मजिज्ञासावश्च।
भूकोणेभ्यो भरतविषयं प्राप्नुवन्ति स्म नित्यं
भृङ्गस्तम्बः सरसिजमिवेत्यङ्कितं यात्रिवर्यैः।।

3. वसन्ततिलका

उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

उदाहरण
आदर्शवादिजननायकबाजपेयी
सत्तापदं परिजहत् सहसा सलीलम्।
गम्भीरधीरवचनं सदसौ जगाद
तेनापि संसदभवत् खलु मन्त्रमुग्धा।।

4. उपजाति

लक्षण
अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजात यस्ताः
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासुवदन्ति जातिष्विदमेव।

उदाहरण एकोणपञ्चाशतिवर्षपूर्वमस्मनामहाभारतवर्षदेशेः
बभूव लोके गणतन्त्रदेशः स्वीकृत्य नूनं निजसंविधानम् ।।

5. भुजंगप्रयातम्

लक्षण भुजंगप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः ।

उदाहरण अतो नायकैर्भारतीयैर्विधेयः
प्रयत्नो महान् राष्ट्ररक्षाविधाने ।
अपाकर्तुमेवात्र दोषान् समस्तान्
विधातुं च राष्ट्रं सपत्नैरजय्यम् ।।

अलंकार प्रयोग -

1. उपमा अलंकार

लक्षण - प्रस्फुटं सुन्दरं साम्यमुपमेत्यभिधीयते ।

उदाहरण विद्युल्लताविलसनादिव कृष्णरात्रो
स्वल्पेन दीप्ततमभाजपाशासनेन ।
आश्वासिता समभवज्जनता भृशं यद्
देशे बभूव परिवर्तनसुत्प्रभातः ।।

यहाँ भाजपा शासन को रात्रि में विद्युतलता से उत्पन्न होने वाली चमक के समान बताया है ।

उदाहरण देशेन दीर्घसमयोत्तरमद्य लब्धो
निःस्वार्थं निर्ममकलत्रकुटुम्बहीनः ।
चाणक्य सन्निभविलक्षणमुख्यमंत्री
सम्पूर्णराष्ट्रमिह यस्य कुटुम्बपुत्राः ।।

प्रस्तुत श्लोक में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को चाणक्य के समान विलक्षण प्रतिभा का घनी बताया है ।

2. अनुप्रास अलंकार -

लक्षण - अनुप्रासः शब्द साम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्यत् ।

उदाहरण	<p>हार्दाभिनन्दमिहाद्य मुहुर्विधाय तस्यैव मानघनधीरधुरन्धरस्य । सम्प्रार्थये प्रभुवरं खलु दातुमस्मै आरोग्यपूर्णं चिरजीवनं शक्तिपुञ्जम् ॥</p> <p>प्रस्तुत श्लोक में 'घ' वर्ण की आवृत्ति अनुप्रास अलंकार की द्योतक है।</p>
उदाहरण	<p>निर्भीकनिर्मलनिरञ्जननिर्विकल्पो निर्मन्युनिर्भयनिराकुलनिर्वितर्कः । निर्लिप्तनिर्ममनिरन्वयनिर्विकारः निर्व्याजधीरपरमः खलु बाजपेयी ॥</p> <p>प्रस्तुत श्लोक में 'निर्' की आवृत्ति बारम्बार हो रही है।</p>
उदाहरण	<p>निष्कामनिष्कलुषनिःस्पृह निष्कलङ्को निष्पापनिष्कपटनिश्चल निष्कषाय निष्कम्पनिष्प्रतिघनिरस्तुलनिः सपत्नो निःसङ्गनिष्कुलनिरन्तर बाजपेयि ॥</p> <p>प्रस्तुत श्लोक में निष् वर्ण की आवृत्ति बार-बार हो रही है।</p>

3. स्वाभावोक्ति अलंकार

लक्षण -	स्वभावोक्तिरसौ चारु यथावद् वस्तुवर्णनम्।
उदाहरण	<p>तत्रस्थाः शिवविष्णुसौगतमहाकायप्रण्डालया - स्तत्राप्यद्भुतभव्यबोरुबुदुराश्चाङ्गोरवाटोपमाः । तद्रामायणभारतादिककथा चित्राङ्किता भित्तयः साक्ष्यं भारतसंस्कृते सुरगिरो गाढप्रभावस्य वै ॥</p> <p>प्रस्तुत श्लोक में अङ्गोरवाट मंदिर की दीवारों पर रामायण, महाभारत सम्बन्धित चित्रों का स्वाभाविक वर्णन किया है।</p>
उदाहरण	<p>प्रक्षिप्ताश्च परस्परपरिरुषा पीठादिका घातुकै - मुष्टीमुष्टि तदा बभूव तुमुलं युद्धं महाभीषणम् । तद्राज्यस्य विसर्जनाय बलवद् हेतुप्रदानाय वै बुद्ध्या हेतुपुरः सरं प्रतिदलैः राज्याधिपैः कारितम् ॥</p> <p>प्रस्तुत श्लोक में मुष्टीमुष्टि का प्रयोग स्वाभावोक्ति को दर्शाता है।</p>

संस्कृत कवि कल्पना प्रधान काव्य की रचना करने वाले होते हैं। इस मत का प्रो. रेणापुरकर जी पूर्णतः खण्डन करने वाले हैं। प्रो. रेणापुरकर जी ने ज्वलन्त विषयों पर काव्यरचना की हैं। अतः काव्यक्षेत्र में उनका विशिष्ट स्थान है। इनके द्वारा रचित काव्यों के विषय भले ही आधुनिक हैं परन्तु उसमें प्रयुक्त छन्द, अलंकार प्राचीन ही हैं। डॉ. सुरेश हेरूरु: के शब्दों में प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी के काव्य राष्ट्रराजकारण विषयात्मक हैं। इनकी रचनाओं में प्रबन्धात्मकता नहीं है इसलिए रसभाव आदि के वर्णन का अवसर भी न्यून है। फिर कविवर के द्वारा रमणीयवृत्तप्रणयन, ललितपदगुम्फन कौशल, ओजस्विनी शैली, चितार्कषक भावस्तुति रसिक जनों के हृदय को आह्लादित करने वाली है। प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी के काव्यों में राष्ट्रभक्ति नामक स्थायिभाव है। इन्होंने अपने काव्यों में मातृभूमि के प्रति अपनी श्रद्धा, प्रेम को मुख्य स्थान दिया है।

किसी भी रचनाकार के लिए यह आवश्यक है कि जब वो इतिहास विषयक किसी काव्य का निर्माण कर रहा हो उसके सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जाए। उस विषय सम्बन्धित प्रमाणिक कारा सूक्ष्मविश्लेषण, यथोचितवर्णन हो। प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने इन सभी बिन्दुओं का ध्यान में रखते हुए काव्य रचना की है। इसलिए कविवर रचित काव्य उत्कृष्ट शैली में है।

अतः यह कहा जाना उचित है कि प्रो. रेणापुरकर जी आधुनिक संस्कृत साहित्य जगत के चमकते हुए नक्षत्र हैं।

सन्दर्भ

चतुर्थ खण्ड - प्रथम अध्याय (काव्य/श्लोक/पृ.सं.)

1. काव्योद्यानम् 3/6-43
2. काव्योद्यानम् 4/5-63
3. काव्योद्यानम् 5/9-74
4. काव्योद्यानम् 7/10-83
5. काव्योद्यानम् 5/45-92
6. काव्योद्यानम् 9/4-93
7. काव्योद्यानम् 9/11-94
8. काव्योद्यानम् 10/2-99
9. काव्योद्यानम् 11/11-104
10. काव्योद्यानम् 12/3-105
11. काव्योद्यानम् 13/19-116
12. काव्योद्यानम् 14/4-119
13. काव्योद्यानम् 15/3-123
14. काव्योद्यानम् 17/5-138
15. काव्योद्यानम् 18/19-142
16. काव्योद्यानम् 18/15-143
17. काव्योद्यानम् 19/30-150
18. काव्योद्यानम् 20/3-152
19. काव्योद्यानम् 21/16-158
20. काव्योद्यानम् 22/15-162
21. काव्योद्यानम् 26/8-187
22. काव्योद्यानम् 27/5-190
23. काव्योद्यानम् 28/61-203
24. काव्योद्यानम् 29/24-210

चतुर्थ खण्ड - द्वितीय अध्याय (काव्य/श्लोक/पृ.सं.)

1. काव्यनिष्यन्दः 1/4-1
2. काव्यनिष्यन्दः 1/24-4
3. काव्यनिष्यन्दः 2/11-7
4. काव्यनिष्यन्दः 2/25-10
5. काव्यनिष्यन्दः 4/22-22
6. काव्यनिष्यन्दः 6/7-27

7. काव्यनिष्यन्दः 6/50-35
8. काव्यनिष्यन्दः 7/4-40
9. काव्यनिष्यन्दः 7/20-43
10. काव्यनिष्यन्दः 8/10-48
11. काव्यनिष्यन्दः 9/5-52
12. काव्यनिष्यन्दः 10/5-55
13. काव्यनिष्यन्दः 11/10-61
14. काव्यनिष्यन्दः 13/11-67
15. काव्यनिष्यन्दः 14/8-77
16. काव्यनिष्यन्दः 15/4-81
17. काव्यनिष्यन्दः 16/7-85
18. काव्यनिष्यन्दः 17/17-94
19. काव्यनिष्यन्दः 18/5-95
20. काव्यनिष्यन्दः 19/2-97
21. काव्यनिष्यन्दः 21/14-105
22. काव्यनिष्यन्दः 22/4-110

पंचम खण्ड
ऐतिहासिक खण्डकाव्य -
राममन्दिरविवादः एवं
इन्दिरापतनोत्थानम्

प्रथम अध्याय
राममन्दिरविवादः

द्वितीय अध्याय
इन्दिरापतनोत्थानम्

पंचम खण्ड

ऐतिहासिक खण्ड काव्य राममंदिरविवादः एवं इन्दिरापतनोत्थानम्

प्रथम अध्याय - “राम मन्दिर विवादः”

(i) सामान्य परिचय -

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ने 2005 में ऐतिहासिक खण्ड काव्य “राममन्दिर विवादः” की रचना की। इस काव्य की विषयानुक्रमणिका को सत्रह भागों में विभक्त किया है प्रथम भाग “श्री राममहात्मायम्” में 20 श्लोकों में राम के महात्म्य को वर्णित किया है, द्वितीय भाग “अयोध्यायैव रामजन्मभूमिः” में 21-63 श्लोकों तक अयोध्या को राम जन्मभूमि बताया है 64-124 तक ‘रामजन्मभमे: मुक्तिसङ्घर्षगाथा’ नामक तृतीय भाग में रामजन्मभूमि पर होने वाले मुक्तिसंघर्ष का वर्णन है। 125-134 तक के श्लोकों में ‘मुस्लिमतुष्टीकरण नीतिः’ नामक चतुर्थ भाग में अंग्रेजों द्वारा मुस्लिम समुदाय को युद्ध करने के लिए प्रेरित करने का वर्णन है। 135-137 श्लोकों के क्रम में ‘धर्मसंस्थापना नामक पञ्चम भाग में धर्म की स्थापना का वर्णन है। “मन्दिरद्वारोदघाटनम्” नामक षष्ठ भाग में 138-147 श्लोकों में मन्दिर के द्वार खोलने की याचना न्यायालय के समक्ष की गई। ‘धर्मसंसद शिलान्यासनिश्चयः’ नामक सप्त भाग में 148-158 श्लोकों में राममन्दिर के पुनर्निर्माण के लिए शिलान्यास की अपील न्यायालय में करने का वर्णन है। अष्ट भाग “मन्दिर शिलान्यासस्तत्परिणामश्च” में 159-211 तक मन्दिर के शिलान्यास के लिए सम्पूर्ण देश के एकजुट हो जाने का वर्णन है। “मन्दिरनिर्माणार्थ कारसेवा” नामक नवम भाग में 212-232 तक के श्लोकों में कारसेवकों की सेवा को उद्धृत किया है। “रामरथयात्रा” नामक दसवें भाग में 233-246 श्लोकों में हिन्दुत्व की स्थापना के लिए निकाली गई रामरथ यात्रा का वर्णन है। “त्रिशदक्दूबरविजयः” नामक एकादश भाग में 249-256 तक श्लोकों में 30 अक्टूबर की विजय गाथा का वर्णन है। 257-278 तक श्लोकों में “नोव्हेम्बर द्वितीयदिनस्य नरमेघः” नामक द्वादश भाग में रामभक्तों के साथ हुए दुर्व्यवहार को इंगित किया है। “मन्दिरनिर्माणार्थे पुनः कार्यसेवा मस्जिदध्वंसश्च” नामक त्रयोदश भाग में 279-313 श्लोकों में 7 जुलाई को कारसेवा के पुनः प्रारंभ को स्पष्ट किया है। 314-358 तक की श्लोक रचनाओं में “तस्य घोरा प्रतिकृतिः” नामक चतुर्दश भाग में निःसंख्य निरीह जनता पर होने वाले अत्याचारों का वर्णन है। 359-377 श्लोकात्मक पञ्चदश भागमें “मुस्लिममैरापिशान्तं चिन्तनीयम्” में राममन्दिर के लिए होने वाले 76 युद्धों का उल्लेख है। “अयोध्याघटनोदरकः” नामक षोडश भाग में 378-395 तक के श्लोकों में अयोध्या में होने वाली घटनाओं को स्थान दिया है। अन्तिम सत्रहवें भाग “हिन्दूनां विशालता” में 396-429 तक हिन्दुओं की विशालता का वर्णन है।

(ii) विवेचन एवं विश्लेषण

(1) श्री राममहात्मायम्”

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ने “राममन्दिर विवादः” नामक ऐतिहासिक खण्डकाव्य की रचना सत्रह लघुखण्डों में की है इस काव्य की रचना 1990 में की गई थी। प्रस्तुत खण्डकाव्य का प्रारम्भ श्री राम के महात्म्य से होता है 1990 के दशक में जब इस काव्य की रचना हुई तब तक भारत अंग्रेजों की दासता से मुक्त होने के बाद भी स्वयं को दासता के जाल में अनुभव करता था। अंग्रेजों द्वारा फूट डालो राज करो की नीति भारतीयों को विभाजित करने के लिए अपनाई गई जिसमें वे सफल भी हुए। आज भी भारतवासियों में उस नीति के अंश दृष्टिगत होते हैं कितना विनाश हुआ इस बात को कहा नहीं जा सकता किन्तु उसका परिणाम यह हुआ कि तीनों लोकों के वन्दनीय आदर्श नायक राम के मन्दिर के लिए भी युद्ध किया जाने लगा। लोग स्वयं की स्वार्थसिद्धि के लिए कोई भी दुष्कृत्य करने को तत्पर हैं इसी कारण प्रभु श्री राम के मन्दिर के लिए अथवा नाम राम पर युद्ध या लड़ाई करना स्वार्थी जनों के लिए सामान्य है ऐसे व्यक्ति स्वार्थ सिद्धि के लिए अपने अभिमान को भी ताकि रख देंगे तथा राम का भी वध कर देंगे। राम तो भारतीय संस्कृति के आदर्श नायक है। राम केवल हिन्दू धर्म को मानने वाले व्यक्तियों के लिए ही आदर्श पुरुष नहीं है बल्कि सम्पूर्ण मानव संस्कृति के प्रतीक स्वरूप है राम ही संस्कार और संस्कृति की प्रतिष्ठा करने वाले हैं। जिनका चरित्र शीलता व उज्ज्वल जैसे गुणों से युक्त है वे मनुष्य रूप में दुर्लभ गुणों की खान है। विभिन्न विचारों व भाषाओं को मानने वाले देशों के मध्य ये रामसेतु समन्वय का प्रतीक है। प्रभु श्री राम तीनों लोकों में वन्दनीय व असंख्य भक्तों के आराधनीय हैं।

त्याग प्रधान भारतीय संस्कृति में रामायण नामक आदिकाव्य में राम को आदर्श पुत्र, पति, आदर्श भ्राता, आदर्श नरेश के रूप में वर्णित किया गया है।

त्यागप्रधानवरभारतसभ्यतायाः रामायणं खलु ब्रह्मव सजीवकाव्यम्।¹
आदर्शपुत्रपतिबनुसुशासकानां नूनं प्रतीकमभवत् प्रभुरामचन्द्रः॥ (12)

त्रेता युग में दशरथ पुत्र राम द्वारा आदर्श राज्य की स्थापना गई। यह राज्य प्रजाजनों के प्रिय राम द्वारा स्थापित रामराज्य था। लोगों ने राम को हृदय में बसा लिया। रामभक्तों के अनुसार साकेत भगवान राम जन्मभूमि है। इसलिए सरयू नदी के तट पर साकेत नगर में राममन्दिर स्थापित किया।

तस्यैवलोकहृदयङ्गः मभावमूर्ते²
रामस्य मन्दिरमभूदतिदिव्यभव्यम्।
निर्मापितं किल कुशेन तदात्मजेन
साकेतनामनगरे सरयूतटाके॥ (14)

मिनाण्डर आदि विपक्षी विनाशकारियों द्वारा भव्य निर्माण को ध्वस्त किया गया। आक्रमणकारी बाबर ने राममन्दिर को उजाड़कर वहाँ मस्जिद स्थापित की।

संदर्भ - अयोध्या : राममंदिर बाबरी मस्जिद विवाद का इतिहास (28 अप्रैल 2010)

इतिहास से प्राप्त जानकारी के अनुसार मुस्लिम सम्राट बाबर ने फतेहपुर सीकरी के राजा राणा संग्राम सिंह को वर्ष 1527 में खानवा के युद्ध में हारने के बाद इस स्थान पर बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया। बाबर ने इस विजय के पश्चात् अपने जनरल मीबांकी को इस क्षेत्र का वायसराय बनाया। मीरबांकी ने ही 1528 में अयोध्या में मस्जिद का निर्माण कराया।

मुस्लिम सम्राट बाबर ने बर्बरता से मन्दिर को नष्ट किया। मुस्लिम शासकों द्वारा हिन्दू देवताओं के मंदिरों को ध्वस्त करने की नाश लीला से अनेक व्यक्तियों का हृदय आहत हुआ। अयोध्या स्थित राम मन्दिर को मस्जिद में बदल दिया गया किन्तु अवशिष्ट चिह्नों से ज्ञात होता है कि यहाँ मंदिर था।

2. “अयोध्यैव रामजन्मभूमिः”

मुस्लिम समुदाय द्वारा बार-बार यह प्रश्न किया जाता रहा है कि कैसे सिद्ध होता है कि यह राम जन्मभूमि है। यहाँ तो बाबरी मस्जिद है। इस प्रश्न का उत्तर निम्न प्रकार है -

हमारे प्राचीन ग्रंथों स्कन्ध, अग्नि पुराण में स्पष्ट किया है कि साकेत ही रामजन्मभूमि है। यह भारत का इतिहास है कि साकेत ही प्रभु श्री राम की जन्मस्थली है। इन बातों को प्रमाणित करने के लिए यह लिखित प्रमाण स्पष्ट नहीं है इसलिए प्रतीति को ही प्रमाण मानने की बात कहते हैं।

राममन्दिर तथा बाबरी मस्जिद की प्रमाणिकता को स्पष्ट करने के लिए अन्त में न्यायालय की शरण लेनी पड़ी। सभी हिन्दू धर्मावलम्बियों ने प्रयास किया कि यह स्पष्ट हो जाए कि यहाँ पहले राम मन्दिर था क्योंकि बाबरी मस्जिद के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं।

जब लोग मन्दिर की प्रमाणिकता स्पष्ट करने वाले थे तभी किसी दुराचारी मुस्लिम द्वारा समस्त प्रबल प्रमाणों को नष्ट कर दिया। इसलिए न्यायालय द्वारा इस विषय में कोई ठोस निर्णय नहीं लिया गया।

आसीन्न वा किमपि मन्दिरमत्र पूर्व 4
स्थाने हि बाबरिसमाह्वय मस्जिदस्य ।
इत्यस्य निर्णयविधौ नहि सक्षमाः स्मः
न्यायालयेन नियतं कथितं यथार्थम् ॥ (37)

यहाँ पहले मस्जिद के स्थान पर कोई मन्दिर था इस बात का निर्णय करने में न्यायालय सक्षम नहीं है क्योंकि बिना प्रमाण कुछ भी कहना अनुचित है जैसे तो अयोध्या में विवादित स्थल पर उत्कीर्ण चिह्नों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि पूर्व में मन्दिर था। बुद्धिजीवी मुस्लिम जन भी मानते हैं कि यह मन्दिर को परिवर्तित कर बनाई मस्जिद है।

“सुज्ञा विवेकपरमा अपि मुस्लिमाश्च, मन्यन्त एव परिवर्तितमस्जिद तम् ॥”

साबीर, शेख, नकवी, सयिदाल आदि राष्ट्रीय मुस्लिम नेतृगण ने भी स्वीकार किया है कि यह मस्जिद मन्दिर को ध्वस्त करके निर्मित है। पहले भारतीय अंग्रेजों की गुलामी में थे आज जाति, धर्म के बन्धनों से जकड़े हैं। स्वतंत्र राष्ट्र अपनी संस्कृति व सभ्यता को संरक्षित करने का पूर्ण प्रयास करता है किन्तु अज्ञानता के कारण उसकी संस्कृति का हरण अन्यों द्वारा किया जा सकता है इसलिए संस्कृति के रक्षण का प्रयास करना चाहिए। जिस प्रकार राममन्दिर के विषय में हमारी संस्कृति का हरण हुआ उस प्रकार अन्य विषयों में नहीं हो ऐसी कोशिश की जानी चाहिए।

मुस्लिम समुदाय द्वारा रघुनन्दन की जन्मभूमि को मस्जिद में परिवर्तित कर देने मात्र से ही यह परिवर्तित नहीं होगा। इन्हीं मुस्लिम समुदाय के लोगों द्वारा हिन्दुओं की भावना को क्षति पहुँचाई गई। हिन्दू धर्मावलम्बियों की जबरन तक, यवन, अरब तथा मुगलों में शामिल किया गया।

राम आदिकाल मे हुए। बाबर नामक व्यक्ति राम से पहले नहीं हुआ है, बाबर के विषय में कौन जानता है ? जबकि भारतभूमि पर आदिकाल से ही राम का एकाधिकार हुआ। दुस्त्रियों की पीडा हरने वाले पवित्र आत्मा श्री राम की तुलना उस ढग अत्याचारी बाबर से करना कहाँ उचित है ? इसलिए स्वयं मुस्लिम समुदाय द्वारा वह स्थान जहां राम मन्दिर लम्बे समय से पूजा अर्चना चलती थी हिन्दुओं को देकर यह विवाद शांत किया था -

कश्चिन्नमाजपठन्न चिराय यत्र 5
पूजार्चनं चलति दाशरथेश्च यत्र ।
तत्स्थानमेव खलु हिन्दुजनाय दत्त्वा
वादः स्वयं मुस्लिमं शमनीय एषः ॥ (60)

किन्तु स्वार्थान्ध शासकों द्वारा हिन्दू-मुस्लिम युद्ध को भड़काने का काम किया गया। जिसके फलस्वरूप 300 से अधिक मन्दिरों को नष्ट करके मस्जिदों का निर्माण किया गया। वाराणसी, मथुरा, अयोध्या इन तीनों स्थानों पर मुस्लिमों द्वारा मन्दिरों को नुकसान पहुँचाया गया। जिसके कारण भयानक मुक्ति युद्ध चला और यह आग फैलती गई जिसको शांत कर पाने में कौन समर्थ होता ?

3. “रामजन्मभूमेर्मुक्तिसंघर्षगाथा”

राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक स्वरूप “रामजन्मभूमि” के लिए अब तक 76 बार युद्ध हो चुका है रघुवर के चरणों की अर्चना हेतु उनके धीर वीर पुत्र कुश के द्वारा साकेत नामक नगरी के मन्दिर में राम के चरणों को पूजा गया। करोड़ों लोगों के भक्ति केन्द्र राममन्दिर को मिनाण्डर व यवनों द्वारा आधी शताब्दी पूर्व नष्ट कर दिया गया।

तत्कोटिकोटिहृदयान्तरभक्तिकेन्द्रं
मेनाण्डरेण यवनोद्धतशासकेन ।
बुद्धानुयायिकितवेन विनाशितं तत्
ख्रिस्तस्य पूर्वमपि सार्धशताब्दकाले ॥ 66 ॥

यवनों कृत इस निकृष्ट कार्य से सन्तप्त हिन्दुओं ने थोड़े समय में ही मिनाण्डर को समाप्त कर दिया। ध्वस्त रामजन्म भूमि का निर्माण श्री विक्रम नामक शक शासक द्वारा करवाया गया। साथ ही इन्हीं के शासनकाल में संस्कृति का मंदिरों को बचाने की जागृति उत्पन्न हुई। परन्तु एक शतक पश्चात् पुनः ठग मुस्लिम समुदाय ने सम्पन्न मन्दिरों में लूट पाट का खेल रचा। जिस प्रकार गजनी ने सोमनाथ मन्दिर लूटा था उससे प्रतीत होता है कि वह परमधम, नीच वृत्ति का प्राणि था। गजनी से हुए युद्ध में 50,000 सैनिकों ने साथ नहीं दिया, संस्कृति की रक्षा के लिए सभी हिन्दू राजाओं द्वारा मिलकर धर्मयुद्ध चलाया गया, यह युद्ध धर्म की स्थापना के लिए प्रारंभ हुआ द्वितीय युद्ध था।

तेजस्विवीरवरकोसलभूमिपाल - 7
स्तत्रायकः खलु बभूव सुहेलदेवः ।
तद्धर्मसंस्कृतिविनाशकदण्डनाय
सर्वैः समेत्य विहितः समरोऽद्वितीयः ॥ (77)

सरयू नदी के तट पर हिन्दू मुस्लिम समुदाय के मध्य धर्म युद्ध चलता रहा जिसमें मुस्लिमों की पराजय हुई। मसूद तथा उसके सैनिक मारे गए। परन्तु कुछ ही समय पश्चात् बाबर तथा मुगलों ने अयोध्या पर आक्रमण कर विजय प्राप्त कर ली। इसी क्रम में मीर बांकी ने मन्दिर को ध्वस्त किया जिससे आहत हुए हिन्दू धर्मावलम्बियों ने मीर बांकी की हत्या

कर पुनः मन्दिर निर्माण प्रारंभ किया। इस मुक्ति संग्राम में बाबा दिगम्बर महेश्वर विष्णुदास, महताभ सिंह आदि ने सहयोग किया। 19 वीं शताब्दी तक यह राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम चलता रहा। तब अपने अभिमान को एक तरफ करते हुए “हामिरालिनाम” ने कहा की सभी मुस्लिम विदेशी नहीं हैं हम हिन्दु-मुस्लिम भाई हैं इसलिए यह भूमि हिन्दुओं को देकर विवाद शान्त कर देना चाहिए -

सर्वे वयं मुसलिमा न विदेशिवंश्याः⁸

हिन्दूजना मुस्लिमाश्च सहोदराः स्मः ।।

हिंदूजनाय रघुनन्दनजन्मभूमिं

दत्त्वा विवादशमनं च चिकीर्षषः स्मः ।। (118)

किन्तु अंग्रेजों की शासकों को विभेद करने की नीति के कारण यह सम्भव नहीं हो सका।

4. मुस्लीम तुष्टीकरण नीति:

अंग्रेजों ने स्वशासन को दृढ़ करने के लिए स्वयं की स्वार्थ पूर्ति के लिए फूट डालो राज करो की नीति पर मुस्लिमों को युद्ध के लिए प्रेरित किया। मुस्लिमों की तुष्टीकरण की नीति के तहत अंग्रेजों ने मुस्लिम समुदाय को अल्पसंख्यक बताकर धर्म युद्ध करने के लिए भडकाया।

5. धर्मसंस्थापना

इतना सब हो जाने के पश्चात् भी हिन्दू धर्मावलम्बियों ने हार न मानी धर्म की स्थापना के लिए राम रथ यात्रा निकाली। सभाएं आयोजित कर धर्म स्थापना के लिए लोगों को प्रेरित किया।

6. मन्दिरद्वारोद्घाटनम्

इसी क्रम में 1986 वे वर्ष में फरवरी माह में हिन्दू धर्मावलम्बियों द्वारा मंदिर का ताला खोलने की याचना न्यायालय से की गई।

अन्तर्जाल राममन्दिर अयोध्या बाबरी मस्जिद विवाद का इतिहास (28 सित. 2010)

पत्रिका के लेख अनुसार 1947 में न्यायालय भारत सरकार द्वारा मुसलमानों को विवादित स्थल से दूर रहने के आदेश दिए और मस्जिद के मुख्य द्वार पर ताला लगा दिया गया जबकि हिन्दू श्रद्धालुओं को एक अलग जगह से प्रवेश दिया गया।

इस फैसले से मुस्लिम समुदाय में आक्रोश उत्पन्न हुआ। लगभग 40 वर्षों बाद इस विवाद की शुरुआत 1986-87 में हुई, जब कई वर्षों बाद आधुनिक भारत में हिंदुओं ने फिर से राम जन्मभूमि पर दावे करने शुरू कर दिए। तब आक्रोशित मुस्लिम समुदाय ने मस्जिद रक्षण के लिए अपने बन्धुओं को भाषणों से प्रेरित करना शुरू कर दिया।

इस फैसले से मुस्लिम समुदाय में आक्रोश उत्पन्न हुआ। लगीग 40 वर्षों बाद इस विवाद की शुरुआत 1986-87 में हुई, जब कई वर्षों बाद आधुनिक भारत में हिंदुओं ने फिर से राम जन्मभूमि पर दावे करने शुरू कर दिए। तब आक्रोशित मुस्लिम समुदाय ने मस्जिद रक्षण के लिए अपने बन्धुओं को भाषणों से प्रेरित करना शुरू कर दिया।

7. धर्मसंसद: शिलान्यासनिश्चय:

जब मुस्लिम समुदाय न्यायालय के निर्णय के विपरीत जाकर मस्जिद द्वार के उद्घाटन का प्रयास करने लगे तब ही हिन्दुमतावाला म्बियों द्वारा राम मन्दिर के शिलान्यास हेतु प्रयास किए जाने लगे। धार्मिक गुरुओं द्वारा नवम्बर माह की नव या दश दिनांक को शिलान्यास का दिन निर्धारित किया। भिन्न-भिन्न स्थलों पर राम भक्तों ने शिला का विधिवत् पूजन करके निश्चित दिनांक तक अयोध्या पहुँचाने का कार्य प्रारंभ किया। सम्पूर्ण भारत में राम नाम की महिमा व रामनाम के जयकरों की ध्वनि गूँजने लगी। जिससे आहत मुस्लिम समुदाय ने इस भक्ति यात्रा को रोकने का अथक प्रयास किया।

न्यायालय ने मुस्लिम समुदाय की सान्त्वना के लिए ही मन्दिर के शिलान्यास के लिए मस्जिद के समीप वाली जमीन पर निर्माण की अनुमति दी।

श्रीराममन्दिरशिलाविनिवेशधिष्णयं, ¹
दूरं वभूव खलु मस्जिदभुविभागात्।
न्यायालय तदपि मुस्लिमसान्त्वनार्थ,
नीतो विवादविषयः खलु शासनेन।। (157)

8. मन्दिरशिलान्यासस्तत्परिणामश्च -

राम मन्दिर शिलान्यास के आयोजन का सकारात्मक प्रभाव सम्पूर्ण भारत में दृष्टिगत होने लगा। इस आयोजन ने सम्पूर्ण भारत को एकसूत्र में दिया। न केवल भारत की आम जनता बल्कि भारतीय राजनीति में भी इसका सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला। हिन्दू देवताओं के मन्दिरों को नष्ट करना सम्पूर्ण भारतवासियों का अपमान माना गया। जाति अन्ध मोलवियों द्वारा साम्प्रदायिक अवरोधों को जन्म दिया गया। श्री राम जन्मभूमि के विरोधियों में बाबर, ओरंगजेब आदि मुगलशासकों का नाम है। हमारी भारतीय संस्कृति के

प्रतीक मन्दिरों, तीर्थस्थलों को लूटने व उजाड़ने में नादिर, तैमूर आदि का हाथ है फिर इन्हें भारत के वीर कैसे कहा जा सकता है, यह कथन सर्वथा अनुचित है भारत के वीरों में तो राम, कृष्ण जैसे दयालु धर्मप्रिय आदर्शवादी पूज्य श्री का नाम लिया जाना चाहिए। प्रश्न यह नहीं है कि मन्दिर बने या मस्जिद रहे बल्कि राष्ट्र की एकता रूपी संस्कृति को संजो के रखा जाए जातपात के नाम पर उनको न बाँटा जाए।

प्रश्नो न मन्दिरभुवो न च मस्जिदस्य, ⁹
राष्ट्रेक्यमानमहनीयसुसंस्कृतीश्च ।
जातं समस्तमपि घोराविपत्तिपूर्णं
भाष्यं ह्यतः खलु जनैरिह सावधानैः । (209)

9. मन्दिरनिर्माणार्थ कारसेवा

मन्दिर के पुनः निर्माण के लिए निश्चित की देव प्रबोधन तिथि (30 अक्टूबर) को लोग कारसेवा के लिए एकत्रित होना प्रारम्भ हुए। मन्दिर पुनः निर्माण के समय भी भारत वर्ष के लोगों में ही वही एक्य देखा गया जैसा कि मन्दिर शिलान्यास के समय देखा गया था। भारतीय जन कार्य सेवा करने में उत्सुक नजर आए। सभी हिन्दुधर्मावलम्बी अपनी संस्कृति की पुनः स्थापना के लिए सहयोग प्रदान करते हुए दृष्टिगत हुए। इस कार्य सेवा को देखकर मुस्लिम समुदाय द्वारा आक्रोश प्रकट किया गया, विरोध प्रदर्शन किए गए। मुस्लिमों के इस आक्रोश को समाप्त के लिए प्रान्तीय मुख्य सचिव मुलायम सिंह द्वारा सभाओं का आयोजन कर मुस्लिमों को सान्त्वना प्रदान की गई।

10. रामरथयात्रा

हिन्दुत्व की रक्षा के लिए संकल्पकृत व्यक्तियों ने, जो कि राम मन्दिर के पुनः निर्माण के लिए प्रतिबद्ध थे एक अद्वितीय आन्दोलन को प्रारम्भ किया। यह आन्दोलन हिन्दुओं को जागृत करने हेतु आयोजित किया गया। इस आन्दोलन के तहत एक रथ यात्रा प्रारंभ की गई जो राम रथ यात्रा के नाम से प्रसिद्ध हुई। यह यात्रा सोमनाथ मन्दिर के नगर से 25 सितम्बर को प्रारंभ हुई। जिसका संचालन बी.जे.पी राष्ट्रीय दल द्वारा किया गया। यह यात्रा सोमनाथ नगर से प्रारंभ होकर महाराष्ट्र, गुजरात, कर्णाटक, आन्ध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली राज्यों से गुजरी। इस यात्रा के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण भारत में राम नाम की लहर चल पड़ी। 30 अक्टूबर की निर्धारित तिथि को, अनेक विरोधों का सामना करते हुए लगभग एक लाख रामभक्त निश्चित स्थान पर एकत्रित हुए। एक साथ इतने रामभक्तों या कारसेवकों को पहुँचा देखकर सम्पूर्ण भारतवासी आश्चर्यचकित हो गए।

शक्ता द्विजा नडयितुं किमु मानवाना -¹¹
मित्थं प्रधानसचिवे खलु मन्यमाने ।
लक्षाधिकैरपि रघूत्तमभक्तवर्ये -
गुप्तं प्रविश्य भुवनं चकितं व्यधायि । (248)

11. त्रिंशदक्टूबरविजयः

30 अक्टूबर की निर्धारित तिथि के ठीक एक दिन पूर्व सम्पूर्ण विश्व से आए पत्रकार एकत्रित हो गए। जो कारसेवकों के इस आयोजन को विफल मान बैठे थे, किन्तु निर्धारित तिथि के दिन प्रातः नो बजे से अपने स्वामी के दर्शनों को लालायित रामभक्त प्रभु श्री राम के जयकारों के साथ लाखों की संख्या में एकत्रित हो गए। ये रामभक्त अपने प्रभु की अर्चना करने हेतु तिल, गुड आदि पूजन सामग्री के साथ स्थल पर एकत्रित हुए। इन रामभक्तों ने राम नाम के जयकारों के साथ ही वहाँ भजन कीर्तन भी प्रारंभ कर दिया। जिसको देखकर बाबर के समान, संस्कृति के रक्षण करने वाले सैनिकों ने रामभक्तों पर आँसू, गैस की गोलियों से प्रहार किया ताकि ये रामभक्त वह स्थान छोड़कर वहाँ से चले जाएँ किन्तु अपने मन में दृढ़ संकल्प लिए हुए राम सेवकों को वहाँ से कोई भी नहीं हटा सका जिसके फलस्वरूप सम्पूर्ण देश में हर्ष की लहर फैल गई। लोगों ने इस समय को परमानन्द की प्राप्ति का समय माना।

अस्मात्प्रचण्डविजयात्प्रससार तत्र¹²
हर्षप्रकर्षतडिदेव समस्तदेशे ।
आनन्दसौख्यपरमाद्भुतधन्यतानां
दिव्यानुभूतिरिह तैः सहसा व्यधायि ।। (256)

12. नोव्हेंबरद्वितीयदिनस्य नरमेघः

राममन्दिर निर्माणार्थ एकत्र हुए रामभक्तों पर किए गए अत्याचार या दुर्व्यवहार की आलोचना हुई। रामभक्तों को विवादित स्थल से पहले हनुमान गढ़ी के समीप ही रोक दिया गया। कुछ अन्य भक्तों को सरयू के तट पर रोका गया क्योंकि रामलला भूमि पर एकत्र भक्तों ने जोर-शोर से भजन-कीर्तन प्रारंभ कर दिए थे। जिनका सहयोग अन्य कारसेवकों ने भी किया। इन रामभक्तों पर उस्मान भुल्लर सुभाष जैसे उग्र स्वभाव के लोगों ने आँसू गैस के गोले छुडवाए। जिसके कारण मन्दिर प्रांगण में भगदड मच गई। अनेक लोग इस भगदड का शिकार होकर जमीन पर गिर गए। इसमें अनेक रामभक्तों की मृत्यु हुई। यह घटना जलियावाला बाग हत्याकाण्ड की याद दिलाती हैं। जिसमें निर्दोष लोगों पर जनरल डायर ने गोलियाँ चलवाई थी। यहाँ भी वी.पी.सिंह जी के आदेशानुसार भक्तों पर आँसू गैस की गोलियाँ चलाई गई, फिर भी इन रामभक्तों ने रामलला भूमि पर “रामध्वजा” फहरा ही दी। यह 2

नवम्बर का दिन भारतीय इतिहास में काले दिन के नाम से जाना जाएगा। किसी भी स्वतंत्र देश में इस तरह का नरमेध शोभा नहीं देता यह बहुत दुखद घटना है।

13 मन्दिरनिर्माणार्थ पुनः कार्यसेवा मस्जिदध्वंसश्च

7 जुलाई 1992 को हिन्दु धर्मावलम्बियों ने पुनः कार सेवा का कार्य प्रारंभ करने का निर्णय किया। राज्य प्रशासन ने जो स्थान हिन्दु कार्यसेवकों के लिए निर्धारित किए वहाँ विशाल हवन वेदियों का निर्माण करना शुरू कर दिया। न्यायालय के निर्णय को सर्वोपरि मानते हुए मन्दिर निर्माण के कार्य को स्थगित करना पड़ा। तत्कालीन प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंहराव जी ने हिन्दु मुस्लिम विवाद को शान्त करने के लिए 3 माह का समय रखा। इसी समयावधि में रामभक्तों ने यह प्रतिपादित करने का पूर्ण प्रयास किया कि यहाँ पूर्व में मन्दिर ही था। भारत की राजधानी दिल्ली में हिन्दुत्व निष्ठ नायकों ने यह निर्णय लिया कि 6 दिसम्बर से पुनः मन्दिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ होगा। इस निर्णय से प्रसन्न रामभक्तों ने विवादित स्थल के समीप पहुँचकर भजन कीर्तन आदि करना शुरू कर दिया। सम्पूर्ण देश के विभिन्न प्रांतों से लगभग 2 लाख कारसेवक विवादित स्थल पर मन्दिर निर्माण के लिए पहुँचने लगे। इसी समय जोशी, आडवाणी जैसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने निषिद्ध क्षेत्र में प्रवेश कर गुप्त तरीके से लगभग आठ घंटों में मस्जिद को गिराने का कार्य करवाया। यह कार्य कुदाल आदि यन्त्रों के माध्यम से पूर्ण किया। बी.जे.पी. के इन नायकों ने यह कार्य करके जनता का विश्वास हासिल कर लिया जिससे वह केन्द्र में जनतान्त्रिक शासन की स्थापना कर राममन्दिर विधेयक पारित करवाने का कार्य कर सके।

14. तस्य घोरा प्रतिकृतिः

मस्जिद ध्वंस के कारण मुस्लिम समुदाय द्वारा घोर प्रतिक्रिया प्रकट की गई। 6 दिसम्बर 1992 को बाबरी मस्जिद विध्वंस के साथ ही यह मुद्दा सांप्रदायिक हिंसा और नफरत का रूप लेकर पूरे देश में संक्रामक रोग की तरह फैलने लगा। जाति अन्ध मुस्लिमों ने पूरे देश में अस्त्र शस्त्र का प्रयोग कर निष्पाप जनता को नुकसान पहुँचाया अनेक मंदिर मठों को ध्वंस किया। 100 से अधिक भवनों को जला दिया। इन सांप्रदायिक दंगों के परिणामस्वरूप 2000 से भी अधिक लोग मारे गए।

वङ्गीयविंशतिसहस्रजनैरयोध्यां, ¹³

क्रुद्धैः प्रयाणमुपकल्पितमेकमासीत्।

विस्मृत्य भारतमहोपकृतिं कृतध्वैः,

पाकस्य दास्यनिगडात् खलु मुक्तियुद्धेः ॥ (318)

जन्म से ही भारत के शत्रु रहे पाकिस्तान को मस्जिद ध्वंस से एक ओर

मौका मिल गया। जिससे वह भारत में हिन्दुत्व विरोधी कार्य कर सके। राष्ट्रीय सेवक संघ, हिन्दु हितैषी, बजरंग दल तथा विश्व हिन्दू परिषद इन तीनों को ही विवादित स्थल में प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। पी.वी. नरसिंह राव के घातक निर्णय का परिणाम ही भारत को भोगना पडा। इस घोर कृत्य के परिणाम स्वरूप ही कल्याण सिंह जी को मुख्यमंत्री पद त्यागना पडा। राम मन्दिर में प्रवेश मन्दिर के ध्वस्तिकरण का दुखद परिणाम काश्मिर में रहने वाली जनता को सहना पडा। पाकिस्तान ने काश्मीर में स्थित मन्दिरों को ध्वस्त किया तथा निष्पाप जनता पर अत्याचार किया। मस्जिद ध्वंस के कारण यह स्पष्ट हो गया कि यहाँ पूर्व में मन्दिर ही था क्योंकि पूर्व में वहाँ मन्दिर स्थित होने के अवशेष व प्रमाण स्पष्ट दृष्टिगत होने लगे।

अन्तर्जालम् – मस्जिद विध्वंस के 10 दिन बाद मामले की जांच के लिए लिब्रहान आयोग का गठन किया गया। वर्ष 2003 उच्च न्यायालय के आदेश पर भारतीय पुरातत्व विभाग ने विवादित स्थल पर 12 मार्च 2003 से 7 अगस्त 2003 तक खुदाई की जिसमें एक प्राचीन मंदिर के प्रमाण मिले।

तन्मस्जिदस्य तपनात् प्रकटीबभूवु - ¹⁴
 स्तत्रत्यपूर्वतनराघवमन्दिरस्य ।
 भग्नावशेषनिकरा बहवश्च लेखाः
 पाषाणखण्डलिखिताः सुस्त्राग्निबद्धाः ।। (357)

15. मुस्लिमैरपि शान्तं चिन्तनीयम् -

यदि इतिहास के पृष्ठों को उल्टा जाए तो दृष्टिगत होगा कि अब तक 76 से अधिक युद्ध हो चुके हैं। रामजन्म भूमि के लिए जिसमें असंख्य रामभक्तों असूय ने यज्ञ किया। विश्व में समस्त मुस्लिम राष्ट्र भी यह जानने के इच्छुक रहे हैं कि यहाँ पूर्व में मन्दिर ही था या मस्जिद यह विषय सभी की चिन्ता या सोच का विषय है जहाँ दीर्घकाल से नमाज पाठ हो रहा है उस स्थान को ध्वस्त करने से यदि मुस्लिम जनों में रोष उत्पन्न होता है तो फिर श्री राम कृष्ण, शिव आदि देवताओं के मन्दिरों के नाश करने पर हिन्दुओं में भी वैसा ही रोष उत्पन्न होता होगा। बाबर आदि ने धर्म परिवर्तन कराकर भले ही लोगों को मुस्लिम बनने पर विवश कर दिया किन्तु आज भी उनके शिराओं व धमनियों में रामकृष्ण का ही रक्त बह रहा है। किसी भी धर्मपरिवर्तन के कारण ये पूर्वज मुस्लिम हो गए हो परन्तु सभी मुस्लिमजन भी निश्चित ही रामकृष्ण के कुल में उत्पन्न हुए हैं।

कस्यापि धर्मपरिवर्तनहेतुनैव ¹⁵
 तत्पूर्वजेषु परिवर्तनमस्त्यशक्यम् ।
 सर्वेऽपि मुस्लिमजना अत एवं नूनं
 श्रीरामेकृष्णकुलजाः खलु ते भवन्ति । (366)

16. अयोध्याघटनोदकः

6 दिसम्बर 1992 को राम मन्दिर भूमि पर स्थित मस्जिद विध्वंस की घटना स्वाधीन शासन में हुई अद्भुत घटना है। इससे पूर्व में भी 76 बार युद्ध हुए पर ऐसा निर्णय कभी दृष्टिगत नहीं हुआ। विगत 15 वर्षों में हिन्दुत्व की रक्षा करने एवं स्वाभिमान को बनाए रखने के लिए लिया गया यह अतिमहत्वपूर्ण निर्णय है। अन्यथा सहिष्णु भावना रखने वाले हिन्दुओं ने कभी किसी धर्म विशेष की भावना को आहत नहीं किया है। अपनी संस्कृति व सभ्यता की रक्षा करने हेतु यह आक्रामक रूख अपनाया गया है। भारतीय संस्कृति तो हमेशा ही वसुधैव कुटुम्बकम् सर्वधर्म सम्भाव जैसी सोच को प्रकट करने वाली रही है। श्रीराम, कृष्ण, शिव आदि देवों के तीर्थ स्थलों का तिरस्कार करने से क्षुब्ध हिन्दुओं ने ठीक वैसे ही आक्रामक रूख अपनाया है जैसे शिशुपाल के सौ अपराध पूर्ण हो जाने पर श्री कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उसको पापों से मुक्त किया था। जाति अन्ध मौलवी बुखारी बनातवालो ने तथा स्वार्थान्ध शाहबुद्दीन आदि नेताओं ने राष्ट्र के मुस्लिमों को कुपथ पर चलने का मार्ग दिखाया वहीं उनके विनाश का कारण हुआ।

17. हिन्दूनां विशालता

यहाँ हिन्दुत्व जाति परक या धर्मपरक भावना को प्रकट करने वाला नहीं है बल्कि यह राष्ट्रीयता का प्रतीक है। ऋग्वेद के अनुसार जिस प्रकार एक सद ब्राह्मण हमेशा उच्च वैदिक विचारों को बताने वाला होता है उसी तरह भारतीय संस्कृति भी धर्म निरपेक्ष भावना को प्रकट करने वाली है। हमारे पुराणों एवं संस्कृति में पर्वत नदी समुद्र आदि का वर्णन दृष्टिगत होता है। पूरे विश्व से आए हुए हूण, शक, सिथियन, यवन आदि लोगों का भी स्वागत सहर्ष हमारे देश में किया था। किन्तु दूर से आए इन लोगों ने हमारे देश को ही टुकड़ों में बाँटने का प्रयास किया। ऑग्ल शासकों ने कूट राजनीति के अन्तर्गत अल्पसंख्यकों को भड़का कर हमें विभक्त करने का प्रयास किया। फिर तो भारत भूमि को माता की तरह पवित्र मानने वाले देशवासियों द्वारा देश रक्षा के लिए उठाए गए कदम सर्वथा उचित है। हर जगह सहयोग समत्व की वृत्तिवाले, सहिष्णु भाव वाले राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हिन्दुत्व की भावना सर्वोपरी रही है। विविधता में एकता उदारवृत्ति, धर्मनिरपेक्ष भाव ये समस्त भारतीयों की विशेषता है। यही हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक है।

(iii) वैशिष्ट्य

बहुप्रसवा लेखनी वाले, वैदरध्य संपन्न महाकवि प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने 'राममन्दिर विवादः' नामक ऐतिहासिक खण्ड काव्य की रचना 1990 वर्ष में की थी। यह खण्ड काव्य सत्रह भागों को एक सूत्र में जोड़कर रचा गया है। सामान्यतः यह दृष्टिगत होता है कि कवियों की लेखनी प्राचीन विषयों पर अधिकाधिक काव्यों को रचने वाली होती हैं, किन्तु प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ऐसे महाकवि हैं जिनकी लेखनी नवीन विषयों को अपनी रचना का विषय बनाती है। यही विशेष गुण इन महाकवि को अन्य कवियों से पृथक करने वाला है। इस खण्ड काव्य में रचनाकार ने रामजन्म भूमि तथा बाबरी मस्जिद जैसे विवादित विषय पर स्वतंत्र विचारधारा को लेखनी प्रदान की है जिसमें स्पष्ट तौर पर यह मुस्लिम विरोधी स्वर प्रकट होता है। इस खण्डकाव्य में प्रभु श्री राम को भारतीय जनमानस का आदर्श, पूज्य पुरुष माना गया है। यह खण्डकाव्य इतिहास के अनदेखे पहलुओं पर पुनः विचार करने को विवश कर देता है। जिस प्रकार महाभारत में संजय ने जन्मान्ध धृतराष्ट्र को कुरुक्षेत्र के युद्ध का सचित्र वर्णन सुनाया था उसी तरह यह काव्य हमें इतिहास की झलकियाँ सचित्र दिखाता है।

छन्द प्रयोग -

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ने अपनी परम्परा को निर्वहन करते हुये इस सम्पूर्ण काव्य की रचना ही छन्द वृत्त में की है इस खण्डकाव्य को वसन्ततिलका वृत्त में लिखा गया है प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ने अपने अन्य काव्यों में भी प्रत्येक खण्ड में एक ही वृत्त का प्रयोग किया है।

वृत्त = वसन्ततिलका

लक्षण = उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।।

उदाहरण साकेतमेव रघुनन्दनजन्मभूः किं
तत्स्थानमेव खलु बाबरिमस्जिदं किम् ।
किं तत्कृतेऽस्ति लिखितं किमपि प्रमाणं
पृष्टं हि मुस्लिमजनैरपि कैश्चिदन्यैः ।। (21)

अलंकार प्रयोग - इस खण्डकाव्य में प्रो. रेणापुरकर जी ने निम्नांकित अलंकारों का प्रयोग किया है।

1. अनुप्रास अलंकार -

लक्षण - 'वर्णसाम्यमनुप्रासः'

उदाहरण चिह्नानि तानि खलु भारतदासतायाः
स्वाधीनमानधनधीरधुरन्धरेण ।
देशेन नूनमपनेयतमानि सन्ति
किं नाङ्गलशासकजनप्रतिमा निरस्ताः ॥ (373)

प्रस्तुत श्लोक में अनुप्रास अलंकार है यहां पर ध वर्ण की आवृत्ति दृष्टिगत हो रही है।

2. प्रतिवस्तु उपमा अलंकार -

लक्षण सामान्यस्य द्विकस्य यत्र वाक्यद्वये स्थितिः

उदाहरण श्रीरामकृष्णशिवदेवततीर्थ धाम्नां
घोरावमाननतिरस्कृतितप्तहिन्दुः ।
पूर्ति गतेषु शिशुपालशतापराधे-
ष्वद्योघतः खलु सुदर्शनचक्रहस्तः ॥

प्रस्तुत श्लोक में प्रतिवस्तु उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है जहाँ सुदर्शन चक्र से शिशुपाल वध का रामकृष्णशिव आदि देवताओं के मन्दिर ध्वस्त करने में साम्य बताया है। इस खण्डकाव्य में भी अन्य काव्य की तरह मौनि शब्द का प्रयोग ही किया है।

उदाहरण देशे समस्तमतपन्थमहाधुरीणै -
राचार्यवर्ययतिमौनिः धुरन्धरैश्च ॥ (135)

इस खण्डकाव्य की रचना में कविवर से कुछ दोष रह गए हैं जैसे कि एक ही श्लोक या पद्य की पुनः आवृत्ति होना। श्लोक 17 व 38 समान हैं, तथा श्लोक 359 व 379 समान है।

कुछ श्लोकों में मुद्रण दोष भी दृष्टिगत होता है जैसे कि श्लोक 222 व 224 में मुस्लिम शब्द के स्थान पर मस्लिम मुद्रित है श्लोक 248 में दयितुं के स्थान पर डयितुं लिखित है।

कुछ दोष दृष्टिगत होने के बावजूद भी यह खण्डकाव्य कवि की लेखनी की निपुणता का परिचायक है। इस काव्य के माध्यम से राम जन्म भूमि तथा बाबरी मस्जिद के विषय में रोचक जानकारी हमें प्राप्त होती है किसी भी संस्कृत विद्वान द्वारा शायद ही ऐसे ज्वलंत मुद्दे को अपनी रचना का विषय चुना गया होगा। यह ऐतिहासिक खण्डकाव्य हमें इतिहास से जोड़ने के साथ ही साथ राजनैतिक घटनाओं से भी अवगत कराता है।

द्वितीय अध्याय इन्दिरापतनोत्थानम्

(i) सामान्य परिचय -

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ने में ऐतिहासिक काव्य 'इन्दिरापतनोत्थान' की रचना की। रेणापुरकर जी ने इस काव्य की विषयानुक्रमणिका को 21 भागों में विभक्त किया है। सर्वप्रथम "किञ्चित्प्राक्कथनम्" भाग में काव्य की सामान्य रूपरेखा 22 श्लोकों में प्रस्तुत की है जिसका वर्ण्य विषय इंदिरा के पतन व उत्थान को श्लोकों के माध्यम से माला में पिरोना द्वितीय भाग "भूमिका" में तीनों लोकों के गुरुरहे 'भारतदेश' की महिमा को श्लोकों में वर्णित किया गया है, तथा पं. जवाहर लाल नेहरू तथा लाल बहादुर शास्त्री के बाद इंदिरा जी द्वारा प्रधानमंत्री पद को सुशोभित करने का वर्णन किया गया है। तृतीय भाग सत्तासङ्घर्ष कांग्रेस विभाजन च में अष्ट श्लोकों में इंदिरा जी के प्रति विरोध प्रकट करने वाले मंत्रियों को पदच्युत करने का वर्णन किया गया है साथ ही कांग्रेस के विभाजन को भी दर्शाया गया है। चतुर्थ भाग "बांग्ला मुक्ति संग्रामः" में सात श्लोकों में पाकिस्तान द्वारा अमेरिका के एण्टरप्राइज नामक विशालपोत की सहायता से (बंगाली जनता की सहायता करने के कारण) भारत पर आक्रमण किया गया तथा भारत का रूस के सहयोग से प्रत्युत्तर देने का वर्णन है। पंचम भाग 'देशे घोराशान्तिः' में बारह श्लोकों में देश में बेरोजगारी, आकाश छूने वाली महंगाई, भ्रष्टचार, आर्थिक विषमता के कारण फैली अशान्ति का वर्णन है। "अलाहबादोच्चन्यायालयस्य निर्णयः" नामक षष्ठ भाग में इंदिरा जी का उच्च न्यायालय के निर्णय की अवज्ञा के कारण पतन की शुरुआत का वर्णन है। "आपातकाल घोषणा" नामक सातवें अध्याय में 18 श्लोकों में इंदिरा जी द्वारा उच्च न्यायालय के विरुद्ध जाकर देश में आपातकाल की घोषणा का वर्णन किया है। जिसमें तत्कालीन गृहमंत्री, सूचना प्रसारण मंत्री आदि द्वारा इंदिरा जी को पूर्ण सहयोग देने का वर्णन है। "आपातकालवर्णनम्" नामक आठवें भाग में 25 श्लोकों में आपातकाल का वास्तविक वर्णन किया गया है। "निर्वाचनघोषणा" नामक नवें अध्याय में 72 श्लोकों में आपातकालीन के लम्बे समय के अन्त तथा इंदिरा जी द्वारा निर्वाचन की घोषणा करने का वर्णन है। "जनतापक्षनिर्माणम्" नामक दसवें भाग में तीन श्लोकों में जयप्रकाश जी के नेतृत्व में जनता दल के गठन का वर्णन है। "निर्वाचनसङ्गरः नामक" 11 वें अध्याय में 7 श्लोकों से निर्वाचन के लिए जनता के समक्ष उपस्थित कांग्रेस व जनता दल का वर्णन है। "कांग्रेसजनानां पक्षत्यागः" नाम के 12 वें अध्याय में 19 श्लोकों में इंदिरा जी के सहयोगियों का भी इंदिरा को छोड़ जाने का, जगजीवन राम द्वारा इंदिरा की जनतंत्र विरोधी एकाधिकार प्रणाली की आलोचना का वर्णन है। "कांग्रेसपक्षस्य परापूर्णः" नामक तेरहवें भाग में 13 श्लोकों में इन्दिरा गांधी और कांग्रेस दल की पूर्ण पराजय का वर्णन है। 30 वर्षों के पश्चात् भारत में एक नूतन प्रातःकाल का उदय हुआ था।

“जनतादलशासनम्” नामक 14 वें अध्याय में 6 श्लोकों में निर्वाचन प्रक्रिया के बाद सत्ता में जनता दल के नायक के रूप में मोरार जी देसाई ने शासन की बागडोर संभाली। “जनता पक्षे मतभेदाः” नामक पन्द्रहवें अध्याय में 7 श्लोकों में विभिन्न दलों से मिलकर बने जनता दल में विरोधाभास प्रारंभ होने का वर्णन है। जनता पक्ष के नेताओं की सत्तास्पर्धा ने दल को बिखेरने में कोई कसर नहीं छोड़ी। “मोरारजीनां त्यागपत्रम्” नामक सोलहवें अध्याय में 11 श्लोकों में मोरार जी द्वारा सांसदों की घटती हुई संख्या को देखकर त्यागपत्र देने तथा चौधरी चरण सिंह की सलाह पर राष्ट्रपति द्वारा संसद को भंग करने का वर्णन है। “मध्यावधिकं वरणम्” 17वें भाग में मध्य अवधि में करवाए जाने वाले अवांछनीय निर्वाचन का वर्णन है क्योंकि राष्ट्रपति महोदय ने जनता पक्ष के नेता को सरकार बनाने का अवसर ही प्रदान नहीं किया। “निर्वाचनप्रचारः” नामक अठ्ठारहवें भाग में 18 श्लोकों में इंदिरा जी द्वारा सत्ता में आने के लिए जनता के समक्ष अनेक विचार प्रकट करते हुए प्रचार-प्रसार किया गया। “मतदान परिणामश्च” नामक उन्नीसवें भाग में 44 श्लोकों में विपरीत कठिन परिस्थितियों में अनेक आयोगों और न्यायालयों में दोषी ठहराए जाने पर भी पुनः सत्ता में आने का वर्णन किया है। अंतिम दो अध्यायों में अनुवाद तथा संदर्भ प्रस्तुत किए गए हैं।

(ii) विवेचन एवं विश्लेषण

भूमिका

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर द्वारा में ऐतिहासिक काव्य “इन्दिरापतनोत्थानम्” लिखा गया। उस समय पाशों में बंधी हुई भारतभूमि को मुक्त कराने के लिए बहुसंख्यक भारतवासियों ने प्राण त्याग दिए। अनेक माताओं ने अपने सुपुत्रों को खोया तब कहीं जाकर स्वतंत्रता का परचम भारत की धरा पर लहरा पाया। “जिस प्रकार काली रात के बाद सूरज की किरणें जीवन में प्रकाश लाती हैं उसी प्रकार अनेक प्रयासों के फलस्वरूप यह स्वतंत्रता प्राप्त हुई क्योंकि समय हमेशा एक समान नहीं रहता है कभी बुरे दिन तथा कभी अच्छे दिन होते हैं।

नैकेः सोढाः कठिनकठिना यातना नारकीया ¹

बद्धा विद्धा अपि च शतशो घातिताः शूरवीराः ।।

नैके भार्यातनयापितरो दुर्भगानायस्त्रिन्नाः

स्वातन्त्र्यश्रीः खलु वरयते त्यागहौतल्म्यपूतान् ।। (3)

इस श्लोक में अर्थान्तरव्यास अलंकार के प्रयोग द्वारा अपनी बात की पुष्टि की गई कहा गया है कि - स्वतंत्रता की प्राप्ति लक्ष्मी के त्याग तथा शूरवीरों के बलिदानों से ही सकती हो है।

भारतीयों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सौ वर्षों तक संघर्ष किया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में यह स्वतंत्रता उसी प्रकार प्राप्त हुई जिस प्रकार राहु के पाशों से चन्द्रमा मुक्त होता है।

‘देशो मुक्तो ब्रिटिशनिगडाद् राहुपाशदिवेन्दुः’² (4)

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पं. जवाहर लाल नेहरू के रूप में 18 वर्षों तक एक कुशल नेतृत्व हमारे देश को प्राप्त हुआ। उसके बाद लाल बहादुर शास्त्री जी द्वारा छोट्टे से कार्यकाल में ही देश को बुलंदियों तक पहुँचा दिया गया किन्तु ताशकन्द में उनकी मृत्यु के पश्चात् प्रमुख नेताओं ने गाँधी परिवार की पुत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को ये नेतृत्व सौंपने का निर्णय लिया।

यहीं से प्रारम्भ हुआ यह ऐतिहासिक काव्य इसमें इन्दिरा गांधी के पतन और उत्थान को इस तरह सजीव रूपेण वर्णित किया गया है जैसे हम उस समय को अपने सम्मुख देख रहे हो।

सत्तासंघर्ष5 काँग्रेसविभाजन च

1969 में श्रीमती इन्दिरा गांधी जी द्वारा अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए अनेक अनुचित कृत्य किए गए जो कि किसी देश के महामंत्री पद पर सुशोभित व्यक्ति के लिए अशोभनीय है।

इन्दिरा जी द्वारा मोरार जी देसाई को वित्तमंत्री पद से पदच्युत कर बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया तथा विरोध प्रकट करने वाले मंत्रियों को अपने मंत्रिमण्डल से तिरस्कृत कर निकाल दिया गया। इंदिरा जी द्वारा सबसे अधिक अशोभनीय कार्य जो कि सम्पूर्ण विश्व के लोकतंत्र के इतिहास में शायद ही कोई दूसरा हो। जब अपने ही प्रस्तावित प्रत्याशी (संजीव रेड्डी) को राष्ट्रध्यक्ष पद से गिराया गया।

राष्ट्राध्यक्षप्रमुखपदनिर्वाचनेऽष्टाब्दपूर्व³

निन्द्यं स्वप्रस्तुतवरपद प्रार्थिभङ्गस्य कार्यम्।

निह्नीकं यद् विहितमनया स्वार्थमात्रैवृत्या

तस्यौपम्यं न खलु निखिले लोकतन्त्रेतिहासे।। (13)

इंदिरा जी द्वारा किए गए निन्दनीय कार्यों के फलस्वरूप उनके नवीन साथियों द्वारा नेहरू और गांधी के प्रिय कांग्रेस दल का नए और पुराने ऐसे दो दलों में विभाजन कर दिया गया। परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने के लिए से गरीबी हटाओं का नाश सामन्तो का वेतन बंद करना आदि कार्य करके चुनावों में विजय प्राप्त की गई।

दैव्यं दूरीकुरुत विषयादित्थमुद्घोष्य घोषं⁴

भूभृत्तेः सपदि विरतिं वित्तकोषदिकानाम्।

राष्ट्रायत्तीकरण सदृशान्नाटकीयानुपायान्

कृत्वा निर्वाचमपि च सा सर्वदेशे जिगाय।। (17)

बाङ्ग्लामुक्तिसङ्ग्रामः जहाँ एक ओर इंदिरा जी द्वारा अशोभनीय कृत्य किए गए वहीं दूसरी ओर बांग्ला मुक्ति संग्राम में उन्होंने दुनिया के समक्ष अपना लोहा मनवा लिया।

जब पाकिस्तानी शासकों से भयभीत बंगाली जनता को भारत द्वारा आश्रय दिया गया तब पाकिस्तान द्वारा अमरीका की सहायता लेकर भारत पर हमला कर दिया गया। तब जवाबी हमले के तौर पर भारत ने रूस से 20 वर्षों की सन्धि करके पाकिस्तान पर हमला कर दिया और पन्द्रह दिनों में ही विजय प्राप्त कर ली।

बांग्लावासियों की मुक्ति के लिए पाकिस्तान से किए गए युद्ध में विजय प्राप्त करने पर इंदिरा जी की यशः गाथा सम्पूर्ण विश्व में फैल गई। इंदिरा जी की अद्वितीय राजनीतिक निपुणता और कुशलता से सब परिचित हो गए “इस पृथ्वी पर आज तक सभी युद्ध स्वार्थसिद्धि, के लिए हुए किन्तु दासता में जकड़े मानवों की मुक्ति के लिए किया गया यह प्रथम युद्ध था।” जिस प्रकार प्राचीन काल में लंका की मुक्ति के लिए श्री राम चंद्र द्वारा युद्ध किया गया उसी तरह इस युग में बांग्लादेश की मुक्ति के लिए इंदिरा गांधी द्वारा युद्ध किया गया।

स्वार्थापूर्त्यै भुवि बहुतराः सङ्गराः सम्बभूवु-⁵
 दास्याबद्धव्याथितजनुमुभ्यै तु नूनं दुरापेः।
 लङ्कामुभ्यै रघुवरकृत सङ्गर पूर्वकाले
 बाङ्ग्लामुक्त्ये पुनरिह चकारेन्द्रिरागान्धिवर्या।। (24)

“देश घोराशान्तिः” बांग्लावासियों को दासता से मुक्त करा के इन्दिरा जी ने एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व की छवि दुनिया के समक्ष प्रकट की। किन्तु बांग्लादेश से आए शरणार्थियों को शरण देने के कारण पहले से डामाडोल भारत की अर्थव्यवस्था ओर अधिक चरमरा गई। भ्रष्टाचार ओर महँगाई दिनोदिन बढ़ने लगी। इसके उपाय खोजने के उद्देश्य से जयनारायण प्रकाश द्वारा प्रस्तावित सहयोग भी इंदिरा जी द्वारा ठुकरा दिया गया। तब जयप्रकाश जी द्वारा ‘नवनिर्माण’ नामक आंदोलन प्रारंभ किया गया जिसका प्रारंभ गुजरात में हुआ। युवकों तथा छात्रों द्वारा इस आंदोलन का पूर्ण समर्थन किया गया।

इंदिरा जी द्वारा इस आंदोलन को तथा युवाओं की आवाज को दबाने के लिए कर षडयन्त्र रचा गया। जयप्रकाश जी जैसे क्रान्तिवीर को देशद्रोही कहकर भर्त्सना की गई। तब जयप्रकाश जी द्वारा पटना में एक मौन और शान्त जुलूस निकाला गया जिस पर पुलिस ने आक्रमण क्रूर निर्दयतापूर्वक प्रहार किया। इस क्रूर कृत्य से सम्पूर्ण भारत वर्ष में रोष व्याप्त हो गया तभी एक अपूर्व और आश्चर्यजनक घटना घटित हुई। यहीं से इंदिरा जी का पतन प्रारंभ हुआ -

अहलाबादोच्चन्यायालयनिर्णयः -

तस्या निर्वाचनविषयको राजनारायणेन ⁶
 हुच्चन्यायालयपुर उपस्थितोऽसौ विवादः
 तस्य भ्रष्टचरणवशतो निश्चितस्तद्विरुद्धं
 तत्प्रार्थित्वं ह्यपि च वरणे वर्षषट्काया रूद्धम।। (37)

अहलाबाद उच्च न्यायालय द्वारा इंदिरा गांधी के विरुद्ध चलाया गया अभियोग निर्णित हुआ और भ्रष्टाचार के कारण 6 वर्ष के लिए उनको निर्वाचन के अयोग्य घोषित

किया गया। इन्दिरा जी द्वारा यह निर्णय स्वीकार करने की अपेक्षा इस निर्णय के विरुद्ध देश में जनसभाएँ आयोजित की गईं।

जिस प्रकार मदमत्त हाथी को कुछ नहीं समझ आता ठीक उसी तरह सत्ता के मद में चूर इन्दिरा जी द्वारा उच्च न्यायालय के निर्णय को भी स्वीकार नहीं किया गया। सभी दलों के नेताओं ने इन्दिरा जी को उच्च न्यायालय का सम्मान करते हुए सत्ता का परित्याग करने की सलाह दी। अपने पुत्र संजय तथा चापलूस मंत्रियों द्वारा प्रधानमंत्री पद का त्याग न करने के लिए इन्दिरा जी को प्रेरित किया गया।

जयप्रकाश जी द्वारा देश की जनता को समझाने के लिए तथा लोकतंत्र का सम्मान रखने के लिए दिल्ली में 25 जून 1975 को एक विशाल जनसभा का आयोजन किया। भारतीय जनता को एकतंत्र को रोकने हेतु संघर्ष करने के लिए आह्वान किया गया। 25 जून 1975 की ही रात को जयप्रकाश जी को उसी प्रकार बन्दी बना लिया। जिस प्रकार बाज सोते हुए उसी प्रकार पक्षियों को पकड़ लेता है।

सम्बोध्यामू बहुजनसभां पञ्चविंशे दिनाङ्के 7
रात्रौ यावत् गृहमुपगताः सप्तमात्रश्च किञ्चित्।
आक्राम्यारक्षकजनगणैस्तावेदेवावरुद्धाः
श्येनक्रान्ता इव खगगणां नीडलीना निशीथे।। (45)

आपातकालघोषणा -

इसके बाद आपातकाल का समय आया जब सभी प्रमुख नेतागण को बन्दी बना दिया गया। प्रातःकाल ही आपातकाल की निर्दयतापूर्वक घोषणा कर दी गई।

जिस प्रकार देवकी की विदाई वेला पर आकाशवाणी हुई उसी तरह भारतभूमि पर भी आपातकाल की घोषणा करने वाली भीषण आकाशवाणी सभी ने सुनी।

इन्दिरा जी द्वारा अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए देश के निरपराध नेताओं को कारागार में उसी प्रकार डाल दिया जिस तरह कंस ने देवकी और वसुदेव को डाला था।

आंग्लशासन में भी जो कार्य नहीं हुआ था इन्दिरा जी द्वारा ओमेंथा, विद्याचरण शुक्ल, आर.के. धवन, बंसीवाल तथा पुत्र संजय गांधी के सहयोग से ये अत्यन्त क्रूर तथा मानवताहीन कार्य किया गया इन समस्त क्रूर कृत्यों में इन्दिरा जी का साथ उनके सुपुत्र द्वारा दिया गया। विद्याविहीन गुणहीन अहंकारी तथा प्रधानमंत्री का पुत्र होना ही जिसकी योग्यता थी।

एक सञ्जय महाभार के युग में हुए थे जिन्होंने अपने बन्धु बान्धवों को भी दिव्य दृष्टि प्रदान की थी और एक ये कलियुग में जन्म लेने वाले सञ्जय जिन्होंने माता की भी दृष्टि छीन ली। दोनों ही संजय कितने विपरीत गुण तथा स्वभाव को धारण करने वाले हैं।

स्वार्षेयप्रातिभविमलया दिव्यदृष्ट्या सनाथः⁸

पूर्व भूतो भरतविषये द्वापरे सञ्जयोऽसौ।

अन्धीभूतानपि निजजनान् दृष्टियुक्ताश्चकार

हा हन्तायं कलियुगभवो मातृदृष्टि जहार।। 57 ।।

जब इन्दिरा जी के कृत्यों की तुलना नेहरू के महान कार्यों से की जाती है तब पिता और पुत्री के व्यवहार की भिन्नता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

प्रभु रामचन्द्र ने अपनी प्रजा के लिए निष्पाप, सच्चरित्र, सीता का भी त्याग कर दिया था। वहीं इंदिरा गांधी ने इसके विपरीत अपने पुत्र के लिए प्रजा को छोड़ दिया। इसलिए यह कहना उचित है कि त्रेतायुग और कलियुग के बीच का अन्तर बहुत बड़ा है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बात की जाए तो अधिकांश नेतागण अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ही कार्य करते हैं जनता के सुख, दुःख, भावनाओं की कद्र, परवाह नहीं करते हैं।

आपातकालवर्णनम् -

“25 जून 1975” को ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों 1942 में महात्मा गांधी द्वारा अंग्रेजों के पाशों में जकड़ गया था “क्योंकि भारत में आपातकाल की घोषणा कर दी गई। देश के प्रमुख नेता बन्दी बना लिए गए। जिस किसी नेता ने कर्मियों को भड़काने वाले भाषण में सहयोग किया उन सभी को बन्दी बनाया गया।” (अनिता गौड हिन्दू पॉकेट बुक्स 2011 इन्दिरा गांधी पृ.सं. 46)

इन्दिरा गांधी के मतानुसार आपातकाल का एक ही उद्देश्य था देश को अव्यवस्था से बचाना और आर्थिक हालात सुधारना, इसके लिए अधिक समय की जरूरत थी, अतः इन्दिरा जी के सुझाव पर लोकसभा की अवधि बढ़ा दी गई।

न्यायालय के डर से मुक्त सर्वाधिकार प्राप्त मनस्ताप की भावना से हीन, नीति और धर्म से रहित भ्रष्ट राज्याधिकारियों के द्वारा निष्पाप जनता को नाना प्रकार के कष्ट दिए गए। जिन व्यक्तियों ने ये यातनाएँ सहन की उनमें स्नेहलता रेड्डी और लॉरेन्स फर्नाण्डिस जैसे लोग उदाहरण हैं।

आपातकाल के समय ही बढ़ती जनसंख्या पर अंकुश लगाने के लिए परिवार नियोजन के कार्य चलाए गए। जिसके तहत जबरन ही लोगों की नसबन्दी कर दी। जिससे लोग आक्रोशित हो गए।

आपातकाल के ही दौरान इन्दिरा के पुत्र संजय द्वारा तानाशाह शासन किया गया यह बात “शाह आयोग” के समक्ष उत्पन्न साधियों से स्पष्ट हो गई थी। दिल्ली को सुंदर शहर बनाने के नाम पर असंख्य गरीबों की झोपड़ियों को ढहा दिया गया। “तुर्कमान गेट” पर गोलीबारी में अनेक लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

इसी समय में भूदान आन्दोलन के जनक ‘श्री विनोबा भावे’ जी से लोगों को बहुत उम्मीदें थी पर उन्होंने इस क्रूर कृत्य को अत्यदभुत अनुशासन पर्व की संज्ञा देकर खुद को उनसे दूर कर लिया। चारों ओर नजर आने वाली यह शान्ति तूफान से पहले की शान्ति थी। उन्नीस महीनों की इस काली रात के बाद चुनाव की घोषणा के साथ ही नवीन सूर्य का उदय हुआ। **निर्वाचन घोषणा**

आपातकाल का अन्त और निर्वाचन की घोषणा के तत्काल बाद सब प्रमुख नेता बन्धनमुक्त कर दिए गए और 1.5 माह के भीतर होने वाले निर्वाचन महासंग्राम के लिए उन्हें जनता के सम्मुख ललकारा गया।

जनतापक्षनिर्माणम् -

“जयप्रकाश नारायण ने लोकतन्त्र की बहाली की घोषणा करने वाली इंदिरा गांधी के खिलाफ “लोकतंत्र बनाम तानाशाही” का नारा दिया। जल्द ही जनता पार्टी के नाम पर एक नए दल का जन्म हुआ।” जनता पार्टी के प्रचार का मुख्य विषय था परिवार नियोजन के नाम पर की गई नौकरशाहों की ज्यादतियाँ। इसी का लाभ उठाकर जनता पार्टी ने “इन्दिरा हटाओ” का नारा दिया और जनता का मन उलटा।

निर्वाचनसङ्गरः -

आपत्काले दलितदगितैर्तनुसर्वाधिकारै - 11

लोकैः सद्यो मुदितहृदयेर्जातशङ्कैश्च किञ्चित्।

प्रत्युद्यतो वरणसमरो लोकतन्त्रैक हेतु -

ध्वान्तक्लिष्टैरिव शशिशकला धर्मतप्तैश्च वर्षा ॥ 100 ॥

इस निर्वाचन की घोषणा जनता के लिए उसी प्रकार थी जिस प्रकार कि अंधकार को दूर करने के लिए चंद्रमा की तथा गर्मी से बचने के लिए वर्षा की कामना की जाती है।

कांग्रेस तथा जनता दल दोनों ने अपने विचार जनता के समक्ष प्रकट किए। फर्क सिर्फ इतना था कि एक 12 वर्ष पुराना दल था एक 1.5 माह पूर्व निर्मित नवीन जनता दल था। फिर भी चुनाव शान्तिपूर्वक हुए भारी बहुमत से जनता पार्टी की जीत हुई थी। कांग्रेस और इन्दिरा जी की बुरी तरह हार हुई जिसकी कल्पना भी नहीं की गई थी।

ये घटना चक्र कुछ इस तरह चला-इंदिरा गांधी के मंत्रिमण्डल के प्रमुख नेताओं जगजीवन राम, हेमवतीनन्दन बहुगुणा, नंदिनी सत्पथी ने दूसरे कई नेताओं के साथ कांग्रेस की नीतियों का विरोध करते हुए त्याग कर दिया। यहाँ तक कि इन्दिरा जी की भुआ श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित भी उनके जनमत विरोधी और एकतंत्रीय प्रणाली से तंग आकर अपनी भांजी के विरुद्ध संग्राम में उतर गई जिससे इन्दिरा उद्विग्न और भयभीत हो गई।

तस्याः ख्याता जनकभगिनी पण्डितोपाह्वलक्ष्मी - ¹²

निर्विण्णा तज्जनमतविरोध्येकतन्त्रप्रणाल्याः।

स्वभ्रात्रीयां वरणसमरे योद्धमावर्ततासौ

तेनोद्भ्रान्ता चकितचकिता गान्धिवर्या बभूव। (119)

कांग्रेसपक्षस्य पूर्णः पराभवः

इस उद्विग्नता में इंदिरा जी ने निर्वाचन को निरस्त करवाने के अनेक प्रयास किए तथा इसमें सफल न होने पर भ्रष्ट तरीके से रिश्वत देकर झूठी अफवाएँ फैलाकर लोगों को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया। आपातकाल में हुए अत्याचारों के लिए जनता से क्षमायाचना की परन्तु वास्तव में तो उनके व्यक्तित्व का देदीप्यमान सूर्य अस्ताचल को प्राप्त हो गया था।

जब जनता दल की जीत हुई तो ऐसा लगा मानो राहू के द्वारा निगला गया भारतभूमि रूपी चंद्रमा मुक्त हो गया तथा पूर्णिमा का चंद्रमा जगमगाने लगा। यहाँ उपमा अलंकार के माध्यम से राहूपाश से मुक्त चंद्रमा की तुलना जनता दल की जीत से की गई।

अजेय समझी जाने वाली इन्दिरा गांधी तथा उनके पुत्र को निर्वाचन में परास्त कर उसी प्रकार भस्म कर दिया गया जिस प्रकार प्राचीनकाल में शिवजी की क्रोधाग्नि ने कामदेव को भस्म कर दिया था।

जनतादलशासनम्

जैसा की कहा गया है कि कालचक्र की नेमि से कोई नहीं बच पाया है संसार में सुख और दुःख का चक्र निरन्तर चलता है। भारतीय जनता के लिए सुख का समय तब आया जब लोकतंत्र के बल पर महान क्रान्ति हुई। संजीव रेड्डी राष्ट्रध्यक्ष तथा मोरार जी

देसाई प्रधानमंत्री पद पर आसीन हुए। राजधानी दिल्ली में पवित्र राजघाट पर गांधी जी का स्मरणकर और शपथ लेकर मोरार जी देसाई ने शासन की बागडोर सम्भाली।

भारत के प्रधानमंत्री

■ 24 मार्च 1977 को मोरार जी देसाई ने प्रधानमंत्री का कार्यभार संभाला।

■ 28 जुलाई 1979 को पद से इस्तीफा दिया तब चौधरी जी प्रधानमंत्री बने।

जनता पक्षे मतभेदाः

इस प्रकार जनता दल के शासन में कुछ मास व्यतीत हो गए। कुछ समय बाद ही दल में छुपे हुए पारस्परिक मतभेद और विवाद प्रकट हो किए इन आन्तरिक मतभेदों के कारण शासन शिथिल और ठप्प हो गया और यही जनता की अप्रीति का कारण बना साथ ही जनता दल के नेताओं की सत्ता स्पर्धा भी जनता दल के टूटने में प्रबल कारण थी।

केवल 28 मास के छोटे से समय में विरोधी दल के नेताओं ने संसद में जनता पक्ष के शासन के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव रखा। उस समय स्वार्थी लोगों ने कृत्रिम तथा झूठे कारण बतलाकर ही लोकतंत्र के विरोधियों के साथ संधि ली। खुद के बनाए जनता दल का दमन कर दिया। ऐसा होना स्वाभाविक था क्योंकि राजनीति में हवा का रुख बदलने लगा था। इस आपसी मतभेद से उबरकर 15 जुलाई 1979 को जनता पार्टी सरकार ने त्यागपत्र दे दिया। मोरार जी के त्यागपत्र के पश्चात् 28 जुलाई 1979 को सांसदों की मदद से चौधरी चरण सिंह प्रधानमंत्री बने।

मोरार्जीनां त्यागपत्रं

राष्ट्रपति महोदय को सदन में जनता पक्ष के सबसे बड़े नेता जगजीवन राम को सरकार बनाने का अवसर देना चाहिए था किन्तु चरण सिंह जी की सलह पर राष्ट्रपति महोदय ने अचानक संसद को भंग कर तुरन्त ही निर्वाचन की घोषणा कर दी।

राष्ट्राध्यक्षैः प्रमुखजनतापक्षनेत्रे यथार्थ¹³
दयोऽभूच्छासनविरचनायावकाशस्तदानीम्।
किञ्चिद्विफलचरणरयोपदेशानुसारं
संसद्भङ्गो व्यरचि वरणं तूर्णमुद्घोषितं च ॥ 159 ॥

मध्यावधिकं वरणम् -

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री संजीव रेड्डी द्वारा किया गया यह कार्य सभी के

मन में सन्देह को उत्पन्न करने वाला था ? तथा राष्ट्रपति पद की गौरव महिमा के अनुरूप नहीं था। स्वार्थ की बलि चढ़े जनता पक्ष को दूटते हुए देखकर जयप्रकाश नारायण हतोत्साहित एवं दुःखी होकर मृत्यु को प्राप्त हो गए।

निर्वाचन प्रचार:

इन मध्यावधि चुनावों ने जनता को कशमकश में डाल दिया कि उन्हें किसका साथ देना चाहिए एकतंत्रीय तानाशाही का अथवा जनतंत्र का। परन्तु सर्वाधिक आश्चर्य इस बात का था कि शाह आयोग जैसे आयोगों को फिर से उम्मीदवारी दी गई, यह तो अपराधों के दोषी थे।

शाह आयोग के समक्ष उपस्थित होकर एकतरफ अपराध स्वीकार किया तथा दूसरी ओर लोगों से कहा कि मैंने कोई अपराध नहीं किया। एक और आपातकाल को उन्होंने उचित तथा समायानुकूल बताया तो दूसरी ओर उसके लिए जनता से क्षमा मांगी।

वर्तमान राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी की किताब “द डैमेटिक डिफेंड : द इंदिरा गांधी ईयर्स” में यह खुलासा किया गया है कि -

आपातलाकल लागू करवाने में सिद्धार्थ शंकर रे (पश्चिम बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री) की अहम भूमिका थी। यह उन्हीं का सुझाव था जिस पर इंदिरा गांधी ने अमल किया था।

मुसलमानों के नेता शाही इमाम अब्दुला बुखारी और पक्ष बदलने में अनुपम श्री हेमवती नंदन बहुगुणा जो दोनों पहले इन्दिरा के शत्रु थे। स्वार्थ के वशीभूत होकर, समझौता करके इन्दिरा के साथ मिल गए। जिस प्रकार भंवरा एक फूल से दूसरे पर मंडराता रहता है उसी तरह यह स्वार्थी नेता एक पक्ष को त्यागकर दूसरे को अपना पर लोकतंत्र के अभिशाप को प्रकट कर रहे थे।

विशाल लोकतंत्र को केवल अपने कुल तक ही सीमित करने के लिए जिन्होंने लोगों के मौलिक अधिकारों का भी हनन किया उन लोकतंत्र के हत्यारों को कभी भी अपना मत नहीं देना चाहिए। इस प्रकार लोगों ने इन्दिरा गांधी की अत्यन्त कटु और तीखी आलोचना की।

कर्तुं चात्मान्वयपरिमितं लोकतन्त्रं विशालं¹⁴
सप्तस्वत्व परमदयितं घातितं र्येजैनानाम्।
देयं तेभ्यो नहि निजमतं लोकतन्त्रान्तकेभ्यः
इत्थं लोकैः परुषंपरुषं भर्त्सिता गान्धिवर्या ॥ 184 ॥

मतदानं परिणामश्च

आखिरकार वह दिन आ ही गया जिस दिन जनता को अपना निर्णय लेना था। 3 जनवरी और 6 जनवरी का समय आ गया जो इंदिरा के लिए पुण्यकाल था। जनता पक्ष की सोच के विपरीत चारों दिशाओं में इन्दिरा के नाम की लहर चल रही थी। जिसमें जनता पक्ष रूपी बड़ा वटवृक्ष भी धराशायी हो गया था।

जिस प्रकार श्री राम ने अश्वमेघ यज्ञ से महान दिग्विजय को प्राप्त किया था उसी तरह इन्दिरा जी ने भी महान दिग्विजय को प्राप्त किया था।

चित्रं! चित्रं! निखिलविषये नूनमासेतुशैलं ¹⁵
तस्या निर्वाचनरणमखरस्याश्वमेधीयसप्तिः।
सर्वत्रैवप्रतिधतगतिर्मुक्तगात्या दधाय
स्वल्पेकाले ह्यतुलविपुलं दिग्जयं सा चकार।। 189।।

जिस प्रकार रेगिस्तान में प्यासे व्यक्ति को मृगमारीचिका के कारण जल नहीं होते हुए भी जल नजर आता है उसी तरह जनता पक्ष के लिए भी यह चुनाव जीतना मृगमारीचिका के समान एक झूठा दृश्य साबित हुआ। विपक्ष के श्रेष्ठ नेता एवं कीर्तिशाली बड़े-बड़े सांसद सभी इन्दिरा जी के नाम मात्र से पराजित हो गए।

अनेक आयोगों और न्यायालयों के द्वारा दोषी ठहराए जाने पर भी केवल तीस महीनों के भीतर लोकतंत्रानुसार इन्दिरा गांधी का फिर से सत्ता में आना निश्चय ही विश्व इतिहास में अद्वितीय घटना है।

सर्वास्वेवं विकट विपरीतासु नूनं दशासु ¹⁶
नैकायोगाधिकरण समाक्षिप्तकृच्छार्दितायाः।
त्रिशन्मासवधिकसमये लोकतन्त्रानुसारं
सत्ताप्राप्तिः सकलभुवने नूनमस्त्यद्वितीया।।194।।

इंदिरा जी की इस अभूतपूर्व सफलता से प्रसन्नचित लेखक ने अनेक उपमाओं से उनका अभिनन्दन किया है। जैसे - धैर्यादि गुणों की साक्षात् मूर्ति, रण संग्राम में प्रत्यक्ष चामुण्डा, अजेय शक्ति का पहाड, उत्साह की सरिता, स्वाभिमान का पुञ्ज, विपत्तियों में सर्वोत्कृष्ट आदि।

जनता द्वारा इन्दिरा जी को पुनः सत्ता में लाने का फैसला आश्चर्यचकित करने वाला किन्तु सत्य था क्योंकि जनता दल के शासन में, शासन का अभाव तथा चौधरी चरण

सिंह के प्रधानमंत्री काल में आसमान को छूने वाली महुँगाई, आन्तरिक कलह के कारण विभक्त तथा निष्क्रिय शासन को जनता स्वीकार नहीं कर सकती थी।

इन सबसे बढ़कर शिथिल जनता पक्ष को देश की रक्षा करने में असमर्थ पाकर और देश की उत्तरीय सीमा पर आपत्ति के बादलों को मंडराते हुए देखकर वास्तव में लोगों ने इन्दिरा जी के नेतृत्व को चुना।

परमात्मा की कृपा से प्राप्त सत्ता को अपने हाथों से जाने देकर जनता ने न केवल अपना ही सर्वनाश कर लिया बल्कि जनता के साथ विश्वासघात भी किया। श्रेष्ठ सिद्धांतों के द्वारा प्राप्त की गई जीत दीर्घकाल तक रहने वाली होती है जबकि तत्त्वों को त्यागकर प्राप्त होने वाली जीत अल्पकाल के लिए होती है इसलिए भारतवर्ष के उत्कर्ष को चाहने वालों को स्वार्थमूलक नियमरहित और सिद्धान्तहीन राजनीति का सर्वथा परित्याग कर देना चाहिए।

सत्तत्वानां रुचिरविजयो भातति कालान्तरेण ¹⁷

तत्त्वत्यागात्कलितविजयः केवलं स्वल्पजीवी।

स्वार्थयत्ता नियमरहिता तत्त्वहीना च नीति -

नूनं त्याज्या भरतविषयोत्कर्षकामैर्न यज्ञैः।। 214।।

जनता के द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों के द्वारा केवल स्वार्थ के लिए पक्ष का त्याग और जनता की सम्मति के बिना अचानक रात में ही दल परिवर्तन लोकतंत्र की हत्या है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो भ्रष्ट राजनेता केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए दल का परिवर्तन इस तरह से करते हैं जैसे कोई कपड़े पुराने हो जाने पर उनको फेंक देता है।

सत्ता प्राप्ति के बिना जिनका ओर कोई लक्ष्य नहीं है, बिना पानी की मछली के समान सत्ता को छोड़कर जीवित नहीं रह सकने वाले सत्ता से मतिभ्रष्ट राजनीतिज्ञों को धिक्कार है। अपने बेकार स्वार्थ की पूर्ति के लिए राजनेताओं की निर्लज्जतापूर्वक दल परिवर्तन तथा बिकाऊ प्रवृत्ति यदि उचित और सभी के द्वारा मान्य है तो फिर वेश्यावृत्ति में लिप्त महिलाओं द्वारा भोजन के लिए किया गया निन्दनीय कृत्य भी ग्राह्य होगा। यदि नहीं तो फिर ऐसे राजनेताओं को भी स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए।

जनता ने स्पष्ट बहुमत से इन्दिरा जी को शासन की बागडोर सम्भला तो दी लेकिन वहीं धूर्तों का कुप्रसिद्ध मंडल फिर से शासन में विराजमान हो गया जिनमें नीति नियमों की अवहेलना करना एकाधिकार वृत्ति, संचालित शासन की उपेक्षावृत्ति आज भी कायम है। इसके लिए जनता को सावधान रहने की आवश्यकता थी।

चुनाव में हारे हुए माननीय जनों को इस पराजय के दुःख को अपने मन से निकाल कर सेवाभाव से युक्त हृदय से विरोधी दल का संवर्धन करना चाहिए क्योंकि आने वाले समय में उन्हें फिर से शासन में आने का मौका प्राप्त हो सकता है। “सूर्य फिर से उदय होने के लिए ही अस्त होता है” वैसे भी सत्ता ही केवल सेवा का मार्ग नहीं है सत्ता से हीन मनुष्य भी जनसेवा में लीन रह सकता है केवल व्यक्ति के विचारों में शुद्धता होनी चाहिए, वह सेवा भावी होना चाहिए।

“इन्दिरापतनोत्थानम्” नामक इस ऐतिहासिक काव्य में हमने भारतवर्ष में होने वाले अनेक परिवर्तनों को देखा। सत्तालोलुप राजनीतिज्ञों के स्वार्थपरक व्यवहार को जाना। इन्दिरा के साहसिक कृत्यों तथा निन्दनीय कृत्यों को भी जाना केवल इतना कहना उचित होगा की के द्वारा किए साहसिक कार्यों से वह जनता के प्रेम की भागीदार बन सकी। निन्दनीय कृत्यों के कारण जनता के कोप का भाजन भी बनना पड़ा। इन्दिरा जी के शासन काल में जहां भारत ने बुलंदियों को छुआ वहीं आपातकाल के घोर निन्दनीय कृत्य ने उनकी छवि को धूमिल भी किया। फिर भी यह कहा जा सकता है कि इन्दिरा जैसी सशक्त महिला का नेतृत्व भारत को प्राप्त हुआ जो भारत की जनता के लिए अविस्मरणीय काल था। जिसमें अनेक उतार चढ़ाव आए जिन्हें सभी ने मिलकर व्यतीत किया।

(iii) वैशिष्ट्य

उत्कृष्ट विचारों के धनी, प्रगाढ़ कुशल लेखनी वाले प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने 'इन्दिरापतनोत्थानम्' नामक खण्डकाव्य की रचना 2006 में की थी। इस ऐतिहासिक खण्डकाव्य की रचना का विषय इंदिरा जी के जीवन से जुड़ी समस्त घटनाएँ हैं। इंदिरा जी ने किस प्रकार अपने नैतिक मूल्यों को दरकिनार करते हुए राजनीतिक कदम बढ़ाए तत्पश्चात अपने दृढ़ संकल्प शक्ति तथा उत्कृष्ट विचारों का लोहा मनवाते हुए जनता के दिल में जगह बनायी। इन सभी घटनाक्रमों को रेणापुरकर जी ने माला की तरह इस काव्य में पिरोया है।

छन्द प्रयोग -

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने अपनी काव्य परम्परा को बढ़ाते हुए इस खण्डकाव्य में एक ही छन्द "मन्दाक्रान्ता" का प्रयोग किया है जिसका उल्लेख उन्होंने स्वयं ही खण्डकाव्य के प्रारम्भ में कर दिया है।

1. मन्दाक्रान्ता

लक्षण - मन्दाक्रान्ताम्बुधि रसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।
उदाहरण स्वर्गयाते भुवनदयिते श्रीजवाहरलाले
रिक्तस्थाने निपुणनयविच्छस्त्रिवर्यो नियुक्तः।
सार्धाब्दीये लघुतमहामात्यकाले यदीये
जित्वा शत्रुन् पुनरपि बभूवाप्रधृष्यं स्वराष्ट्रम्।।

अलंकार प्रयोग -

1. अर्थान्तरन्यास अलंकार -

लक्षण सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्मासः साधर्म्येणतरेण वा।।
उदाहरण नैकैः सोढाः कठिनकठिना यातना नारकीया
बद्धा विद्धा अपिच शतशो घातिताः शूरवीराः।
नैके भार्यातनायपितरो दुर्भंगानायखिन्नाः
स्वातन्त्र्यश्रीः खलु वरयते त्यागहौतत्म्यपूतान्।।

प्रस्तुत श्लोक में अपनी बात की पुष्टि के लिए लेखक ने यह पंक्ति लिखी है "स्वतन्त्रता की प्राप्ति लक्ष्मी के त्याग तथा शूरवीरों के बलिदान से ही हो सकती है।

2. उपमा अलंकार -

लक्षण -	प्रस्फुटं सुन्दरं साम्यमुपमेत्यभिधीयते ।
उदाहरण	अन्ये शताब्दिकखररणो भारतीयोऽद्वितीयः सत्याहिंसाशमदममये गान्धिवर्याधिपत्ये । त्रिंशद्वर्षावधिकसमयात् प्राक् समाप्तिं जगाम देशो मुक्तो ब्रिटिशनिगडाद् राहुपाशादिवेन्दुः । ।

यहाँ इस श्लोक में अंग्रेजी की कैद की उपमा राहु के पाश से तथा भारत की चन्द्रमा से की है। जिस प्रकार राहु के पाश से चन्द्रमा उपमा मुक्त होता है उसी प्रकार अंग्रेजों के पाश से भारत स्वतंत्र होता है।

3. दृष्टान्त अलंकार -

लक्षण	दृष्टान्तः पुनरेतेषां सवेषां प्रतिबिम्बनम्
उदाहरण	स्वार्थापूर्त्वे भुविबहुतराः सङ्गराः सम्बभूवु - दास्या बद्धव्याथितजनमुक्त्यै तु नूनं दुरापः । लङ्कामुक्त्यै रघुवरकृतं सङ्गरं पूर्वकाले बाङ्गलामुक्त्यै पुनरिह चकारेन्दिरागान्धिवर्या । ।

प्रस्तुत श्लोक में रामचंद्र जी के लंका की मुक्ति के लिए किए युद्ध का वर्णन दृष्टान्त रूप में किया है। उसी के समान इंदिरा जी द्वारा बांग्लामुक्ति के लिए युद्ध किया गया।

उदाहरण	चित्रां चित्रं! निखिलविषये नूनमासेतुशैलं तस्यां निर्वाचनरणमखरस्याश्वमेधीयसप्ततिः । सर्वत्रैवाप्रतिहतगतिर्मुक्तगत्या दधाव स्वल्पे काले ह्यतुलविपुलं दिग्जयं सा चकार । ।
--------	---

प्रस्तुत श्लोक में श्री राम चन्द्र जी द्वारा अश्वमेघ यज्ञ से दिग्विजय प्राप्त करने का दृष्टान्त इंदिरा के दिग्विजय के पक्ष में दिया है।

उदाहरण	सर्वास्वेवं विकटविपरीतासु नूनं दशासु नैकायोगाधिकरणसमाक्षिप्तकृच्छ्रार्दितायाः । त्रिंशन्मासावधिक समये लोकतन्त्रानुसारं सत्ताप्राप्तिः सकलभुवने नूनमस्त्यद्वितीया । ।
--------	---

श्लोक में इंदिरा जी की तुलना इतिहास के प्रसिद्ध राजाओं से की गयी है।

4. रूपक अलंकार -

लक्षण

‘तद्रूपक्रमभेदोः यः उपमानोपमेययोः’

चैतन्यानां प्रतिकृतिरसौ शौर्यधैर्यादिमूर्ति
दुर्दम्याशाऽप्रतिमविपुलोत्साहशक्ति प्रतिकम ।
निर्भिका निश्चलदृढतरा घोरकृच्छ्रेष्वभीता
चामुण्डी य समरविकटा कस्य नूनं न वन्द्या ।।

प्रस्तुत श्लोक में चामुण्डीय इव इंदिरा जी को निर्भय, निश्चल, दृढ और निडर बताया है।

5. उत्प्रेक्षा -

उदाहरण

सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत् ।

तस्मिन् काले विषयगगने लोकसन्तापहेतू
राष्ट्राभाग्यदिवसमुदितः सञ्जयो धूमकेतुः
यस्मात्पर्यावरणमभवद् घोरकालुष्यपूर्ण -
मुत्पातश्चाशुभशकुनसंसूचकाः सम्बभूवुः ।।

उस समय राष्ट्र के दुर्भाग्य से ही मानो देश के आकाश में संजय नाम का धूमकेतु उदित हुआ। प्रस्तुत श्लोक में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

इस खण्डकाव्य के माध्यम से श्री रेणापुरकर जी ने भारत के उस दौर को शब्दों में समेटने की कोशिश की है जब पिता-पुत्री की जोड़ी ने दीर्घकाल तक भारत की राजनीति पर राज किया। जहाँ पिता जवाहर लाल नेहरू की उजली छवि ने लोगों का मन मोह लिया वहीं इंदिरा के दुष्कृत्यों ने लोगों के मन को पीड़ा पहुँचायी। इंदिरा ने अपने दुष्कृत्यों से सबक सीखते हुए जनता पक्ष के लिए कार्य करना प्रारंभ किया। सत्ता की लोलुप्ता से बाहर हो गयी। बांग्ला मुक्ति संग्राम में अहम् भूमिका निभायी। तत्पश्चात् जनता का अपार स्नेह पाकर पुनः सत्ता हासिल की।

इस प्रकार रेणापुरकर जी ने इंदिरा के पतन व उत्थान की समस्त घटनाओं को काव्य बद्ध किया है।

सन्दर्भ

पंचम खण्ड - प्रथम अध्याय (श्लोक/पृ.सं.)

1. राममन्दिरविवादः 12/3
2. राममन्दिरविवादः 14/3
3. इतिहास
4. राममन्दिरविवादः 37/8
5. राममन्दिरविवादः 60/12
6. राममन्दिरविवादः 66/14
7. राममन्दिरविवादः 77/16
8. राममन्दिरविवादः 118/24
9. राममन्दिरविवादः 157/33
10. राममन्दिरविवादः 209/45
11. राममन्दिरविवादः 248/54
12. राममन्दिरविवादः 256/56
13. राममन्दिरविवादः 318/69
14. राममन्दिरविवादः 357/77
15. राममन्दिरविवादः 366/79

पंचम खण्ड - द्वितीय अध्याय (श्लोक/पृ.सं.)

1. इन्दिरापतनोत्थानम् 3/6
2. इन्दिरापतनोत्थानम् 4/6
3. इन्दिरापतनोत्थानम् 13/8
4. इन्दिरापतनोत्थानम् 17/9
5. इन्दिरापतनोत्थानम् 24/10
6. इन्दिरापतनोत्थानम् 37/13
7. इन्दिरापतनोत्थानम् 45/15
8. इन्दिरापतनोत्थानम् 57/17
9. हिन्दु पॉकेट बुक्स, 2011, पृ. 46
10. हिन्दु पॉकेट बुक्स, 2011, पृ. 47
11. इन्दिरापतनोत्थानम् 100/26
12. इन्दिरापतनोत्थानम् 119/29
13. इन्दिरापतनोत्थानम् 159/37
14. इन्दिरापतनोत्थानम् 184/42
15. इन्दिरापतनोत्थानम् 189/43
16. इन्दिरापतनोत्थानम् 194/44
17. इन्दिरापतनोत्थानम् 214/48

षष्ठ खण्ड
आन्ताराष्ट्रीय
काव्य संग्रहः
“काव्यनिर्झरः”

षष्ठ खण्ड

आन्ताराष्ट्रीय काव्य संग्रहः - “काव्यनिर्झर”

(i) सामान्य परिचय -

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने वर्ष 2006 में काव्यनिर्झर नामक अन्ताराष्ट्रीय काव्य संग्रह की रचना की। इस काव्य ग्रन्थ की विषयानुक्रमणिका को अष्टविंशतिः भागों में विभक्त किया गया है। सर्वप्रथम “श्री बाजपेयिनाममेरिका यात्रा (1)” नामक काव्य में तथा द्वितीय काव्य “श्री बाजपेयिनाममेरिका यात्रा (2)” में क्रमशः षड्विंशति एवं त्रिंशत् श्लोकों में बाजपेयी जी की अमेरिका यात्रा का वर्णन है। तृतीय काव्य “रमजाने भारतस्य सङ्घर्षविरामः” में सप्तविंशति पद्यों में रमजान के समय भारत में हुए संघर्ष विराम को दर्शाया है। चतुर्थ भाग में भी क्रमशः चतुर्विंशति पद्यों में संघर्ष विराम का ही वर्णन है। तत्पश्चात् पंचम भाग में “गुर्जर महाभूकम्पलहरी” में गुजरात में आए भूकम्प का वर्णन त्रिंशत् श्लोकों में उपलब्ध है। “बांग्लादेशकृतघ्नता” नामक षष्ठ अध्याय में एकविंशति पद्यों में पाक व बांग्ला में हुए युद्ध का वर्णन है। “भारतपाकशिखर संवाद” नामक सप्त अध्याय में षडत्रिंशत् श्लोकों में भारत-पाकिस्तान के मध्य बातचीत का वर्णन है। अष्ट अध्याय “अमीकोपर्यातङ्क वादाक्रमणम्” में नवत्रिंशत् अधिकम् एकशतम् श्लोकों में अमेरिका के उपर आतंकवादी हमले को चित्रित किया है। “संसद भवनोपर्यातङ्क वाद्याक्रमणम्” नामक नवम भाग में भारतीय संसद पर एक पञ्चाशात् श्लोकों में आतंकवादी हमले को वर्णित किया है। दशम भाग “गोघ्राहत्याकाण्डं तत्प्रतिकृतिश्च” में द्वाषष्टि पद्यों में गोधरा हत्याकाण्ड का वर्णन मिलता है। “गुर्जर चमत्कार” नामक एकादश अध्याय में सप्तविंश श्लोक मे गुर्जर जाति के लोगों द्वारा प्रदर्शन का वर्णन है। “मुपती मुहम्मद विचित्र नीतिः नामक द्वादश अध्याय में विंशति श्लोकों में मुपती मुहम्मद की नीतियों को बताया है। त्रयोदश भाग भो! राष्ट्रनायकवराः। में सप्तविंशति पद्यों में राष्ट्र नायकों का स्मरण किया गया है। “अहो! धन्या! कल्पना चावला सा” नामक चतुर्दश अध्याय में पञ्चदश श्लोको में अन्तरिक्ष यात्री कल्पना चावला का वर्णन मिलता है। पञ्चदश अध्याय “ईराकयुद्धं खलुमत्स्यन्याय” में षड्विंशति श्लोकों में ईराक युद्ध को दर्शाया है। षोडश अध्याय “शोकावहैव खलु सान्त्वन सामनीति” में नवविंशति श्लोको में भारत पाक के मध्य होने वाली नीतियों युद्धों का वर्णन है। “आतङ्कवादविपदा नहि सामसाध्या” नामक सप्तदश अध्याय में नवविंशति श्लोको में इस विषय पर वर्णन है कि आतंकवाद की समस्या सरलता से दूर होने योग्य नहीं है। अष्टादश भाग में “भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंस्थोपर्याक्रमणम्” में षोडश श्लोकों में भाण्डारकर प्राच्य विद्या संस्था पर हुए हमले का वर्णन है। नवदश अध्याय में “चित्रं! चतुर्दशनिर्वाचनम् नामक भाग में त्रयोपञ्चाशत् श्लोकों में चतुर्दशवै निर्वाचन का वर्णन किया गया है। “डॉ. मनमोहन सिंहस्य कश्मीरयात्रा प्रसङ्गेन नामक विंशति अध्याय में मनमोहन की कश्मीर यात्रा का वर्णन अष्टत्रिंशत

पद्यों में किया गया है। एकविंशति अध्याय “हिन्द महासागरे महाभूकम्पः” में अष्टादश में हिन्दमहासागर में आए विशाल भूकम्प को वर्णित किया गया है। द्वाविंशति अध्याय “अग्नीकाया जनतन्त्र विरोधिकृत्यम्” में षोडश श्लोकों में अमरीका के जनता के विरुद्ध कृत्यों का वर्णन है। “अडवाणीनां पाकिस्तानयात्रा” नामक त्रयोविंश अध्याय में अडवाणी जी की पाकिस्तान यात्रा का वर्णन पञ्चविंशति श्लोकों में किया है। “राममन्दिरं पर्याक्रमणम्” नामक चतुर्विंश अध्याय में त्रयोत्रिंशत् पद्यों में उग्रवादियों द्वारा किए हमले का वर्णन मिलता है। पञ्चविंशः अध्याय “महाराष्ट्र महावृष्टिः” में षोडश श्लोकों में महाराष्ट्र में होने वाली अत्यधिक वर्षा का वर्णन किया है। षडविंश भाग में “दिल्लियां भीषणा विस्फोटाः” में द्वात्रिंशत् पद्यों में दीपावली के एक दिन पूर्व दिल्ली में हुए बम विस्फोट का वर्णन किया गया है। सप्तविंशः अध्याय “मुम्बयीमहानगर्या पुनर्विस्फोटाः” में सप्तदश पद्यों में जुलाई माह में मुम्बई में हुए धमाकों का वर्णन है। “वितैषाणा महाव्याधिः” नामक षडविंश भाग में अष्टत्रिंशत् पद्यों में धन की लालसा को महारोग के समान वर्णित किया है।

(ii) विवेचन व विश्लेषण

(1) + (2) श्री बाजपेयी नाममेरिका यात्रा

अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिण्टन जी के सस्नेह, सादर निमंत्रण को स्वीकार करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी अमरीका यात्रा पर गए। अटल जी ने अपने घुटने की तीव्र पीडा की उपेक्षा करते हुए भी क्लिंटन महोदय का यह न्योता स्वीकार किया। अमरीका में अपनी ओजस्वी, सारगर्भित वाणी में अनेक भाषण दिए। अटल जी के ऐतिहासिक भाषणों को सुनकर तो अमरीकी संसद के सभागण भी मंत्रमुग्ध हो गए। सभी सांसद गणों ने अपनी तालियों की गडगडाहट से श्री बाजपेयी जी का अभिवादन किया। बाजपेयी जी के बीस भाषणों पर, इक्कीस गुना तीव्रता से करतल ध्वनि हुई। सभी सांसदों ने खड़े होकर बाजपेयी जी का हार्दिक अभिनन्दन किया। वहाँ उन्होंने सभी का मन मोह लिया। अटल जी ने अपने भाषणों में कहा पाकिस्तान जेहाद के नाम पर उग्रवाद को निरन्तर बढ़ावा दे रहा है, पिछले दस वर्षों में पाकिस्तान ने पंजाब, कश्मीर की भूमि पर आतंक मचाया हुआ है। जहाँ पर (3000) त्रिशत् सहस्र निसहाय लोगों की हत्या कर दी गयी। जात्यन्ध जनों ने धर्म के नाम पर उग्रवाद को बढ़ावा दिया हुआ है। भारत द्वारा मित्रता का हाथ बढ़ाते हुए स्वयं बाजपेयी जी ने भारत-पाक के मध्य चलने वाली लाहोर बस सेवा में यात्रा की परन्तु इसके विपरीत पाकिस्तान ने करगिल पर आक्रमण कर युद्ध की शुरुआत की।

आरम्भाकमख्यसुमतिप्रणयप्रतीका'

लाहोरपत्तनकृतां बसयानयात्रा।

पाकस्य शासकजनैः प्रतिवर्तिताऽभूत्

कार्गिलसन्निभकरालरणेन पूर्वम् (1-9)

पाक की उग्रवादी नीतियों के विरुद्ध अपने विचारों को प्रकट करते हुए अटल जी ने कहा इससे डरने के बजाय हमें इस आतंकवाद के खिलाफ खड़ा होना होगा। यह विश्व की सुखशान्ति का दमन करने वाला है। जनतन्त्र का सबसे बड़ा शत्रु है। भारत ने परमाणु शक्ति का प्रयोग बल दिखाने हेतु नहीं किया है अपितु आत्म सुरक्षा की दृष्टि से किया है। उन्होंने कहा कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है। संसार की कोई भी शक्ति इस भूमि के टुकड़े को हमसे अलग नहीं कर सकती है।

कश्मीरमस्ति भविता च सदैव नूनं - ²

मङ्गं हभिन्नमिह भारतवर्षभूमेः।

शक्तिर्न काऽपि भुवने भवतीह नूनं

तं भारताद्विघटितुं प्रभुरित्यवोचत्।। (1-15)

संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में भी अटल जी ने उग्रवाद को संसार के लिए विपदा बताते हुए तीखे शब्दों में इसकी आलोचना की। इस प्रकार अटल जी की अमरीका यात्रा ऐतिहासिक महत्व वाली, विशिष्ट व अद्वितीय थी।

एषैतिहासिक महत्वमयी विशिष्टा³
ह्यस्मन्महामहिममन्त्रिवरप्रयुक्ता।
अम्नीकिराष्ट्रपरमस्य विशालयात्रा
निःशङ्कमेव समभूत् सफलाऽद्वितीया।। (1.26)

विशेष - वृत्त - वसन्ततिलका

3. रमजाने भारतस्य सङ्घर्षविरामः

हमारे देश के प्रधानमंत्री ने पाकिस्तान को सौहार्द शान्ति का भाव सिखाने के लिए ही रमजान के पवित्र माह में युद्ध रोकने की घोषण की थी, किन्तु फिर भी नकारात्मक विचारों वाले साथी राष्ट्र ने उस अवधि में भी धूर्तता ही की। उस दिन ही पाकिस्तान की कूट नीतियाँ प्रकाश में आ गयी। पाकिस्तान के ही चार उग्रवादी भारत के ठाणे नगर में घुस गए इन्होंने माता के समान संघ भवन को भी नष्ट कर दिया। इससे कुपित लोगों ने दिल्ली में इनकी प्रतिमा भी जलायी। पाकिस्तान ने निसंख्य, निष्पाप, निर्मल व्यक्तियों को कश्मीर में मार डाला। अमरनाथ की यात्रा के लिए गए निर्दोष लोगों को निर्दयता से मौत के घाट उतार दिया। करगिल युद्ध में भी विश्वासघात किया। उनके ही पवित्र माह रमजान में भी उनके द्वारा धूर्तता के कृत्य किये गये।

निःसंख्यानघनिर्मलजना यैर्घातिताः कश्मिरे⁴
निष्पापापामरनाथयात्रिकजना यैर्निर्दयं मारिताः।
कार्गिलेऽपि कृतोऽस्ति यैरतितरां विश्वासघातः शठै-
स्तेषामेव पवित्रमासि विरतिर्युद्धस्य किं घोषिता।। (3-6)

मुस्लीमों ने जेहाद का नाम दिए जाने वाले इस युद्ध को रमजान के पवित्र माह में भी अपने ही पैगम्बर मुहम्मद साहब के लिए भी नहीं रोका। ऐसे अत्यन्त उग्र, कराल शत्रु के प्रति दया दिखाना तो सौंप को दूध अर्पण करने के समान है। हमारे शान्ति, मित्रता के उपासक श्री वाजपेयी जी स्वयं बस, यान के द्वारा लाहौर यात्रा पर गये। वाजपेयी जी ने जहाँ मित्रता का हाथ बढ़ाया वहीं पाकिस्तान ने करगिल में विश्वासघात किया। यह मित्रता पूर्ण व्यवहार का स्वर्णिम अवसर भी उन्होंने खो दिया। आङ्गल अमेरिकी आदि राष्ट्रों ने भी पाकिस्तान के इस व्यवहार की तीव्र आलोचना की। पाकिस्तान ने भारत की शस्त्र सन्धि के विषय में नकारात्मक विचार रखे। राष्ट्रसंघ में भी इस्लामिक उग्रवादियों को युद्ध और विनाश का कारण माना गया। जिससे अफगान, तालिबान, पाक तथा ओसामाबिनलादेन को लक्ष्य बनाया गया। भारत के निर्णयकर्त्ताओं ने जहां रमजान की पवित्रता को देखते हुए संघर्ष विराम की बात कही, उस समय

भी पाकिस्तान के द्वारा लगातार तीन दिन तक कश्मीर में हत्याक्रम जारी रखा। रमजान के अन्तिम पांच दिनों में संघर्ष विराम की बात स्वीकार की। पाक के अधिकारी कभी भी उग्रवाद के शमन की इच्छा रखने वाले नहीं रहे केवल विश्व को भ्रमित करने हेतु युद्ध शान्ति का नाटक उन्होंने किया।

देशे घोरतमोऽग्रवादशमनं नेच्छन्ति पाकाधिपाः ⁵
क्रूरा भाटकितोऽग्रवादिकितवाः सर्वत्र तैः प्रेषिताः।
लोके दर्शयितुं स्वपाकविषयं सौहार्दशान्तिप्रियं
विश्वं भ्रामयितुं तु नाटकमिदं युद्धोपशान्तेः कृतम् ॥ (3-17)

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

4. सङ्घर्षविराम विस्तारः

भारत के द्वारा संघर्ष विराम की घोषणा के पश्चात् जब सार्धएकमास का समय निकल गया तब पुनः पाकिस्तान के उग्रवादियों ने लालकिले की सुरक्षा में सेंध लगाते हुए आक्रमण किया। यह प्रश्न फिर भी उठता है कि दिल्ली की इतनी कड़ी सुरक्षा में भी लाल किले पर इतना भीषण आक्रमण कैसे हुआ? क्या इसमें भारत के विद्रोही जन शामिल थे। इस भयंकर आक्रमण की जिम्मेदारी पाकिस्तान के उग्रवादी संगठन लश्कर ए तोयबा ने ली। इन आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया। श्री वाजपेयी जी ने इनके खिलाफ कड़ा रुख अपनाया।

पृष्यत्वमपीह भीषणकृतेस्तल्लुष्करे तोयबा ⁶
नामात्यन्तमहोऽग्रपाकसमवायेनैव संस्वीकृतम्।
अग्रे लक्ष्यमपीह घोषतमभूच्छ्रीवाजपेयी स्वयं
दुष्टानां ननु घाष्ट्यमित्थमभवत् तत्सान्वनीतेः फलम् ॥ (4-5)

पाकिस्तान के नृशंस शासकों ने इसका विरोध किया। उनके समर्थन का ही परिणाम है कि ये संगठन भारत में घुसकर आक्रमण कर रहे हैं। कश्मीर में अब्दुल के ऊपर घातक आक्रमण किया गया। पाकाधिपति निश्चित ही कश्मीर में शान्ति नहीं चाहते हैं। उनके कहे अनुसार तो उग्रवादी संगठनों को रोकने में वो सक्षम नहीं है, जो सरासर मिथ्या है। निःसंशय वह ही इनके प्रेरक, पालक व पोषक है केवल विश्व को भ्रमित करने हेतु ही यह नाटक किया जाता रहा है। यह पूर्ण रूपेण सत्य है समस्त संसार के देश यह भलीभांति जानते हैं कि अपनी कपटपूर्ण नीतियों को पूर्ण करने के लिए पाकिस्तान ये सब करवाता है।

नूनं सत्यमिदं समस्त भुवनं जानाति सम्यक्तया ¹
केचिन्मुस्लिमजातिवादि विषयाः पाकस्य मित्रबुवाः।
ज्ञात्वापि प्रबलं तदीयकपटं मौनं भजन्ते हठात्
तस्माद् दूतवरान् प्रहित्य भुवनं बोध्यं च सत्यं परम् ॥ (4-11)

भारत ने हमेशा ही शान्ति व मित्रता के लिए हाथ आगे बढ़ाया है किन्तु पाकिस्तान भारत से वैर साधने के लिए ही भारत के टुकड़े करना चाहता है। निरन्तर कश्मीर पर आक्रमण करता रहता है। पूर्व में इन्हीं कृत्यों से बलपूर्वक कश्मीरी पण्डितों को कश्मीर से निर्वासित कर दिया तत्पश्चात् सिक्खों ने स्वयं ही कश्मीर का त्याग कर दिया। पाकिस्तानी चाहते हैं कि कश्मीर में केवल मुस्लिम समुदाय ही शेष रहे। जिससे कश्मीर की भूमि को भारत से अलग करने में आसानी हो जाएगी। इससे पूर्व भी मुस्लिमों ने कितने ही घोर कृत्य भारत में तथा विश्व में किये हैं। भारत की बात की जाए तो तैमूर, नादिरशाह, औरंगजेब आदि असंख्य ऐसे दुराचारी भारत में आए जिन्होंने देवालय जैसे पवित्र स्थलों पर भी आक्रमण किया। इन्होंने अपने आक्रमणों से न केवल सैनिकों को निशाना बनाया अपितु बच्चों व महिलाओं को भी अपनी क्रूरता का निशाना बनाया। इन्होंने शान्ति का समर्थन केवल तब ही किया जब यह शक्ति से क्षीण हो गए। आज तक भी यही क्रम अनवरत जारी है।

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

5. गूर्जर महाभूकम्पलहरी

जब 26 जनवरी को भारत अपना 52 वां गणतन्त्र दिवस हर्षोल्लास से मना रहा था, उसी समय गुजरात में महाविनाशकारी भूकम्प आया। इसकी तीव्रता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि क्षणभर में ही बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ, भवन धराशायी होते हुए दिखायी दिये। हाथ में तिरंगा लहराते हुए विजयी स्वर में रेली निकालते हुए तीन सौ से भी अधिक बच्चे उन्हीं भवनों के नीचे दब गये। विगत पचास वर्षों में इससे भयानक भूकम्प नहीं आया होगा। जिसने भारत की धरा पर हाहाकार मचा दिया। हाइड्रोजन बम की ऊर्जा के समान इस भूकम्प से असंख्य घरों का नामोनिशान मिट गया। असंख्य मनुष्य व पशु काल के ग्रास बन गए। थोड़े समय पहले जो स्थान खुशियों की आवाज से चहक रहा था वहाँ शमशान दृष्टिगत होने लगा। निष्पाप शिशु मारे गए जान-माल की हानि हुई। घरों के नीचे दबे हुए लोगों को निकालने के लिए सेना के जवानों के साथ छात्र, नवयुवक तथा सैकड़ों स्वयं सेवक सामने आए।

गृहाणां ध्वस्तानां प्रचुरनिचयारुद्वकुणपा *

बहिर्निष्कास्यन्ते गलितगलिताः पूतिभरिताः।

स्वयंसेवाकार्ये निरतसुजनैश्च छात्रयुवकै

स्तथा सेनागुल्मैरपि च शतशः सेवकजनैः॥ (5-8)

भुज, कच्छ, अंजार आदि सैकड़ों गांव और शहर इससे प्रभावित हुए। धनधान्य से परिपूर्ण लोगों के पास आज अपना कहने को कुछ भी शेष नहीं रहा। राहतकर्मों जब मलबे में दबे लोगों को निकालते तब छिन्न-भिन्न शवों को देखकर मृतकों के सम्बन्धियों के साथ ही साथ उनका भी दिल दहल उठता। क्षण मात्र में ही अनेक बच्चे अनाथ हो गए, महिलाएँ विधवा हो

गयी, माता-पिता ने अपनी सन्तानों को खो दिया। प्रकृति का यह रूप बहुत ही उग्र था। क्षमाधारी, अचला जैसे नामों को धारण करने वाली धरती माता आज कैसे कठोर निष्ठुर हृदय वाली हो गयी है। निहत्ते बालकों को भी आज अपना ग्रास बनाने वाली कैसे बन गयी? लोग आश्चर्यचकित होकर यह पूछने लगे। अपने बच्चे की मृत्यु हो जाने पर अबला माता शोक करती हुई प्रत्येक मनुष्य से अपने शिशु के बारे में पूछती नजर आयी। लोग अपने परिजनों के खो जाने से, अपने स्वजानों की मृत्यु का समाचार मिलने से शून्य हृदय वाले हो गये हैं। जिस समान को इकट्ठा करने में अपने सपनों का घर बनाने में लोगों को इतने वर्ष लगे वो सब समान, वो महल, ताश के पत्तों की तरह बिखर गया।

ग्रहाध्वस्ता पत्रारचितगृहवन्नूनमखिला: (5-20)

चिकित्सालयों में इलाज करवा रहे रोगी उसी के साथ नष्ट हो गए। इस घोर विपदा को देख सम्पूर्ण राष्ट्रवासियों का हृदय द्रवित हो उठा। इसी प्रसंग में यह बात सामने आयी कि 200 वर्षों से कच्छ में विलुप्त सिन्धु नदी पुनः प्रकाशमान हो गयी। महा आश्चर्य की बात है कि कोई शिशु 90 घंटों से भी अधिक मलबे में दबा होने पर भी अपनी माता के प्रयासों से जीवित रहा। प्रकृति के इस ताण्डव ने सब कुछ हिला कर रख दिया।

महाश्चर्य चान्यज् जनितमिह यत् कश्चनशिशुः

पयः पायी मातुर्नवतिमितहोरोत्तरमपि।

अभ्रूद्धो जीवन् भवननिचयेषु प्रपतितः

पिबन् स्तन्यं चित्रं! ह्युपरतजनेर्वक्षसि खलु।। (5-30)

वृतं - शिखरिणी

6. बाङ्गलादेशमहाकृतघ्नता

पाकिस्तान की दासता से मुक्ति पाने के लिए किए गए युद्ध में भारत ने ही बांग्लादेश को सहायता प्रदान की थी। इन सब कारणों से त्रस्त बांग्लादेश के शरणार्थियों को भी भारत ने ही सहारा दिया था। बांग्लादेशी मुजीबनायक आदि गत तीस वर्षों से स्वतन्त्रता प्राप्ति का असफल प्रयास कर रहे थे। भारत के प्रयासों से ही स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सफल हो सके। इस मदद को स्मरण करने की अपेक्षा बांग्लादेश ने मेघालय में सोलह निर्दोष जनों की हत्या कर दी। निर्दयता से उनके शवों को छिन्न-भिन्न कर दिया।

बाङ्गलादेश समन्तरक्षकगणैराक्रम्य मेघालयं "

पिर्दीवाऽभिहितस्ततो निवसथः स्वायत्तसंसाधिताः।

तत्रारक्षिनिवेशोडशजना धृत्वा हता निर्दयं

तेषां छिन्नविभिन्न पीडितशवाः प्रत्यर्पिता घातुकैः।। (6-4)

बांग्लादेश ने गोलियों के प्रहार करके उग्रता को बढ़ा दिया है। जो भारत बांग्लादेश के साथ मित्रवत व्यवहार करता आया, आज उसी के साथ क्रूरता का व्यवहार करके अपने दुर्विचारों को स्पष्ट कर दिया है। भारत के मान-सम्मान, गौरव को खण्डित करने का प्रयास करने वाले बांग्लादेश के विरुद्ध उग्र स्वर उठने लग गये हैं। बांग्लादेश ने कारगिल युद्ध में भी पाकिस्तान को राइफल उपलब्ध करवायी। इन सभी का कपटपूर्ण व्यवहार दृष्टिगत होता है। बांग्लादेश, पाकिस्तान जैसे छोटे-छोटे टुकड़ों वाले देश यह नहीं समझ पा रहे हैं कि भारत के अक्षुण्ण गौरव को मिटाना किसी के भी सामर्थ्य का विषय नहीं है। भारत की महिमा तो अपार है। हमारे राष्ट्र को दुर्बल समझने वाले पड़ोसी देश यह नहीं जानते कि भारत के पास क्षमा रूपी हथियार है वह मित्रवत् व्यवहार भी करता है परन्तु समय आने पर शत्रु का नामोनिशान मिटाने वाला है।

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

7. भारतपाकशिखरसंवाद

हमारे राष्ट्र के प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी ने भारत के घोर शत्रु समझे जाने वाले पाक के साथ मित्रता की इच्छा प्रकट की। पाकिस्तान के राष्ट्राध्यक्ष जनरल परवेज मुशर्रफ को भारत यात्रा का आमन्त्रण दिया गया। जिससे भारत-पाकिस्तान के सम्बन्धों को सुधारने की ओर कदम उठाया जा सकेगा। अन्त में भारत और पाक के नेतृत्व अधिकारियों के मध्य तीन दिवसीय वार्ता हुई। कश्मीर के साथ ही अन्य विषयों पर भी बात हुई लेकिन प्रत्ययशील पाक की तरफ से हमेशा संदेह की स्थिति ही रही। लाहौर में वाजपेयी जी व शरीफ के मध्य हुई सन्धि का उल्लंघन परवेज मुशर्रफ ने ही किया था। माया, छद्मपरक को अपनाने वाले के साथ मित्रता करने का साहस वाजपेयी महोदय ने ही किया।

लाहोरे ननु बाजपेयिसहितं सन्धिं शरीफो व्याधात् ।¹²

कार्गोले मुशर्रफेण विहितं सीमासमुल्लङ्घनम् ।।

मायाछद्मपरं तमेव विषये प्रेम्नासमामन्व्य वै

घोरं साहसमेव नूनमकरोच्छ्रीबाजपेयी सुधीः ।। (7-3)

परवेज मुशर्रफ जी का दिल्ली में राजकीय सम्मान के साथ सहर्ष स्वागत किया गया। सभी मन्त्रिगण, राष्ट्रपति महोदय ने इनका स्वागत किया। इस स्वागत सत्कार से सन्तुष्ट व प्रसन्न हुए परवेज मुशर्रफ जी उसी दिन सांयकाल, विश्व के आश्चर्यों में शामिल ताजमहल को देखने गए। दाम्पत्य प्रणय के प्रतीक भव्य, उदात्त, विशाल, सुन्दरतम, आश्चर्यजनक इमारत को देख मुशर्रफ भी विस्मित हो उठे। इसी बीच मुशर्रफ जी ने गुप्त रूप से हुरियत नेताओं से वार्ता कर अपने विचारों को प्रकट किया। इसके बाद पत्रकारों के समक्ष यह घोषणा परवेज मुशर्रफ जी ने की कश्मीर हमारी वार्ता का मुख्य विषय होगा व शेष सभी विषय गौण हैं। कश्मीर की धरा पर नित्य सैकड़ों लोग काल का ग्रास बन रहे हैं उसके लिए कश्मीर के बारे में बात करन आवश्यक है। शिमला सन्धि और लाहौर में हुयी घोषणाओं को

स्वीकार न करते हुए पाकाधिपों ने संघर्षविराम की बात को नकार दिया। कश्मीर ही वार्ता का मुख्य विषय रहा है इस तरह की घोषणा ने इस बात को निष्फल कर दिया। मुशर्रफ की धूर्तता व पशुता यहाँ स्पष्ट दृष्टिगत होती है। जहाँ एक ओर भारत ने शान्ति, स्नेह का हाथ बढ़ाया उसे पाक अधिकारी ने पूर्णतः झटक दिया।

कश्मीर में होने वाले समस्त उग्रवादी हमलों के लिए, शस्त्रों की उपलब्धता कराने के लिए, धन से उग्रवाद को पालित पोषित करने हेतु केवल पाकिस्तान ही जिम्मेदार है। हमारे वीर सैनिक उन उग्रवादियों के ही शिकार होते हैं। हत्या, बम धमाकों, विमान अपहरण जैसे आपराधिक कृत्यों को करने वाले दाऊद को भी पाकिस्तान ने ही शरण दी। पाकाध्यक्ष मुशर्रफ की दुर्दान्त, उग्र प्रकृति से यह वार्ता निष्फल रही। परवेज जी ने पत्रकारों से स्पष्ट कहा कि जब तक कश्मीर के मुद्दे पर फैसला नहीं हो जाता तब तक शान्ति नहीं होगी। पाकिस्तान के इन दुराग्रहों के कारण ही यह वार्ता निष्फल हो गयी। संसार में सज्जनता की रक्षा करना व धर्म को बनाए रखना बहुत ही दुष्कर कार्य है।

लोके सज्जनरक्षणं च दलनं धर्मो महान् दुष्कृताम्।

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

8. अस्त्रीकोपर्यातङ्कवादाक्रमणम्

21 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में 11 सितम्बर को अमरीका जैसी विश्व की महासत्ता भी भयंकर मुस्लिम आतंकियों का लक्ष्य बन गयी। अमरीका भी आतंकवाद के अधिपति ओसामा बिन लादेन का लक्ष्य बन गया। अमरीका के न्यूयॉर्क में 110 मंजिला विश्वविदित वाणिज्य केन्द्र विमान की टक्कर से गिरा दिया गया। जैसे - बाज किसी अन्य पक्षी पर झपट्टा मारता है।

न्यूयॉर्करिथतभव्यविश्वविदितं वाणिज्यकेन्द्रं महद् ¹³

विश्वोत्तुङ्गतमं दशाधिकशतं सस्याभवन् भूमिकाः।

अस्त्रीकीयविमानमेव तरसा सङ्घट्टय तस्मिन् बलात्

क्रूरैरात्मविनाशिघोरकितवैः सम्पातितं श्येनवत्।। (8-4)

आज अमेरिका का पेण्टागन नामक रक्षाग्रह पूर्ण रूप से नष्ट हो गया। अमरीका स्वयं को विश्वरक्षा में समर्थ मानता था आज वह स्वयं की रक्षा करने में असमर्थ था। इस आक्रमण ने उग्रवादी दुष्टों की अभेदनीय रक्षा व्यवस्था को भेदने का कौशल प्रकट किया। उस समय वाणिज्य केन्द्रा में 50,000 व्यक्ति कार्यरत रहे होंगे। उनमें से अधिकांश काल कवलित हो गए। यह आतंकवाद का अतीव भयंकर, अत्यन्त क्रूरतम, कठोर कृत्य है। भारत इस आतंकवाद को 30 वर्षों से झेल रहा है। तब अमरीका ने भारत के द्वारा ध्यान आकर्षित कराये जाने पर भी इस पर ध्यान नहीं दिया था। जब स्वयं अमरीका को इस पीडा से गुजरना पडा

तब उसे अहसास हुआ कि आतंकवाद भयंकर असुर के समान है। इससे पूर्व ओसामा ने केन्या, तंजानिया के दूतावासों पर भी आक्रमण किये थे। परन्तु तब अमरीका सचेत नहीं हुआ था। इस घटना से भयभीत अमरीका ने व्हाइट हाउस भी खाली करवाया लादेन ने अमरीका को इस्लाम का परम शत्रु समझकर आक्रमण की रूपरेखा बनायी थी। तालिबान अधिप लादेन के समर्पण को स्वीकार देने से बुश ने तालिबान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। पाकिस्तान ने भी भारत के साथ अमरीका के इस निर्णय में सहमति दी यह आश्चर्यजनक है। पाकिस्तान की तालिबान के प्रति शत्रुता मात्र स्वार्थपूर्ति के लिए ओसामा बिन लादेन को अमरीका ने ही संवर्धित और पोषित किया था यह भ्रमासुर के समान अपने ही जनक को नष्ट करने लग गया।

दुष्टानां सहयोग ख न भवेच्छ्रेयस्करः कर्हिचित्

जब अमरीका आतंकवाद की चपेट में आया तो उसने कहा कि आतंकवाद रूपी राक्षस विश्व में मानवता संस्कृति और सदाचार आदि का संहार करने वाली है। इस युद्ध में जो देश अमरीका के लिए सहयोगी नहीं बनेंगे वे उग्रवाद के मित्र जाने जाएँगे। राष्ट्रसंघ की रक्षा समिति ने प्रस्ताव पारित किया कि कोई भी देश आतंकवाद को सहारा नहीं देगा। यही राष्ट्र संघ की समिति कश्मीर पर होन वाले उग्रवाद को मुक्ति तथा लादेन को स्वातन्त्र्य योद्धा कहते हैं। पश्चिमी राष्ट्रों की यह भ्रमपूर्ण नीति है। वैश्विक, भयंकर मुस्लिम उग्रवादियों का अग्रगण्य यह लादेन सर्वोच्च अभियांत्रिकी की पदवी प्राप्त कर बहुत दिनों तक गृह निर्माण कार्य करता रहा। उस कार्य से उसने कुबेर के समान धन एकत्र किया और सारे संसार में इस्लाम का प्रसार करने के लिए कटिबद्ध हो गया। लादेन ने उग्रवादी संगठन अलकायदा का निर्माण किया। इनके अनुसार जो मुस्लिमधर्म, कुरान, मोहम्मद साहब को नहीं मानते वे काफिर हैं और वध करने योग्य हैं। उसने आतंकियों को ये समझाया इस्लाम का प्रसार करते हुए प्राण देने वालो को अल्लाह के समीप स्थान प्राप्त होगा। इसी क्रम में मुल्ला उमर ने अफगानिस्तान में स्थित विश्व में सबसे ऊँची बुद्ध प्रतिमा को ध्वस्त कर दिया। लेखक ने पुनः इस बात को बताया है कि वाणिज्य केन्द्र पर विमान से हमला करने की योजना को कार्यान्वित करने हेतु 20 आतंकवादियों ने वहीं रहकर विमान चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। तत्पश्चात् 11 सितम्बर को प्रातःकाल ही यात्रा विमानों में यात्रा के लिए प्रवेश कर विमानों का अपहरण किया। उन यात्रा विमानों को वाणिज्यिक केन्द्र से टकराकर उन्हें भूमिसात कर दिया। कवि अनुसार तीनों लोकों से जनतन्त्र का नाश करने और दूसरे स्वतन्त्रता को नष्ट करने वाले इस तीव्र तथा भयंकर विपत्ति रूपी आतंकवाद से विश्व को मुक्त करने के लिए समस्त राष्ट्राध्यक्षों को आपस में मिलकर महान प्रयत्न करना चाहिए। जिससे इस संसार से मनुष्य की परम पवित्र स्वतन्त्रता नष्ट न हो सके।

त्रैलोक्यजनतन्त्रनाशन परस्वातन्त्रसंहारकृत - 14

तत्तीव्रोगकरालघोरविपदो मुक्तं विधात जगत्।

सम्मिल्यैव समस्तराष्ट्रपरमैर्यत्नो विधेयो महान्

स्वातन्त्र्यं मनुजस्य पूतमिह तन्नोचेद् विनश्येद् ध्रुवम्।। (8-62)

वृत्तं - शार्दूलविक्रीडितम्

9. संसदभवनोपर्यातङ्कवाद्याक्रमणम्

देश के गौरव संसद भवन पर 13 दिसम्बर 2001 को आतङ्कवादियों ने हमला कर दिया जिसमें पाँच आतङ्की तथा बारह सैनिक हताहत हुए। सवेरे 11.30 मि. पर संसद के दोनों सदनों में शीतकालीन सत्र का एक भाग समाप्त ही हुआ था, तभी पाँच क्रूर आतङ्की गाडी से संसद प्रांगण में घुस गए ओर दनादन गोलियाँ बरसाने लगे। गोलियों की आवाज सुकर संसद में भगदड़ सी मच गई। पहरेदार सिपाही तल्लीनता से अपने काम में जुट गये। बराबरी से हमलावरों को निशाना बनाने लगे। इस मुठभेड में 27 लोग घायल हो गए। आतङ्की, संसद सभा मन्दिर को नुकसान पहुँचाने की इच्छा से बहुत सारे विस्फोटक पदार्थ के साथ आए थे। इस हमले में कोई भी मन्त्रिगण या सांसदगण हताहत नहीं हुए थे। हमारे पड़ोसी मुल्क ने कूट कपट से कश्मीरीय विधानसभा पर हमला किया तथा फिर भारतीय संसद भवन पर आक्रमण कर के भारत के गौरव, यश, तेजस्विता को धराशाही करना चाहते थे।

अस्माकं प्रतिवेशिककूटकपटं तन्निश्चितं दृश्यते।¹⁵

कश्मीरीयविधानसौधभवने घोरक्रमस्तैः कृतः।

तैरेवाद्य कूतोऽस्ति भारतभुवो हृद्येव घोरक्रमो

नूनं भारतमानगौरवयशस्तेजस्विता धर्षिताः।। (9-6)

पाकिस्तान द्वारा पालित-पोषित जैश मोहम्मद, लश्कर ए तौयबा आदि संगठनों के द्वारा युद्ध में पाकिस्तान को अंजाम दिया था। तालिबान के विरुद्ध युद्ध में पाकिस्तान ने तालिबान का सहयोग किया। तब भी अमरीका ने मौन ही धारण किए रखा। इससे पाकिस्तान को शह मिलती गयी। लेकिन जब उन्हीं तालिबानियों ने अमरीका को अपना निशाना बनाया तब बुश महोदय ने कुपित होकर तालिबान पर आक्रमण का आदेश दे दिया। हमारा देश दो दशकों से इस पीड़ा का अनुभव करते हुए भी, हजारों निरपराध लोगों की जान गवाँ कर भी, संयम धारण किए हुए है। भारत सरकार ने इसके विरुद्ध केवल यही फैसला लिया कि पाकिस्तान के लिए उड़ रहे विमानयान भारत के आकाशीय क्षेत्र से भी होकर नहीं निकलेगे। दूतावास खाली करवा दिए गए वहाँ जाने वालों पर रोक लगा दी गई। दिल्ली से बाहर जाने पर रोक लगायी। युद्ध को हल बनाने की अपेक्षा कूटनीतिपरक इन उपायों को अपनाया।

पाकिस्तानविमानयानडयनं रुद्धं स्वदेशाम्बरे ¹⁶
दूतावासनिविष्टलोकगणाऽप्यर्धेन न्यूनीकृता ।
दिल्लीतो गमनं बहिश्च सहसा तेषां निरुद्धं तथा
संग्रामेतकूटनीतिपरका एतेऽप्युपायाः कृताः ।। (9-19)

शान्ति के लिए आवश्यक है कि इन क्रूर कृत्य करने वालों को दण्ड दिया जाए ।

“शान्त्वर्यं ह्यनिवार्यमेव नितरामागस्कृतां दण्डनम् । (9-24)

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी के अनुसार - कूटनीति, कपटपूर्ण व्यवहार करने वाले शत्रुओं के प्रति प्रतिक्रिया न करते हुए, उनके प्रति करुणा दिखाने वाले, शान्त रहने वाले राष्ट्र पतन की ओर जाते हैं यह बहुत ही दुःख की बात है ।

शत्रुणां विकरालकूटकपटं दृष्ट्वाऽप्यभीक्ष्णं कृतं ¹⁷
कर्तुं ये प्रभवन्ति नो प्रतिकृति शीघ्रं च कालोचिताम् ।
ये तु प्रत्युत दर्शयन्ति करुणा क्षान्तिं सदा शत्रुषु
ते राष्ट्रं खलु पातयन्ति नियतं दुःखोदधौ भीषणे ।। (9-51)

वृत्तं - वसन्ततिलका

10. गोघ्राहत्याकाण्डं तत्प्रतिकृतिश्च

27 फरवरी 2002 को देश में घटित भीषण घटना का स्मरण ही पीडा पहुँचाने वाला है । साबरमती नामक रेल में गोधरा के थोडा पहले ही रेल को मुस्लिमों ने रोका और चार बोगियों में आग लगा दी । 60 से अधिक लोग बोगियों में थे ।

साकेत से यज्ञविधि को समाप्त करके आनन्दपूर्वक अपने घरों को लौट रहे रामभक्तों, महिलाओं, बच्चों को जीते जी ही भस्म कर दिया । निष्पाप निर्मल 60 लोगों में जो कि राम भक्त थे, उन्हें गाड़ी में रोक दिया । विश्व हिन्दू परिषद् के इन लोगों को जाति अंध । मुस्लिमों ने नृशंस तरीके से मार दिया इस घटना की तीव्र प्रतिक्रिया हुई । सम्पूर्ण गुजरात में दंगे फैल गये । सैकड़ों निर्दोष लोगों की जान चली गयी ।

तीव्रा च तत्प्रतिकृतिर्विषये बभूव ¹⁸
तत्रापि गुर्जरभुवि प्रबभूव घोरा ।
गोघ्राजघन्यघटनां प्रतिकर्तुकामै -
र्हा हन्त! निर्मलजनाः शतशो हतास्तैः ।। (10-5)

निर्दोष यात्रियों को रेल रोक कर हत्या कर देना सर्वाधिक निन्दनीय कृत्य था। सच तो यह है कि भारत के अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों व शेष बहुसंख्यक समुदाय के लोगों को आपस में लड़ा कर देश को टुकड़ों में बाँटने की नीति आंग्ल शासकों की थी। आंग्ल शासकों ने अपनी सत्ता दृढ़ करने हेतु मुस्लिमों को पृथक अस्तित्व बनाने हेतु प्रोत्साहित किया। अलग राष्ट्र का निर्माण होने पर भी आज भी मुस्लिम संतुष्ट नहीं हो सके। ये राम, कृष्ण, शिव, बुद्ध आदि महापुरुषों के संस्कारों, संस्कृति को न अपनाकर यवन, नादिर, बाबर के पद चिह्नों पर आगे बढ़ना चाहते हैं। इनके अनुसार कुरान में लिखा है कि इस्लाम ही सत्य धर्म है, अन्य जो भी है वह सब मिथ्या है। इन लोगों ने भारतीय संविधान के राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत, राष्ट्रभावों को आज भी अंगिकार नहीं किया है। इनके मतानुसार तो कुरान हदीस मुल्ला ये तीनों ही शरीयत हैं। जो इस्माल को नहीं मानने वाले हैं वे काफिर हैं। इनका वध कर देना चाहिए। हिन्दुओं ने कहीं भी मस्जिद को ध्वस्त नहीं किया जबकि मुस्लिम आक्रमणकारियों ने 30 से अधिक मंदिरों को नष्ट कर दिया। इन अल्पसंख्यक मुस्लिमों की देश के लिए विद्रोहि वृत्ति रही है। वे पाकिस्तान के पक्ष में रहते हैं। भारत के राजनायिक मतलाभ, स्वार्थपूर्ति के लिए जाति को निन्दित करते हुए मुहम्मद के अनुयायी वर्ग को प्रोत्साहित करते प्रस्तुत होते हैं। देश के इन अल्पसंख्यकों को सामान्य जनता से अधिक लाभ प्राप्त है। राष्ट्र को टुकड़ों में बाँटने वाले इन नायकों को धिक्कार है।

देशऽल्प संख्यजनमुस्लिमसान्त्वनार्थ ¹⁹

मान्यीकृता च सविशेषशरीयताख्या।

सर्वातिरिक्तविधिनागर संहिताऽपि

भूयिष्ठसंख्यकजनादधिकाधिकारा।। (10-37)

जेहाद के नाम पर इन मुस्लिमजनों ने राष्ट्र को टुकड़ों में बाँटने के लिए यह घोर कृत्य किया। राममन्दिर को अनेक लोगों की हत्या से पूर्ण किया। राममन्दिर, बाबरी मस्जिद के विषय में भी इसी प्रकार निर्दोष लोगों की हत्या कर दी गयी थी।

वृत्तं - वसन्ततिलका

11. गूर्जरचमत्कारः

12 दिसम्बर 2002 को गुजरात राज्य में हुए चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की ऐतिहासिक, अपूर्व विजय हुई। कांग्रेस के साथ मिलकर अन्य सभी विरोधी दलों ने संचार माध्यमों, पत्रकारों आदि के माध्यम से गुजरात के मुख्य सचिव के विरुद्ध भीषणतम प्रचार किया। गोधरा के समीप रेलयान को रोककर निष्पाप 60 रामभक्तों को जला दिया गया। यह कार्य करने वाले मोहम्मदीय ही थे।

गोघ्रासमीपमवरुध्य च रेलयानं ²⁰

निष्पापषष्टिरघुनायकभक्तवर्याः ।

प्रज्वालिताः समभवन् खलु मौह्मदीयैस्

तेनैव तत्र निहता बहुमुस्लिमास्तैः ॥ (11-3)

विपक्षी दल हिन्दु रामभक्तों की हत्या को भुलाकर केवल मुस्लिमों की हत्या को मुख्यमंत्री जी के विरुद्ध इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहा था। मोदी के साथ सम्पूर्ण गुजरात के हिन्दुओं तथा विश्व के नायकों ने इस बात की निन्दा की। उनके कठोर वचनों से कुपित लोगों ने चुनाव के माध्यम से आज अपना उत्तर दे दिया है। विपक्ष के सभी कुतर्कों को नष्ट करते हुए गुजरात की जनता ने मोदी परिवार में जन्में नरेन्द्र को गुजरात राज्य का मुख्यमंत्री चुना। गोधरा की घोर घटना के बाद देश में हिन्दुत्व की लहर चल गयी थी। जनता ने उन गलत विचार धाराओं पर पानी फैरते हुए धर्मनिरपेक्ष भावना से मताधिकार का प्रयोग किया। गत 50 से अधिक वर्षों में इस अल्पसंख्यक समुदाय के लिए अनेक कार्य सरकार ने किये। अल्पसंख्यकों को अन्य जनों से अधिक अधिकार देकर आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया। फिर भी यह समुदाय आज भी सन्तुष्ट नहीं हो पाया। वहीं दूसरी ओर हिन्दु लोगों ने बुद्धि का प्रयोग करते हुए धर्मनिरपेक्ष भावना से काम किया। अन्यथा हिन्दुत्व के नाश के समान ही यह देश भी टुकड़ों में बँट जाता। यह जीत केवल भारतीय जनता पार्टी के एक पक्ष की नहीं है बल्कि संघ परिवार के सभी सदस्यों की विजय है जिसका एक हिस्सा नरेन्द्र मोदी भी हैं।

एष प्रचण्डविजयो नहि केवलस्य ²¹

तस्यैकपक्षपरमस्य च भा.ज.पस्य ।

किन्त्वस्ति संघपरिवारगणस्य नूनं

तत्रापि मुख्यसचिवस्य नरेन्द्रमोदेः ॥ (11-12)

निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि भारतीय जनता पार्टी को टुकड़ों में बँटने का प्रयास करने वाले निश्चित ही अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। इसकी रक्षा करने के लिए कुशल कर्णधार मोदी महोदय इसका हिस्सा हैं अनेक धर्मों को मानने वाले लोगों का यह भारत देश धर्म निरपेक्ष की सबसे बड़ी नीति को मानने वाला है इस बात में अब कोई संशय नहीं है कि राज्यों के द्वारा सभी धर्मों को समान माना जाता है।

वृत्तं - वसन्ततिलका

12. मुफ्तीमुहम्मदविचित्रनीतिः

2002 में कश्मीर में हुए चुनावों में मुफ्ती मुहम्मद सैयद नामक पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के अध्यक्ष, कश्मीर के मुख्यमंत्री बने। यह पहले मुस्लिम भारतीय हैं

जिन्होंने इस पद पर जीत दर्ज की। उनकी पुत्री महबूबा मुफ्ती भी उनके ही समान स्पष्ट विचारों वाली प्रभावशाली महिला हैं। मुफ्ती मुहम्मद ने मुख्यमंत्री पद ग्रहण करते ही यह घोषणा की कश्मीर एक स्वतंत्र राष्ट्र है भारत का अभिन्न अंग नहीं है। उन्होंने अनेक आतंकवादियों को भी कारागार से मुक्त करा दिया।

कश्मीरमस्ति सुतरां विषयः स्वतन्त्रो ²²

नैवास्ति भारतभुवस्तदभिन्नमङ्गम्।

इत्येव पी.डि.पी. दलस्य किमस्ति नीतिः

तस्माच्च घोरकितवाः खलु मोचिताः किम्।। (12-4)

मुफ्ती मुहम्मद के ही समर्थक हुरीयत नेताओं को भी मुक्त कर दिया गया। मुफ्ती मुहम्मद ने कांग्रेस पार्टी के साथ मिल जुलकर सरकार बनायी थी। इसलिए कांग्रेस पार्टी की पार्थक्यवादी नीति का विरोध नेतृगणों को करना चाहिए। कश्मीर भारत भूमि का ही अंग है। इसके विपरीत विचारधारा को कांग्रेसी नायक किस प्रकार मान सकते हैं। मुफ्ती मुहम्मद ने सत्ता में आते ही उन सभी आतंकवादियों को कारागार से मुक्त कर दिया, जिन्होंने कश्मीर में भयंकर रक्तपात मचाया था। उन्होंने बिना केन्द्र के अनुमोदन के ही 26 उग्रवादियों को स्वतन्त्र कर दिया। जिन्होंने भीषण पाप कश्मीर की धरती कर किये थे। आतंकवादियों के प्रति उनकी सहानुभूति ने आतंकियों के साहस को बढ़ा दिया और राष्ट्र की रक्षा करने वाले हमारे वीर सैनिकों के मनोबल को क्षीण कर दिया।

आतङ्कवादिसह तस्य सहानुभूत्या ²³

तेषां च साहसमपीह भजेच्चवृद्धिम्।

राष्ट्रस्य सैनिकमनोबलमेव तेन

क्षीणं भवेदतितरामिति निश्चितं वै।। (12-11)

मुफ्ती मुहम्मद के इस कार्य ने कश्मीरवासियों के रोग का उपचार करने के बजाए उसको बढ़ाने का कार्य किया। आज तक भी वह समस्या वैसी ही बनी हुई है। भारत पाक की सीमा पर विगत 50 वर्षों से कश्मीर भूमि के लिए निरन्तर युद्ध चला आ रहा है। यह कश्मीर विवाद भारत पाक के रिश्तों में महासमस्या बन गया है। जिसका समाधान अनुपलब्ध। सा प्रतीत होता है।

वृत्तं - वसन्ततिलका

13. भो राष्ट्रनायकवरा:

कवि भारतीय राजनायकों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं - हे राजनायकों। जम्मूकश्मीर में निर्दोष मानवों की निष्पूरता से की जा रही हत्याओं को देखकर भी आप शान्त और विरक्त मनवाले कैसे हो सकते हो? पाक के द्वारा गत वर्षों से किये जा रहे आक्रमणों में लगभग 1400 लोग मारे जा चुके हैं तो आप उसके विरुद्ध कोई ठोस कदम क्यों नहीं उठाते हो? इनके द्वारा जगह-जगह अपनी क्रूरता का परिचय दिया जा चुका है दिल्ली का लालकिला, कश्मीर का विधानसभा भवन, भारतीय संसद भवन, गांधीनगर में हिन्दू पवित्रधाम स्थल अक्षरधाम, जम्मूस्थित, रघुनन्दन मन्दिर प्रत्येक स्थान पर निर्दोष लोगों, बच्चों, महिलाओं को अपना शिकार बनाया है। जिस प्रकार अमरीका ने एक ही आक्रमण के दोषी अफगान देश को सबक सिखा दिया। उसी प्रकार भरत को भी कठोर निर्णय लेना चाहिए। कवि राष्ट्रनायकों को चेतावनी देते हुए कह रहे हैं कि पाकिस्तान के कर्णधार धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन के समान है। जिस प्रकार दुर्योधन ने यह सूचित किया था मैं सूच्यग्रभागमात्र भी पृथ्वी पाण्डवों को नहीं दूँगा। यद्यपि उस काल के नीतिज्ञ कृष्ण शांति प्रस्ताव लेकर गए थे, परंतु दुर्योधन की हठधर्मिता ने युद्ध को आमंत्रित करके अपने कुल का विनाश कर लिया ठीक उसी प्रकार की नीति कश्मीर की भी है -

सूच्यग्रमात्रमपि भूमिमहं न दास्ये ²⁴

युद्धाद्भिनेति वदतो धृतराष्ट्रसूतोः।

दुर्योधनस्य खलु सन्ततिरेव धूर्ता

कृष्णोऽपि घोरसमरं न शशाक रोद्धुम्।। (13-14)

यह राष्ट्र शिशुपाल के समान शतापराध कर चुका है अतः अब कृष्ण के समान सुदर्शन चक्र चलाने का समय है। कवि ने नादिरशाह तैमूरलंग, सिकंदर, बाबर आदि की क्रूरता का वर्णन करते हुए राष्ट्रनायकों से कहा है कि उन्हें रामकृष्ण और शिवाजी के चरित्र का स्मरण करना चाहिए। जिस प्रकार राम ने लंकाधिपति रावण का किया उसी प्रकार हमारे देश की सेना पहले भी पाकिस्तान को पराजित कर चुकी है। इस समय भी उसे पाठ पढ़ाने में समर्थ है। पाकिस्तान कष्टपूर्ण नीतियों की पूर्ति के लिए आत्मघाती शिविरों का संचालन करता है ठकुरे साहब के द्वारा पाक के विरुद्ध कहे जाने वाले शब्द वास्तविकता में उतने ही सत्य है।

वृत्तं - वसन्ततिलका

14. अहो! धन्या! कल्पना चावला सा

भारतभूमि की शूरवीरा, तेजस्वी कन्या कल्पना चावला धन्य है। अन्तरिक्ष यात्रा से लौटते समय फरवरी माह वर्ष 2003 में यान दुर्घटना ग्रस्त होजाने से उनकी मृत्यु हो

गयी। पञ्जाव प्रान्त के लघुपुर में जन्मी कल्पना चावला बचपन से ही अन्तरिक्ष के लिए अति जिज्ञासु थी। तारों को देखकर, उनसे जुड़ी किस्से कहानियाँ सुनकर ही वह बड़ी हुई निरन्तर अपनी जिज्ञासाओं को शान्त करने का प्रयास करती थी। अपनी प्रबल इच्छाओं व मेहनत से ही यन्त्र शास्त्र में स्नातक की शिक्षा ग्रहण की। उसके पश्चात् अमरीका जाकर अपने बुद्धिकौशल से शोधशास्त्र की सर्वोच्च परमपदवी ग्रहण की। नासा अन्तरिक्ष केन्द्र में प्रवेश प्राप्त कर 100 शोधयात्रियों में अपना नाम उल्लेखित करवाया।

गत्वाऽम्नीकां तदनु निजकौशल्यबुद्धिप्रभावात् ²⁵
 सर्वोच्चां तां परमपदवीं शोधशास्त्रेऽधिगम्य।
 नासासंज्ञे ह्यमितगगनान्वेषकेन्द्रे प्रविष्ट
 तत्र प्रत्याशिषु च शतशो घोषिता शोधयात्री।। (14-4)

अपने दीर्घकाल की अभिलाषाओं की पूर्ति मुक्त आकाश में विहार करके ही हुई। जब वो प्रथम बार अंतरिक्ष यात्रा से लौटकर आयी थी तब उन्होंने अपनी उस खुशी को सभी के साझा किया था। आकाश में चमकते तारों के प्रति जिज्ञासा ने ही उन्हें आकाश की यात्रा पर जाने को प्रेरित किया। तारों, ग्रहों से जुड़े रहस्यों को जानने के लिए अन्तरिक्ष यात्रा को चुना। कोलबियान यान की अपनी दूसरी अन्तरिक्ष यात्रा में कल्पना 28 दिन तक अंतरिक्ष में रही। वापसी के समय नासा को यान से संकेत प्राप्त हो रहे थे किन्तु कुछ घण्टों में ही तेजी से धरती की ओर आ रहा अन्तरिक्ष यान दुर्घटना हो गया। उस दुर्घटना में सभी 6 अन्तरिक्ष यात्री काल का ग्रास बन गये। जब कल्पना चावला 36 वर्ष की थी तब पहली बार अन्तरिक्ष यात्रा पर गयी थी। उस समय वह भारत के लिए भी खुशी की बात थी क्योंकि प्रथम बार भारतीय महिला अन्तरिक्ष यात्रा पर गयी थी लेकिन अपनी द्वितीय अन्तरिक्ष यात्रा में उनके स्वर्गवास की बात से समस्त देश शोकाकुल हो गया। भारत सरकार ने कल्पना को न केवल भावभीनी श्रद्धाज्जली अर्पित की अपितु उनकी स्मृति में अनेक पुरस्कारों की घोषणा भी की थी।

षटत्रिंशोऽसौ शरदि वयसो व्योमयात्रां यदा वा ²⁵
 उड्डीयायात् प्रथममिह ह्यन्तहीनान्तरिक्षम्।
 हर्षोल्लासो भरतविषये नूनमासीत् प्रचण्डो
 यस्मादेका भरतमहिला शोधयात्रां गताऽसीत्।। (14-11)

15. ईराकयुद्धं खलु मत्स्यन्यायः

कवि के अनुसार ईराक का युद्ध मत्स्य न्याय की तरह था। मत्स्य न्याय अर्थात् जब बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जाती है। अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश ने राष्ट्रसंघ की सहमति से सद्दाम हुसैन को मारने हेतु आक्रमण किया था। सद्दाम पर आरोप अलाया गया था कि वह महाघोर संहारक अस्त्रों को धारण करने वाला है। गुप्तचरों के द्वारा

सूचना दी गयी कि शस्त्रों के अभाव में सद्दाम घुसा हुआ था तब उस पर आक्रमण किया गया। इसके द्वारा सम्पूर्ण विश्व को शस्त्रापूर्ति की जाती थी। इराक में जनहित विरोधी एकतन्त्रीय शासन था। अमरीका का यह स्पष्ट कथन था कि यह केवल सद्दाम द्वारा दम्भ भरना था। देशम सत्ता परिवर्तन होना ही आवश्यक है। इराक की प्रचुर विपुल तैल कूपों को पाने के लिए यह अमरीका की कूटनीति थी। स्वार्थपूर्ति के लिए अमरीकी राष्ट्रपति ने इस युद्ध को अपनाया। सभी राष्ट्रों ने इस बात का विरोध दर्शाया।

ईराकीयप्रचुरविपुलांस्तैलकूपान् विधातु ²⁷
 मात्मायतान् भवति नित्यं ह्यम्निकाकूटनीतिः
 युद्धं ह्येतद् भवति सुतरां स्वार्थहेतोः प्रवृत्तं
 सर्वे राष्ट्रैः प्रकटविकटस्य कार्यो विरोधः ॥ (15-5)

रूस नामक सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था और अमरीका नाम का सूर्योदय संसार में अपनी अद्वितीय शक्ति को बढ़ाने में लगा हुआ था। अमरीका यह चाहता था कि सम्पूर्ण संसार पर उसी का अधिकार हो। इराक युद्ध का मुख्य लक्ष्य सद्दाम हुसैन ही था किन्तु अमरीका ने सद्दाम नामक शत्रु की समाप्त करने के लिए सैकड़ों निष्पाप लोगों को विस्फोटक सामग्री के प्रयोग से मार दिया। बगदाद आदि प्रमुख नगरों में अग्निवर्षा करने वाले अस्त्रों का प्रयोग करके अमरीका ने अपनी स्वार्थ सिद्धि निश्चित रूप से सद्दाम एक प्रमुख बलशाली आतंकी था। उसकी मृत्यु समस्त संसार की सुख शान्ति के लिए आवश्यक थी। उसी प्रकार पाकिस्तान भी संसार में फैले भीषण आतंकवाद का पोषक है फिर अमरीका क्यों उसका पालन पोषण कर रहा है। यह सबसे प्रमुख प्रश्न उठता है। पाकिस्तान तो कश्मीर भूमि पर नित्य घोर आतंकवादियों को प्रेषित करने वाला रहा है तब इसके पक्ष में अमरीका की भिन्न विचारधारा क्यों होती है। यही पाकिस्तान तीनों लोकों में उग्रवाद का केन्द्र रहा है। जिसे पचास हजार तक निर्दोष लोगों की हत्या निष्पूरता से कर दी। फिर भी अमरीका इसका ही पक्षधर रहा है। यहाँ अमरीका की दोहरी नीति का स्पष्ट उल्लेख किया है। इराक युद्ध के संदर्भ में यह कहना उचित है कि यहाँ मत्स्यन्याय को अपनाया गया है। जिसमें अमरीका नाम की बड़ी मछली ने ईराक नाम की छोटी मछली को खा लिया है।

मत्स्यन्यायानुसरणमभून्नमीराक युद्धे ²⁸
 देशानां संगतिरपि भवेत्पूर्णाभिन्नैव लोके।
 व्यस्तः स्यात्सामरिकपरिवेषोऽपि विश्वस्य नूनं
 यूरोमुद्रा ह्यपि च भविता डालराच्छक्तियुक्ता ॥ (15-26)

वृत्तं - मन्दाक्रान्ता

16. शोकावहैव खलु सान्त्वनासामनीतिः

तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री धन्य हैं जो पाकिस्तान के शत्रुतापूर्ण व्यवहार को जानते हुए भी मित्रता का हाथ बढ़ाने के लिए लाहौर तक बस यात्रा करते हुए गए। जहाँ एक ओर भारत की तरफ से मित्रता का व्यवहार किया गया वहीं पाकिस्तान ने युद्ध छेड़कर अपने मनसूबों को विश्व के सामने प्रकट कर दिया। यह कारगिल युद्ध बहुत ही उग्र रूप धारण किये हुए था। जिसमें सैकड़ों भारतीय शूरवीरों ने प्राणार्पण किए। इनकी स्मृति में ही 26 जुलाई को कारगिल विजय महोत्सव मनाया जाता है। अतः पाकिस्तान के प्रति भारत की सामनीति श्रेयस्कर नहीं है। पाकिस्तान केवल इतना करके ही शांत नहीं हुआ अपितु निरन्तर आतंकवाद को बढ़ावा दे रहा है। इस आक्रमणकारी आतंकी पाकिस्तान के प्रति सौहार्द भाव रखना तो सौंप को दूध पिलाने जैसा है।

पाकस्तथापि भविता न मनाक् प्रसन्नः²⁹

स्वातङ्गवादिकृतितो विरतो भवेन्नो।

आक्रामक प्रति दयार्द्रसहिष्णुभावो

दुग्धार्पणं ननु भवेद् भुजगाय नूनम्।। (16-7)

अन्य पड़ोसी देश भी उसी के अनुसार ही आचरण करने वाले बनेंगे। इस प्रकार यह सामनीति हमारे लिए ही दुखों का कारण बनेगी। इसी पाकिस्तान का अनुसरण करते हुए चीन ने भी अरुणाचल प्रदेश (दक्षिण तिब्बत) पर आक्रमण कर धूर्तता का परिचय दिया। 26 जून को चीनी सेना ने सीमा का उल्लंघन कर अरुणाचल प्रदेश पर हमला किया ओर कहा कि यह दक्षिणी तिब्बत का भाग है भारत का नहीं। सम्पूर्ण राष्ट्र इस बात से आश्चर्य चकित है कि 1962 में जब जवाहर लाल नेहरू जी ने “हिन्दी-चीनी भाई-भाई” का नारा दिया तब ये मायावी चीन सौहार्द भाव दिखा रहा था। आज बैर प्रकट कर रहा है। चीन कपट पूर्ण भावों को संसार के समक्ष प्रस्तुत कर रहा है। जिसके फलस्वरूप भारत-चीन के युद्ध में 1962 में चीन की विजय हुई। लेकिन विश्व पटल पर उसकी हार हुई। विश्व के समस्त देशों ने चीन की आलोचना की। इस युद्ध की हार का दंश श्री जवाहर लाल नेहरू नहीं सहन कर सके। दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हो गए। बांग्ला मुक्ति संग्राम में भी भारत ही बांग्लादेश की स्वतंत्रता का पक्षधर रहा परन्तु बांग्लावासियों ने भारत में रहकर भी भारत के विरुद्ध पाकिस्तान का सहयोग किया। जेहाद के नाम पर समस्त मुस्लिम समुदाय एक होकर उग्रवाद का समर्थक बन जाता है। पाकिस्तान के द्वारा घोषित युद्ध में अब तक पचास हजार से भी अधिक लोग इन बीस वर्षों में काल का ग्रास बन गए हैं अतः इस सामनीति को यहीं रोक दिया जाना उचित होगा।

पाकैघोषितकरालरणेऽत्रदेशे ³⁰
लक्षर्घनिर्मलजना दशकद्वये ये ।
प्रेष्योग्रघोरकितवान् निहतासतदासीद्
घोरवसानमिह सान्त्वनसामनीतेः ॥ (16-28)

वृत्त - वसन्ततिलका कहीं-कहीं पर शार्दूलविक्रीडितम् ।

17. आतङ्कवादविपदा नहि सामसाध्या

आतंकवाद की समस्या सामसाध्या नहीं है। पाकिस्तान से उत्पन्न उग्रवाद ने गत अर्द्ध शताब्दी से संसार में पीड़ा पहुँचायी है। शरीर की पीड़ा को दूर करने के लिए जिस तरह लेप आदि का प्रयोग किया जाता है उसी प्रकार आतंकवाद की समस्या को दूर करने हेतु संवाद आदि का सहारा लिया गया। भारत, पाकिस्तान को शान्ति, सौहार्द, सख्यभाव से इस तरह समझाने की कोशिश कर रहा है जिस तरह अग्रज, अपने अनुज को समझाते हैं। पाकिस्तान ने आजन्म भारत के प्रति कृतघ्ना प्रदर्शित की है। प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में आतंकवाद को बढ़ावा दिया है। पाकिस्तान के द्वारा चलाये जा रहे इन छद्मयुद्धों में लक्षार्ध लोग काल का ग्रास बन गए। भारत के विरुद्ध किए जाने वाले इस उग्रवादी युद्ध में अमरीका पाकिस्तान को अस्त्रों के माध्यम से सहयोग करता आया है। इस द्वेषभाव को भुलाकर श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने पाक के साथ मित्रता का हाथ बढ़ाया उसके प्रत्युत्तर में पाकिस्तान ने कारगिल युद्ध प्रारम्भ कर शत्रुता को आगे बढ़ाने का काम किया।

वार्ता समाप्य स न यावदिहागतोऽभूत् ³¹
तावत् करालतमपाकनृशंसधुर्यैः ।
कार्गीलसंकथितकश्मिरभूविभागे
विश्वासघातिकुटिलैरभियुक्तमुग्रम् ॥ (17-7)

इसके बाद भी वाजपेयी जी ने पुनः दोनों देशों के सम्बन्धों को सुधारने का प्रयास किया। उस समय मुशर्रफ दिल्ली आए थे। रमजान के पाक माह की गरिमा को बनाए रखते हुए जहाँ भारत ने संघर्ष विराम की घोषणा कर दी, वहाँ दूसरी ओर पाक उस समय भी उग्रवाद बढ़ाने में पीछे नहीं रहा। इस उग्रवाद रूपी असुर ने अमरीका के वाणिज्य केन्द्र को भी अपना निशाना बनाया। तदुपरान्त कश्मीर विधानसभा, भारतीय संसद भवन पर आक्रमण किये। अमरीका ने एक आक्रमण के बाद ही अफगान को ध्वस्त कर दिया जबकि भारत अनेक आक्रमणों को सहन करते हुए भी प्रतिकार नहीं करता। इसलिए भारत को अभिमान रहित, प्रतिकारशून्य, बलरहित, पौरुषहीन आदि प्रतिमान रूप माना जाने लगा। इससे सेना का मनोबल भी क्षीण होता है। कोई भी देश अपनी रक्षा करने हेतु स्वतंत्र होता है अतः भारत को

भी प्रतिकार करना चाहिए। पाक द्वारा जो भयंकर आतंकवादी रोग फैलाया जा रहा है इसका उपचार लेप करने से नहीं सम्भव है यह तो शल्यक्रिया से ही कम किया जा सकता है। भारत में रहने वाले अल्पसंख्यक मुस्लिमों ने हमेशा अन्य लोगों को भी मुस्लिम बनाने का प्रयास किया है। ये हमेशा पाकिस्तान के समर्थक रहे हैं। संवाद, सौहार्द, साम, सहयोग के उपाय इस आतंकी की समस्या को दूर करने में विफल है। अतः इसके प्रति तो दण्डनीति का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

संवाद-साम-सहयोगसमा उपाया ³²

वैफल्यमापुरत एव विधेय एव।

दण्डाख्याघोरसमश्चरमा चिकित्सा

निर्णायका प्रतिकृतिर्ह्यविलम्बमेव ॥ (17-29)

वृत्त - वसन्ततिलका

18. भाण्डारकरप्राच्यविद्यासंस्थोपर्याक्रमणम्

5 जनवरी 2004 का दिन भारतीय इतिहास के लिए अशोभनीय रहा। इस दुर्घटना से न केवल महाराष्ट्र अपितु सम्पूर्ण देश दुःखी हो गया। इस दिन भाण्डारकर प्राच्य विद्या शोध संस्था को नुकसान पहुँचाया गया। यह संस्था समस्त संस्कृतज्ञों की सम्मानीय शोध संस्था है। जिसमें अनेक अमूल्य, दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है। भारत में ज्ञान का भण्डार कहे जाने वाले तक्षशिला, नालन्दा विश्वविद्यालय को भी कुटिल खिलजी, बख्तियार आदि ने ध्वस्त कर दिया था। आज महाराष्ट्र में भी कुछ ऐसे ही कुटिलों ने हमारी धरोहर को हानि पहुँचाने का कार्य किया है। प्रायः विद्वान् शोधकार्य के लिए भाण्डारकर प्राच्य विद्या संस्थान जाते हैं। एक अमरीकी लेखक जेम्स लेन ने पूना के इस संस्थान में आकर, वहाँ के विद्वानों के मार्गदर्शन में छत्रपति शिवाजी पर एक शोध ग्रंथ लिखा-परंतु उस विद्वान ने शिवाजी तथा उनकी माता जीजा बाई पर कुछ आक्षेपात्मक टिप्पणियाँ भी प्रस्तुत की। ग्रंथ का प्रकाशन होते ही सम्भाजी ब्रिगेड के कुछ नेताओं ने कुद्ध होकर इस ग्रंथालय में तोड़-फोड़ की और अनेक ग्रंथों को नष्ट कर दिया।

अम्नीकायाः कथितविदुषा जेम्सलेनाभिधेन ³³

स्वात्मग्रन्थे शिवनृपमनु भ्रष्टदुष्टं व्यलेखि।

तरुमै भाण्डारकर इति विख्यातसंस्थजनेश्च

ग्रन्था दत्ता इति च कुपितैर्ध्वंसिता सा विमूढैः ॥ (18-3)

इस संस्थान में सार्धलक्षाधिक अनेक ग्रन्थ थे। हस्तलिखित सैंकड़ों ग्रन्थों की मूलप्रति वहाँ थी। भोजपत्रों में लिखे ग्रन्थ भी थे। इन समस्त अमूल्य ग्रंथों के संस्थान पर 150 से भी अधिक लोगों ने शस्त्रों के साथ हमला कर दुर्लभ ग्रन्थों को नष्ट कर दिया।

विद्वज्जनों के चित्र शिल्पादि को भी नष्ट कर दिया। ध्वस्त की गए वस्तुओं को पुनः प्राप्त किया जा सकता है किन्तु गत एक शताब्दी में संचित किए गए सरस्वती के खजाने को पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है। यहाँ कवि ने जेम्स लेन की निन्दा के साथ ही उन विद्रोहियों को भी धिक्कारा है जिन्होंने आवेश में आकर अपनी प्राचीन धरोहर को भी नष्ट कर दिया।

ध्वस्तोपरस्करवस्तुजातमखिलं प्राप्तुं पुनः शक्यते ³⁴

किन्त्वाप्तुं न कदापि शक्यमिह सा ज्ञानोच्चसंपत्पुनः।

नष्टो नैकशताब्ददुर्लभनिधिः पूर्वर्षिसंरक्षितः

सत्यं काऽपि विवेकवर्जितकृतिः शोकावहैवान्ततः।। (18-15)

वृत्तं - मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडितम्, शिखरिणी

19. चित्रं ! चतुर्दशनिर्वाचनम्

20 अप्रैल को देश में 14 वीं लोकसभा हेतु चार चरणों में चुनाव सम्पन्न हुए। चुनाव का परिणाम चौकाने वाला था। 14 वीं लोकसभा के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को हार का सामना करना पड़ा।

स्वप्नेऽपि नैरपरिकल्पितचिन्तितोऽसौ ³⁵

यस्मिन् करालतमघोरपराभवोऽभूत्।

तद्भारतीयजनतादलबाजपेयि -

सन्नीतनैकदलराष्ट्रियशासनस्य।। (19-2)

जहाँ 4 माह पूर्व एवं 6 माह पूर्व कुछ अलग स्थिति दृष्टिगोचर हो रही थी वहाँ जनता ने अपना निर्णय बताकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। इस काल में भारत की ग्रामीण जनता पर ध्यान नहीं दिया गया। सैकड़ों किसानों को आत्महत्या का दंश झेलना पड़ा। प्रचार कार्यों में भारतीय जनता पार्टी का सोनिया जी विदेशी महिला होने पर कटुवचन कहना तथा ये कहना कि गत 50 वर्षों में कांग्रेस ने कुछ नहीं किया। हमने 5 वर्षों में सब कर दिखाया। इन बातों को उजागर करना। वहीं दूसरी ओर सोनिया जी का भारत की नागरिकता ग्रहण कर सर्वोच्च मंत्री पद को धारण करना, आकाश में चन्द्रमा की रोशनी की तरह चमने के समान था। भारतीय जनता पार्टी का सोनिया के प्रति उग्रतर विरुद्ध प्रचार करना। 13 दिन में ही भा.ज.पा की सरकार का भंग हो जाना। भारतीय जनता पार्टी के लिए ही हानिकारक सिद्ध हुआ। भारतीय जनता पार्टी द्वारा सोनिया जी को विदेशी महिला बताकर जनता से अपील करना कि उन्हें सर्वोच्च पद पर आसीन ना करे। इसके विपरीत सोनिया जी का सर्वोच्च राष्ट्रपदवी प्राप्त करके भी उसको त्याग देना उज्ज्वल समर्पण भावना को इंगित करने वाला था। सोनिया जी ने सर्वोच्च प्रधानमंत्री पद का त्याग कर अपने विश्वासपात्र मनमोहन सिंह जी को राष्ट्रप्रधान

सचिव पद पर आसीन किया। यहीं कांग्रेस पार्टी की जीत का परिचायक था। वहीं भा.ज.पा. के पराभव की समीक्षा करने पर कुछ प्रमुख बिन्दु दृष्टिगत हुए - तहलका काण्ड, करगिल युद्ध, गोधराहत्याकाण्ड, ग्रामीण जनता की अनदेखी आदि हैं।

वृत्त - वसन्ततिलका

20. डॉ. मनमोहनसिंहस्य कश्मिरयात्राप्रसङ्ग

प्रधानमंत्री पद ग्रहण करने के पश्चात् डॉ. मनमोहन सिंह ने पाक को शान्ति, सख्य भाव प्रदर्शित करने के लिए कश्मीर यात्रा की। जबकि इससे पूर्व पाकिस्तान के धूर्तों ने विश्वासघात करते हुए लाहौर सन्धि को निरस्त कर कारगिल पर आक्रमण किया था। मनमोहन सिंह जी ने सख्य भाव के लिए ही कश्मीर यात्रा की परन्तु इसके विपरीत पाक ने यह घोषणा की - कश्मीर भारत का हिस्सा नहीं है। यह ही भारत पाक के मध्य विवाद का मूल विषय है। मनमोहन सिंह जी ने पाकहितैषी हुरीयत नेताओं के साथ मिलकर सद्भावना, सौहार्द स्थापित करने का असफल प्रयास किया था। 22 फरवरी को दस वर्ष पूर्व सर्वोच्च राष्ट्र सभा में संसद सदस्यों ने सुदृढ़ संकल्प के साथ घोषणा की थी - कश्मीर निश्चित रूप से भारत का ही अंग है।

द्वाविंशत्तिसदिने दशवर्षपूर्व³⁶
सर्वोच्चराष्ट्रसदसा ननु संसदैव।
सङ्कल्प एव सुदृढ़ खलु घोषितो यत्
कश्मीरमस्ति भविता किल भारताङ्गम्।। (20-8)

इसके विपरीत पाकिस्तान ने राष्ट्रसभा में इंग्लैण्ड का सहयोग प्राप्त करते हुए देश को टुकड़ों में बाँटने का प्रयास किया। यह कहा गया कि वे कश्मीर धरा को हासिल करने के लिए स्वतंत्र हैं। इन्हीं पाकिस्तानी मुस्लिमों ने घोर उग्रवाद, नृशंस कृत्यों से 3 लाख कश्मीरी पंडितों को कश्मीर छोड़ने को विवश कर दिया। ये कश्मीरी पंडित कश्मीर को छोड़ दिल्ली व जम्मू के शिविरों में रहने को मजबूर हो गए। वहीं कश्मीरी मुस्लिमजनों ने पाकिस्तान को समर्थन देते हुए कश्मीर को स्वतंत्र राष्ट्र घोषित करने का पुरजोर प्रयास किया। कश्मीर राज्य में हिन्दुओं की अल्पसंख्या तथा मुस्लिमों का बहुसंख्यक होना कश्मीर के लिए कलंक की तरह है। अब्दुल शेख के दुराग्रह पर उनके मित्रवत नेहरू जी ने कश्मीर के लिए स्वतंत्र राष्ट्र के समान पृथक संविधान, पृथक नियमावली को समर्थन दे दिया था। जिससे कश्मीर में स्वायत्ततावाद का जन्म हुआ। मनमोहन सिंह जब कश्मीर यात्रा से लौटे तभी पाँच रक्षाधिकारियों की हत्या कर दी गए। कश्मीर के प्रसंग में हमेशा से ही पाकिस्तान की उग्रवादी विचाधारा रही है। भारत अमरीका को धिक्कारता है कि वो पाकिस्तान की धन से सहायता करता है। जिसका उपयोग

पाकिस्तान भारत के विरुद्ध करता है। यह भारत के लिए चिन्तन का मुख्य विषय रहा है।

वृत्त - वसन्ततिलका

21. हिन्दमहासागरे महाभूकम्प

26 दिसम्बर 2004 को प्रातः 6 बजे सुमात्रा द्वीप पर हिन्द महासागर में महाभूकम्प आया। ईसामसीह का जन्मोत्सव लोगों के लिए खुशियाँ लेकर आया और उसके अगले ही दिन इस भीषण महाभूकम्प ने उन खुशियों को ग्रहण लगा दिया। बहुत तेज गति से समुद्र में उठने वाली लहरें जब किनारे पर आकर टकराती हैं तो इन समुद्री तूफानों को जापान में सुनामी कहते हैं। इनसे बहुत विनाश होता है। इस सुनामी से दक्षिण पूर्व एशिया के ग्यारह देशों में तबाही फैल गयी। जिसे श्रीलंका, भारत, इण्डोनेशिया, थायलैण्ड तथा अनेक द्वीप समूह शामिल हैं।

तस्माद्दक्षिणपूर्वयेशियगता एकादश प्रायशो ³⁷

लङ्काभारतसार्धमेव बहवो देशा भृशं पीडिताः।

इण्डोनेशिया-थायलण्डसहित-द्वीपान्तराणि ध्रुवं

भूकम्पोत्तरभीषणोत्तलहरीमालाभिरुत्प्लाविताः।। (21-4)

इस सुनामी से लगभग सार्धलक्ष लोग प्रभावित हुए जिनमें सर्वाधिक एक लक्ष इण्डोनेशिया में प्रभावित हुए। लगभग पचास हजार लोग श्रीलंका में प्रभावित हुए। भारत में केरल, पश्चिमी भाग, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह इससे प्रभावित हुए। लगभग 20 मीटर से भी अधिक ऊँचाई वाली लहरों ने लोगों को चपेटे में ले लिया। समुद्र के निकट रहने वाले मछुवारों ने इससे बचने का प्रयास किया पर वे सफल नहीं हो सके। अनेक शव पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो गये। अनेक सेवादारों, चिकित्सकों ने पूर्ण सहयोग किया। सबसे बड़ा प्रश्न यह उठता है कि इन विपरीत परिस्थितियों से छुटकारा कैसे सम्भव हो सकता है। इस विनाश की पूर्व सूचना प्राप्ति के लिए कोई उपकरण नहीं बनाया गया है।

वृत्त - शा.वि. वसन्ततिलका, शिखरिणी

22. अम्रीकाया जनतन्त्रविरोधिकृत्यम्

गुजरात राज्य के प्रधान सचिव नरेन्द्र मोद जी को 2005 में अमरीका ने स्वदेश आगमन के लिए निषिद्ध कर दिया। इसका कारण 2002 में गुजरात में गोधरा में हुए दंगों को बताया गया। अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश तथा ब्रिटेन के राष्ट्रपति ब्लेयर ने यह कहते हुए कि हम उनकी यहाँ रक्षा करने में समर्थ नहीं है उनका वीजा निषिद्ध कर दिया।

आङ्ग्लप्रधानसचिवेन च ब्लेयरेण ³⁸

मोदिमहोदयसमागमनं निरोद्धुम् ।

तस्यात्र रक्षणकृते न वयं समर्था

इत्थं निवेद्य च तदागमनं न्यवारि ।। (22-3)

स्वयं को प्रजातन्त्र का समर्थक बताने वाले ये देश मोदी जैसे लोकतन्त्र के प्रबल समर्थक नेता को निषिद्ध कर अपनी जनतन्त्र विरोधी भावनाओं को प्रकट कर रहे हैं। ब्रिटेन व अमरीका की यह भारत के प्रति विरोध प्रदर्शित करने की नीति है। जब तक अमरीका मोदी विरोधी नीति को अपनाए हुए हैं तब तक भारत के अन्य सचिव भी अमरीका के लाभ हेतु वहाँ यात्रा नहीं करेंगे। मायावि, मानव धर्म की बात करने वाले अमरीका को केवल मुस्लिमों के वध का ही सच समझा आया। हिन्दुओं की हत्या को तो उन्होंने महत्त्वपूर्ण ही नहीं माना। यह अमरीका की कूटनीति ही समझी जानी चाहिए, ताकि वे भारत व पाकिस्तान को लड़ाकर अपना फायदा निकाल सके। वहीं इस अमरीका द्वारा जब अफगानिस्तान में निर्दोष मुस्लिमजनों की हत्या कर दी गए वह बात गौण कर दी। अमरीका केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए सन्तप्त मुस्लिम जगत को इस बात से सान्त्वना प्रदान करना चाहता है। इससे अमरीका की जनतन्त्र विरोधी नीति स्पष्ट दृष्टिगत होती है।

वृत्तं - वसन्ततिलका

23. आडवाणीनां पाकिस्तानयात्रा

श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी, आडवाणी नाम से ही भा.ज.पा. के अध्यक्ष हैं ये इसी नाम से लोगों में प्रसिद्ध हैं। पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ जी के निमंत्रण पर आडवाणी जी पाकिस्तान की यात्रा करने गए थे। जहाँ उनके द्वारा जिन्ना के लिए धर्मनिरपेक्ष शब्द का प्रयोग किया गया। आडवाणी जी ने कहा जिन्ना सभी धर्मों को समान आदर भाव देने वाले थे। आडवाणी ने जिन्ना तथा पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री लियाकत अली की मजार पर भी दर्शन किए। जिन्ना को धर्मनिरपेक्ष कहने पर आडवाणी को संघ परिवार का रोष सहन करना पड़ा। जब वो पाकिस्तान की यात्रा से लौटे तो संघ परिवार उनके बयान को लेकर क्रोधित नजर आया। संघ परिवार ने आडवाणी जी के बयान के विरुद्ध प्रदर्शन किया। संघ परिवार का कहना था कि जिस व्यक्ति के कारण देश टुकड़ों में बँटा, 10 लाख से अधिक लोग जिनके निर्णय से प्रभावित हुए, देश को जाति के नाम पर बाँटा गया वह व्यक्ति धर्मनिरपेक्ष हो ही नहीं सकता। वह व्यक्ति तो प्रबल इस्माल समर्थक था। जो संघ परिवार आडवाणी जी की राम-रथ यात्रा से बहुत प्रसन्न हुआ था। वह इस बयान के विरुद्ध खड़ा नजर आने लगा। जिसके परिणामस्वरूप आडवाणी जी ने अपने अध्यक्ष पद से इस्तीफा तक दे दिया। लेकिन दल के सदस्यों ने इस्तीफे को स्वीकार न करते हुए आडवाणी की पाकिस्तान यात्रा से होने वाले लाभों को बताना प्रारम्भ

कर दिया। संघ ने जहाँ एक ओर आडवाणी के इस्तीफे को मंजूर नहीं किया, वहीं दूसरी ओर जिन्ना के विरुद्ध अपने विचारों का ही समर्थन किया।

वृत्त - वसन्ततिलका

24 .राममन्दिरपर्याक्रमणम्

5 जुलाई 2005 को साकेत स्थित राम जन्मभूमि पर आतंकियों ने आक्रमण कर दिया। आधुनिक अस्त्र, शस्त्रों से सज्जित 6 आतंकी मंदिर परिसर के समीप ही आकर छिप गए। उन्होंने अंधाधुंध गोलियाँ चलाई। अनेक स्फोटक सामग्री मंदिर परिसर को नुकसान पहुँचाने के लिए फेंकी। जवाब में सुरक्षा में खड़े सिपाहियों ने बराबरी से मुकाबला किया। लगातार दो घंटों तक मुठभेड जारी रही। सुरक्षा बलों ने वीरता पूर्वक लड़ाई लड़ी तथा उग्रवादियों को मार गिराया।

तस्माच्च भीषणभयंकरघोरयुद्धं³⁹
होराद्वयं समभवत् खलु तत्र तेषाम्।
यस्मिन् हताः षडतिवादिशठाः प्रवीरे -
रारक्षिणोऽपि बलवद् व्रणितारुयश्च।। (24-4)

देवयोग से ही राममूर्ति और अस्थायी राममन्दिर दोनों ही पूर्णतः सुरक्षित थे। ये श्री राम की ही कृपा थी तथा वहाँ स्थित सैनिकों का ही शौर्य था। जितनी अधिक मात्रा में आतंकियों के पास से स्फोटक सामग्री बरामद की जाए उससे बहुत विनाश हो सकता था। इसलिए यह कहना उचित ही होगा कि जिसकी रक्षा भगवान स्वयं करने वाले हों उनका कोई भी कुछ नहीं बिगाड सकता। यह आक्रमण केवल रामभूमि पर ही नहीं था, बल्कि इसके साथ देश का गौरव, अस्मिता भी जुड़ी हुई थी। इतनी सुरक्षा व्यवस्था को भेद कर ये आतंकी किस प्रकार देश में प्रवेश पाने में सफल हो जाते हैं यह चिन्तन का विषय है। यदि राममन्दिर की प्रतिमा को नुकसान पहुँचाने में आतंकी सफल हो जाते तो देश में जातीय दंगे प्रारम्भ होने से कोई नहीं रोक सकता था। विश्व में शस्त्र बल के द्वारा मुस्लिम समुदाय के लोग कितने कृत्य करते आए हैं जैसे नादिर, तैमूर, औरंगजेब आदि ने अनेक निष्पाप लोगों को मौत के घाट उतारा। अनेक देवालयों को ध्वस्त किया। अक्षरधाम मन्दिर पर किए गए हमले में तीस से भी अधिक तथा जम्मू स्थित रघुनाथ मन्दिर पर हुए हमले में अनेक लोग मारे गए। कश्मीर विधानसभा भवन, भारतीय संसद भवन पर हुए आक्रमणों ने भारतीयों को पीडा पहुँचाई है। जन्म से ही भारत के शत्रु रहे पाक के प्रति सामनीति हमारे लिए हानिकाक सिद्ध होती आई है। इसके विरुद्ध जल्द ही कदम उठाया जाना अत्यावश्यक है।

वृत्त - वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडितम्

25. महाराष्ट्रे महावृष्टिः

25 जुलाई 2005 को महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक में अतिवृष्टि हुई। मुम्बई में होने वाली महावृष्टि सैकड़ों वर्षों में भी नहीं देखी गए। इस महावृष्टि से महाविनाश हुआ। मुम्बापुरी में स्थित अनेक मन्दिर स्थल जलपूरित हो गए ऐसा जलप्रलय विनाश का द्योतक था। घुटनों तकभरे पानी में मुम्बई का आवागमन विरुद्ध हो गया। रेलसेवा, बस सेवा, हवाई सेवाएँ स्थगित कर दी गयी।

जानूरुदध्नजलपूरितमार्गहेतो - 40

मुम्बापुरीस्थगमनागमनं निरुद्धम्।

रुद्धं च रेलवासयानकघावनं वै

चाकाश्यानड्यनं स्थगित तत्रैव।। (25-4)

अचानक आई महावृष्टि से पानी घरों में चला गया। इसकी क्षतिपूर्ति सम्भव नहीं थी। सैकड़ों झोपडियाँ एक क्षण में ही पानी में बह गईं। जमीन पर ही सो रहे लोग काल का ग्रास बन गए। सभी नदी, सरोवर जल से परिपूर्ण हो गए। सैकड़ों गाँव पानी में डूब गए। खेतों में पानी भर गया, असंख्य मूक पशु और लोग मृत्यु को प्राप्त हुए। इस भयानक वृष्टि से पठनार्थी-पाठशालाओं, कर्मचारी-कार्यस्थलों तक नहीं जा सके। इस भयानक वृष्टि से होने वाली हानि की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आगामी दश वर्षों तक भी इसकी पूर्ति नहीं की जा सकती। प्लास्टिक से निर्मित विषाक्त कचरे को पानी के निकास वाली नालियों में डाल देने से जलप्रवाह का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। जिससे वह पानी सड़को पर आ जाता है। अनेक प्रदेशों से आजीविका के लिए लोग मुम्बई आते हैं। वे सभी इस महावृष्टि का शिकार बने। वे अपने घरों तक नहीं पहुँच पाए। देश सदा से ही ऐसी प्राकृतिक विपदाओं से पीड़ित रहा है अतः देश की प्रमुख नदी परियोजनाओं पर कार्य किया जाना अत्यावश्यक है।

वृत्तं - वसन्ततिलका

26. दिल्लीयां भीषणा विस्फोटाः

29 अक्टूबर 2005 को दीपावली के ठीक एक दिन पूर्व दिल्ली के तीन बाजारों में भीषण विस्फोट हुए। दीपोत्सव की तैयारियों के लिए अनेक लोग बाजार में खरीददारी करने गए थे। विस्फोट से 60 लोगों की मृत्यु हुई तथा 200 लोग घायल हो गए।

दीपोत्सवार्थिविविधं क्रयणं विधातुं 41

तन्नागतेषु बहुसंख्यकजनेषु नूनम्।

षष्टिर्जना विनिहता द्विशतं च विद्धाः

सर्वत्र तेन भयभीताजना अधावन्।। (26-2)

पाकिस्तान के द्वारा कराये जाने वाले इन विस्फोटों को भूला नहीं जा सकता है। इससे दस वर्ष पूर्व मुम्बई में हुए विस्फोट में भी सैकड़ों निरपराध लोग मारे गए। उसकी अनुवृत्ति करते हुए ही दिल्ली के लोगों को पीड़ा पहुँचाने का कार्य किया है। प्रायः हताहत हुए लोगों में निष्पाप अबला महिलाएँ व बच्चे होते हैं। दीपोत्सव के इस पावन पर्व पर सभी खुशियों के आगमन की तैयारी कर रहे थे। वहीं दुःख का आगमन हो गया। आतंकवादियों के द्वारा इससे पूर्व भी दिल्ली के लालकिले, संसदभवन पर भी आक्रमण किया जा चुका है। पाक उग्रवादी लश्कर ए तौयबा नाम के संगठन के माध्यम से इन घोर आक्रमणों को पाकिस्तान द्वारा किया जाता रहा है। यह पाकिस्तान की कायरता का ही प्रतीक है, जो निर्दोष लोगों को अपना निशाना बना रहा है। लेकिन स्थानीय लोगों की सहायता के बिना इस भयानक कार्य को अंजाम नहीं दिया जा सकता क्योंकि बाहर से आए हुए लोग कुछ ही दिनों या घंटों में इस कार्य को सम्पन्न नहीं कर सकते हैं। भारत में रहने वाले विद्रोहि मुस्लिमों द्वारा धूर्त पाकिस्तानी आतंकियों का साथ दिया जाता है। विस्फोट काण्डों को करने वाले दाऊद जैसे व्यक्ति से पाकिस्तान में मित्रवत् व्यवहार किया जाता है। जबकि पाकाधिपों को उसको निषिद्ध करना चाहिए। गोधरा में हुआ भीषण रेलकाण्ड, गांधिनगर में अक्षरधाम मंदिर पर हमला, जम्मूस्थित रघुनन्दन मन्दिर पर आक्रमण सभी इन विद्रोहियों की मिलीभगत का असर है।

वृत्त - वसन्ततिलका

27. मुम्बयीम्हानगर्या पुनर्विस्फोटा:

11 जुलाई 2006 को पुनः मुम्बई में रेलयान में भीषण विस्फोट हुए। लोकल रेलयानों में आठ विस्फोट हुए। ये विस्फोट जिन स्थानों पर हुए। वे थे बान्द्रा, बोरवली, महिम, भाटुड, भायिन्दर, सान्ताक्रूझ, जोगेश्वरी। इन स्थानों पर सैकड़ों लोग मारे गए और हजारों घायल हुए। कार्यालयों से कार्य समाप्त कर उत्सुकता से अपने घरों को जाने के लिए निकले लोग रेलयान में प्रवेश तो पा गए परन्तु विस्फोट के कारण संकटग्रस्त हो गए।

कार्यालयेषु निजकार्यमहो समाप्य ⁴²

हौत्सुक्यपूर्णसुजनेषु गृहं प्रयातुम्।

यानं प्रविश्य सदनं प्रति यात्सु तेषु

स्फोटाः करालविकटाः सहसौ बभूवुः।। (27-4)

विस्फोट के कारण रेलयाल के डिब्बों में आग लग गए। दरवाजे बंद हो गए। जिनसे अनेक लोग जलकर मर गए। ये विस्फोट इतनी सोची समझी तरीके से किए गए कि लोगों की सहायता के लिए पहुँचने में भी आधे घण्टे का समय लग जाए। इन धमाकों का दायित्व किन्हीं ने नहीं लिया है। इन धमाकों के लिए पाक के उग्रवादी संगठन लश्कर ए तौयबा

को ही जिम्मेदार माना जा रहा है। इससे 13 वर्ष पूर्व दाऊद इब्राहिम ने भी 16 विस्फोट करवाये थे। जिसमें सैकड़ों लोग इसके शिकार बने। उसकी ही अनुवृत्ति यहाँ की गयी। इन समस्त कार्यों का देश के ही अन्य लोगों की सहायता से ही पूर्ण किया गया होगा। देश से ही विद्रोह रखने वालों ने इन उग्रवादियों का सहयोग किया होगा। सभी भारतीय मुस्लिम निश्चित रूप से आतंकी नहीं है सभी घोर उग्रवादी धूर्त भी मुस्लिम नहीं है। ये समस्त कार्य करने वाले देशद्रोही ही हैं। ये लोग किसी जाति या धर्म, समुदाय से ताल्लुक रखने वाले नहीं होते हैं। ये सभी उग्रवादी तो मानवता के हत्यारे हैं जो मानव मात्र के प्रति हिंसा करके पाप के भागी बन रहे हैं।

सर्वेभारतमुस्लिमा नहि भवन्त्यातंकिनो निश्चितं ⁴³
 सर्वे घोरतमोग्रवादि कितवाः सन्ति ध्रुवं मुस्लिमाः।
 तेषां भारतनिष्ठमुस्लिमजनैः कार्यो निषेधो दृढं
 देशद्रोहिजनांश्च धर्तुमपि तैः साह्यं विधेयं महत्।। (27-13)

वृत्तं - वसन्ततिलका, शादुलविक्रीडितम्

28. वित्तैषणामहाव्याधिः

कवि ने भारतीय संस्कृति के अनुसार वित्तैषणा को अत्यन्त निन्दनीय बताया है। युवक, वृद्धजन, महिलाएँ, व्यापारी, वकील, चिकित्सक, शिक्षक और कृषक वर्ग भी 'वित्तैषणा नामक महाव्याधि से रूग्ण है। मनुष्यों में यह व्याधि संक्रामक रोग के समान फैल रही है।

वृद्धा युवानः पुरुषाः स्त्रियश्च दीना धनाढ्या वणिजो विधिज्ञाः। ⁴⁴
 चिकित्सकाः शिक्षककर्षकाश्च वित्तैषणाख्येन गदेन रूग्णाः।। (28-2)

गाँव, शहर जहाँ भी देखो लोग धन के पीछे ही भाग रहे हैं। इस रोग का उपचार तो शिक्षकों के पास भी नहीं हैं स्वयं से अधिक धनी लोगों को देखकर ही लोग दुखी हो रहे हैं। समस्त खाद्यान्न, दुग्धादि में मिलावट करके धन प्राप्ति की जा रही है। आज अर्थ से ही समस्त वस्तुएँ उपलब्ध है। अतः न्यायालय तथा समस्त कार्यालयों में रिश्वत का साम्राज्य हो चुका है। आज वित्त की प्रधानता और चरित्र की गौणता हो गयी है। भोगप्रधान इस युग में धन का उपयोग केवल व्यक्तिगत भोग के लिए हो गया है। बिना अर्थ के अध्यापक अध्यापन नहीं करता, वैद्य उपचार नहीं करता, वकील न्यायालय में आपका पक्ष नहीं रखता अर्थात् धन के बिना कोई भी कार्य नहीं करता है। कन्या के विवाह में भी जामातृ का चारित्रिक वैशिष्ट्य देखने की अपेक्षा उसकी आर्थिक शक्ति पर ध्यान दिया जाता है। न्यायालय में सतपक्ष धन के अभाव में अपना पक्ष नहीं रख सकते जबकि असतपक्ष मिथ्या सबूतों से ही जीत हासिल कर

लेते हैं। बिना रिश्वत लिए कोई भी कार्य पूरा नहीं करते हैं। कवि कहते हैं धन केवल भौतिक सुख शान्ति का द्वार है यह शाश्वत मूल्य नहीं है। सत्य, दया स्नेह, परोपकार ही जीवन के वास्तविक मूल्य हैं। महाकवि कालिदास रघुवंश में भी बताया गया है कि राजाधिराज रघु भी सब कुछ त्यागकर तप करने हेतु वन के चले गए थे। मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त भी विशाल साम्राज्य का त्याग कर वन में प्रस्थान कर गए थे। कवि ने तीन एषणाओं से से वितैषणा को ही महान व्याधि । प्रमाणित किया है। मुनीजनों के उपदेशानुसार भोगों को त्यागपूर्वक भोगना चाहिए, यही सुखशान्ति का कारण है। मोक्ष के लिए धर्म, धर्म के लिए देह, देह के लिए अर्थ की आवश्यकता होती है किन्तु यह धन धर्मानुसार प्राप्त किया जाना चाहिए।

मोक्षार्थमावश्यकमस्ति धर्मो धर्मार्थमावश्यकमस्ति देहः ⁴⁵
देहार्थमावश्यकमस्ति वित्तं वित्तं समर्ज्यं खलु धर्ममार्गः ॥ (22-38)

वृत्तं - उपजाति

(iii) वैशिष्ट्य

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ने आन्तराष्ट्रीय विषयों पर लिखे अष्टाविंशति काव्यों का संग्रह “काव्यनिर्झर” नामक ग्रन्थ वर्ष 2006 में प्रकाशित किया। कवि ने वर्ष 2000 से 2006 के मध्य जितने काव्यों की रचना की उन सभी काव्यों का संग्रह इस ग्रन्थ में किया है। इस काव्य संग्रह में भारत के प्रधानमंत्री, सचिवों की देश विदेश में यात्राओं का वर्णन है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी से - श्री मनमोहन सिंह की यात्रा का वर्णन है। देश के प्रमुख स्थानों संसदभवन, लालकिला, राममन्दिर पर आतंकी आक्रमणों का वर्णन है। कवि ने प्राकृतिक आपदाओं यथा - गुजरात व महाराष्ट्र में भूकम्प, सुनामी आदि को भी अपने काव्य का विषय बनाया है। बांग्लादेश की कृतघ्ना तथा अमरीका की दोहरी नीतियों का वर्णन भी इस काव्य संग्रह में दृष्टिगत होता है। साथ ही कवि ने अपने विचारों को लेखनी प्रदान करते हुए कहा कि आतंकी राष्ट्र या समुदाय के प्रति सामनीति को न अपनाकर दण्डनीति को अपनाना ही श्रेष्ठ है।

काव्यनिर्झर नामक आन्तराष्ट्रीय काव्य संग्रह में अनेक छन्दों व अलंकारों का प्रयोग दृष्टिगत होता है। कवि रेणापुरकर जी ने अपनी काव्यपरम्परा को बढ़ाते हुए प्रत्येक काव्य में प्रारम्भ में ही “छन्द प्रयोग” को स्पष्ट कर दिया है। कवि ने आधुनिक विषयों को ध्यान में रखते हुए काव्यों की रचना की है ये विषय रसास्वादन करवाने वाले नहीं हैं परन्तु कवि ने अपनी लेखनी से इन काव्यों को चमत्कृत किया है आधुनिक विषयों में लिखे गये काव्यों में भी कवि ने छन्द व अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है आधुनिक विषयों पर रचे गए काव्य संस्कृत भाषा को नए आयाम प्रदान करने वाले हैं।

छन्द प्रयोग -

1. वसन्ततिलका

लक्षण उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।
उदाहरण अस्मीकिराष्ट्रपति क्लिण्टनमान्य वर्यैः ।
सरनेहसादरवितीर्णनिमन्त्रणेन ।
श्री बाजपेयिभिरकारि महाप्रधानैः
पातालदेशपरमस्य विशालयात्रा ।।

2. उपजाति -

लक्षण अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ।।

उदाहरण वृद्धा युवानः पुरुषाः स्त्रियश्च दीना धनाढ्या वणिजो विधिज्ञाः ।
चिकित्सकाः शिक्षककर्षकाश्च वितैषणाख्येन गदेन रुग्णाः ॥

3. शार्दूलविक्रीडितम्

लक्षण सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ॥

उदाहरण सङ्घर्षो पशामाय भारतकृता सर्वैस्तुतां प्रस्तुतिं
पाकोऽप्युत्तरितुं कदाचिदिह ता वाञ्छेत् सकारात्मकम् ।
किन्तु क्रूरतमो श्रवादि कितवाः पाकैः स्वयं पोषिताः
किं तन्मानयितार एव सुतरामित्यस्ति नो निश्चितम् ॥

4. शिखरिणी -

लक्षण रसे रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ।

उदाहरण ध्वजं हस्ते धृत्वा परममुदिता भारतभुवो
महोच्चेर्गायन्ता विजयवरगीतं सरणिषु
प्रयन्तो हा हन्तं! त्रिशत शिशवो हर्म्यपतनात्
निखाता जीवन्तः पतितभवनावास निचये ॥

5. मन्दाक्रान्ता -

लक्षण मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।

उदाहरण धन्या! धन्या! परममहिता कल्पना चावला सा
या तेजस्विप्रियभरतभूकन्यका शूरवीरा ।
प्रत्यागच्छन्त्यमितगगनाच्छेधयात्रां समाप्य
हा! हन्ताद्ये परवरिदिने यानभङ्गात्प्रणष्टा ॥

अलंकार प्रयोग -

1. उत्प्रेक्षा अलंकार -

लक्षण सम्भावमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेनयत्

उदाहरण सार्वत्रिके च वरणे खलु सोनिया सा
चक्रे प्रचारमिह निम्नजनेषु देशे
बभ्राम सर्वविषये विदधत्प्रचारं
येकाकिनीव गगने ननु चन्द्रलेखा ॥

अन्तिम पंक्ति में सोनिया जी को आकाश में चाँदनी के समान बताकर 'ननु' के माध्यम से उत्प्रेक्षा को द्योतित किया है।

उदाहरण तस्मात्तत्प्रतिभाति निष्फलमिव क्रूराफगानाक्रमः ।
यहाँ इव उपमा अलंकार का द्योतक न होकर उत्प्रेक्षा का द्योतक है।
“लादेनस्य करालयोजनमदः कर्तुं च कार्यान्वितं
नूनं विंशतिघोरमुस्लिममहोग्राताङ्गजाल्मैर्धुवम् ।।”
नूनं शब्द के प्रयोग से उत्प्रेक्षा अलंकार है।

2. निदर्शना -

लक्षण अभवन् वस्तु सम्बन्धः उपमा परिकल्पकः
उदाहरण क्षमा धात्री क्षोणिखनिश्चला नाम धरणिः
कथं जाताऽमर्षा कठिनहृदया निष्पुत्रतमा ।
महाक्रूरा घोरा परमसहना चञ्चलतमा
निहन्त्री बालानामपि च चाकितं पृच्छति जनः ।।
यहाँ पर धरती के लिए उपमाएँ दी गयी हैं।

3. अनुप्रास अलंकार -

लक्षण अनुप्रासः शब्द साम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्
उदाहरण अस्यात्यन्तनृशंसघोरकृतये बाङ्गलामहाशासकै
न्यूनान्नयूनविनम्रभावसहितं कार्या क्षमायाचना ।
नूनं लग्नकमेव तैरपुनरावृत्तेश्च देयं ततः
पूर्तिर्घोरतमक्षतेश्च नियतं तैरेव कार्या भवेत् ।।
प्रस्तुत श्लोक में लकार, नकार की आवृत्ति दृष्टिगत अतः अनुप्रास
अलंकार है।

उदाहरण पाकोयज्जनकः समर्थकवरः संधारक प्रेरकः
जैशे लष्करतोयबादिविकरालातङ्किसंघाश्च ते ।
भिन्नाः सन्ति न तालिबानगणतो न ज्ञातमस्त्रीकया
तस्मात्तत्प्रतिबन्धनं समभवत् प्रागेव चावश्यकम् ।।

इस श्लोक में अनेक बार क् वर्ण व र् वर्ण की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।

4. विभावना अलंकार

लक्षण विभावन बिना हेतु कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते।

उदाहरण अस्मीकाऽऽक्रमेणऽपि पाकविषयो गुप्तं प्रलिप्तो ह्यभूत्
तस्या एव हि पत्रकारपरलः पाकीय धूर्तेर्हतः।
अस्मीकावरवङ्गकेन्द्रमपि तैराक्रान्तमातङ्किभि -
स्तद् ज्ञात्वाऽपि करोति पाकविषये दूर न साङ्मेरिका।।

प्रस्तुत श्लोक में बिना हेतु ही अमेरिका का पाक के प्रति प्रेम विभावना अलंकार का उदाहरण है।

5. काव्यलिङ्ग अलंकार -

लक्षण “काव्यलिङ्ग हेतोर्वाक्यपदार्थता”

अर्थात् जहाँ पर किसी हेतु का पूरे वाक्य के अर्थ द्वारा अथवा एक पद के अर्थ के द्वारा कथन किया जावे वहाँ काव्यलिङ्ग अलंकार होता है।

उदाहरण पाकस्यैव विनिर्मित समभवत् तत्तालिबानं घुवं
नूनं विंशतिवर्षदीर्घ समयं पाकेन तत्पोषितम्।
अन्ते तस्य बाधाय पाकविषयः सिद्धः स्वयं स्यादिति
मिथ्यैवात्मिकया विचारितमभूदित्यत्र नो संशयः।।

यहाँ अमरीका के मिथ्या विचारों को प्रथम दो चरणों में स्पष्ट किया गया है।
अतः काव्यलिङ्ग अलंकार है।

5. अर्थान्तरन्यास अलंकार -

लक्षण सामान्य वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्र योऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येतरण वा।।

उदाहरण पाकस्तथापि भविता न मनाक् प्रसन्नः।
स्वातङ्कवादिकृतितो विरतो भवेन्नो।
आक्रामकं प्रति दयार्द्रसहिष्णुभावो
दुग्धार्पणं ननु भवेद् भुजगाय् नूनम्।।

यहाँ पाकिस्तान के लिए सौहार्द्र भाव तो साँप को दूध पिलाने जैसा बताया है। अतः अर्थान्तरन्यास है।

7. विशेषोक्ति अलंकार -

लक्षण सति हेतौ फलाभावे विशेषोक्तिः

उदाहरण यस्याभेद्यदुरासदा समभवद् रक्षाव्यवस्था भुवि
नीरन्धा च नितान्तदोषरहिता यस्यस्ति चारस्थितिः।
यात्रागन्तुमपारयत्रमशकोऽप्याज्ञां विनाऽऽरक्षणां
तत्पेण्टगननामरक्षणगृहं सम्पूर्णमुत्पाठितम्।।

यहाँ बताया है अमरीका की रक्षा के समस्त उपाय होने पर भी रक्षा नहीं हो सकी। अतः विशेषोक्ति है।

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने अपनी “काव्यनिर्झरः” नामक पुस्तिका में प्राचीन छन्दों व अलंकारों का प्रयोग आधुनिक विषयों की रचना के लिये किया है। साथ ही साथ रेणापुरकर जी ने सूक्तियों व मुहावरों का प्रयोग भी किया है। यथा -

“दुष्टानां सहयोग एव न भवेच्छ्रेयस्करः कर्हिचित्”

“भुक्तवैवा खुशतं प्रयाति हजयात्रां सा बिडाली ध्रुवम्।।”

मुहावरा - “अत्यन्तोद्यकरालशत्रुषु दया सर्पाय दुग्घार्पणं”

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने अपनी समस्त काव्य कृतियों के साथ न्याय करते हुए उच्च विचारों को लेखनी प्रदान की है परन्तु कहीं-कहीं पर मुद्रण दोष दृष्टिगत होता है जो निम्नानुसार है -

- सवैर्महामन्त्रिनः मे न के स्थान पर ण होना चाहिए था।
- सर्वाधिपः में स के स्थान पर अ प्रयोग होगा।
- विध्वंसं सलकेऽपि में सलक के स्थान पर सकले प्रयोग होगा।
- तस्यानुवादः कृता के स्थान पर अनुनादः प्रयोग होगा।
- पवित्रतमधार्मिकपुण्ड्रभूमि के स्थान पर पुण्यभूमि प्रयोग होगा।

इसी प्रकार श्रीबाजपेयिनाममेरिकायात्रा (1) तथा (2) में लगभग एक समान वर्णन मिलता है।

समस्त विषयों पर दृष्टि डालने में इस बात की अनुभूति होती है कि प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी काव्य में उच्च स्तरीय संस्कृतभाषा का प्रयोग किए हुए हैं। कुछ मुद्रण दोष तो मानवीय भूल के परिचायक हैं।

सन्दर्भ

काव्यनिर्झरः (काव्य/श्लोक/पृ.सं);

1. काव्यनिर्झरः 1-9/1
2. काव्यनिर्झरः 1-15/2
3. काव्यनिर्झरः 1-26/3
4. काव्यनिर्झरः 3-6/9
5. काव्यनिर्झरः 3-17/11
6. काव्यनिर्झरः 4-5/13
7. काव्यनिर्झरः 4-11/14
8. काव्यनिर्झरः 5-8/18
9. काव्यनिर्झरः 5-20/20
10. काव्यनिर्झरः 5-30/22
11. काव्यनिर्झरः 6-4/22
12. काव्यनिर्झरः 7-3/26
13. काव्यनिर्झरः 8-4/32
14. काव्यनिर्झरः 8-62/42
15. काव्यनिर्झरः 9-6/57
16. काव्यनिर्झरः 9-19/58
17. काव्यनिर्झरः 9-51/64
18. काव्यनिर्झरः 10-5/65
19. काव्यनिर्झरः 10-37/70
20. काव्यनिर्झरः 3-3/75
21. काव्यनिर्झरः 11-12/77
22. काव्यनिर्झरः 12-4/80
23. काव्यनिर्झरः 12-11/82
24. काव्यनिर्झरः 13-14/85
25. काव्यनिर्झरः 14-4/88
26. काव्यनिर्झरः 14-11/90
27. काव्यनिर्झरः 15-5/91
28. काव्यनिर्झरः 15-26/95
29. काव्यनिर्झरः 16-7/96
30. काव्यनिर्झरः 16-28/100
31. काव्यनिर्झरः 17-7/101

32. काव्यनिर्झरः 17-29/105
33. काव्यनिर्झरः 18-3/105
34. काव्यनिर्झरः 18-15/108
35. काव्यनिर्झरः 19-2/109
36. काव्यनिर्झरः 20-8/119
37. काव्यनिर्झरः 21-4/124
38. काव्यनिर्झरः 22-3/127
39. काव्यनिर्झरः 24-4/135
40. काव्यनिर्झरः 25-4/140
41. काव्यनिर्झरः 26-2/141
42. काव्यनिर्झरः 27-4/149
43. काव्यनिर्झरः 27-13/150
44. काव्यनिर्झरः 28-2/151
45. काव्यनिर्झरः 28-38/155

सप्तम खण्ड
अन्य काव्य संग्रहः

प्रथम अध्याय
हुतात्मश्रीश्यामलालचरितम्

द्वितीय अध्याय
श्रद्धाकुसुमाञ्जलिः

सप्तम खण्ड

अन्य काव्य संग्रहः

प्रथम अध्याय – हुतात्मश्रीश्यामलालचरितम्

(i) सामान्य परिचय

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने खण्डकाव्य की रचना श्यामलाल जी को ध्यान में रखते हुए की। यह खण्डकाव्य “हुतात्मश्रीश्यामलालचरितम्” महान आत्मा श्यामलाल जी के चारित्रिक गुणों को प्रकट करने वाला है। रेणापुरकर जी ने इस खण्डकाव्य की अनुक्रमणिका को अष्टादश भागों में विभक्त किया है। श्यामलाल जी के जीवन को आधार बनाकर रचा यह काव्य वैसे तो अष्टादश खण्डों में बँटा हुआ है, किन्तु प्रत्येक खण्ड एक-दूसरे से पूर्णरूपेण जुड़ा हुआ है। सर्वप्रथम कविवर ने भारतदेश के समस्त शूरीयों को नमन करते हुए वर्णन किया है। अनुक्रमणिका के प्रथम भाग “कुलपरिचय” में श्यामलाल जी के कुल का परिचय पाँच श्लोकों में वर्णित है, द्वितीय भाग में दश श्लोकों में “जन्म तथा बाल्यावस्था” को वर्णित किया है। तृतीय भाग “जन्म तथा बाल्यावस्था” को बताया है। तृतीय भाग “तस्य चिररूग्णावस्था” में नव श्लोकों में बाल्यकाल से ही रोगी शरीर वाले श्यामलाल जी के विषय में लिखा गया है। पञ्चदश श्लोकात्मक चतुर्थभाग “हिन्दूनां भीषणदुर्दशा” में हिन्दुओं की दुर्दशा को वर्णित किया है। पञ्चम भाग “कोऽभूदयं निजामः” में अष्ट श्लोकों में निजाम के विषय में प्रश्न किए गए हैं। षष्ठ भाग “तस्य हिन्दूविरोधो मुस्लिमपक्षपातश्च” में नव श्लोकों में निजाम द्वारा हिन्दुओं का विरोध कर मुसलमानों का पक्ष लेने को वर्णित किया है। द्वौ श्लोकात्मक सप्त भाग “आर्यसमाजेन सह संघर्ष” में आर्यसमाजियों के संघर्ष का वर्णन मिलता है। अष्टभाग “श्यामलालोपर्याक्रम” में विंशति श्लोकों में श्यामलाल जी पर होने वाले आक्रमणों का वर्णन दृष्टिगत होता है। नवम भाग “रचनात्मकविधायकवृत्तिः” में अष्ट श्लोकों में श्यामलाल जी की लोकमंगल तथा निर्माणात्मक कृतियों का वर्णन किया है। “श्रेष्ठमहिलारक्षकः” नामक दशम भाग में पाँच श्लोकों में किसी महिला का जबरन धर्म परिवर्तन कराने पर श्यामलाल जी द्वारा उसकी रक्षा किए जाने का वर्णन है। एकादश भाग “आर्यसमाजस्य विरोध कारणम्” के विरोधी स्वर प्रकट करने का वर्णन है। द्वादश भाग “महिलोपवीत-संस्कार” में एक श्लोक में महिला को यज्ञोपवीत धारण करवाने का वर्णन है। त्रयोदश भाग “सिद्धान्तनिष्ठा” में द्वौ श्लोकों में श्यामलाल जी के सिद्धान्तवादी होने का वर्णन किया है। “पुनः रूग्णता” नामक चतुर्दश भाग में नव श्लोकों में उनके पुनः रोगी होने को वर्णित किया है। “अन्तिम कारावासो महाप्रयाणं च” नामक पञ्चदश भाग में चतुर्दश श्लोकों में अन्तिम बार कारावास जाने, वहाँ से कभी न लौटकर आने का वर्णन है। षोडश भाग “शवप्राप्त्यर्थं संघर्षः” में पञ्च श्लोकों में श्यामलाल जी के मामा द्वारा उनके शव की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले संघर्ष का वर्णन मिलता है। सप्तदश भाग में अष्ट श्लोकों में शोलापुर में भव्य विशाल अन्तिम यात्रा में जनसमूह द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने का वर्णन है। अन्तिम अष्टादश भाग में द्वौ श्लोकों में निजाम के पश्चाताप को वर्णित किया है।

(ii) विवेचन एवं विश्लेषण

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर भारत में जन्म लेने वाले शूरवीरों की गाथा का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि जो अपनी मातृभूमि, संस्कृति तथा धर्म के लिए हँसते हुए प्राणार्पण करते हैं। वहीं इस संसार में धन्य है और उनका ही कीर्ति सूर्य सदा के लिए चमकता है। उनमें से ही एक धीर, धुरधुर, श्रेष्ठ नरवीर श्रीश्यामलाल जी थे। उन महामनस्वी श्याम जी के त्याग, शौर्य, बलिदान की जीवनगाथा को रेणापुरकर जी वर्णित कर रहे हैं -

कुल परिचय -

श्यामलाल जी के परिवारजन मूलतः उत्तरप्रदेश के रहने वाले थे किन्तु अंग्रेजों के भीषण दुष्कृत्यों के कारण उन्हें अपना पैतृक घर छोड़ना पड़ा। वे वहाँ से यात्रा करते हुए निजाम राज्य के बोरूल तत्पश्चात भाली नगर चले गए। जहाँ वे बहुत समय तक रहे। यह वहीं भालकी नगर है जो जाधव कुलोत्पन्न धनाजी की राजधानी था। जिनके नाम को सुनकर मुसलमानों के घोड़े भी पानी पीना छोड़ देते थे।

जन्म तथा बाल्यम् -

इनका जन्म 1903 ई. में बिदर जिले के भालकी स्थान पर पिता भोलाप्रसाद जी तथा माता छटुबाई के यहाँ हुआ। इनके दो बड़ी बहने व एक बड़े भाई तथा एक छोटी बहन थी। इनके पिता ने सेवाकार्य करते हुए दारिद्र्य से पीड़ित होकर भी धार्मिक शिक्षा ही इनका पालन पोषण किया। इनके तीन मामा वकील थे। बीच वाले माता गोकुल प्रसाद जी के आर्य समाजी सदस्य होने का दोनों ही भाईयों पर प्रभाव रहा। जिसके फलस्वरूप ये भी आर्यसमाजी बने।

तस्य चिररूग्णावस्था

बचपन में ही पागल कुत्ते के काट लेने से बड़ी मुश्किल से इनका जीवन बचाया जा सका। बड़े होने पर ये कुष्ठरोग से पीड़ित हो गए। वैद्यराज श्री हरनामदारु जी के औषध और कठोर पश्यों से पूर्ण स्वस्थ होकर आर्यसमाज के कार्य करना पुनः प्रारम्भ कर दिया। माता के आदेशानुसार दुर्बल शरीर व रोगग्रस्त प्रकृति के होने के कारण इन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया। यह सतत रूप से मातृभूमि की सेवा करते रहे।

हिन्दूनां भीषणदुर्दशा

उस मुस्लिम मतान्ध निजाम के राज्य में हिन्दू जन बड़े ही कष्ट में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। केवल दस प्रतिशत ही मुसलमान होने के बावजूद समस्त अधि

कारी और कर्मचारी मुस्लिम थे। हिन्दू धर्मावलम्बियों को पूजा अर्चना, यात्रा महोत्सव, वजारोहण आदि की स्वतंत्रता नहीं थी। बहुत से हिन्दू नेताओं को बन्दी बना लिया गया। स्त्रियों का बलपूर्वक अपहरण कर लिया जाता था। बलात् धर्मपरिवर्तन कर मुस्लिम बनाया जाता था। यज्ञोपवीत तोड़ना, आर्यसमाजियों के यज्ञकुण्ड ध्वस्त करना मुस्लिम जनों का कार्य था। अपनी संस्कृति और धर्म की रक्षा के लिए ही, राज्य में वेदप्रकाश, धर्मप्रकाश और शिवचन्द्र तथा अन्य अनेक वीरों ने अपना बलिदान दिया। इन सब में सर्वाग्रणी श्री श्यामलाल जी थे। उसी समय हुपला नामक स्थान पर भी अनेक महिलाओं और बालकों को जबरन मुस्लिम बनाने का उल्लेख मिलता है। ग्रामधिपति श्री भीमराव जी द्वारा उसका विरोध करने पर उन पर और उनके परिवार पर भीषण आक्रमण कर मार डाला गया।

कोऽभूदयं निजामो नाम

देश में जब मुगलवंश का साम्राज्य समाप्त हो रहा था तभी अनेक सामान्त राजाओं ने स्वयं को स्वाधीन घोषित कर दिया। उनमें प्रमुख आसफिया कुल का निजाम था। उसने हैदराबाद को स्वाधीन घोषित किया। अंग्रेजों का आज्ञाकारी बना हुआ निजाम निरन्तर मुस्लिम व्यक्तियों की संख्या बढ़ाने का प्रयास करता रहा। कभी प्रलोभनों के माध्यम से कभी जबरन लोगों को धर्मपरिवर्तन करने पर मजबूर किया जाता रहा। हिन्दी भाषा को छोड़ उर्दू को राज्यभाषा बनाया गया और शिक्षा का माध्यम भी अरबी मिश्रित उर्दू को ही बनाया गया।

तस्यहिन्दुविरोधो मुस्लिमपक्षपातश्च

हिन्दू संस्कृति, धर्म, दर्शन और सदाचार आदि का राज्य से पूर्ण उच्चाटन और निष्कासन कर देश में नादिर, तैमूर, गजनी के दुःशासन की स्थापना ही निजाम का उद्देश्य था। हिन्दुओं के मठ, मंदिर, आश्रम और निवास आदि पर आक्रमण ही उसकी घोर नीति थी। हैदराबाद को मुस्लिम राज्य घोषित किया गया। बर्बरता से अनेक गांव ओर नगर लूटे गए। अड्डर्गा, मेहकर, हुपला, देवणी, सायगाव, कल्याणी, बेलूर, हुलसुर, औराद, साकोल, गोर्द, गुलबर्गा, तोडचिर, हुमनाबाद, बालुर आदि ग्राम ओर नगर इसके दृष्टान्त हैं।

आर्यसमाजेन सह संघर्षः

निजाम का विरोध करने वाले लोगों में आर्यसमाजी ही प्रमुख थे। हैदराबाद में उसका दक्षिण भारतीय केन्द्र था और श्यामलाल जी उसके उप प्रधान थे। इसलिए उन्हें शासन के रोष और धीर आक्रमणों का लक्ष्य बनाया गया।

श्यामलालोपर्याक्रमाः

उदगीर के क्रूर मुस्लिम तहसीलदार ने मिथ्या आरोप लगाकर श्यामलाल

जी को जेल में डलवाया उन पर आक्रमण करवाए। फिर भी श्यामलाल जी ने भिन्न भिन्न गाँवों व स्थानों पर जाकर आर्य समाज का प्रचार करना जारी रखा। उद्गीर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में, विद्वानों के ओजस्वी भाषण हुए। जिससे श्यामलाल जी शासन के रोष का कारण बने। उनके विरुद्ध अभियोग भी चला पर वे न्यायालय में दोषमुक्त हो गए। दशहरे, होली जैसे उत्सवों पर उनकी हत्या का षडयंत्र रचा गया। लेकिन षडयंत्र विफल हो गया। मुसलमानों ने मोहर्रम के अवसर पर फिर प्रयास किया। किन्तु श्यामलाल जी की पिस्तौल देखकर भाग गए। उसी समय दिल्ली में श्रद्धानन्द जी की हत्या मुसलमान द्वारा धोखे से कर दी गई। उससे हैदराबाद के निजाम का सिंहासन और शासन भी हिल उठा। श्यामलाल जी को हिन्दु मुसलमानों के झगड़े का कारण बताया गया। गुलबर्गा में मुसलमानों ने देवालय ध्वस्त किए। वहाँ भी श्याम जी ने आर्य समाज की स्थापना की। गुलबर्गा में लिंगायतों के गुरु शरणबसवेश्वर के मंदिर पर आजादी के पहले कलश नहीं चढ़ाया जा सका क्योंकि उसकी छया मस्जिद पर गिरती थी। इस प्रकार के अनेक उदाहरण दृष्टिगत होते हैं। अनेक बार मुस्लिमों द्वारा श्याम लाल जी की हत्या का विफल प्रयास किया गया। श्यामलाल जी प्रत्येक बार बच निकले। उद्गीर के मुसलमानों ने श्यामलाल जी पर आरोप लगाते हुए कहा कि आप शस्त्र धारण करते हैं तथा कब्रपरस्ती की निन्दा करते हैं। इस प्रकार दोनों जातियों में घोर शत्रुता का कारण भी आप ही है। तब भी श्यामलाल जी ने कहा कि तुम मुझे मार डालने की इच्छा रखते हो तो पूर्ण कर लो। पर मैं क्षत्रिय होने के कारण शस्त्र भी धारण करूँगा और मूर्तिपूजा तथा कब्रपरस्ती का विरोध भी करूँगा।

रचनात्मकविधायकवृत्ति:

श्यामलाल जी की रुचि केवल संघर्षात्मक कार्य करने में ही नहीं थी, बल्कि निर्माणात्मक और लोकमंगल कृति करना उनका स्वभाव था। उन्होंने अनेक व्यायामशालाएँ और ग्रन्थालय स्थापित किए। जिससे लोगों की आत्मिक और बौद्धिक उन्नति हुई। उन्होंने वैद्य शास्त्र का भी अभ्यास किया था। वे धर्म, जाति आदि भेदों के बिना रोगियों का निशुल्क उपचार करते थे। उन्होंने नील कंठशास्त्री, श्रीकृष्णाचार्य जी आदि विद्वानों को शास्त्रार्थ में हराया। अनेक सामाजिक कुरीतियों का खंडन करते हुए विधवा पुनर्विवाह भी सम्पन्न करवाया।

श्रेष्ठमहिलारक्षक

मुसलमानों ने दलित महिला का जबरन धर्मपरिवर्तन करवाकर उसका नाम आयशा रखा। तब श्यामलाल जी ने उस महिला को मुक्त कराया। इसलिए मुस्लिमों ने उन पर मिथ्या आरोप लगाकर महाभियोग चलाया। वह मिथ्या अभियोग दीर्घकाल तक चला। आठ महिनों बाद श्यामलाल जी निर्दोष सिद्ध हुए।

आर्यसमाजस्य विरोधकारणम्

इस्लाम और आर्य समाज दोनों में एक ईश्वर की उपासना होते हुए विरोध का क्या कारण है ? ये प्रश्न पूछने पर मुसलमानों ने कहा कि - हिन्दू जाति की फसल काटने में केवल आर्य समाज ही बाधक है।

महिलोपवीत संस्कारः

श्यामलाल जी ने श्रावणी के अवसर पर मनोहर वेद कथा करते हुए शान्तिदेवी का यज्ञोपवीत संस्कार किया।

सिद्धान्तनिष्ठा

श्यामलाल तथा उनके भ्राता दोनों ही सिद्धांतवादी थे। इसलिए जब उनकी बहन का विवाह आर्य समाज पद्धति के अनुसार नहीं किया जा रहा था। तब श्यामलाल जी अपनी बहन के विवाह में सम्मिलित नहीं हुए।

पुनःरुग्णता

बचपन में ही बीमारी से कमजोरी आने का प्रभाव युवावस्था में भी रहा जिससे श्यामलाल जी पुनः रोगी हो गए। वे पहले हिमालय, तत्पश्चात् हैदराबाद, फिर बैंगलोर से बम्बई चले गए। वहाँ डॉ. जाधव के इलाज से स्वस्थ हो गए। उसके बाद श्यामलाल जी ने स्थान-स्थान पर आर्य समाज की सैकड़ों शाखाएँ स्थापित की। जिससे आक्रोशित मुसलमानों ने वेदप्रकाश जी की हत्या गुंजोटी ग्राम में की। श्यामलाल जी की हत्या का भी भरसक प्रयास किया किन्तु वे विफल रहे।

अन्तिमकारावासो महाप्रयाणं च

1938 में विजयादशमी के पर्व पर शोभायात्रा निकालते समय आर्य समाजियों पर आक्रमण किया, गोलियाँ चलायी। जिससे श्यामलाल जी बच गए किन्तु उन्हें बन्दी बनाकर बिदर जेल में भेज दिया गया। बीमारी के कारण वे दूध ही ग्रहण किया करते हैं। जेल का दारोगा-मोहम्मद एक क्लीन व्यक्ति था। श्यामलाल जी के लिए दूध का इंतजाम कर देता था। असंतुष्ट लोगों ने वहाँ से मोहम्मद को हटवाकर अयूब का नियुक्ति करवा दी। अयूब ने श्यामलाल जी का दूध बंद करवा दिया और उनकी औषधी भी बंद कर दी। 14 दिसम्बर के दिन उनको पेट दर्द हुआ तब भी उन्हें दवाई उपलब्ध नहीं करवाई गयी। तीन दिन बाद उन्हें दूध दिया गया जो वह पचा नहीं सके। उन्हें विष दे दिया गया था। अपने अंतिम समय में उनकी आवाज बंद हो गयी। उन्होंने गंगाधर जनगावे नामक युवक जो उनके कमरे में रहता था।

उसको एक पत्र अपने बड़े भाई तक पहुँचाने के लिए दिया कारागार में विष प्रयोग से श्यामलाल जी के निधन का वृत्तान्त आग की भाँति सारे देश में फैल गया।

शवप्राप्त्यर्थसंघर्षः

श्यामलाल जी के शव की प्राप्ति के लिए उनके मामा दत्तात्रय प्रसाद जी को बहुत प्रयत्न करना पड़ा। बिदर जेल के अधिकारी फिर भी शव देने को तैयार नहीं हुए। रुचिराम नामक सज्जन की सहायता से शव प्राप्त कर शोलापुर ले जाया गया।

शोलापुरे विशालतमान्त्ययात्रा श्रद्धांजलिसमर्पणं च -

शोलापुर में उनकी अंतिम यात्रा में अपार जनसमूह ने भावभीनी और श्रद्धाभक्ति युक्त हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। इस प्रकार श्यामलाल जी अमर हो गए। वे दया और करुणा के सागर थे। दुष्टों के लिए वे काल के समान थे। जिसका जीवन हिमालय जैसा ऊँचा और धीर धवल है तेजस्वी सूर्य जैसा उज्ज्वल, सागर समान शान्त, अगाध और गंभीर दर्पण के समान निर्मल, धीरोदात्त, पवित्र, वीर, शिरोमणि को शतशः हार्दिक नमस्कार।

निजामस्य पश्चातापः क्षमायाचना च

अपने जीवन के अन्तिम समय में निजाम द्वारा पं. नरेन्द्र जी के समक्ष दीनभाव से पश्चाताप करत हुए अपने कृत्यों के लिए क्षमा याचना की। तब नरेन्द्र जी ने कहा - हमने संघर्ष धर्म और संस्कृति के लिए किया न कि स्वार्थ के लिए।

(iii) वैशिष्ट्य

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर मराठी साहित्य मण्डल में चिर-परिचित नाम है जिनको किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने अनेक विषयों को ध्यान में रखते हुए काव्य रचनाएँ की हैं जिनमें खण्डकाव्य ऐतिहासिक काव्य, महाकाव्य प्रमुख है। उसी क्रम में प्रो. रेणापुरकर जी ने भारतभूमि के शूरवीर राष्ट्रभक्तों, समाजोद्धारकों का स्मरण करते हुए उन्हें “श्रद्धाञ्जलि” अर्पित करने के लिए काव्य का सहारा लिया है। काव्यप्रकाश के रचयिता मम्मटाचार्य ने काव्य प्रयोजन हेतु ‘कान्तासम्मितयोपदेशयजेइति’ यह पंक्ति कही है उसी अनुरूप चले हुए महापुरुषों के जीवन से मिलने वाले उपदेशों को काव्य माला में पिरोया है। प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी के अनुसार – “शरीर के स्वास्थ्य रक्षा के लिए जिस प्रकार विटामिन युक्त आहार का सेवन करना आवश्यक है उसी प्रकार जीवन की सफलता के लिए जीवन मूल्यों का होना भी आवश्यक है। महापुरुषों के कार्यों का स्मरण करते हुए उनको काव्य के माध्यम से श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है जिससे आने वाली पीढ़ियाँ भी उनके कृत्यों का मूल्य समझ सकें तथा जीवन में उन्हीं मूल्यों का अपनाएँ।

“हुतात्मश्रीश्यामलाल चरितम्” नामक काव्य में श्री श्यामलाल जी के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त वर्णन किया है। श्री श्यामलाल जी बचपन से ही अपने मामा तथा भ्राता के पदचिहनों पर चलकर आर्यसमाज के कार्यकारी सदस्य बने तथा आजीवन अविवाहित रहते हुए देश की सेवा में ही अपने प्राणों का अर्पण किया। इस काव्य के माध्यम से प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर श्री श्यामलाल जी को आत्मिक श्रद्धाञ्जलि दे रहे हैं।

छन्द प्रयोग -

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने अपनी एक ही छन्द की परम्परा तोड़ते हुए इस काव्य में एक से अधिक छन्दों में श्लोक लेखन किया है। अन्यथा प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुर जी अपने काव्यों में एक ही वृत्त का प्रयोग करते हुए काव्य रचना करते हैं।

1. वसन्ततिलका -

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभ्रजौ जगौ गः ।

उदाहरण

ये मातृभूमि-निजसंस्कृतिधर्म हेतोः
प्राणार्पण विदधते प्रहसन्त रण ।
धन्या भवन्ति भुवने खलु ते महान्त
स्तेषां च कीर्तिराणिह्यर्यपि भातिनित्यम् ।।

2. मन्दाक्रान्ता -

लक्षण	मन्दक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौतौ गयुगर्मम्
उदाहरण	दृष्ट्वा देशे मुगलकुलसाम्राज्यसूर्यास्तमेव स्वाततन्व्यं तैर्द्युषितमभवनैकसामान्तभूपैः। आसीत्तेषु प्रवरनृपतिश्चासफीयो निजामो हैद्राबादं द्युषितमभवत्तेन राज्यं स्वतन्त्रम्।।

3. शार्दूलविक्रीडितम् -

लक्षण	सूर्याश्वैर्यदिमः सजौ सततगा शार्दूलविक्रीडितम्
उदाहरण	मुस्लीमा ननु सन्ति शासकजना हिन्दूजनाः शासिता इत्थं तैहि निजामशाकसमं ह्युदघोषितं मुस्लिमैः हिन्दूनां गणना प्रचण्डविपुलां न्यूनां विधातं तथा संख्यां वर्धयितुं च मुस्लिमजनानां घोरयत्नाः कृताः।।

4. शिखरिणी -

लक्षण	रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी
उदाहरण	कदाचित्कोहीरे कचिदपि च माणीनगरे विशाले होलीकाप्रवरमहसः पूतदिवसे। जनानां यात्रायामकृत वरनेतृत्वमपितत् तदा श्रीमद्दह्यायामैरमितधृतिधमाद्रिपरमैः।।

5. उपजाति -

लक्षण	अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौपादौयदीयावुपजात। इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातेष्वि।।
उदाहरण	ततः क्रमेणार्थ समाजकार्यं जगाम वृद्धिं खलु तीव्रगत्या। प्रस्थापिता आर्यसमाजशास्त्राः सर्वत्र राजये शतशो बभूवुः।।

अलंकार प्रयोग -

सामान्यतः प्रो. रेणापुरकर निम्नलिखित अलंकारों का ही प्रयोग अपनी रचनाओं में करते हैं। अलंकारों से मण्डित काव्य रचना में उनकी विशेष रुचि दृष्टिगत नहीं होती

हैं फिर भी उनके काव्यों के विषयानुरूप जिन अलंकारों का प्रयोग उनके द्वारा किया जाता है। वह शोभनीय है। यथा -

1. उत्प्रेक्षा अलंकार -

लक्षण	सम्भावनामयोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेनयत्
उदाहरण	स्वर्गस्य खण्ड इव भूमि तलावतीर्णः मानुष्यकेण किमुदेवगर्णेरपीड्यः। चारीत्र्यशीलमहनीयगुरुस्त्रिलोक्यः देशो बभूव परवान् खलु भारताख्याः।। प्रस्तुत श्लोक में भारतभूमि को स्वर्ग के टुकड़े के समान माना गया है। 'इव' का प्रयोग उत्प्रेक्षा अलंकार बताता है।

2. उपमा -

लक्षण	प्रस्फुटंसुन्दरं साम्यमुपमेस्यभिधीयते
उदाहरण	कदाचित्कोहीरे कचिदपि चमाणीकनगरे विशाले होलीकाप्रवरमहसः पूतदिवसे। जनानां यात्रायामकृत वरमेत्त्वमपि तत् तदा श्रीमच्छ्यामैरमितघृतिधामाद्रिपरमेः।। प्रस्तुत श्लोक में श्री श्यामलाल जी को हिमालय की उपमा दी गई है।

3. अनुप्रास -

लक्षण	अनुप्रासः शब्द साम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्यात्।
उदाहरण	अन्यायस्य विरुद्धघोरसमरं ह्याजीवनं चालयन् नूनं मानवधर्मसंस्कृतिकृते प्राणार्पण साधयन्। अत्याचारिनिजामशासनहरन् घोरोग्रहामरुद् हौताम्यन बभूव नूनममरः श्रीश्यामलालोमहान्।। प्रस्तुत श्लोक में शब्दों की आवृत्ति 'नूनं' दृष्टिगत होती है अतः अनुप्रास अलंकार है।

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ने अनेक प्रकार के काव्यों की रचना की जिनमें प्राचीन अर्वाचीन समस्त विषयों का समावेश किया गया। 'हुतात्मश्रीश्यामलाल चरितम्' नामक खण्डकाव्य प्राचीन व अर्वाचीन को दर्शाने वाला काव्य न होकर श्यामलाल जी के प्रति प्रो. रेणापुरकर जी के सम्मान को दर्शाने का प्रतीक है यह काव्य रेणापुरकर जी ने देशभक्त श्यामलाल जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने हेतु रचा है।

द्वितीय अध्याय – श्रद्धाकुसुमाञ्जलि:

(i) सामान्य परिचय –

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले महापुरुषों का स्मरण करते हुए इस काव्य संग्रह का निर्माण किया है। रेणापुरकर जी ने अपनी काव्य कृतियों के द्वारा मानवता की भावना रखने वाले महापुरुषों की जीवन गाथा को लेखनी प्रदान की है। प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने पूर्व में भी 'काव्योन्मेष' नामक काव्य संग्रह में वन्दनीय श्री महात्मा गान्धी – जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इन्दिरा गांधी, वीर सावरकर, लाला लाजपतराय आदि राष्ट्र पुरुषों को हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है।

“श्रद्धाकुसुमाञ्जलिः” नामक काव्य संग्रह में सप्तविंशति काव्यों में विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित महापुरुषों को श्रद्धा सुमन अर्पण किए हैं। सप्तविंशति काव्यों के इस संग्रह का वर्ण्य विषय निम्नानुसार है –

प्रथम काव्य “हा! हन्त! हन्त! कनडिर्दिवमुज्जगाम” में एकादश श्लोकों में मानवाधिकारों के लिए कार्य करने वाले केनेडी महोदय का वर्णन है। द्वितीय काव्य ‘हा! ब्रह्मदत्तोऽपि दिवं प्रयातः’ में चतुर्दश श्लोकों में ‘वेदविद्या मे निपुण ब्रह्मदत्त जी का वर्णन प्रस्तुत है। तृतीय काव्य “दिवं प्रायात् कष्टं! कवितिलकमेधाव्रतमुनिः” में सप्तश्लोकात्मक वर्णन है। जिसमें मेधाव्रत जी का स्मरण किया गया है। “हा! मैथिलीशरणगुप्तकविः प्रयातः” नामक चतुर्थ काव्य में द्वादश श्लोकों में हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि का वर्णन है। पञ्चम काव्य ‘ध्रुवानन्दयोगी ध्रुवं धाम यातः’ नामक काव्य में ध्रुवानन्दयोगी जी को दश श्लोकों में श्रद्धाञ्जलि अर्पित की है। षष्ठ काव्य “हा हन्त! बेल्वेलकरः प्रयातः” नामक काव्य में द्वादश श्लोकों में बेल्वेलकर जी का उल्लेख किया है। “हा! रामचन्द्रोऽपि गतो दहेल्वी” नामक सप्तम काव्य में अष्ट श्लोकात्मक भागों में श्री रामचन्द्र जी के देहली जाने का वर्णन है। “हा हन्त! हन्त! गतवान् हरिशङ्करोऽपि” नामक अष्टम काव्य में एकादश श्लोकों में हरिश्चन्द्र जी का स्मरण किया है। “हा! हा! सातवलेकरोऽपि गतवान्” दामोदर के स्वर्गागमन को लेखनी प्रदान की गई है। “हा! धिग्! गतः सातवलेकरार्य” नामक दशम काव्य में सप्तविंशति श्लोकों में सातवलेकर जी का स्मरण किया है। एकादश काव्य “गंगाप्रसाद इति सूरिवरः प्रयातः” नामक काव्य में त्रयोदश भागों में गंगाप्रसाद जी का वर्णन किया है। “श्रुत्यतिहागवेषकः स भगवदत्तः प्रयातः सुधीः” नामक द्वादश काव्य में भगवदत्त जी को याद किया है। “त्रयोदश श्लोकों में समर्पण के स्वर्गागमन का वर्णन है। “हन्त! हन्त! गतवान् मुनिशर्मनीषी” नामक चतुर्दश अध्याय में मुनिशिमनी के संसार से चले जाने पर खेद प्रकट किया है। “धन्यो धन्यः श्री विदेहो प्रयातः” नामक अध्याय में द्वादश श्लोकों में विदेह जी के ब्रह्मलोक गमन को वर्णित किया है। “हा हन्त! हन्त! गतवान् सः जयप्रकाशः”

नामक षोडश काव्य में चतुर्विंशत् श्लोकों में जयप्रकाश जी के निर्वाण को लेखनी प्रदान की है। “हन्तानन्दमुनिर्गतोनरवरः श्रीशेषरावाभिध” नामक सप्तदश काव्य में नवविंशति श्लोकों में श्री शेषराव जी के ब्रह्मगमन को वर्णित किया है। अष्टादश काव्य “अस्तं गतो व्याकरणांशुमाली” में व्याकरणाचार्य चारुदेव की जीवनी को वर्णित किया है। नवदश काव्य “अस्तं गतो हा! श्रुतिशास्त्रभानुः” में श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक के चले जाने पर शोक प्रकट किया है। “हा हन्त! हन्त! गतवान् यतिसार्वभौम” नामक विंशति काव्य में सत्यप्रकाश जी के ब्रह्मगमन का वर्णन मिलता है। “गता प्रज्ञादेवी प्रबुधमहिला सत्प्रतिनिधिः” नामक एकविंशति काव्य में षोडश श्लोकों में प्रज्ञादेवी के देवगमन पर शोक प्रकट किया गया है। “वर्णकरोऽपि हा हन्त! गत् कवीन्द्र” नामक द्वाविंशति काव्य में एकादश श्लोकों में वर्णकर जी के ब्रह्मगमन का वर्णन मिलता है। “श्री रामकृष्णनबुधोपि” नामक त्रयोविंशति काव्य में षोडश श्लोकों में श्री रामकृष्णन् जी के देवगमन को वर्णित किया है। चतुर्विंशति काव्य में “हा हन्त! हन्त! गतवान् स कवीश्वरोऽपि में षोडश श्लोकों में कवीश्वर के देवगमन का वर्णन है। “हा! हन्त! गतवान् खलु वासुदेवः” नामक पञ्चविंशति काव्य में त्रयोविंशति श्लोकों में वासुदेव के जी के विषय में वर्णन मिलता है। “श्री नरसिंहरावाय श्रद्धाञ्जलि” नामक काव्य में सप्तविंशति श्लोकों में नरसिंह राव जी को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए हैं। सबसे अन्त में हा! हन्त! हन्त! गतवान् स महाजनोऽपि नामक काव्य में अष्टादश श्लोकों में प्रमोद महाजन जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई है।

(ii) विवेचन एवं विश्लेषण

1. हा हन्त! हन्त! कनाडिर्दिवमुज्जगाम -

अमेरिका के प्रतिष्ठित पद को धारण करने वाले केनेडी महोदय विश्वशान्ति के परिपालक थे। वे भारतीय स्वतंत्रता में मित्रवत् भाव रखने वाले थे। अमेरिका के जनपद में प्रतिष्ठा प्राप्त केनेडी के चले जाने पर खेद प्रकट किया गया है। जिन्होंने वंश वर्णन से चले आ रहे मानवों के वर्ग भेदों को अपने प्राण देकर भी मिटाया। धीरशाली, उत्कृष्ट विचारधारा वाले जॉन-एफ-केनेडी चले गए।

अज्ञानदैन्यविधुरस्य बुभुक्षितस्य ¹

रोगातुरस्य जगतः प्रविकासनाय।

नक्तं दिवं प्रयतमान उदारचेताः।

हा हन्त! हन्त! कनाडिर्दिवमुज्जगाम।। (1.3)

अज्ञानी, रोगी, भूखे लोगों के लिए दिनरात कार्य करके विकास करने वाले केनेडी महोदय देवलोक सिधार गए। दुर्भेध लोह पटल के समान जो कठिनकर कार्य था। वही शान्ति का पथ कार्य करने हेतु चुना। नीग्रो लोगों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। जब वो अपनी चुनावी प्रक्रियाओं की तैयारी कर रहे थे, तभी दुर्बुद्धि बसवाल्ड नामक व्यक्ति ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। विश्व के रक्षक के रूप में माने जाने वाले केनेडी महोदय मृत्यु के मुख पर खड़े थे। अणु अस्त्रों की रूस के साथ संधि करने वाले केनेडी जी ने मानव के लिए सत्य, शिव सुन्दर का प्रतिरूप पेश किया। जिस प्रकार गांधी, मसीह, सुकरात, लिंकन आदि ने विश्व शान्ति के लिए कार्य किया, उसी उच्च पदवी को केनेडी महोदय ने भी प्राप्त किया। जब तक इस धरा पर सिन्ध की धाराएँ हैं, आकाश में सूरज, चाँद प्रकाशमान हैं, तब तक मानवों में उनकी प्रतिष्ठा यूँ ही बनी रहेगी। हम उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

यावद्विभान्ति गगने रविचन्द्रताराः ²

यावद्भवन्ति भुवि भूधरसिन्धुधाराः।

यावच्च मानवगणस्य भुवि प्रतिष्ठा

तावल्लसेत्कञ्जिगौरवदिव्यगाथा।। (1.11)

विशेष - वृत्तम् - वसन्ततिलका

जॉन. एफ. केनेडी - जन्म - 29 मई 1917 मृत्यु - 22 नवम्बर 1963

अमेरिका के 35वें राष्ट्रपति थे।

2. हा! ब्रह्मदत्तोऽपि दिवं प्रयातः

वेद विद्या में निपुण, शब्दशास्त्र के सूरज के समान श्री ब्रह्मदत्त जी के स्वर्ग सिंधार जाने पर रेणापुरकर जी उन्हें नमन करते हुए श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। श्री दयानन्द सरस्वती जी से विशेष अनुराग रखने वाले इन तपस्वीवर्य ब्रह्मदत्त जी को सभी विद्वत्जन भी प्रणाम करते हैं। ऋषियों द्वारा प्रशस्त किए ज्ञानमार्ग पर चलकर ब्रह्मदत्त जी ने ज्ञान मार्ग को भी विस्तार प्रदान किया। प्रकाण्ड पाण्डित्य विलास वाले ब्रह्मदत्त जी को कौन नहीं पूजता ? वीरजानन्द जी द्वारा बताए मार्ग पर चलते हुए इन्होंने व्याकरण को नई दिशा प्रदान की। पहले व्याकरण के लिए मान्य ग्रन्थ मनोरमा-शेखर-कौमुदी आदि को भी अपने ज्ञान से सुगम शैली तक ले जाने का कार्य किया। विद्वत् जनों द्वारा प्रकाशित की जा रही संस्कृत पत्रिकाओं हेतु इन्होंने संपादक का कार्य किया। चमकते हुए आभामण्डल के समान मुख वाले, चूडामणि, वैदिक पण्डितों में नवीन कार्यप्रणाली का संचार करने वाले ब्रह्मदत्त जी के देवलोक गमन करने पर श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत करते हैं।

वृत्त - उपजाति

3. दिवं प्रायात् कष्टं! कवितिलकमेधाव्रतमुनिः

अनेक ललित, मधुर काव्यों के रचयिता मेधाव्रत मुनि अनेक विद्वानों की वाणी के द्वारा अलंकृत हुए। दयानन्द ऋषि की विमल छवि के समान मेधाव्रत मुनि कवितिलक उपाधि धारण करने वाले थे एवं काव्य आकाश में चमकते हुए सितारे की तरह सभी को प्रकाशित करने वाले थे। बडोदा, चित्तौड़ आदि में गुरुकुल में आचार्य की पदवी धारण करते हुए सभी के सम्मान का पात्र रहे। चरित्र निर्माता अनेक व्यक्तियों को ज्ञानमणि की आभा से प्रकाशित करने वाले मेधाव्रत मुनि गद्य कवियों में उसी तरह रोशनी और शीतलता प्रदान करने वाले थे जिस प्रकार चन्द्रमा की चाँदनी अधरे में रोशनी व शीतलता प्रदान करने वाली होती है। वीरजानन्द जी को आदर्श मानने वाले मेधाव्रत जी अनेक गुणों से सुशोभित अमृतवाणी वाले थे अपने कृत्यों से कविकुलगुरु का स्मरण कराने वाले कवितिलक की उपाधि से सुशोभित हुए। ऐसे कवि तिलक को प्रो. रेणापुरकर जी का कोटि-कोटि नमन एवं श्रद्धाञ्जलि अर्पण।

वृत्त - शिखरिणी

4. हा! मैथिलीशरणगुप्तकविः प्रयातः

हिन्दी भाषा के कवि मैथिलीशरण गुप्त जी वाणी में सरस्वती के विराजमान होने से साहित्य जगत्, भाषा जगत् में उच्च स्थान के अधिकारी हुए। इन्होंने भारत की यशोगाथा को गीतों के रूप में प्रस्तुत किया। स्वतंत्र भारत में राजाओं की स्तुति गान करने वाले चारण भाटों को दृष्टिपटल पर लाने का कार्य इन्हीं कविवर के द्वारा किया गया। इनके द्वारा विभिन्न कार्य किये गये। यथा - देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत रचनाओं का निर्माण करके

अन्यों में भी देशभक्ति की भावनाओं को उजागर करने का कार्य किया। 'साकेत' नामक ग्रन्थ की रचना करके प्रसिद्धि प्राप्त की। इन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि प्रदान की गई। प्राचीन काव्यों के नायक रूप राम, लक्ष्मण के चरित्र को वाणी प्रदान की। भव्य वर्णन प्रस्तुत किया। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने दया की प्रतिमूर्ति त्याग भावना से परिपूर्ण अबला नारी जीवन का सचित्र वर्णन किया। दारिद्र्य दुःख से पीड़ित दरिद्रों को अपनी लेखनी का विषय बनाया। उनकी पीडा को उजागर किया। प्राचीन काल की गौरव गाथाओं को विषय बनाने की अपेक्षा आधुनिक विषयों को लेखनी प्रदान की। हिन्दी परिमण्डल में अपने सौहार्द भाव के कारण ददा के नाम से प्रसिद्ध तथा पद्म विभूषण जैसे राष्ट्रीय पुरस्कार को प्राप्त करने वाले श्री मैथिलीशरण गुप्त जी के देवलोक गमन करने पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

वृत्त - वसन्ततिलका

5. धुवानन्दयोगी ध्रुवं धामयातः

वेद विद्या का प्रचार प्रसार करने वाले शुद्ध, पवित्र अन्तरात्मा पुरुष धुवानन्द जी के ईश्वर के धाम में चले जाने पर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जा रही है। जिन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए, सनातन धर्म के लिए सर्वस्व लुटा दिया एवं अपना सम्पूर्ण जीवन त्याग दिया। दयानन्द जी के विचारों को मानने वाले एक आदर्श शिष्य धुवानन्द योगी प्रकाण्ड पण्डित बन गए। आर्य समाजियों की सभा में प्रमुख पाँच नेतृगणों में जिनका स्थान सुनिश्चित था वे धर्मयुद्ध के नायक धुवानन्द योगी जी थे। वे शास्त्रार्थ में सर्वदा हिस्सा लेने वाले, मनीषियों में अग्रगण्य थे ना केवल देश में अपितु विदेशों में भी आर्य समाज का प्रचार-प्रसार किया। तप, त्याग, वैदुष्य की प्रतिमूर्ति धुवानन्द जी स्फूर्ति प्रदान करने वाले थे। जिन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया। ऐसे धुवानन्द जी वन्दनीय हैं। जिस प्रकार चकोर नामक पक्षी के लिए चन्द्रमा की किरणें ही भोजन हैं, श्वेत कमल के लिए सूर्य की किरणें ही जीवनदायक हैं। उसी प्रकार धुवानन्द योगी जी आर्य समाज के लिए आवश्यक हैं। ऐसे महान व्यक्तित्व के देवलोक गमन पर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

चकोरो यथा शीतरश्मौ प्रयाते ^३
 प्रयाते च भानौ यथा पुण्डरीकम्।
 तथा दुःखमग्ना समस्तार्यजातिः
 परं धाम याते धुवानन्दसाधौ।। (5.10)

वृत्त - भुजंगप्रयातम्

6. हा! हन्त! बेल्वेलकरः प्रयातः

शारदा के मुकुट स्वरूप, विद्वत जनों की माला में मणि के समान, चमकते हुए रत्न के समान पवित्र हृदय बेल्वेलकर जी के स्वर्ग सिंघार जाने पर खेद प्रकट करते

हैं। विद्या ग्रहण के बाद न केवल अपने कार्य क्षेत्र में अपितु मुम्बई, हार्वर्ड विद्यालय तक में अपनी अमिट छवि का निर्माण करने वाले बेल्वेलेकर जी चले गए। विद्यालय में तो उच्च सम्मान या पद के अधिकारी थे ही वाराणसी में अपूर्व पाण्डित्य के कारण इन्होंने संस्कृत विभाग में उच्च पद प्राप्त किया। साहित्य शास्त्र तथा शोध कार्य दोनों में ही श्रेष्ठ कार्य किए। संस्कृत भाषा में व्याकरण प्रबन्ध में अच्छे कार्यों के लिए राष्ट्रपति महोदय के द्वारा सम्मानित हुए। प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, भण्डारकर केन्द्र द्वारा हमेशा इनके कार्यों की सराहना की जाती रही है। भारत संहिता के विषय में समस्त गुण, दोषों को उजागर करने वाली प्राचीन विद्या परिषद् के उत्थान हेतु कार्य करने वाले महापुरुष बेल्वेलेकर जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

वृत्त - उपजाति

7. हा! रामचन्द्रोऽपि गतो दहेल्वी

शास्त्रार्थमहारथी, तर्कपंचानन, अद्वितीय नैयायिक, प्रत्युत्पन्नमति पुरुष श्री रामचन्द्र जी चले गए। जिनके तीव्र और उग्र तर्क रूपी बाणों के प्रहार से विपक्षी विद्वानों रणक्षेत्र छोड़ भाग खड़े होते थे। समस्त ऋतुओं को सहन करते हुए ही दिल्ली के फौवारा नामक स्थान पर अवतरित 12 वर्ष तक धर्म का प्रचार किया। इनके ईश्वरवाद ओर आस्तिकवाद मण्डन विषयक भाषणों को सुन-सुनकर लोग स्वयं को धन्य समझते थे। अन्य धर्मों की पुस्तकों या ग्रन्थों की जानकारी ने इन्हें अन्य धर्म समुदाय के लोगों में विशेष स्थान दिलाया, जिसके फलवरुण कुरान पाठ के लिए मुस्लिम महिला ने स्वर्ण पदक तथा शास्त्रार्थ में अनुपम कुशलता से प्रसन्न पादरी ने इन्हें स्वर्ण मुद्रा प्रदान की। इससे भयभीत निजाम ने इन्हें राज्य से निष्कासित कर दिया। विनोद से सदा रम्य और प्रसन्न रहने वाली मूर्ति सदा के लिए लुप्त हो गई। आर्य समाज के आकाश से तेजस्वी नक्षत्र अस्त हो गया। ऐसे महानयक को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

शान्तोऽभूत्स विधर्मिकम्पकरणो गम्भीरमन्द्रस्वरः⁴

लुप्ता सा परिहासरम्यरुचिर! मूर्तिः प्रसन्ना सदा।

तेजस्व्यार्यसमाज भव्यनभसो नक्षत्रमन्तर्दधौ

जाता चाद्य विनाथदुःखविधुरा शास्त्रार्थविद्या परा।। (7.8)

वृत्त - शार्दूविक्रीडितम्

8. हा हन्त! हन्त! गतवान् हरिशङ्करोऽपि

श्री नाथूलाल जी के पुत्र, श्रेष्ठ संपादक, सुकवि, शास्त्रवेत्ता, प्रादेशिक कार्यपरिषद के प्रमुख हरिशंकर जी के चले जाने से राष्ट्र को बहुत हानि हुई है। राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने वाले, सम्पूर्ण क्षेत्र में वाणी से लोगों को प्रभावित करने वाले महान व्यक्तित्वा

के धनी हरिशंकर जी देवलोक चले गए। जिनके द्वारा हास्य से परिपूर्ण सुन्दर साहित्य उद्यान को लगाया गया। आनन्द एवं हास्य के सागर समझे जाने वाले हरिशंकर जी ने अपनी लेखनी से सत्यं, शिवं, सुन्दर को चरितार्थ किया। स्वस्थ, शोभायुक्त विचारों के प्रदाता, प्राचीन भारतीय संस्कृति से जुड़े गीतों के गायक, कान्त कमनीय कवि ने चिडियाघर, घासपाता, दीनामशीतिम् जैसे असंख्य पुस्तकों की रचना की। वे गंभीर हास्य के चित्रण में भी सिद्धहस्त थे तथा हिन्दी भाषा में भी अच्छी रचनाओं का निर्माण करके पुरस्कार के अधिकारी बने। भारत की सभ्यता, संस्कृति के संरक्षक थे। उन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, मराठी भाषा के साथ ही साथ बांग्ला में भी पत्रिकाओं में लेखों की रचना की एवं राष्ट्रीय गौरव रूप भाषायी सम्मान प्राप्त किए। दयानन्द जी को आदर्श पुरुष मान “महर्षि महिमा” नाम से ग्रन्थ की रचना हरिशंकर जी ने की। लाजपतराय जी के चारित्रिक गुणों को भी लेखनी प्रदान की। ऐसे महाकवि हरिशंकर जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

वृत्त - वसततिलका

9. हा! हा! सातवलेकरोऽपि गतवान् श्रीपाददामोदरः

वेदों के संशोधन के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करने वाले चित्रकला की सफल तूलिका को वेदों के लिए त्यागने वाले श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी चले गए। “वेद समस्त विद्याओं का भंडार और परमात्मा का ज्ञान है इसलिए वेदों के आर्ष वचनों को जीवन में धारण करना चाहिए।” ऐसे विचारों वाले सातवलेकर जी के लिए संकल्प, विकल्प, हृदय स्पंदन सब वेदों के लिए था। दयाधन दयानंद जी के दर्शन कर प्रभावित हुए सातवलेकर जी ने गुरुकुल कांगड़ी में वेदाचार्य पद को सुन्दरता से विभूषित किया था। अपने ओजस्वी ग्रन्थ वैदिक राष्ट्रगीत के कारण आंग्लों द्वारा वे हैदराबादसे निर्वासित कर दिए गए। तत्पश्चात् वैदिक प्रार्थनाओं की तेजस्विता के कारण जेल में डाल दिए गए। इन्होंने ही वेदों की संहिताओं को सर्वजन सुलभ बनाया। रामायण, महाभारत और उपनिषदों के उत्तम भाष्य लिखें। जिन्होंने अपनी कुशाग्र बुद्धि स्वयं निर्मित शैली से कठिन और दुरुह वेदार्थ का सुगम बनाया। वेद केवल पारलौकिक कल्याण के साधक हैं न कि इहलौकिक इस मिथ्या भावना को दूर किया। वेदों को इहलौकिक कल्याण का साधक सिद्ध किया। यज्ञ जैसे पवित्र और पुण्यकार्य में पशुहिंसा का कहीं भी विधान वेदों ने नहीं बताया यह बात इन्होंने प्रमाणित की। वेद के वचन हम सौ वर्ष से भी अधिक जीवें, अपने जीवन में सिद्ध किया। सौ वर्ष तक चलने वाले महान् ज्ञान यज्ञ का सहसा सत्रावसान हो गया। जब तक सूर्य चन्द्र और तारागण आकाश में विराजमान हैं तब तक सातवलेकर जी की कीर्ति संसार में अक्षुण्ण और उज्ज्वल रहेगी। ऐसे महान व्यक्तित्व सातवलेकर जी को श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हैं।

वृत्त - शार्दूलविक्रीडितम्

11. गंगाप्रसाद इति सूरिवरः प्रयातः

विश्व का उपकार करने वाली आर्य समाज संस्था का दुर्भाग्य ही है कि संस्था के कार्यकर्ता रूप गंगाप्रसाद जैसे पण्डित चले गए। उनके स्थान पर पूर्ति किसी अन्य द्वारा नहीं की जा सकती। निर्धन कायस्थ परिवार में जन्म लेने वाले गंगाप्रसाद जी के पिता प्रारम्भ से ही ब्राह्मण के समान जीवनयापन करते थे। गंगाप्रसाद जी ने शिक्षकों से प्रेरणा लेकर प्रसिद्ध की। शास्त्रार्थ करने हेतु हरिशंकर जी के साथ देहली भी गए। पाण्डित्य युक्त गंगाप्रसाद जी ने अनेक काव्यों की रचना की। बाल्यकाल से ही सत्यार्थ की ओर झुकाव ने इनके जीवन पथ को सुनिश्चित कर दिया था इन्होंने आस्तिकवाद के प्रशंसक होने के कारण शंकरभाष्य पर टीका लिखी, आर्योदय, आर्यस्मृति की रचना की, जैमिनीय गुरुदर्शशास्त्र भाष्य तथा शतपथादि ब्राह्मण ग्रन्थों का अनुवाद कर शास्त्रपटुता सिद्ध की। वे प्रादेशिक कार्य परिषद् में प्रमुख धुरी थे। सार्वदेशिक सभा के सचिव पद पर सुशोभित थे। देशान्तर में वैदिक धर्मदूत थे। आंग्ल, उर्दू, हिन्दी भाषा में अच्छी पकड़ रखने वाले गंगाप्रसाद जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

वृत्त - वसंततिलका

12. श्रुत्यैतिहागवेषकः स भगवद्गतः प्रयातः सुधीः

श्रुति इतिहास की खोज करने वाले भगवद्गत चले गए। श्रुतियों की खोज करने वाले इन ज्ञानी पुरुष के अनेक शिष्य विदेशों में भी थे। इन्होंने संस्कृति के मूल तत्त्वों की खोज की। प्राचीन विशाल साहित्य के खजाने को सबके समक्ष उजागर किया। जिसमें आर्यावर्त के इतिहास के दो ग्रन्थों के रूप में प्रस्तुत किया। गंभीर, धीर, पाण्डित्य वाले वेदों के ज्ञानसागर, जगद्गुरु दयानन्द ऋषि से परंपरागत वृत्तियों को ग्रहण करने वाले भगवद्गत जी चले गए। सृष्टि उत्पत्ति के विषय में लिखी गई कथा के अन्तर्गत जो कुतर्क लिखे गए उनका खण्डन इन्होंने पूर्ण रूप से किया। यास्काचाय निरुक्त भाष्य रचनाकार के वे मूल थे। लाहौर में स्थित आंग्ल वैदिक दयानन्द विद्यालय में भगवद्गत जी प्राध्यापक रहे तथा दयानन्द जी के बहुत बड़े भक्त रहे।

लाहौरे प्रथितांग्लवैदिकदयानन्दार्यविद्यालये ⁵

पूर्व वैदिकशोधपण्डितवरश्चैति ह्यप्राध्यापकः।

पश्चाच्चैव कपूरन्यासमुखरः संस्थापाकश्चापियः

श्रुत्यैतिहागवेषकः स भगवद्गतः प्रयातः सुधीः।। (12.7)

वृत्त - शार्दूलविक्रीडितम्

13. समर्पणानन्दयतिः प्रयातः

तर्क में वैदुष्य के लिए पुरस्कृत, दुरुह वेदार्थ की खोज करने वाले समर्पणानन्द जी कै जाने से जो क्षति हुई है उसे कोई पूरा नहीं कर सकता। ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे वेदविद्या, वेदार्थ संशोधन, शास्त्रार्थ विधाएँ सभी दीन हीन हो गए हैं। वे कांगड़ी विद्यालय के छात्र रहे, तत्पश्चात वहीं के कुलाधिपति की पदवी धारण कर ख्याति प्राप्त की। अलौकिक व्यक्तित्व तथा तीक्ष्ण बुद्धि के धनी समर्पणानन्द जी श्रेष्ठ वक्ता तथा तर्कशास्त्री, हास्य एवं गंभीर भाव मुद्रा से सज्जितपूर्ण समय सरस काव्य की रचना करने वाले थे। जिन्होंने अपनी मेधा और प्रतिभा को आर्य समाज हेतु लगाया। उनके व्यवहार में पाण्डित्य, तर्क, विलास शोभा दृष्टिगत होती थी। उन्होंने भाष्य, शतपथ ब्राह्मण आदि ग्रन्थों पर तर्क करके पाण्डित्य प्रदर्शन भी किया। व्यष्टि, समष्टि, प्राचीन वर्णाश्रम व्यवस्था जैसे विषयों पर ग्रन्थ निर्माण किए। सप्तसिन्धु, मारुतसूक्तभाष्य, स्वर्ग निरूपण को प्रदर्शित कर अपनी बुद्धि का प्रमाण सिद्ध किया। गौमाता से सम्बन्धित मिथ्या धारणाओं का सप्रमाण खण्डन करने वाले समर्पणानन्द जी को श्रद्धाञ्जली देते हैं।

यज्ञे गवालम्भमकार्षुरार्या ^६
गोमांसमप्यार्जना अखादन्।
इति प्रतीच्यानृत-भावधारां
युक्ति प्रमाणैः शकलीचकार।। (13.11)

वृत्त - उपजाति

14. हा! हन्त! हन्त गतवान् मुनिशिर्मनीषी

हमारी संस्कृति, देववाणी उद्धारक, कर्मयोगी, साहित्य शिक्षण, कला विधि वरिष्ठ मुनिशिर्मनीषी चले गए। विद्या विलास भवन में विज्ञान शिक्षण को पुनः जीवित करने वाले मनीषी स्वर्ग सिधार गए। दुष्ट युवनों के द्वारा नष्ट भ्रष्ट किए राष्ट्रीय गौरव सोमनाथ मंदिर के पुनः उद्धार हेतु सरदार पटेल के साथ राष्ट्रपति महोदय राजेन्द्र प्रसाद जी के समीप गुहार लगाने तक गए। उन्होंने पाश्चात्य संस्कृति को पराजित कर स्व संस्कृति की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया देश के नवयुवकों में सांस्कृतिक चेतना को उजागर किया। केन्द्रीय खाद्य कृषि मंत्री का ध्यान देश में किसानों की दशा की ओर आकृष्टित किया। इन्होंने बताया है कि वर्षा को देखकर किसान वर्ग खेती का कार्य करता है। अन्यथा उस किसान की स्थिति दीन हीन नहीं बनी रहती है। इसलिए वृक्षारोपण करना चाहिए, वनमहोत्सव मनाया जाना चाहिए। इन्होंने भारतीय गणराज्य के केन्द्रिय मन्त्रीपरिषद के महीय मंत्रीगणों से सैकड़ों पुस्तकों को लोगों तक पहुँचाया। राष्ट्र के सांस्कृतिक जागरण दूत के रूप में छवि बनाने वाले साहित्य, ६

ार्म, विधि, संस्कृति नीति के ज्ञाता मुनशिमनीषी चले गए। हम उन्हें श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हैं।

वृत्त - वसंततिलका

15. धन्योधन्यः श्री विदेहः प्रयातः

“वेद परमात्मा की कृति और सब सत्य विद्याओं की खान है उनका स्वाध्याय आर्यमात्र को नित्य करना चाहिए।” व्रतिवर दयानन्द की इस घोषणा के अनुसार अंतिम सांस तक वेदाध्ययन का व्रत निभाने वाले महात्मा विदेह सचमुच परम धन्य हैं। वेदों की अपनी अप्रतिम रसपूर्ण आर्ष शैली से सहज, सुन्दर व्याख्या करने वाले और मनुष्यों को वेदान्तर्गत तत्त्वों का बोध कराने वाले विद्यानन्द ‘विदेह’ संसार में अद्वितीय थे। उनके रसपूर्ण और मधुर वेदोपदेश को सुन-सुनकर, उनके ललित रमणीय वेदभाष्य को पढ़कर लोग परमहर्षिता और मंत्रमुग्ध होते थे। उनका श्वास प्रश्वास, निमेषोन्मेष, हृदय की धड़कन, खाना-पीना, प्रवचन, सभा, आलाप और संभाषण, उनका सोना-जागना, चलना-फिरना, बैठना-उठना, सभी कुछ वेदमय था।

श्वासोच्छ्वास-व्रजन-निमेषोन्मेष हृत्स्पन्दनानि ⁷
पानास्वाद-प्रवचन-सभालाप-संभाषणानि।
स्वप्नास्वापोच्चचलन-वलन-स्थान-याहनादिकानि
सर्वं तस्य श्रुतिमयमभूत् श्रीविदेहस्य साधोः।। (15.5)

वेदालोक जैसे महान् भाष्य-ग्रन्थों के रचनाकर थे। वेद गूढ़ और जटिल हैं, इस मिथ्या प्रवाद को महामुनि विद्यानन्द ने खंड-खंड कर संसार में वेदों के प्रति जन-जन में अप्रतिम आस्था और प्रेम निर्माण किया। संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए अजमेर व दिल्ली में वैदिक संस्थाओं की स्थापना विदेह जी ने की। तीस वर्ष से भी अधिक समय तक सविता पत्रिका के माध्यम से भावगंभीर और सुललित वेदभाष्य करने वाले श्री विद्यानन्द जी विदेह चले गए। हम उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

वृत्त - मन्दाक्रान्ता

16. हा! हन्त! हन्त! गतवान् स जयप्रकाशः

राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम में अपने सब कुछ दे देने वाले, देश की गरीब, दलित जनता के लिए सर्वस्व अर्पित करने वाले, रात-दिन राष्ट्र हित के लिए सोचने वाले जयप्रकाश जी चले गये। वे आजीवन भागीरथ के समन दीन दलितों के लिए उद्धारक रहे। सामाजिक, आर्थिक उन्नति में सहायक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में पूर्ण रूप से परिवर्तन लाने वाले जयप्रकाश जी स्वर्ग सिधार गए। मार्क्स लेनिन के विचारों की

परंपरा से आंदोलन करने की अपेक्षा आध्यात्मवादि महनीय परंपरा के अनुसार आन्दोलनों को आगे बढ़ाने वाले जयप्रकाश जी का देवलोक गमन हो गया। राष्ट्र पर उस समय घोर विपत्ति आ गई जब आपातकाल लागू करके सभी सर्वोच्च नेतृगणों को रात्री में ही वंदी बनाकर कारागार में डाल दिया गया। उन नेतृगणों में से जयप्रकाश भी एक थे। उस समय भारतीय जनता में अद्भुत क्रान्ति का संचार हुआ। जनता दो गुटों में बँट गयी एक मार्क्सनीति को मानने वाले तथा दूसरे गान्धी जी के विचारों पर अमल करने वाले। उस समय देश में पतनोन्मुखी भ्रष्ट राजनीति को देख जयप्रकाश जी का हृदय खिन्न हो गया। भ्रष्ट प्रशासन के खिलाफ चलाये जाने वाले महाभियोग में विद्यार्थी, कृषक, युवावर्ग, समस्त कार्मिक वर्गों ने भाग लिया। इन सभी के प्रयासों से ही जयप्रकाश जी इंदिरा के विरुद्ध चुनाव लड़ने में सहमत हुए। चुनाव में जयप्रकाश जी की जीत ने भारत में उम्मीद का सूर्य पुनः जाग्रत कर दिया। जनता में उत्साह का संचार करने वाले, जनता दल के नेता जयप्रकाश जी को हम श्रद्धाञ्जलि देते हैं।

वृत्त - वसन्ततिलका

17. हन्तानन्दमुनिर्गतोनरवरः श्रीशेषरावाभिद्यः

जिनकी उदात्त विशाल भव्य कृतियाँ सम्पूर्ण भारत में प्रसारित हुईं ऐसे आनन्द मुनि नरवर श्री शेषराव जी चले गए। लोक में जहाँ केवल मुस्लिमों के उत्कर्ष हेतु कार्य किए जा रहे थे तथा मतान्ध मुस्लिमों द्वारा निसहाय हिन्दु धर्मावलम्बियों पर अत्याचार किया जा रहा था उस निजाम के राज्य में भी महत्वपूर्ण छवि बनाने वाले शेषराव जी स्वर्ग सिधार गए। शेषराव जी आर्यसमाज की संस्था का हिस्सा बनकर मानवमात्र के लिए उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यकर्ता थे। आर्य समाज के आन्दोलन के माध्यम से जनता में उत्साह का संचार इनके द्वारा किया गया। निजाम के विरुद्ध कार्य करने के कारण कारावास में डाल दिया गया। कारावास में भयंकर पीडा पहुँचाकर हौंसला पस्त करने का प्रयास मुस्लिम अत्याचारियों ने किया। एक बार गुलबर्गा नगर में जनता सम्मेलन में जब सभा चल रही थी। तभी निजाम के सैनिकों ने सभा पर आक्रमण कर लोगों को कष्ट पहुँचाना प्रारम्भ कर दिया तब शेषराव जी ने उनके खिलाफ रौद्र रूप धारण करते हुए अस्त्र उठा लिए। जिसके परिणाम स्वरूप कायर सैनिक भाग खड़े हुए। चिंचोली नामक स्थान पर हुए युद्ध में भी इनहोंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। हैदराबाद विधानपरिषद् में भी निर्वाचित होकर पार्षद बने तथा महाराष्ट्र के आर्य शिरोमणि परिषद् में भी प्रधान पद पर सुशोभित हुए। इनको विशाल हिमालय के समान धीर, धवल क्रान्तियान, तेजस्वी सू के समान उपमा दी गई। श्री शेषराव जी की अन्तिम यात्रा में जनसैलाब ही उमड़ गया। जातिगत भेद को भुलाकर कार्य करने के कारण लोगों के हृदय में जगह बनाने में सफल रहे शेषराव जी को अश्रुपूरित श्रद्धाञ्जलि दी गई।

वृत्त - शार्दूलविक्रीडितम्

18. अस्तं गतो व्याकरणांशुमाली

शब्दशास्त्र के सूर्य, अपूर्व पाण्डित्य विलास वाले श्री चारुदेव जी देवलोक गमन कर गए। यह देववाणी के लिए दुर्भाग्य की बात है। जिन्होंने पाणिनी के पद वाक्य शास्त्र को अपनी बुद्धि से प्रकाशित किया तथा व्याख्या की। आजीवन पाणिनी के शब्दशास्त्र से आलोडित होते हुए प्राणियों के लिए सरस सुगम शब्दों को बताया। चन्द्रोदय नामक व्याकरण शास्त्र को पाँच भागों में विभक्त कर अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय दिया। दुरुह, दुर्बोध शास्त्रों के उद्धार वाक्यों को लोगों तक पहुँचाया। वेद, उपनिषद्, स्मृति पुराण, रामायण आदि की व्याख्यान प्रस्तुत की। अपाणिनीय आर्षसंज्ञान का शिष्य-अनुशिष्ट प्रयोग सैकड़ों बार इनके द्वारा किया गया। कारयित्री, भावयित्री प्रतिभा आदि विद्याओं का प्रयोग करते हुए गान्धीचरित नामक गद्य की रचना की। प्राचीन और नवीन उद्धरणों को प्रयोग रूप में प्रस्तुत किया। उनके द्वारा सूक्ष्म से सूक्ष्म, प्रौढ़ से प्रौढ़ शब्दों का प्रयोग करते हुए भागवत का अनुवाद किया गया। यह उनके गंभीर पाण्डित्य को प्रदर्शित करने वाला है। जालन्धर से माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर लाहौरपुर गए। डी.ए.वी. विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्रथम अंक से प्राप्त की। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के कारण उन्हें स्वर्ण मुद्रा प्रदान की गई। लाहौरपुर में प्राध्यापक पद की नियुक्ति भी प्रदान की गई। अपने पिता सत्यव्रत शास्त्री के पदचिह्नों पर चले वाले श्री चारुदेव स्वभाव से विनम्र थे। ऐसे महान व्याकरणशास्त्री को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

वृत्त - उपजाति

19. अस्तं गतो हा श्रुतिशास्त्रमानुः

वैदिक वाङ्मय आकाश के तेजस्वी नक्षत्र, पाणिनी व्याकरण के सूर्य, वेदरूपी महासागर में से उच्च विचारों के प्रतिरूप मुक्तामणियों को बाहर निकालने वाले वैदिक महापण्डित श्री युधिष्ठिर जी चले गये। वेदों के मंथन और चिंतन के लिए जिन्होंने जीवन यश और वैभव समर्पित कर दिया। वैदिक स्वर मीमांसा और वैदिक छन्द मीमांसा के निर्माता, पण्डित प्रवर भी युधिष्ठिर जी मीमांसक देवलोक सिधार गए। संस्कृत व्याकरण शास्त्र इतिहास तीन खण्डों में तथा महाभाष्य पर हिन्दी में भाष्य लिखा। महर्षि दयानन्द के श्रेष्ठ ग्रन्थों के शुद्धसंस्करण प्रयत्नपूर्वक प्रकाशित किया तथा पत्र और विज्ञापनों को भी अनेक भागों में प्रकाशित किया। महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का विस्तृत इतिहास भी उन्होंने लिखा। ऐसे महान् विद्वान श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक स्वर्ग सिधार गए। मीमांसक जी ने शबरभाष्य का हिन्दी में प्रदीर्घ और ललित अनुवाद अनेक भागों में किया। वेदों का अनुसन्धान ज्ञान के प्रचार प्रसार का कार्य चिरकाल से करने वाली प्रसिद्ध मासिक पत्रिका वेदवाणी के तीस वर्षों तक सफल संपादक युधिष्ठिर जी हमारे बीच नहीं रहे इसका महान शोक है। उन्होंने ने धातुपाठ, गणपाठ, उणादिपाठ विषयक अनेक प्राचीन वृत्तिग्रन्थों का संपादन किया। प्राचीन वैदिक विशाल वाङ्मय के गहन

अध्ययन ओर पाण्डित्य के कारण उन्हें अनेक प्रादेशिक और केन्द्रीय शासन द्वारा पुरस्कृत किया। हिन्दी के सर्वोच्च विश्वभारती पुरस्कार से भी उनको सम्मानित किया गया ऐसे महान् विद्वान् पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक का स्वर्गारोहण हो गया। इसका हमें महाशोक है।

वृत्त - शार्दूलविक्रीडितम्

20. हा! हन्त! हन्त! गतवान् यतिसार्वभौमः

विख्यात दार्शनिक, चिन्तन, लेखक गङ्गाप्रसाद के पुत्र सत्यप्रकाश जी ने उनकी कीर्ति को चहुँ ओर फैलाया। सामान्य शिक्षा को ग्रहण कर इन्होंने माध्यमिक शिक्षा में रसायन शास्त्र विषय लिया। इलाहाबाद से समस्त शिक्षा ग्रहण की। विज्ञान में शोध कर इन्होंने रसायन शास्त्र में उपाधि प्राप्त की और इलाहाबाद में ही प्राध्यापक पद पर नियुक्ति प्राप्त कर विभागाध्यक्ष के पद को ग्रहण किया। समय गुजरने पर यह उच्च पद से सेवानिवृत्ति हुए। संन्यास मार्ग की तरह कठोर दीक्षा ग्रहण की इनके इस निर्णय पर अनेक लोगों ने आश्चर्य व्यक्त किया। अध्यात्म निष्ठ वैदिक सभ्यता के ज्ञान हेतु संन्यासमार्ग लिया। सम्पूर्ण विश्व अज्ञान के कारण दुःख में डूबा हुआ है, वेदों के ज्ञान द्वारा इस दुःख की निवृत्ति की जा सकती है। अतः भाईचारा, सौहार्द, समता आदि गुणों को लोगों के हृदय में जाग्रत करने का कार्य किया। वैदिक संस्कृति को लोगों एक पहुँचाने का कार्य सत्यप्रकाश जी ने किया। इन्होंने अपनी ओजस्वी रम्य, रुचिकर राष्ट्र वाणी के कारण अंग्रेजों के समक्ष भी अपनी लोहा मनवा लिया। जिस प्रकार अंग्रेजी भाषा में विज्ञान विषयक पुस्तकें हैं उसी प्रकार हिन्दी भाषा में भी अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। भारतीय संस्कृति में विज्ञान और वेद दोनों को ही अधिकृत कर पुस्तकें उपलब्ध हैं। प्राचीन भारत में भी रसायन शास्त्र हेतु ब्रह्मगुप्त नामक विज्ञानपरक ग्रन्थ उपलब्ध था। सत्यप्रकाश जी ने अपने पिता गंगाप्रसाद जी द्वारा लिखित शातपथ सुभाष्यं को सार्धसप्तशत पृष्ठों में स्वमुख से व्याख्या कर प्रकाशित करवाया। इस प्रकार पिता जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पण की। इन्होंने यज्ञों से वायु के शुद्धिकरण की बात मानते हुए उसे विज्ञान सम्मत माना। इन्होंने अपनी अन्तिम कृति में नैरुक्त को अनुसृत करते हुए वेदचतुष्टय का आंग्ल भाषा में सुन्दर वर्णन किया। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् वे कभी भी अपने पुत्रों व पत्नी से मिलने नहीं गए। इन्होंने सभी से पूर्णरूपेण मोह त्याग लिया। आर्य समाज के उत्कृष्ट रत्न रूप सत्यप्रकाश जी के चले जाने से मानों विज्ञान वेद मणि लीन हो गई है। आर्यसमाज में प्रकाशित होता हुआ सूर्य अस्ताचल की ओर चला गया है। ऐसे महान व्यक्ति सत्यप्रकाश जी को श्रद्धाञ्जलि प्रदान करते हैं।

वृत्त - वसन्ततिलका

21. गता प्रज्ञादेवी प्रबुधमहिलासत्प्रतिनिधि

प्रज्ञादेवी ने काशी में आर्ष व्याकरण के परमगुरु श्री ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के पास पाणिनी, कात्यायन और पतञ्जलि मुनियों के व्याकरण का अध्ययन किया और व्याकरण शास्त्र के महोदधि को पार कर विद्यावारिधि की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त की। गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य कर अष्टाध्यायों का हिन्दी में ललित और मधुर भाष्य किया। श्री क्षेमकरणदास त्रिवेदी कृत अथर्ववेद और गोपथ ब्राह्मण के भाष्यों को अपनी टीका टिप्पणियों के साथ प्रकाशित किया वैदिक सिद्धान्त विषयक अनेक लेख प्रसिद्ध पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित किए। जहाँ काशी में सनातनी पण्डितों ने स्त्रियों को विद्याध्ययन से वञ्चित कर दिया था वहाँ काशी में ही पाणिनि कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। तब से देश में अनेक महिलाएँ आर्ष व्याकरण शास्त्र में निपुण तथा निरुक्त, अष्टाध्यायी के साथ महाभाष्य में सिद्धहस्त और वेदादिशास्त्रों में परम पण्डिता विदुषी देखी जाती हैं। यह प्रज्ञादेवी के संघर्ष का ही परिणाम है। प्रज्ञादेवी ने सम्पूर्ण भारत में भ्रमण कर भारतीय जनता को वैदिक धर्म के प्रति जाग्रत किया। पाणिनी कन्या महाविद्यालय के रजत जयन्ती समारोह के जोर-शोर से प्रचार के समय ही ज्वरग्रस्त हो जाने के कारण प्रभु की प्यारी हो गई। घोषा, अपाला, गार्गी, मैत्रेयादि विदुषियों के पाण्डित्य के विषय में सुना था यह प्रत्यक्ष रूप में प्रज्ञादेवी में देख लिया। ऐसी परम विदुषी के चले जाने पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

श्रुताघोषाःऽपालादिकसमममहावेद ऋषिकाः⁸

श्रुतं गार्ग्यादीनां नृपसदिसि पाण्डित्यमतुलम्।

तया भारत्याः कौशमपि च शास्त्रार्थ समरे

परं प्रज्ञादेत्यामखिलमपि साक्षात्कृतमभूत्।। (21.14)

वृत्तं - शिखरिणी

22. वर्णेकरोऽपि हा हन्त! गतः कवीन्द्रः

साहित्य काव्य के कमनीय विलास, वाग्देवता, कण्ठहार, कुलभूषण श्रीधर वर्णेकर जी सहसा ही चले गए। आज निश्चित रूप से संस्कृत समुदाय दीन हो गया है। कविमण्डल में कमलवृन्द के समान श्रीधर वर्णेकर जी का स्थान था। लोगों के हृदय में राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत करने वाले, ओजस्वी, वीर-रस से युक्त काव्यों का निर्माण करने वाले महाकवीन्द्र का देवलोक गमन हो गया। श्रीधर वर्णेकर जी ने अद्वितीय महाविशाल, आदर्श “भूपशिवरायमहाचरित्रम्” नामक ग्रन्थ अष्टषष्टि सर्गों में लिखकर अपने पाण्डित्य को प्रदर्शित किया। वैदर्भी रीति में अद्भुत काव्यों की रचना श्रीधर जी ने की। कवि कालिदास के पदचिन्हों पर चलते हुए ही वैदर्भी रीति युक्त काव्यों की रचना की थी। श्री वर्णेकर जी ने उदात्त, उत्कृष्ट, भारत भूमि हेतु काव्य रचना की। ये समस्त रचनाएँ जगत् के कल्याणार्थ थीं। नवरस, गुणों,

अलंकारों से युक्त नाटक की रचना विवेकानन्द जी के चरित्र पर की गयी। उसी क्रम में 'शिवनृपमहाभिषेक' नाटक को भी लेखनी प्रदान की। जब तक जगत् के नाथ इस धरा पर है तब तक यह संस्कृत भाषा उर्ध्व गति करती रहेगी। प्रसाद गुण से मण्डित, सरस भव्य भावोत्कट प्रवर काव्य का निर्माा करने वाले श्री वर्णेकर जी स्वर्ग सिधार गए। अनेक नाटक, गीत, कथाचरित्र की रचना करने वाले श्री वर्णेकर जी की वाणी शब्दों का भण्डार रूप थी। जिसे काव्य माला में आजीवन वर्णेकर जी ने पिरोया। ऐसे महाकवीन्द्र श्री वर्णेकर जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

वृत्त - वसन्ततिलका

23. श्रीरामकृष्णनबुधोपि दिवं प्रयातः

मुन्शीकुलाधिपति निर्मित भारतीय विद्या विलास भवन के निर्देशक श्री रामकृष्ण जी को झुकर के श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। आदर्शवादी महनीय गांधी जी के सम्पर्क में रहने से रामकृष्ण जी ने भी उन्हीं बातों को जीवन में अपना लिया था। उन्होंने गांधी जी के पदचिहनों पर चलते हुए स्वतन्त्रता संग्राम में भी अहम भूमिका निभाई। महात्मा गांधी अपने नम्र स्वभाव हेतु तथा लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल अपने उग्र स्वभाव के कारण भारतीयों के लिए धन्य रहे हैं। ये आजीवन विद्यानिवास भवन के निदेशक रहे हैं। विद्याविलास भवन के विकास हेतु इनके द्वारा अनेक कार्य किए गए। जब तक रामकृष्ण जी विद्याविलास भवन के निदेशक रहे तब तक विद्याविलास भवन का चतुर्मुखी विकास हुआ। आश्चर्यपरक उन्नति उस कार्यकाल में दृष्टिगोचर हुई। श्री रामकृष्ण जी कुशल लेखक, पत्रकार सम्पादक रहे। रामकृष्ण जी के लिए निम्न श्लोक द्वारा कवि अपने भावप्रकट कर रहे हैं और उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर रहे हैं।

निर्भीकनिर्मलनिरञ्जननिर्विकल्पो ⁹

निर्मन्युनिर्भयनिराकुलनिर्वितर्कः।

निर्लिप्तनिर्ममनिरामयनिर्विकारो

निर्व्याजधीरपरमः खलु रामकृष्णः।। 23.14)

वृत्त - वसन्ततिलका

24. हा! हन्त! हन्त! गतवान् कवीश्वरोऽपि

जिन्होंने आजीवन देववाणी प्रचार-प्रसार किया। संसार में प्रसिद्ध कवीश्वर वंशकेतु को श्रीपाद की संज्ञा संस्कृत पण्डितों ने दी। इनका जन्म इसी संस्कृत भाषा के उत्कर्ष हेतु हुआ। जिन्होंने आजीवन देवभाषा के लिए भ्रमण किया ऐसे श्रीपाद जी का निधन हो गया।

गीर्वाणवाणी के लिए इनके द्वारा लोगों से कहा गया – यह जाति, धर्म विशेष भाषा नहीं है। यह तो समस्त मानवों की भाषा है मानव मात्र इस भाषासे जुड़कर प्रसन्नता का अनुभव करता है। इस प्रकार के उपदेश श्रीपाद जी ने लोगों को दिये। महाराष्ट्र शासन द्वारा पाठ्यक्रम से देववाणी को हटाने के विचार के विरुद्ध इन्होंने आन्दोलन किया। देश की सांस्कृतिक रिक्त परम्पराओं की आधारभूत रूप संस्कृत भाषा है अतः अनेक सांसदगणों ने इसी भाषा में पद ग्रहण की शपथ लेकर इसके मान को बढ़ाया है। कवि कुलगुरु कालिदास के नाम पर महाराष्ट्र के नागपुर में विद्यापीठ की स्थापना की गयी। इसके निर्माण में अनेक विद्वतजनों ने महती भूमिका निभायी। जिसमें श्री पाद जी का नाम भी प्रमुख है। इन्होंने इन्दूर पुण्यनगर के विद्यालयों में शब्दमात्र का अभ्यास लोगों को करवाया। काव्य तीर्थ की पदवी का स्थान ग्रहण किया। सर्वोच्च राष्ट्रपति पद ब्रह्मर्षि गौरव के पद से श्रीपाद जी सुशोभित हुए इन्होंने इस बात का भी खण्डन किया कि संस्कृत केवल द्विजों की भाषा है। इन्होंने अपने अनुजों को भी संस्कृत के प्रचार प्रसास कार्य में लगा दिया। अपना सम्पूर्ण जीवन संस्कृत को बढ़ावा देने में लगाने वाले श्री पाद महोदय को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

वृत्त - वसन्ततिलका

25. हा हन्त! हन्त! गतवान् खलु वासुदेवः

अपनी वाणी से समस्त जगत और जननी को धन्य करने वाले, आजीवन संस्कृत भाषा के लिए प्रचार-प्रसार करने वाले श्री वासुदेव जी निधन हो गया। वाराणसी के बुध् मण्डल के प्रतिष्ठा प्राप्त सदस्य देववाणी एवं गगन मण्डल के सूर्य के समान प्राचीन भारतीय संस्कृति के गायक वासुदेव जी स्वर्ग सिधार गए। दुर्बोध, दुष्कर समझी जाने वाली संस्कृत भाषा की प्राचीन विधियों के साथ ही साथ नवीन विधियों द्वारा संस्कृत को सभी के लिए सुगम बनाने वाले वासुदेव जी चले गए। इन्होंने संस्कृत की जड़ों को जमाने के लिए समस्त भारतीय नगरों, राज्यों में भ्रमण किया। इन्होंने संस्कृत को बढ़ावा दिलाने हेतु संभाषण शिविरों का आयोजन करवाया। देश की संस्कृति की रिक्त परम्पराओं के संवाहक के रूप में इनका नाम हमेशा याद किया जाता रहेगा। देश में चल रहे भीषण जातिवाद के विपरीत इन्होंने हमेशा मानवता हेतु प्रचार किया। देश की जनता प्रेरित होकर सहर्ष संस्कृत का पठन पाठन करने लगी। आचार्य शिक्षक गण सभी संस्कृत का नित्य प्रयोग करने लगे। आलस्य का त्याग करते हुए धैर्यधारण करते हुए संस्कृत ग्रन्थों के निर्माण की प्रेरणा लोगों को दी। स्वयं वासुदेव जी ने भी काव्य, नाटक, कथा ग्रन्थों की रचना की। शिक्षापयोगी सरल अनेक पुस्तकों की रचना बालकों हेतु की गए। सैकड़ों संस्कृत गीतों की रचना लोगों में ऊर्जा प्रदान करने के लिए की गए। ऐसे महान वासुदेव जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

येषां प्रसादसदनं वदनं बभूव नित्यंदयार्द्रं सदयं हृदयं बभूव ।¹⁰
पीयूषपूर्णवचनं सुखदं बभूव । वन्द्या न कस्य भुवनेखलु वासुदेवाः ।।
(25-19)

वृत्त - वसन्ततिलका

27. श्रीनरसिंहरावाय श्रद्धाञ्जलि:

सामान्य कृषक परिवार में जन्म लेने वाले, दक्षिण भारतीय ने भारत के महामहिम प्रधानमंत्री पद को सुशोभित किया। जिस राष्ट्र में नेहरू, गांधी परिवार को ही इस पद का उत्तराधिकारी समझा जाता था उस राष्ट्र में सर्वप्रथम किसी दक्षिण भारतीय द्वारा प्रधानमंत्री पद को संभाला गया। ऐसे महान पद को धारण करने वाले श्री पी.वी. नरसिंहराव चले गये। राजीव गांधी की हत्या हो जाने से गहन चिन्तन के बाद श्री पी.वी. नरसिंहराव जी को बहुमत से प्रधानमंत्री पद पर चुना गया। वे देश के वित्तीय संकट के समय, जातीय धार्मिक युद्ध में तैरती हुई नौका को पार लगाने वाले कर्णधार बने। इनका जन्म 28 जून 1921 को हैदराबाद के करीमनगर में हुआ था। यहीं पर सामान्य शिक्षा ग्रहण की थी। जात्यन्ध मुस्लिम निजाम के आदेशों का विरोध करने के कारण बाद में नागपुर से शिक्षा प्राप्त की। हैदराबाद के निजाम द्वारा “वंदेमातरम्” गीत पर रोक लगा देने का विरोध करते हुए हैदराबाद मुक्ति युद्ध में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। आन्ध्र प्रान्त में जब नवीन मंत्रिपरिषद् का निर्माण हुआ तब उसके सदस्य बने। तीन वर्ष तक आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री पद को संभाला। दिल्ली पहुँचकर भी अनेक विभागों के मंत्री पद को सुशोभित किया। देश में अनेक सुधार कार्य चलाए। श्री नरसिंह राव जी के कार्यकाल में देश उन्नति की ओर अग्रसर हुआ। इनकी उदारनीति की नीति ने भारतीयों को लाभ पहुँचाया। देश पर जब आर्थिक विपत्ति ने हमला किया तब अर्थशास्त्री श्री मनमोहन सिंह के साथ मिलकर कुशलतापूर्वक उसका सामना किया। इनकी दृढ़ कश्मीर नीति के लिए हमेशा सराहनीय रहेंगे। ऐसे कुशल नेतृत्व क्षमता वाले श्री पी.वी. नरसिंह राव जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

वृत्त - वसन्ततिलका

28. हा हन्त! हन्त! गतवान् स महाजनोऽपि

महाराष्ट्र मराठवाड कहे जाने वाले छोटे से नगर अम्बाजोगयि में अध्यापक के घर दुर्लभ गुणों वाले व्यक्तित्व का जन्म हुआ। वह बालक महाजन कुल के लिए प्रमोद अर्थात् खुशी था। बचपन में वाक प्रतियोगिता को जीतकर यह विद्यार्थी बढ़ा होकर संसार के लिए नायक बना। इसके पश्चात जनसंघ के लिए प्रमुख बी.जे.पी. अर्थात् भारतीय जनता दल नेता बने। ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी श्री प्रमोद महाजन ही चले गए। युवावस्था में ही जिन्होंने महत्वपूर्ण

मंत्री पदों को सुशोभित किया जैसे रक्षा मंत्रीपद। देश में वाजपेयी के समकक्ष स्थान रखने वाले उच्च वाक कुशलता के कारण प्रसिद्ध पाने वाले प्रमोद महाजन जी चले गए। जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से भारतीय जनता पार्टी का पुनः जीवनदान दिया ऐसे प्रमोद महाजन जी देवलोक चले गए। प्रातःकाल के समय स्वयं के ही आवा पर अप्रेल माह की विंशति दिनांक को अपने ही भाई प्रवीण महाजन की गोलियों का शिकार हो गए। प्रवीण महाजन ने लगातार तीन गोलियाँ उनके शरीर पर दाग दी थी। उन्हें उसी समय अस्पताल पहुँचाया गया। अनेक वैद्यों, चिकित्सकों ने उनका उपचार करना प्रारंभ कर दिया। उनके स्वास्थ्य कुशलता की कामना समस्त देशवासियों ने अपनी प्रार्थनाओं के माध्यम से की थी। सब कुछ व्यर्थ हो गया तीसरे दिन प्रमोद महाजन जी स्वर्ग सिधार गए। सैंकड़ों, हजारों लोग अपने प्रिय नेता के अन्तिम दर्शन हेतु आ पहुँचे। ये उनके परिवार जनों के लिए अचानक आने वाली दुःख की घड़ी थी। देश के समस्त राजनीतिक दलों में उनकी कीर्ति थी। असंख्य जनों ने अश्रूपूरित नयनों से प्रमोद महाजन जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। राष्ट्र के क्षितिज पर प्रचण्डता से भास्वित होने वाला, महाराष्ट्र का उज्ज्वलतम नक्षत्र अस्त हो गया। भारतीय जनता पार्टी के लिए चाणक्य का काम करने वाले महान पथप्रदर्शक प्रमोद महाजन जी चले गए।

वृत्त - वसन्ततिलका

(iii) वैशिष्ट्य

‘श्रद्धाकुसुमाञ्जलिः’ नामक काव्य राष्ट्र के लिए अपनी मातृभूमि के लिए सहर्ष आत्मबलिदान करने वाले महापुरुषों के प्रति कृतज्ञ भाव प्रकट करने हेतु श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने हेतु रचित है। इस काव्य में देश के लिए राजकीय सामाजिक धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में महान कार्य करने वाले महापुरुषों के प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि श्री रेणापुरकर ने दी है। वैसे तो इस काव्य में भारत देश के ही महान पुरुषों को काव्य का विषय बनाया गया है। परन्तु साथ ही अमेरिका देश के पंचत्रिंशत राष्ट्रपति महोदय श्रीजान फिट्जेरल्ड केनेडी को नीयो लोगों के लिए आत्मबलिदान करने के कारण श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी है।

डॉ. सुरेश हेरुरु जी के अनुसार श्रद्धा मानव जीवन का आधार है, श्रद्धा में बहुत शक्ति होती है। श्रद्धा से ही पवित्र आचरण की प्रेरणा मिलती है। जिन महापुरुषों ने देश की स्वतंत्रता की रक्षा हेतु आत्म बलिदान किया उन महानुभावों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मानव मात्र का कर्तव्य है।

छन्द प्रयोग -

1. वसन्ततिलका

लक्षण उक्त वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।
उदाहरण योऽमेरिकाजनपदस्य पतिर्यातिष्ठः
यो भारतीय-गणतन्त्रसुहृद् वरिष्ठः।
यो विश्वशान्ति-परिपालनबद्धं-निष्ठः
हा हन्त! हन्त! गतवान् कनडिर्दिवसः।।

2. उपजाति-

लक्षण अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातस्यताः।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु, स्मरन्ति जातिष्वदमेव नाम।।
उदाहरण यो वेदविद्यानिपुणो महात्मा
यः शब्दशास्त्रस्य दिवाकरो हि।
श्रद्धाञ्जलिर्मे प्रणतस्य तरुणै
श्री ब्रह्मदत्ताय दिव गताय।।

3. शिखरिणी -

लक्षण	रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी
उदाहरण	प्रदीप्तं नक्षत्रं खलु सुगिराकाव्यनभसः स्फुरज्जयोती रत्नं गुरुकुलजनेरुज्जवलतम् । विभूतिर्यो भव्या भवति सुतरामार्यदसः दिवं प्रायात् कष्टं! कवितिलकंमेघाव्रतमुनिः ।।

4. भुजंगप्रयातम् -

लक्षण	भुजंगप्रयातं चतुर्भयकारैः
उदाहरण	विशुद्धान्तरात्मा तपः पूतजन्मा यतिः सार्वभौमश्च विक्रान्तकर्मा । सदावेदविद्यप्रसराभिसक्तः ध्रुवाननन्दयोगी ध्रुवं धाम यातः ।।

5. शार्दूलविक्रीडितम् -

लक्षण	सूर्याश्वैर्यदिमः सजौ सततगा शार्दूलविक्रीडितम्
उदाहरण	यः शास्त्रार्थमहारथीनिरुपमो यस्तर्क पञ्चाननो यो नैयायिकतल्लजोऽप्रतिरथो यो वाग्मिवीराश्रणीः । स्थातुं यस्य पुरो न शेकुररयः शास्त्रार्थवाकसंगरे पुत्युत्पन्नमतिर्गतो नरवरः श्रीरामचन्द्रः सुधी ।।

6. मन्दाक्रान्ता -

लक्षण	मन्दक्रान्ताम्बुधिरसनगर्भो भनौतौ गयुग्मम्
उदाहरण	यावज्जीवं श्रुतिभगवतीं सेवमानो महात्मा यावच्छवासं निगमसुधया तर्पयन् मर्त्यलोकम् । यावच्छक्तिं प्रभुवरकृतिं लोकगगभ्यां विधाता विद्यानन्दः परमतिराट् ब्रह्मभूयं प्रयातः ।।

अलंकार प्रयोग -

1. दृष्टान्त अलंकार -

लक्षण	दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्
उदाहरण	श्रुता घोषाऽपालादिकसममहावेद ऋषिकाः श्रुतं गार्ग्यादीनां नृपसदिसि पाण्डित्यतुलम् । तथा भारत्याः कौशलमपि च शास्त्रार्थ समरे परं प्रज्ञादेव्या मखिलमपि साक्षात्कृतमभूत् ॥

प्रस्तुत श्लोक में घोषा, अपाला, गार्गी, मैत्रेयादि जैसी वैदिक ऋषिकाओं का वर्णन करते हुए प्रज्ञादेवी को भी उनका ही प्रतिरूप माना है।

2. तुल्ययोगिता अलंकार -

लक्षण -	नियतानां सकृद्धर्मः सा पुनस्तुल्ययोगिता
उदाहरण	यावत्सूर्यशाशाङ्गतारकगण तारापथे राजते यावद्वेवगिरादिगन्तगरिमा भूमण्डले भासते । वेदानो सुविशालभव्यमहिमा यावच्च देदीप्यते तावत्सातवलेकरस्य कृतिनः कीर्तिर्भवेदुज्ज्वला ॥

यहाँ सूर्य चन्द्र तारागण आदि के साथ सातवलेकर जी की कीर्ति की तुलना की गयी है।

उदाहरण	यत्तीव्रोग्रसुतर्कबाणपतनं नापारि सोढुं परैः यद्गुंभी रस्वं विपक्षसुभटैः श्रुत्वा रणद्विद्रुतम् । तुङ्ग वैदिकधर्मगौरवमयं केतुं च योऽदीधरत् हा! हा! हन्त!! गतस्स पण्डितवरः श्रीरामचन्द्रसुधीः ॥
--------	--

प्रस्तुत श्लोक में रामचन्द्र जी के तीव्र और उग्र तर्कों की तुलना बाण से की है। इनकी वाणी की तुलना सिंहनाद से की है।

3. मालोपमा अलंकार -

लक्षण	मालोपमा यदेकस्योपमानो बहुदृश्यते
-------	----------------------------------

चकोरो यथा शीतरश्मौ प्रयाते
 प्रयाते च भानौ यथा पुण्डरीकम् ।
 तथा दुःखमग्ना समस्तार्य जातिः
 परं धाम याते ध्रुवान्दसाधौ ।।

प्रस्तुत श्लोक में चन्द्रमा की किरणों को चकोर पक्षी के लिए, सूर्य किरणों को श्वेत कमल के लिए भोजन की उपमा दी गई है तथा उसी प्रकार आर्यसमाज के लिए ध्रुवानन्द जी को जीवनदायक बताया है ।

4. अनुप्रास अलंकार -

लक्षण अनुप्रासः शब्द साम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्यत्

उदाहरण निर्भीकनिर्मलनिरञ्जननिर्विकल्पो
 निर्मन्युनिर्भयनिराकुलनिर्वितकः ।
 निर्लिप्तनिर्ममनिरामयनिर्विकारो
 निर्व्याजधीरपरमः खलु रामकृष्णः ।।

प्रस्तुत श्लोक में एक ही प्रकार के वर्णों 'निर्' की आवृत्ति दृष्टिगत होती है ।

उदाहरण येषां प्रसादसदनं वदनं बभूव
 नित्यं दयार्द्रं सदयं हृदयं बभूव ।
 पीयूषपूर्णवचनं सुखदं बभूव
 वन्द्या न कस्य भुवने खलु वासुदेवाः ।।

प्रस्तुत श्लोक में शब्दों तथा वर्णों की आवृत्ति दृष्टिगत होती है । यथा -
 बभूव, सदयं- हृदयं, सदनं-वदनं ।

निम्नानुसार प्रो. रेणापुरकर जी ने प्राचीन अर्वाचीन विषयों से भिन्न देश के वीरों को सम्मान प्रदान करने हेतु इस काव्य की रचना की । अनेक प्रकार के छंद व अलंकारों का प्रयोग करते हुए काव्य रचनाएँ की । इस "श्रद्धाकुसुमाञ्जलि" नामक काव्य में न केवल संस्कृत साहित्य जगत के विद्वानों को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की अपितु हिन्दी के प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त जी प्रसिद्ध राजनेता अमरीकी राष्ट्रपति केनेडी तथा रसायन शास्त्र में प्रतिभा कौशल दिखाने वाले सत्यप्रकाश जी को भी काव्य का विषय बनाया गया । यह काव्य आने वाली पीढ़ी के लिए उदाहरण है जिसमें अपने अग्रजनों के लिए रेणापुरकर जी ने मनोभाव काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किए हैं । सप्तम अध्याय के इस भाग में प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने अन्य

काव्य संग्रह का विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया। किन्तु तब तक केवल 'हुतात्मश्रीश्यामलालचरितम्' तथा 'श्रद्धाकुसुमाञ्जलि' नामक संस्कृत काव्य संग्रह ही प्रकाशित हो सके थे। कवि वचनानुसार 'महापुरुषपुण्यस्मरणकाव्यसंग्रह' तथा 'कतिपयगद्यकाव्यानां संग्रह' नामक काव्य संग्रह की अनुपलब्धता रही। ये काव्य प्रकाशित नहीं है अतः इनका विवरण प्रस्तुत करना सम्भव नहीं है।

सन्दर्भ

सप्तम खण्ड-द्वितीय अध्याय (काव्य/श्लोक/पृ.सं.)

1. श्रद्धाकुसुमाञ्जलि: 1-3/1
2. श्रद्धाकुसुमाञ्जलि: 1-11/2
3. श्रद्धाकुसुमाञ्जलि: 5-10/11
4. श्रद्धाकुसुमाञ्जलि: 7-8/16
5. श्रद्धाकुसुमाञ्जलि: 12-7/30
6. श्रद्धाकुसुमाञ्जलि: 13-11/32
7. श्रद्धाकुसुमाञ्जलि: 15-5/37
8. श्रद्धाकुसुमाञ्जलि: 21-14/65
9. श्रद्धाकुसुमाञ्जलि: 23-14/70
10. श्रद्धाकुसुमाञ्जलि: 25-19/78
11. श्रद्धाकुसुमाञ्जलि: 27-10/85

अष्टम खण्ड
प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृत
साहित्य की दशा एवं दिशा के
संदर्भ में प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर
का स्थान

अष्टम खण्ड

प्राचीन व अर्वाचीन संस्कृत साहित्य की दशा एवं दिशा के संदर्भ में प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का स्थान

साहित्य का मानव जीवन में महत्वपूर्ण अवदान है। साहित्य का अर्थ है जो 'हित के साथ होने का भाव व्यक्त करे' "सहितस्य भावः साहित्यम्" 'सहितयोः शब्दार्थयोः भावः साहित्यम्" शब्द और अर्थ के एक साथ मिलने के भाव को साहित्य कहते हैं। जिस रचना में शब्द और अर्थ इस प्रकार मिले हुए हो कि उन दोनों की उपस्थिति से विशेष चमत्कार उत्पन्न हो, वहीं साहित्य है। साहित्य के लिए कवि भर्तृहरि ने कहा -

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः

साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।।

संस्कृत साहित्य वैदिक युग से अद्यावधि वरेण्य साहित्य की श्रेणी में रहा है। आधुनिक संस्कृत काव्यजगत् में पुरातन विषयों के साथ-साथ युगानुरूप विषयों को भी निर्भीकता के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है। विगत शताब्दियों में तो संस्कृत साहित्य की आशातीत प्रगति हुई है। संस्कृत समीक्षकों ने वर्तमान काल को 'संस्कृत साहित्य का स्वर्णयुग' कहा है। प्राचीन महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक, कथा, आख्यायिका आदि का सृजन तो इसमें निरन्तर जारी है ही परन्तु इसके अतिरिक्त भी यात्रावृत्त, डायरी, ललित निबन्ध, लघुकथा आदि विभिन्न विधाओं का संस्कृत साहित्य में प्रवेश हो गया है। वैज्ञानिक प्रगति ने सारे विश्व को अपने में समाहित लिया है। वर्तमान संस्कृत साहित्य की दशा-दिशा पर साहित्यकार परमानन्द शास्त्री का कथन है 'मेरे विचार से संस्कृत क्षेत्र में हरित क्रान्ति तो आई है। रचनाओं की फसल अच्छी उग रही है किन्तु इसमें खरपतवार अधिक, प्राणपद अन्न कम है, फिर भी स्थिति निराशाजनक नहीं है। पिछले कुछ दशकों में संस्कृत अकादमी, विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विद्यापीठ की अनेक शाखाएँ स्थापित हुई हैं। उनके द्वारा प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से नवरचित साहित्य का प्रचार प्रसार हो ही रहा है।

जहाँ तक दिशा का सवाल है संस्कृत साहित्य में दिशावरी प्रवृत्ति का उदय हो चुका है यद्यपि अब भी देव स्तुतियाँ, प्रशस्तियाँ लिखी जा रही हैं फिर भी आधुनिक दृष्टिबोध और युगबोध की रचनाएँ संख्या, विषय-वैविध्य, गुणवत्ता आदि हर एक दृष्टि से निरर्थक रूढ़ियों को पछड़ कर प्रत्येक दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

प्राचीन संस्कृत साहित्य में प्रो. रेणापुरकर के काव्य ग्रन्थों का स्थान -

1. मनुस्मृति - वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम् ।¹
कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेहच ।। (2.26)

इसी प्रकार प्रो. रेणापुरकर ने भी अपने “प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्” में सोलह संस्कारों का वर्णन किया है।

तस्मादेव प्रवरमुनिभिर्दूरदृष्ट्या सनाथैः
संस्काराणां मनुजवरनिर्माणकार्ये महत्त्वम् ।
जानदिभश्चाजननमरणं जीवने मानवीये
संस्काराणां खलु सुविहिता षोडशानां प्रतिष्ठा ।। (15.25)

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम् ।। (2.12)

यहाँ पर मनुस्मृतिकार ने धर्म के लक्षणों को बताया है उसी प्रकार प्रो. रेणापुरकर ने भी प्राचीनभारतसंस्कृतीयम् में धर्म के प्रमाण दिए हैं।

श्रुतिः स्मृति सज्जनसाधुवृत्तं स्वस्यात्मनः प्रीतिकरं च कृत्यम् ।
चतुष्टय धर्मकृते प्रमाणमुद्घुष्टमासीत् किल शास्त्रकारैः ।। (3.64)

2. यजुर्वेदः -

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।²
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।। (40.1)

प्रस्तुत श्लोक में परमेश्वर की सत्ता के बारे में बताया है। उसी प्रकार प्रो. रेणापुरकर ने भी प्राचीनभारतसंस्कृतीयम् में परमात्मा के द्वारा व्याप्त और निर्मित इस जड़ चेतन चराचर विश्व के बारे में बताया है।

यच्चेतनाचेतनविवमेतद् व्याप्तं च सृष्टं परमात्मनैव ।
स एव माता च पिता समेषां सौभ्रात्रमस्मात्सहजं च तेषाम् ।। (2.67)

3. महाभारत -

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।³
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।। म.भा. ।।

यहाँ पर व्यक्ति के व्यवहार के बारे में बताया गया है। उसी प्रकार प्रो. रेणापुरकर ने भी प्राचीनभारतसंस्कृतीयम् में दूसरो से कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए इसका वर्णन किया है।

व्यासोऽपि धर्मस्य रहस्यमुच्चैरुद् घाटयन् मौनिवरो जुघोष।
यत्स्यात्मनः प्रीतिकरो भवेन्ने वृत्तौ तदन्यैरपि वर्जनीयम्॥ (3.27)

4. योगदर्शनम्

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः।⁴ (योगदर्शनम् 2.30)
यहाँ योग दर्शन में आध्यात्म मार्ग के तत्त्वों के विषय में बताया है। उसी प्रकार श्री रेणापुरकर जी ने प्राचीनभारतसंस्कृतीयम् में सौख्य और शान्ति के संवाहक पंचशील तत्त्वों को बताया है।

अस्तेयसत्ये खलु ब्रह्मचर्यमहिंसनं चाप्यपरिग्रहश्च।
अध्यात्ममार्गोत्कटतत्त्वजातं त्रैलोक्यसौख्यावहपञ्चशीलम्॥ (2.89)

5. कौटिल्य अर्थशास्त्र -

अर्थो हि प्रधान इति कौटिल्यः।⁵
अर्थमूलौ हि धर्मकामौ इति॥ (कौ. अर्थशास्त्रम् 1.7)

यहाँ धर्म की प्रधानता को बताया गया है तदानुरूप ही श्री रेणापुरकर जी ने प्राचीनभारतीयसंस्कृतीयम् में धर्म को प्रमुख पुरुषार्थ माना है।

अर्थं विना नैव शरीरयात्रां न विना पुमर्थः।
विना पुमर्थात्र च मोक्षसिद्धिरतोऽर्थलाभोऽपि मतः पुमर्थः॥ (4.5)

6. रामायण -

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले।⁶
नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥ (वा.रा.किष्किन्वा 6.22.23)

यहाँ राम के द्वारा पूछे गये प्रश्न का लक्ष्मण ने जो उत्तर दिया वह हमारी महासंस्कृति का भव्य शिखर है। श्री रेणापुरकर जी ने भी प्राचीनभारतीयसंस्कृतीयम् में इसी उज्ज्वल संस्कृति का वर्णन किया है।

जाने न तत्कुण्डलकेयूराणि तस्यास्त्वहं नूपुर एव जाने।
तत्पादयोर्मे शिरसा प्रणामदहो! पवित्रोज्ज्वलसंस्कृतिर्नः॥ (5.34)

7. अथर्ववेद -

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।⁷

तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषाऽऽवृतः ॥ (अथर्ववेद 10.2.31)

यहाँ आठ चक्रों और नवद्वारों का वर्णन है। तदानुरूप ही श्री रेणापुरकर जी ने प्राचीनभारतीयसंस्कृतीयम् में भी आठ चक्रों और नवद्वारों से युक्त दिव्यपुरी और बह्यपुरी कहलाने वाले अत्यन्त प्रकाशमय स्वर्ण कोष रूपी पूर्ण देह का वर्णन किया है।

अतोऽष्टचक्रा नवमार्गयुक्ता दिव्यापुरी ब्रह्मपुरीति बोध्या ।

हिरण्यकोषेण परेण पूर्णा नूनमयोध्येति मतोऽस्ति देहः ॥ (6.56)

8. सांख्यदर्शनम् -

समाधिसुषुप्तिमोक्षेषु ब्रह्मरूपता ।⁸ (सांख्यदर्शनम् 5/79)

यहाँ सुषुप्तिवस्था का वर्णन है। तदानुरूप ही श्री रेणापुरकर जी ने भी प्राचीनभारतीयसंस्कृतीयम् में मोक्ष की प्रतिकृति सुषुप्ति अवस्था का वर्णन किया है।

इयं सुषुप्तिः प्रतिरात्रमत्र समस्तलाकैरनुभूयामाना ।

मोक्षस्य किञ्चित् प्रतिमानमेव निद्रातमोऽज्ञानशरीरयुक्ता ॥ (6.27)

9. न्यायदर्शन -

ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात् ।⁹ (न्यायदर्शनम् 4-1-19)

यहाँ न्यायादर्शन में कर्म तत्त्व का वर्णन है। तदानुरूप ही श्री रेणापुरकर जी ने प्राचीनभारतीयसंस्कृतीयम् में भी शास्त्रविहित कर्म तत्त्व का वर्णन किया है।

जन्मान्तरेषु कृतकर्मफलं नरेण

भोक्तव्यमेव नियतं परमात्मसाक्ष्ये ।

कर्मानुसारमिह जन्म च भुक्तिरायु -

रित्यार्षशास्त्रविहितं खलु कर्मतत्त्वम् ॥ (8.33)

10. शतपथब्राह्मण -

यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेत् यनाद्वा गृहाद्वा ।¹⁰

यहाँ संन्यास आश्रम का वर्णन है। तदानुरूप ही श्री रेणापुरकर जी ने

प्राचीनभारतीयसंस्कृतियम् में परार्थ के लिए स्वार्थार्पण की दिव्योज्ज्वल भावना का संन्यास आश्रम में वर्णन किया है।

स्वार्थार्पणस्योज्ज्वलभावेनयं प्राप्नोति सर्वोच्चशिखां चतुर्थे।
संन्यासनाम्नि प्रथिताश्रमेऽस्मिन् नूनं परिग्राह् जगदेकरूपः।। (10.106)

निष्कर्ष -

उपरोक्त प्राचीन काव्य ग्रन्थों के श्लोकों को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि इन समस्त श्लोकों के अनुरूप ही प्रो. रेणापुरकर ने भी इन विषयों के अनुरूप ही काव्य रचनाएँ की हैं।

अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में प्रो. रेणापुरकर के काव्य ग्रन्थों का स्थान -

1. अखिलानन्द -

दयानन्द महाकाव्यम् -

“स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन वृत्त को आधार बनाकर लिखे गए इस महाकाव्य में वैदिक धर्म के संरक्षण वैदिक विरोधियों का खण्डन एवं समाज सुधार आदि की दिशा में स्वामी जी द्वारा किये गये कार्यों का चित्रण किया गया है।”¹¹

जयतु जयतु लोके वेद सूर्य प्रकाशो भवतु भवतु पश्चादार्यधर्मप्रभावः।
नयतु नयतु दूरन्यायकारी दयालुरविरतबहुरोगं नूनमार्याधिवासात्।। (1/8)

2. मेधाव्रताचार्य -

दयानन्ददिग्विजयम् - इस काव्य की कथावस्तु भी स्वामी दयानन्द के जीवन वृत्त से सम्बन्धित है इस महाकाव्य में मानवहित को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानकर भवसिन्धु को पार करने के लिए, स्वामी जी द्वारा धर्म नौका का सहारा लेने हेतु आग्रह किया है।¹² धर्म नौका का वर्णन निम्नानुसार है -

प्रवाह्य वाग्मी निगमोक्तिगङ्गा तत्पुण्यनीरिर्जन चित्तैपङ्कान्।
प्रक्षाल्य नम्भो भवसिन्धुपारं गन्तुं ददौ वेदतरिं सुभक्तिम्।।(20.57)

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर ने भी अपने काव्य ग्रन्थों में दयानन्दवर्य की महिमा का वर्णन निम्नानुसार किया है।

काव्योन्मेषः -

18. धन्यो धन्यः श्रीदयानन्दवर्यः

उदाहरण लुप्तान् वेदानुदधरदसौ ब्रह्मचर्यं शशास
पाखण्डानां दलनमकरो त्सत्यभक्तिं दिदेश ।
प्रत्याचख्यौ मृतनिवपनं मूर्तिपूजां प्रमाणैः
सद्विद्यानां वितरणपरे तीर्थबुद्धिं बबन्ध ॥ (18.7)

उदाहरण पुण्ये कार्ये हवनसदृशे लोकलोकान्तराष्ये
मूढैर्लोकैर्निर्गमवचसा प्राणिनां कल्प्यमानाम् ।
क्रूरां हिंसामुपहिबलैः खण्डयन् स प्रमाणैः
धन्यो धन्यः खलु यतिवरः श्रीदयानन्दवर्यः ॥ (18.9)

31. दयानन्दलहरी

उदाहरण स्वकीयार्थप्रज्ञाप्रखरतमदिव्योस्त्रनिकरैः
निगूढं वेदार्थं विविधमतवादाभ्रतिमिरैः
घिरात् स्पष्टीकुर्वन् प्रभुवरकृतीनामनुगुणं
दयानन्ददित्यो लसति भुवने चण्डतपनः ॥ (31.17)

उदाहरण निराधाराऽधारः प्रसृतमधुधाराऽमृतधरो
निरानन्दनन्दो भुवनसुखकन्दो यतिवरः ।
पिवन् वारं वारं गरलमपि घोरं शिवतरो
दयानन्दो वन्द्यो भवति शतशो मानवगणैः ॥ (3.21)

(काव्योद्यानम्) - आर्यसमाज - गौरवम्

उदाहरण एतत्सर्वमपेक्षितं यदपि तुल्लक्ष्यं महर्षेर्नै वै
वेदानां प्रसूतिः समस्तभुवने तस्याभव द्वाञ्छितम् ।
तत्सिद्धयर्थमसौ चचार कठिन घोरं तपो दुश्चरं
नूनं गौणतरं समस्तमितरं वेदप्रचारान्मुनेः ॥ (3.21)

इन समस्त श्लोकों के माध्यम से कविवर दयानन्द महोदय का वेदों के प्रति तथा राष्ट्र के प्रति भक्ति भाव प्रदर्शित कर रहे हैं ।

3. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल -

नेहरू चरितम् - “स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और लोकप्रिय जननायक पं. जवाहर लाल नेहरू के जीवन चरित को आधार बनाकर लिखे गए नेहरू चरितम् महाकाव्य के प्रणेता स्व. आचार्य ब्रह्मानन्द शुक्ल थे। इस काव्य में भारतभूमि की दुःस्थित, कश्मीर की दिव्य सुषमा, नेहरू का जन्म, उच्च शिक्षा के लिए उनका इंग्लैण्ड प्रस्थान, अमेरिका भ्रमण विवाह पुत्री की प्राप्ति, पत्नी का वियोग, स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेना, स्वाधीनता प्राप्ति, गांधी जी का सानिध्य, जेल यात्रा, स्वतन्त्रता में भाग लेना, स्वाधीनता प्राप्ति गांधी जी की हत्या समाजवादी दृष्टिकोण, नवनिर्माण की योजनायें, नेहरू का निधन आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। धर्मभेद या रंगभेद आदि को अस्वीकार करने वाले नेहरू जी की निम्नलिखित उक्ति उनके आदर्श की पराकाष्ठा को प्रकट करती है।¹³

न कापि जातिर्न च कोऽपि वर्णो न रङ्गभेदो न च देश भेदः।

अहं तु सर्वात्मकतां विभर्मि, शुद्ध स्वभावो भविताऽस्मि नैव ॥

बिना परिश्रम के सुख सुलभ नहीं होता और मानसिक प्रसन्नता के लिए परस्पर भावात्मक एकता परमावश्यक है। इस तथ्य को कवि ने इस प्रकार प्रकट किया है -

सुखाय भोगाय परिश्रमेण कार्याणि कार्याणि निजानि सवैः।

परिश्रमं प्रीतिमनोभिरेव सदा निलित्वैवगतिर्विधेया ॥ (17.42)

रेणापुरकर जी ने भी स्वयं के काव्यग्रन्थों में नेहरू जी के जीवन वृत्त का वर्णन किया है। जो निम्नानुसार है।

काव्योन्मेषः -

20. जवाहरवर्धापनम्

उदाहरण संसारशान्तिपरिरक्षणमात्रचिन्तः
स्वातन्त्र्यज्ञहुतजीवनसर्वसौख्यः।
विद्योतमान इवभारतकण्ठहारो
जीविच्चिरं बत जवाहरलालधीरः ॥ (20.1)

उदाहरण आदर्शराजनयविधुरि कीर्तनीयो
मानुष्यनिष्ठमहनीयगुणाकरोऽसौ।
कर्तासुविश्रुतकृतित्रितयस्य धन्यो
भूयाज्जवाहरसुधीः शतवर्षजीवी ॥ (20.9)

38. नेहरुनिर्याणम्

उदाहरण यावज्जीवं भरतविषयं सेवामानो महात्मा
यावच्छ्वासं निरतिशयितं विश्वशान्त्यै प्रयस्यन् ।
आ स्वातन्त्र्यात्परमसचिवो भारतस्याद्वितीयः
कष्टं! कष्टं! दिवमुपगतः श्रीजवाहरलालः ॥ (38.1)

उदाहरण यावद्भनुविपुलगगने भाति सेन्दुस्तारो
यावद् भूमौ गिरिवरसरित्सागराश्चैव सन्ति ।
यावद्वाष्टं भवति भुवने भारतीयं विशालं
तावत्स्यास्यत्यजरममरं श्रीजवाहरनाम ॥ (20.21)

4. महालिंगशास्त्री -

आदिकाव्योदयम् - यह नाटक पूरा का पूरा अयोध्या के सर्वसामान्य लोगों को पात्र बनाकर रचा गया है। राम का जीवन आम जनता को किस प्रकार स्फूर्त और प्रेरित करता है यह यहाँ कवि प्रदर्शित करना चाहता है।⁴

प्रो. रेणापुरकर के राममन्दिरविवादः में भी इसी प्रकार अयोध्या का वर्णन है।

2. अयोध्यैव रामजन्मभूमिः

उदाहरण साकेतमेव रघुनन्दनजन्मभूः किं
तत्स्थानमेव अलु बाबरिमस्जिदं किम् ।
किं तत्कृतेऽस्ति लिखितं किमपि प्रमाणं
प्रष्टं हि मुस्लिमजनैरपि कैश्चिदन्वैः ॥ (21)

उदाहरण रामायणादिक पुरातनकाव्य बन्धे
स्कन्धाग्निपद्मसमनैकपुराणमध्ये ।
साकेतमे व रघुनन्दन जन्मभूमि -
नमान्तरेण विदिताऽस्ति च पूरयोध्या ॥ (22)

5. रतिनाथ झा -

सामयिक काव्यों में बांग्लादेश के स्वातन्त्र्यसंग्राम को लेकर विरचित इनकी कविता “मुक्तिवाहिनी” उल्लेखनीय है। ओजोगुण तथा गौडी रीति का विन्यास इस काव्य में सविशेष है।⁵

दुरन्तशस्त्रसङ्कुलोल्लसत्करैश्चलत्पदैरपारपाक
सैनिकैर्निरस्त्रबङ्गनाशकैः ।
नितान्तमर्दितां महीमचीचयत् स्वजीवनैः
पराभियानरोधनैर्मुजीबमुक्तिवाहिनी ॥

स्वतन्त्रतानुरागरक्तमाननसोल्ललद्रसै-
सुवर्ण बङ्ग भूमिमानरक्षणे दृढवतेः ।
वसुव्ययैरसुव्ययैरपि प्रमत्तयौवने -
नर्वाभिमानसैनिकैरराज मुक्तिवाहिनी ॥

पञ्चमार छन्द के चयन ने मुक्तिसंग्राम के लिए अर्पित कविता को अद्भुत प्रवाह और व्यञ्जना दी है ।

इसी प्रकार प्रो. रेणापुरकर जी ने अपने काव्यों में बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम का वर्णन किया है ।

29. बांग्लामुक्तिसंग्रामः -

उदाहरण सङ्ग्रामा बहुधा बहुत्र विहिताः स्वार्थाय भूशासकै
दरियाबद्धजनस्य मोचनकृते नूनं कृतो दुर्लभः ।
त्रेतायां प्रभुरामचन्द्रविहितो लङ्काविमुक्ते रणः
श्री मत्येन्दिरया पुनः कलियुगे बाङ्गलामुक्त्यै कृतः ॥ (29.19)

काव्योन्मेषः -

42. इन्दिरापुण्यस्मरणम्

उदाहरण बाल्ये सेनां विरचितवती वानराख्यां शिशूनां
काराबद्धा कमपि समयं मुक्तिसङ्ग्रामकाले
कांग्रेससाख्यप्रवरपरिषन्नेतृवर्या च भूत्वा
शास्त्रीजीनां सचिवसमये मन्त्रिचक्रे प्रविष्टा ॥ (42.5)

उदाहरण बाङ्गलामुक्तिप्रखरसमरे विश्वदेशेष्वपूर्वे
तन्नै पुण्यं नृपनयपटुत्वं च लोकेऽद्वितीयम् ।
आविर्भूतं सकलभुवने च वित्ता बभूव
बाङ्गलामुक्तिर्भवति सुतरामिन्दिराकीर्तिमान ॥ (42.18)

6. रेवाप्रसाद द्विवेदी -

सीताचरितम् - “सीताचरितम्” महाकाव्य के प्रणेता डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी ने संस्कृत में अनेक काव्यों और काव्य शास्त्रीय ग्रन्थों की रचना की है। सीताचरितं महाकाव्य में करुण रस की तरंगिणी मुख्यतया प्रवाहित हुई है, और प्रसाद गुण का उत्कर्ष दर्शनीय है। इसमें सीता के निर्वासन से लेकर समाधिमाङ्गल्य तक की कथावस्तु वर्णित है। वन जाते समय सीता अपने आराध्य के सामने विनती करती है कि उसे आसन्न परिचारिका तो बने रहने दिया जाए।¹⁶

उदाहरण हन्त सर्वमपितावदास्यतां नाथ! ते प्रणयभिक्षुकीभिमान् ।
क्षीरसिन्धुविशदस्य चेतसः पार्श्वदूतिपदतो न हास्यसि ॥ (3.23)

“सीताचरितम्” में सीता को आधुनिक राष्ट्र की देवी के रूप में कवि ने प्रस्तुत किया है तो यहाँ इन्दिरा गांधी को उनके सत्ताच्युति के काल में सीता से उपमित कर दिया है।¹⁷

उदाहरण राजीवसञ्जययुता विगताधिकारा
राराज्यते रम ननु सातरसा ज्वलन्ती ।
वाल्मीकिधामनि विवासघटीं नयन्ती
वैखानसी कुशलवानुगतैव सीता ॥ (स्वातन्त्र्यसम्भवम् 26/6)

स्वातन्त्र्यसम्भवम् -

महाकाव्य में स्वतन्त्रता सङ्ग्राम की कथा है। इसमें 1857 से 1984 तक का भारतीय इतिहास वर्णित है। इसमें 1857 से लेकर इंदिरा गांधी के शासन काल तक भारत ऐतिह्य महाकाव्यात्मक रूप में चित्रित है।¹⁸

प्रो. रेणापुरकर के काव्यों में इन्दिरा को दुर्गारूप में वर्णित किया गया है।

काव्योन्मेषः

41. इन्दिहौतात्म्यम्

उदाहरण अमेरिकादत्तभयङ्करास्त्रैः सन्नद्धगर्वोद्धतमत्तपाकम् ।
जित्वा रणवङ्गभुवो विमोक्ती दुर्गेन्दिरा हा सहसा जगाम ॥ (41.9)

उदाहरण अत्यदभुते वड्विमुक्तियुद्धे दृष्ट्वा यदीयाद्भुतशौर्यधैर्यम् ।
समस्तविश्वं चकितं बभूव दुर्गेन्दिरा सा सहसा जगाम ॥ (41.13)

42. इन्दिरापुण्यस्मरणम्

उदाहरण आरुढाऽसौ धवलशस्तुङ्गशृङ्गं विशालं
पाकोत्सादाद् भुवनपरिधौ वङ्गदेशोद्भवाच्च ।
“चण्डी दुर्गा” इति च विविधं स्तूयमाना सुधन्या
केन्द्रीभूता सकलजनतानैत्रकोतूहलानाम् ॥ (42.17)

7. श्री निवास रथ -

के अनुसार हमारे समय का यह अन्तर्विरोध है कि समारोहपूर्वक विज्ञान की नौका लायी जा रही है, पर ज्ञान की गंगा सूख कर रेत हो रही हैं संस्कृति का बाग उजड़ रहा है। पर हम क्यारियों में केक्टस रोप कर प्रसन्न हो रहे हैं।⁹

विज्ञाननौका समानीयते ।
ज्ञानगङ्गाविलुप्तेति नो जायते ।
संस्कृतोद्यानर्वा दरिद्रीकृता
निष्कुटेषु स्वयं कण्टकिन्याहिता ।
पुष्पितानां लतानां न रक्षा कृता ।
विरमृता वाटिकायोजना निर्मिता ॥

काव्योन्मेष

4. रे! मूढ मानव

उदाहरण सर्वाङ्गपूर्णपरमेशगुणाढ्यसृष्टे
र्भष्टा विडम्बनर्मयी च गुणैर्विहीनाम् ।
साधारणीमपि मनुष्यकृति स्तुवैस्त्वं
रे मूढ मानव! कथं नहि तं स्तवीषि ॥ (4-7)

उदाहरण किर्मीरवर्णरुचिराकृतिगन्धपूर्ण
स्वल्पं सुमं लघुतमं छदनं तथा वा ।
वैज्ञानिकाभ्युदय विस्मितमानसस्य
विज्ञानगर्वमपहर्तुमलं नरस्य ॥ (4.9)

8. नागार्जुन -

भारतभवनम् - कवि अपनी इस कविता में कहते हैं -

दक्षिणालाभतुष्टेन रोषभिनयकारिणा
भूयोभूयः स्वतोदुष्टं भारतं भवनं मया ।।
दन्तेष्वरी सनाथे शबराध्युषिते वने गहने ।
दिव्यं सहाविशालं भारतभवनं मया दृष्टम् ।।
कृषकाणां व श्रमिकाणां यूनां क्षुत्क्षामकण्ठनाम् ।
पृष्ठे जठरे शिरसि च भारतभवनं मया दृष्टम् ।।

“यह हमारे आज के जीवन की द्वन्द्वात्मकता है। एक भारत भवन इधर है, एक भारत भवन उधर है। एक ओर पूंजीपतियों के बनाये हुए भवन हैं उन्हें भी भारत भवन नाम दिये गए हैं। दूसरी ओर जनता की आस्थाओं से बना दिव्य और महाविशाल भारत भवन भी है। फिर कृषकों और श्रमिकों तथा भूख से कुम्हलाये युवकों की पीठ, उदर और माथे पर खड़े भारतभवन भी हैं।”²⁰

प्रो. रेणापुरकर के काव्योन्मेषः में स्वातन्त्र्योपहासः में भी इसी प्रकार का वर्णन है। जहाँ भारत की स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

स्वातन्त्र्योपहासः -

उदाहरण तस्मादिल्लीश्वरघनवतां बन्धनात्तं विमोच्य
ग्रामीणानां प्रतिगृहकुटीराङ्गणं च प्रवाह्यम् ।
कायाकल्पः श्रमिककृषकाणां च यावन्न भावी
स्वाधीनत्वं भरतविषयस्यार्थपूर्णं न तावत् ।। (26.2)

उदाहरण केचिदेशे परमसुखिता वित्तमोहेन मूढाः
अन्ये दीना विभवरहिता दैन्यरेखावराश्च ।
कुर्वाणाः किञ्चन न सधनाः सर्वसौख्येन युक्ताः
श्राम्यन्तोऽपि श्रमिककृषका निर्धनाभावपूर्णाः ।। (26-5)

9. महाराजदीन पाण्डेय -

मौनवैधम् - गीत, गजल और मुक्तकों का संग्रह “मौनवैधम्” (1991) है जिसमें “सभ्यता भस्मासुरीयति” शीर्षक कविता सत्यकथन के कारण प्रभावित करती है।²¹

शस्त्रनिर्माणे प्रतिस्पर्धा
निरस्त्रीकरणसम्मेलना
तृणकुटीके शिशूनामरन्युपवनखेला
सभ्यता भस्मा सुरीयति

मानयति मृत्युत्सवम्
शिरसि कृत्वाण्वस्त्रं पोट्टलिकाम्
स्त्रलन्ती रता नृत्ये
वदन्ती
अयि मालोकय (मौनवेधम् पृ. 34)

(शस्त्रनिर्माण में प्रतिस्पर्धा
तो दूसरी ओर निरस्त्रीकरणसम्मेलन
फूस की झोंपड़ी में बच्चों के आग उलीचने का खेल
सभ्यता भस्मासुर हो रही है।
मना रही है मृत्यु का उत्सव
माथे पर आण्विक अस्त्रों की 'पोटली' रख कर'
लडखड़ाती हुई नाचने में लगी हुई है,
मुझे निहारो।)

इन्होंने गजल या दोहों के बन्ध में समकालीन स्थितियों के कटाक्ष
प्रभावशाली रूप में किए हैं।

दूसरी ओर 'आतंकवाद' है, माता-पिता ने तो उग्रवादियों को जन्म देकर
छेड़ दिया है, उनकी मृत्यु यम के अधिकार में है, उनके जीवन पर किसी का क्या वश -

जनिः पितुर्मातुर्वशे मृतिश्च वशे यमस्य ।
उग्रवादिनां जीवनं किं मम वशे वयस्य ॥

प्रो. रेणापुरकर जी ने भी अपने काव्यों में आतंकवाद को प्रमुख विषय
बनाया है तथा उसके निवारण हेतु ठोस कदम उठाने पर बल दिया है।

काव्यनिर्झर -

8. अम्नीकोपर्यातङ्कवादाक्रमणम्

उदाहरण एतत्कूरतमोग्रदारुणतमं कृत्यं महाभीषणं
निर्वीर्यं खलु भीरुकातरतमं विश्वासघातात्मकम् ॥
निष्पापाश्च सहस्त्रशोऽनघजना यस्मिन् हता निष्ठुरं
घोरं निन्द्यतमं बभूव सुतरां मानुष्यतादूषणम् ॥ (8.11)

9. आतङ्कवादविपदा नहि सामसाध्या

उदाहरण क्रूरोग्रवादविकरालमहासुरस्य
लक्ष्यं ततः समभवत् स्वयमग्निकाऽपि
तस्माच्च कश्मिरविधानसभा बभूव
ह्यन्ते च संसदि बभूव महाक्रमोऽसौ ।। (17-12)

केवल भारत ही नहीं अपितु अमरीका जैसा शक्तिशाली राष्ट्र भी इस आतंकवाद की समस्या से ग्रस्त है।

10. परमानन्द शास्त्री

जनविजयम् – परमानन्द शास्त्री जी का 'जनविजयम्' महाकाव्य समकालीन घटनाओं का सीधे-सीधे चित्रण करने वाला अनोखा महाकाव्य है।²²

विप्रशानिका – इस काव्य में कवि ने आधुनिक नेताओं के व्यवहार पर टिप्पणी की है।

ये चन्द्रकः त्वाददति प्रजाभ्य
स्ताभ्योऽर्धचन्द्रं प्रतिदापयन्ति ।
कलङ्किनः के? धृतपूर्णचिन्द्रा
स्ते नायका वाप्यनुयायिनस्ते ।।

प्रो. रेणापुरकर ने भी अपने काव्यों में समकालीन घटनाओं का सीधी सरल भाषा में वर्णन किया है तथा आधुनिक नेताओं के व्यवहार को भी लेखनी प्रदान की है। यथा –
काव्यनिर्झर –

10. राष्ट्रीयचरित्रपातः

उदाहरण राजीवगान्धिरपि भारतमुख्यमन्त्री
बोफोर्सकाण्डमालिनी कृतशुभ्रकीर्तिः ।
राष्ट्रावमानपरिवादसहैव नूनं
निर्वाचने स्वदलभङ्गनिमित्तकोऽभूत् ।। (10.3)

उदाहरण सार्धाब्दपूर्वमिह तुर्यनवम्बरे च
निर्वाचनाय किल रावमहोदयस्य ।
कोट्यैकरुप्यकधनं खलु दत्तमासीद्
दिल्लयां मयेति शपथेन जुषोषम्हेता ।। (10.6)

यहाँ राजीव गांधी तथा पी.वी. नरसिंहा राव के विचित्र व्यवहार का वर्णन है। जो कि राष्ट्र के हित में नहीं था।

निष्कर्ष -

उपरोक्त काव्यशस्त्रियों के काव्यों को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि इन समस्त काव्यकारों ने समकालीन घटनाओं को अपने काव्य का विषय बनाया है। उसी तरह प्रो. रेणापुरकर ने भी समकालीन घटनाओं को काव्य विषय बनाया है।

“आधुनिक संस्कृत साहित्य में काव्य की सभी विद्याओं में विपुल साहित्य रचा गया है। समय के साथ चलते हुए हमारे संस्कृत कवि भी समसामयिक भावबोध के प्रति सचेत हुए हैं। ये एक ओर प्राचीन परम्पराओं से अपना सम्बन्ध बनाये हैं। वही दूसरी ओर राष्ट्र के बदलते क्षण को अपना स्वर प्रदान किया है। समसामयिक कवियों में गुलबर्गा निवासी हरिश्चन्द्र रेणापुरकर की कविताएँ सद्यः घटित घटनाओं पर आधारित है जैसे संसद, भवनोपयोद्धवादाक्रमणम्, श्री वाजपेयी अमेरिका यात्रा, कारगिल विजयः, राष्ट्रपति क्लिण्टनस्य भारत यात्रा, काश्मीर स्वायत्ततावादः, आरक्षणाभिशापः, कश्मीरकूटम्, अम्रिकाशाठ्यम्, हजरतबलप्रकरण इत्यादि।”²³

मेरी दृष्टि में प्रो. रेणापुरकर प्रतिभा सम्पन्न कवि हैं। जो प्राचीन व अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में विशेष स्थान रखते हैं कवीश्वर ने अपनी काव्यप्रतिभा का लोहा मनवा लिया है। पिछले दशकों में संस्कृत कवियों ने समसामयिक घटनाओं की गहरी संवेदनशीलता तथा यथार्थानुभूति के आधार पर काव्य रचनाएँ की हैं।

सन्दर्भ

1. मनुस्मृति 2-26
2. यजुर्वेद 40-1
3. महाभारत
4. योगदर्शनम् 2-30
5. कौटिल्यअर्थशास्त्रम् 1-7
6. बा.रामायण किष्किन्धा 6-22-33
7. अथर्ववेद 10-2-31
8. सांख्यदर्शनम् 5-79
9. न्यायदर्शनम् 4-1-19
10. शतपथ ब्राह्मण
11. संस्कृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगन्नारायण पाण्डेय 2006 संस्करण पृ. 177
12. संस्कृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगन्नारायण पाण्डेय 2006 संस्करण पृ. 177
13. संस्कृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगन्नारायण पाण्डेय 2006 संस्करण पृ. 179-180
14. संस्कृत साहित्य का इतिहास - बीसवीं शताब्दी- राधावल्ली त्रिपाठी पृ. 87
15. संस्कृत साहित्य का इतिहास - बीसवीं शताब्दी- राधावल्ली त्रिपाठी पृ. 122-123
16. संस्कृत साहित्य का इतिहास - डॉ. जगन्नारायण पाण्डेय 2006 संस्करण पृ. 181
17. संस्कृत साहित्य का इतिहास - बीसवीं शताब्दी- राधावल्ली त्रिपाठी पृ. 136
18. संस्कृत साहित्य का इतिहास - बीसवीं शताब्दी- राधावल्ली त्रिपाठी पृ. 136
19. संस्कृत साहित्य का इतिहास - बीसवीं शताब्दी- राधावल्ली त्रिपाठी पृ. 139
20. संस्कृत साहित्य का इतिहास - बीसवीं शताब्दी- राधावल्ली त्रिपाठी पृ. 212
21. संस्कृत साहित्य का इतिहास - बीसवीं शताब्दी- राधावल्ली त्रिपाठी पृ. 171
22. संस्कृत साहित्य का इतिहास - बीसवीं शताब्दी- राधावल्ली त्रिपाठी पृ. 144
23. अर्वाचीन संस्कृत साहित्य दशा एवं दिशा - डॉ. मंजुलता शर्मा परिमल पब्लिकेशन 2004 पृ. 181

नवम खण्ड उपसंहार

नवम खण्ड

उपसंहार

“संस्कृत साहित्य को लेकर आज का लेखक और पाठक दोनों ही उत्साहित हैं। संस्कृत अध्येताओं के लिये यह अत्यन्त गौरव की बात है कि हम पिछड़ नहीं रहे हैं। चाहे उसमें शीघ्रता नहीं परन्तु दृढता अवश्य है। संस्कृत साहित्य के सर्जकों की नवीन पौध विकसित हैं, सामयिक चिन्तन आकार ले रहा है, कहीं काव्य रूप में तो कहीं गद्य कथा और समीक्षाओं के रूप में तो कहीं गद्य कथा और समीक्षाओं के रूप में। संस्कृत की गजल गायिकी ने हिन्दी और उर्दू के समक्ष अपने संकल्प को दोहराया है और इस बात का उद्घोष किया है कि हम आज भी ताजगी भरे हैं।

इसी शृंखला में “आधुनिक संस्कृत साहित्य दशा और दिशा पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि आसन्दिका से बोलते हुए अर्वाचीन संस्कृत साहित्य के पुरोधा अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने अपने उद्बोधन में कहा, “संस्कृत भाषा न कभी मरी थी, न मरी है और न भविष्य में ही ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी। इसको मृत कहने वाले अपराधी एवं राष्ट्रद्रोही हैं। इस भाषा में हमारा प्राचीन साहित्य निबद्ध है तथा यह व्याकरण की दृष्टि से वैज्ञानिक भाषा है।”

वास्तव में संस्कृत एक भाषा ही नहीं अपितु आन्दोलन है किसी जाति अथवा अथा धर्म की जागीर नहीं अपितु समग्र देश की धड़कन है। संस्कृत भाषा का विकास दूर्वा की भाँति बिना जल और उर्वरा के निरन्तर हो रहा है।

प्रो. रेणापुरकर ने प्राचीनभारतसंस्कृतीयम् महाकाव्य की रचना कर यह स्पष्ट कर दिया है कि वे भारतीय संस्कृति के उपासक हैं। डॉ. खरवंडीकर के शब्दों में शिक्षक के लक्षण के विषय में महाकवि कालिदास के सुप्रसिद्ध वचन में परिवर्तन करके वैसा ही लक्षण इस कृति के बारे में कह सकते हैं “कोई कवि समृद्ध प्रतिभाशाली होता है और किसी दूसरे की निर्वचनशक्ति वैशिष्ट्य पूर्ण होती है। जिसमें दोनों शक्तियाँ होती हैं वह श्रेष्ठकवियों के अग्रभाग में स्थित होता है।”

प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्, भारतीय संस्कृति का इतिहास ही नहीं है अपितु भारतीयसंस्कृति का माहात्म्य प्रकट करने वाला परिप्लुत महाकाव्य है ऐसा समझना चाहिए। भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है यह वस्तुस्थिति है। इस संस्कृति की निश्चित रूप से कालगणना करने में तर्क भी असफल हो जाता है। यह भी वास्तविकता है। यह संस्कृति वेदों पर आधारित है।

‘काव्योन्मेष’ कविवर की सर्वप्रथम कृति है जिसे बड़ी ही तल्लीनता से रचा गया है इस काव्यग्रन्थ में भिन्न-भिन्न प्रकार के विषयों को काव्य का विषय बनाया है। कवि का राष्ट्रप्रेम तथा मनीषियों के प्रति आदर भाव प्रकट होता है। धर्म में भी गहरी आस्था रखने वाले कविवर ने धर्म का वास्तविक अर्थ लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

काव्यनिष्पन्दः काव्योद्यानम् जैसे संस्कृत काव्य ग्रन्थ समकालीन घटनाओं पर आधारित है जिसमें अनेक राष्ट्रनायकों की यात्राओं का वर्णन है। देश-विदेश की राजनैतिक विषयों पर भी कविवर की पकड़ मजबूत है। देशप्रेम की भावना से सारोबार कवि ने कारगिल संग्राम का बखूबी वर्णन किया है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर भी लेखक के विचार प्रभावित करने वाले हैं। राष्ट्रीय समस्याओं को जनता के समक्ष प्रकट करने की कला कवि में है।

साथ ही ‘काव्यनिर्झर’ संस्कृत काव्यसंग्रह में विश्व की प्रमुख समस्या आतंकवाद को अपना निशाना बनाने वाले रेणापुरकर जी साहसी प्रवृत्ति के मनुष्य है। कवीश्वर ने आतंकवाद की समस्या के साथ ही इसके प्रति दिखायी जाने वाली शांतिपूर्ण नीति की आलोचना की है तथा वितैषणा को महाव्याधि बताया है।

राममन्दिरविवाद, हुतात्मश्रीश्यामलालचरितम्, इन्दिरापतनोत्थानम् जैसे विषयों पर लेखनी चलाने वाले कविवर अद्वितीय ही हैं।

ऐसे विषयों पर काव्य रचना करने वाले कवि की ऐसी सजगता और स्पष्टोक्ति वस्तुतः अभिनन्दनीय है अतः मेरा यह निष्कर्ष है कि प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी की कविताएँ चाहे समसामयिक संस्कृत कवियों के समान प्रतीकों और बिम्बों का प्रयोग न करती हो, चाहे उसमें भाषा की कोमलता और छन्दों की नवीनता न हो परन्तु उन्होंने प्राचीन विषयों तथा ज्वलंत विषयों को काव्य का विषय बनाया है। और अत्यन्त साहस के साथ उसे प्रस्तुत किया है। इनके काव्य अन्य काव्यों की अपेक्षा हटकर है।

यद्यपि आधुनिक समय में संस्कृत साहित्य विविध आयामी हो गया है। फिर भी कवि का आग्रह आधुनिक घटना प्रधान विषयों की ओर ही है उन्होंने समसामयिक घटना को संस्कृत के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उन्होंने अनेक घटनाओं के वर्ष, माह तथा दिनांक तक भी अंकित किए हैं। जो आगे की पीढ़ी में संस्कृत के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सामग्री सिद्ध होंगे जिस प्रकार संस्कृत इतिहास में कल्हण की राजतरंगिणी को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। उसी प्रकार प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर की यह काव्य सम्पदा भावी पीढ़ी के लिए अमूल्य निधि होगी। संस्कृत काव्य जगत् को इसे एक अवदान के रूप में स्वीकार करना चाहिए। वर्तमान में समाज के हित को देखते हुए इन्होंने काव्य श्लोक के माध्यम से भावना व्यक्त की है कि मोक्ष के लिये धर्म आवश्यक है, धर्म के लिये देह आवश्यक है, देह के लिये

वित्त आवश्यक है, यह वित्त धर्म के मार्ग से कमाया जाना चाहिए। यह संदेश इनके काव्य से प्राप्त होता है।

मोक्षार्थमावश्यकमस्ति धर्मो धर्मार्थमावश्यकमस्ति देहः ।
देहार्थमावश्यकमस्ति वित्तं, वित्तं समर्प्य खलु धर्ममार्गः ॥

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर कृत मौलिक काव्यग्रन्थ

क्र.सं.	ग्रन्थ	लेखक	प्रकाशक
1.	काव्योन्मेषः	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर	एस.रामकृष्णन कार्यवाहक मंत्री भारतीय विद्या भवन मुम्बापुरी 7, (1989)
2.	राममन्दिरविवादः	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, 2005
3.	इन्दिरापतनोत्थानम्	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, 2005
4.	काव्यनिष्पन्दः	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, 2006
5.	काव्योद्यानम्	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, 2006
6.	काव्यनिर्झरः	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, 2006
7.	दुतात्मश्रीश्यामलाल चरितम्	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, 2007
8.	श्रद्धाकुसुमाञ्जलिः	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, 2007
9.	प्राचीनभारतसंस्कृतीयम्	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर	श्री. पी.व्ही. शंकरन् कुट्टी, 2008 भारतीय विद्याभवन मुम्बई-7

अन्य सहायक ग्रन्थ

10.	अष्टविंशत्युपनिषद् (मूलमात्र)	नारायण रामाआचार्य	नारायण सागर प्रेस
11.	आचार्य दयानन्द भार्गव अभिनन्दन ग्रन्थ	वैदिक अध्ययन केन्द्र, जोधपुर	
12.	काव्य प्रकाश	आचार्य विश्वेश्वर	ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी
13.	साहित्य दर्पण	डॉ. निरूपण विद्यालंकार	साहित्य भण्डार

14.	दशरूपकम्	डॉ. श्रीनिवास शास्त्री	साहित्य भण्डार
15.	काव्य मीमांसा	डॉ. रमाकान्त पाण्डेय	आयुर्वेद सं.हिन्दी पुस्तक भण्डार
16.	अलंकार शास्त्र का इतिहास	डॉ. कृष्ण कुमार	साहित्य भण्डार
17.	आधुनिक संस्कृत साहित्य	दयानन्द भार्गव विपुल	राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर
18.	आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास	डॉ. रामकुमार दाधीच	हंसा प्रकाशन, जयपुर
19.	आधुनिक संस्कृत-साहित्येतिहास	देवर्षि कलानाथ शास्त्री	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
20.	आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास	डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी	राष्ट्रीय सं. संस्थान, नई दिल्ली
21.	आधुनिक काव्य में यथार्थवाद	डॉ. परशुराम शुक्ल	विरही ग्रन्थम् रामबाग, कानपुर
22.	आधुनिक कवियों के काव्य सिद्धान्त	डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त	
23.	अर्वाचीन संस्कृत साहित्य (दशा एवं दिशा)	डॉ. मंजूलता शर्मा	परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली
24.	अभिनव काव्यालङ्कार सूत्र	डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी	प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली
25.	महाभारत	जी.डी. जालान	गीता प्रेस गोरखपुर
26.	वाल्मीकि रामायण	रामनारायण दत्त	गीता प्रेस गोरखपुर
27.	सांख्यकारिका	रामकृष्ण आचार्य	साहित्य प्रकाशन
28.	श्रीमद्भगवद् गीता	कैलाश चन्द्र त्रिवेदी	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
29.	कौटिल्य अर्थशास्त्र	डॉ. कमलनयन शर्मा	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
30.	मनुस्मृति	डॉ. कमलनयन शर्मा	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
31.	योगदर्शनम्	अश्वनी कुमार यादव	आयुर्वेद सं. हिन्दी पुस्तकालय
32.	भारतीयदर्शन	डॉ. रामदेव साहू	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय

33.	भारतीय दर्शन एवं सिद्धांत	डॉ. रामदेव साहू	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
34.	दर्शनशास्त्र का इतिहास	बलदेव शर्मा	आयुर्वेद सं. हिन्दी पुस्तकालय
35.	भारतीय दर्शन अनुशीलन	डॉ. गिरधर शर्मा चतुर्वेदी	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
36.	भारतीय संस्कृति के मूल तत्व	त्रिपाठी एवं साहू	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
37.	भारतीय संस्कृति के सिद्धांत एवं स्वरूप	देवर्षि कलानाथ शास्त्री	आयुर्वेद सं. हिन्दी पुस्तकालय
38.	भारतीय संस्कृति के मूल आधार	रमेश चन्द्र घुसींगा	आयुर्वेद सं. हिन्दी पुस्तकालय
39.	भारतीय संस्कृति	डॉ. वाई.एस.रमेश	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
40.	संस्कृत साहित्य का इतिहास	डॉ. ए.बी.कीथ	अजमेरा बुक कम्पनी, जयपुर
41.	संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी	इलाहाबाद रामनारायण विजयकुमार
42.	संस्कृत साहित्य बीसवीं शताब्दी	डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी	राष्ट्रीय संस्कृत सं. नई दिल्ली
43.	संस्कृत साहित्य रचना संसार	जयशंकर त्रिपाठी	इलाहाबाद
44.	संस्कृत वाङ्मय का इतिहास (आधुनिक साहित्य खण्ड)		उत्तरप्रदेश संस्कृत सं. लखनऊ
45.	संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास	डॉ. विनय कुमार राय	
46.	संस्कृत वाङ्मय का इतिहास	बलदेव उपाध्याय	चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी

47.	संस्कृत वाङ्मय का इतिहास	डॉ० मधुसत्यदेव	राधा पब्लिकेशन
48.	संस्कृत गीतिकाव्य का इतिहास	परमानन्द शास्त्री	प्रतिष्ठान सुभाष नगर मेरठ
49.	संस्कृत साहित्य का इतिहास (लौकिक खण्ड, वैदिक खण्ड)	डॉ. प्रीति प्रभा गोयल	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
50.	संस्कृत और संस्कृति	डॉ. शिववंश पाण्डेय	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
51.	ऋग्वेद		शांति कुंज हरिद्वार
52.	यजुर्वेद		शांति कुंज हरिद्वार
53.	अथर्ववेद		शांति कुंज हरिद्वार
54.	अभिराजयशोभूषणम्	अभिराज राजेन्द्र मिश्र	वैजयन्त प्रकाशन इलाहाबाद 2006
55.	अग्निपुराणोक्तं काव्यालङ्कारशास्त्रम्	सं. पारसनाथ द्विवेदी	सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि. वि. वाराणसी
56.	काव्यदीपिका (अष्टम शिखा)	कान्तिचन्द्र भट्टाचार्य	जगदीश संस्कृत पुस्तकालय
57.	'दण्डी' रचित काव्यादर्श	शिवनारायण शास्त्री	परिमल पब्लिकेशन 2002
58.	आचार्य भामह कृत काव्यालङ्कार	डॉ. रमण कुमार शर्मा	विद्यानिधि प्रकाशन, 2008
59.	रुद्रटप्रणीत काव्यालङ्कार	डॉ. सत्यदेव चौधरी	परिमल पब्लिकेशन, 1990
60.	काव्यालङ्कार सूत्र	वामनाचार्य	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
61.	छन्दोमञ्जरी	गङ्गदास	चौखम्भा कृष्णादास अकादमी वाराणसी
62.	ध्वन्यालोक (लोचन टीका सहित)	आनन्दवर्धनाचार्य	चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी
63.	संस्कृत महाकाव्यों का समालोचनात्मक अध्ययन	डॉ. रहसबिहारी द्विवेदी	न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन दिल्ली, 2001

- | | | | |
|-----|--|------------------------|---------------------------------|
| 64. | संस्कृत साहित्य का इतिहास | डॉ. जगन्नारायण पाण्डेय | जगदीश संस्कृत पुस्तकालय 2006 |
| 65. | हिन्द पॉकेट बुक्स 2011 (इन्दिरा गांधी) | अनिता गौड | |
| 66. | शिवमहापुराण | | |
| 67. | न्यायदर्शनम् | | |
| 68. | लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या 1-6 भाग) | सं. भीमसेन शास्त्री | भैमी प्रकाशन दिल्ली, 2005 |
| 69. | लघु सिद्धान्त कौमुदी | सं. अर्कनाथ चौधरी | जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर |
| 70. | बृहद् अनुवाद चन्द्रिका | चक्रधर नौटियाल 'हंस' | मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली 1999 |

कोश ग्रन्थ

- | क्र.सं. | ग्रन्थ | लेखक व प्रकाशन वर्ष |
|---------|----------------------------------|---|
| 71. | संस्कृत हिन्दी कोश | मोतीलाल, बनारसीदास, दिल्ली 2005 |
| 72. | अमरकोश | निर्णय सागर प्रकाशन, मुम्बई, 2001 |
| 73. | आदर्श-हिन्दी-संस्कृत कोष | डॉ. रामस्वरूप, ऋषिकेश चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी |
| 74. | संस्कृत साहित्य कोश | सीताराम चतुर्वेदी, चौखम्बा प्रकाशन, नई दिल्ली |
| 75. | संस्कृत हिन्दी कोश | वामन शिवराम आप्टे |
| 76. | संस्कृत साहित्य कोश | डॉ. राजवंश सहाय, चौखम्बा राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला |
| 77. | हिन्दी मुहावरा कोश | भोलानाथ तिवारी, चौखम्बा सीरीज साहित्य |
| 78. | भारतीय साहित्य कोश | डॉ. नगेन्द्र नेशनल पब्लिक हाऊस, नई दिल्ली |
| 79. | संस्कृत हिन्दी -अंग्रेजी शब्दकोश | डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली |

शोध पत्र

ISSN - 2395-5104

शब्दार्णव
Shabdarnav

International Refereed Journal of Multidisciplinary Research

Year 3

Vol. 5, Part-I

January-June 2017

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
RAMKESHWAR TIWARI

Executive Editors
Dr. Kumar Mritunjay Rakesh
Mr. Raghwendra Pandey

Published by
Samvay Publishing House
Mujaffarpur, Bihar

335

अनुक्रमणिका

1.	सांख्ययोग दर्शन का वर्तमान सन्दर्भ में शिक्षाशास्त्रीय महत्त्व डॉ० बुद्धि प्रकाश कोटनाला	1-5
2.	मोटिया जनजाति की सौन्दर्यमयी संस्कृति (क्षेत्र-चमोली-नीतीमाणा) कला जोशी	6-7
3.	अरविन्द की मुक्ति विषयक अवधारणा म.म.साधना जनसारी	8-12
4.	संत परम्परा में भक्ति परक विचार डॉ० शैलेन्द्र चौधरी	13-16
5.	पालि अभिघम्म-पिटक में 'घम्मसंगणि' डॉ० गीता शुक्ला	17-21
6.	भारतमाता ब्रूते इत्यस्मिन् महाकाव्ये वर्णिताऽऽधुनिकराजनीतिः कमलचन्द्रः	22-24
7.	श्रीमद्भगवद्गीता में क्रियात्मक प्रशिक्षण नीजू गुप्ता	25-30
8.	माघकाव्य में अवतार विमर्श राजेन्द्र प्रसाद	31-34
9.	शारीरक स्वप्न अवस्था त्रयः अधिकार विवेचन राजू	35-37
10.	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर विरचित 'इन्दिरापतनोत्थानम्' - 'ऐतिहासिक काव्यम्' एक दृष्टि शिखा हाड़ा	38-39
11.	झारखण्ड का जनजातीय समाज एवं वनीय अन्तर्निर्मरता श्रद्धा रानी कश्यप	40-44
12.	वैदिक वाङ्मय में जल का महत्त्व सुशबू भारती	45-47
13.	पूर्वमीमांसा के अध्यायों का विवेचनात्मक अध्ययन डॉ० अंशुल दुबे	48-53
14.	महामारते रसः डॉ० राकेश कुमारः	54-55
15.	श्री अरविन्द योग में अतिमानस डॉ० सुरेन्द्र कुमार एवं सुरेन्द्र प्रसाद रयाल	56-59
16.	प्राचीन साहित्य में नारी डॉ० लज्जा पन्त (मह)	60-62
17.	रंगमंच का शास्त्रीय स्वरूप कृष्णा	63-64
18.	पण्डितबालकृष्णभारद्वाजविरचिते शारदामणिलीलाचरितनामके आधुनिकमहाकाव्ये रसाः विभूति	65-66
19.	वेदों में पारिवारिक शब्दावली दिलीप कुमार	67-70

प्रो० हरिश्चन्द्र रेणापुरकर विरचित 'इन्दिरापतनोत्थानम्'—
'ऐतिहासिक काव्यम्' एक दृष्टि

शिखा हाड़ा*

कवि का परिचय — संस्कृत कवियों की सुविशाल परम्परा में आधुनिक शताब्दियों में श्री हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का नाम अत्यंत सम्मान के साथ परिगणित है। इनका जन्म 17 सितम्बर 1924 को महाराष्ट्र के लातूर जिले में रेणापुरकर ग्राम में हुआ। इनकी स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा औरंगाबाद, हैदराबाद नगरों में हुई। ये आंध्र प्रदेश, कर्णाटकीय प्रदेशों—वारंगल, गुलबर्गा, शिमोगा, चिकमंगलूर के शासकीय महाविद्यालयों में संस्कृत आचार्यों के रूप में विभागाध्यक्ष रहे। 10 वर्षों तक मराठी साहित्य मंडल के अध्यक्ष रहे। महाराष्ट्र शासन के कालिदास संस्कृत साधना पुरस्कार तथा स्वातन्त्र्य सैनिक सम्मान से सम्मानित किये गये।

रचनाएँ — काव्योन्मेष, प्राचीन भारत संस्कृतोद्यम, काव्योद्यानम्, काव्यनिधन्द, राममन्दिर विवाद, इन्दिरापतनोत्थानम्, काव्यनिर्झर, श्रद्धासुमनाञ्जलि: आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। आकाशवाणी, दूरदर्शन के अनेक कवि सम्मेलनों में इनकी सहभागिता रही है। आंग्ल—हिन्दी, उर्दू, मराठी तथा संस्कृत भाषा के ज्ञाता हैं। संस्कृत के साथ हिन्दी और मराठी भाषा में भी लेखन कार्य करते हैं।

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने 1977 में ऐतिहासिक काव्य 'इन्दिरापतनोत्थानम्' की रचना की। यह काव्य श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के पतन व उत्थान को दर्शाने वाला है। काली रात के बाद सूरज की किरणें जीवन में प्रकाश लाती हैं। उसी प्रकार अनेक प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीयों ने स्वतन्त्रता प्राप्त की। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अठारह वर्षों तक नेहरू जी के कुशल नेतृत्व ने भारत को बुलंदियों के शिखर तक पहुंचाया। नेहरू जी की मृत्यु के बाद शासन की बागडोर इंदिरा गांधी जी ने संभाली। 1969 में इंदिरा जी ने स्वार्थपूर्ति हेतु अनेक अनुचित कृत्य किये। यथा — मोरार जी देसाई को वित्तमंत्री पद से च्युत करना, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, विरोधप्रकट करने वाले गंत्रियों का तिरस्कार करना। अपने ही प्रस्तावित प्रत्याशी (संजीव रेड्डी) को राष्ट्राध्यक्ष पद से गिराना। इन सब निन्दनीय कार्यों के फलस्वरूप कांग्रेस का दो दलों में विभाजन हो गया। इंदिरा जी ने परिस्थितियों को स्वयं के अनुकूल बनाने हेतु सामन्तों का वेतन बंद कर दिया। गरीबी हटाओ का नारा दिया। जहां एक ओर इंदिरा जी ने अनेक अनुचित कृत्य किये वहाँ दूसरी ओर बांग्ला मुक्ति संग्राम में दुनिया के सामने अपना लोहा मनवा लिया। बांग्लावासियों की मुक्ति के लिए किये इस युद्ध में विजय प्राप्त करने पर इंदिरा जी की यशोगाथा सम्पूर्ण विश्व में फैल गयी। इंदिरा जी की अद्वितीय राजनैतिक कुशलता से सब परिचित हो गये। स्वार्थपूर्ति के लिए विश्व में अनेक युद्ध हुए किन्तु मानव की मुक्ति के लिए किया गया यह प्रथम युद्ध था। इंदिरा जी की उत्कृष्ट छवि तो दुनिया के सामने प्रकट हो गयी किन्तु बांग्लादेश से आए शरणार्थियों के कारण भारत की अर्थव्यवस्था चरमरा गयी। भ्रष्टाचार और महंगाई दिनों दिन बढ़ने लगी। जयनारायण प्रकाश द्वारा इस समस्या को दूर करने का उपाय बताने के सहयोग को भी इंदिरा जी ने तुकरा दिया। अपने खिलाफ उठ रही आवाज को दबाने के लिए इंदिरा जी ने जयप्रकाश जी जैसे क्रान्तिवीर को देशद्रोही कहकर भर्त्सना की। इस क्रूर कृत्य से सम्पूर्ण भारतवर्ष में रोष व्याप्त हो गया। इसी समय आश्चर्यजनक घटना घटित हुई। यहीं से इन्दिरा जी का पतन प्रारम्भ हो गया — अहमदाबाद उच्च न्यायालय ने भ्रष्टाचार के कारण इंदिरा जी को 6 वर्ष के लिए निर्वाचन से अयोग्य घोषित किया। जिस प्रकार मदान्ध हाथी को कुछ नजर नहीं आता उसी प्रकार इंदिरा जी ने मदगर्वित होकर उच्च न्यायालय के निर्णय को स्वीकार नहीं किया। सभी दल के नेताओं ने इंदिरा जी को न्यायालय का निर्णय मानने की सलाह दी। चापलूसों ने इंदिरा जी को पदत्याग नहीं करने की ही सलाह दी। जयप्रकाश जी ने एकतंत्रीय शासन को रोकने

*पीएच.डी. (शोधछात्रा), राजकीय महाविद्यालय, कोटा (राज.)

के लिए 25 जून 1975 को जनसभा का आह्वान किया। उसी रात जयप्रकाश जी को बन्दी बनाकर जेल में डाल दिया गया। जब इंदिरा के कार्यों की तुलना नेहरू जी के कार्यों से की जाती है तो पिता और पुत्री के व्यवहार की भिन्नता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इंदिरा जी ने आपातकालीन की घोषणा पूरे देश में कर दी। आपातकाल के समय बढ़ती जनसंख्या पर रोक लगाने हेतु जबरन ही लोगों की नसबन्दी करायी गयी। जिससे भी लोगों में आक्रोश उत्पन्न हो गया। 19 माह की काली रात के बाद चुनाव की घोषणा के साथ ही नवीन सूर्य का उदय हुआ। आपातकाल का अन्त होते ही सभी नेता बन्धनमुक्त कर दिये गये। इस निर्वाचन में जयप्रकाश जी ने इंदिरा जी के खिलाफ "लोकतन्त्र बनाम तानाशाही" का नारा दिया। इसी समय जनता दल नामक नवीन दल का उदय हुआ जिसने "इन्दिरा हटाओ" के नारे से जनता के मन को उलट दिया। इन चुनावों में जनता दल ने भारी बहुमत से जीत दर्ज की। इंदिरा जी की बुरी तरह हार हुई। जैसा कि कहा गया है कि— कालचक्र की नेमि में कोई नहीं बच पाया। संजीव रेड्डी राष्ट्राध्यक्ष पद पर तथा मोरार जी देसाई प्रधानमंत्री पद पर आसीन हुए। कुछ समय में जनता दल के पारस्परिक मतभेद और विवाद प्रकट होने लगे। शासन ठप्प हो गया तथा यही जनता की अप्रति का कारण बना। 28 माह के अल्पकाल में ही विरोधी दल ने जनता के प्रति अविश्वास प्रस्ताव रखा। जनता दल आपसी मतभेदों से ही बिखर गया। जनता दल की सरकार गिरने पर राष्ट्रपति महोदय ने संसद भंगकर निर्वाचन की घोषणा कर दी। जनता को टूटता देख जयप्रकाश नारायण जी स्वर्ग सिंघार गये। लोग लगातार इंदिरा जी के कार्यों की आलोचना करते रहे किन्तु जनता दल की सोच के चारों ओर इंदिरा जी के नाम की लहर चल पड़ी। ये निर्वाचन इंदिरा के लिए पुण्यकाल था अनेक आयोगों व न्यायालय द्वारा दोषी ठहराये जाने पर भी 30 माह में ही इंदिरा सत्तासीन हो गयी। यह विश्व इतिहास की अद्वितीय घटना है। जनता के इस निर्णय ने सभी को आश्चर्य में डाला किन्तु शिथिल जनता दल को देश रक्षा में असमर्थ पाकर लोगों ने इंदिरा जी के नेतृत्व को चुना।

समीक्षा— वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो राजनेता स्वार्थपूर्ति के लिए दलपरिवर्तन करते हैं। ये लोकतंत्र की हत्या करने के समान है। ऐसे राजनेताओं को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। जनता ने स्पष्ट बहुमत से इंदिरा जी को शासन की बागडोर सम्मला दी लेकिन धूर्तों का कुप्रसिद्ध मंडल फिर से विराजमान हो गया। इसके लिए जनता को सावधान रहने की आवश्यकता थी। चुनाव में हारे हुए माननीय सदस्यों को पराजय को थुलाकर सेवामाव के साथ विरोधी दल का संवर्धन करना चाहिए। आने वाले समय में उन्हें फिर से सत्ता प्राप्ति का मौका मिल सकता है। वैसे भी केवल सत्ता ही सेवा का मार्ग नहीं है सत्ता से हीन मनुष्य भी जनसेवा में लीन रह सकता है। व्यक्ति के विचारों में शुद्धता होनी चाहिए। यह काव्य भारतीय राजनीति में होने वाले परिवर्तनों से अवगत कराता है। सत्तालोलुप राजनीतिज्ञों का स्वार्थपूर्ति के लिए परिवर्तित होता व्यवहार विचार करने को विवश कर देता है। इंदिरा जी अपने साहसिक कृत्यों से जनता के स्नेह की भागीदार बनी, लेकिन निन्दनीय कृत्यों से जनता के कोप का भाजन भी बनना पडा। इंदिरा जी के सत्ता में रहते भारत ने आकाश की बुलंदियों को छुआ। वहीं आपातकाल जैसे निन्दनीय कृत्य ने इंदिरा जी की छवि को धूमिल कर दिया। फिर भी यह कहना उचित ही है कि इंदिरा जी जैसी सशक्त महिला के नेतृत्व ने भारत को ऊँचाइयों तक पहुँचाया। भारतीयों के लिए वह उतार-चढ़ावों से भरा अविस्मरणीय काल था।

काव्यगत वैशिष्ट्य—प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर जी ने अपनी काव्यपरम्परा के अनुसार इस काव्य में एक ही छन्द 'मन्दक्रान्ता' का प्रयोग किया है। अर्थान्तरन्यास, उपमा, दृष्टान्त, रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग किया गया है। इनकी भाषा शैली अत्यंत सरल व सरस है जो सहृदय पाठकों के मन पर सीधा असर करती है।

सन्दर्भ :

1. इन्दिरापतनोत्थानम्—प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, 2005, भगवती प्रिंटर्स, गुलबर्गा
2. अलंकार शास्त्र का इतिहास— डॉ. कृष्ण कुमार, साहित्य भण्डार
3. छन्दश्चयनिका (वृत्तरत्नाकर)— पंडित प्यारमोहन शर्मा
4. संस्कृत हिन्दी शब्दकोश— डॉ. वामनशिवराम आष्टे

ISSN-2349-364X

वेदाञ्जली

अन्तर्राष्ट्रीय मूल्याङ्कित पाण्मासिकी शोध पत्रिका

वर्ष-४

अंक-७

भाग-१

जनवरी-जून २०१७

प्रधानसम्पादक
श्री रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक
श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशक
वैदिक एजुकेशनल रिसर्च सोसाइटी
वाराणसी

अनुक्रमणिका

1.	उपोसथ : बौद्ध क्रिया-विधान डॉ० देवी प्रकाश त्रिपाठी	1-7
2.	महाभारते पुरुषार्थचतुष्टयः डॉ० राकेश कुमारः	8-9
3.	अम्बिकादत्त व्यास विरचित 'शिवराजविजय' उपन्यास में वर्णित भाषा शैली डॉ० कला जोशी	10-14
4.	ब्रह्मरूप के दशावतार (सनातन परम्परा के आलोक में) डॉ० (श्रीमती) निधिगोस्वामी	15-19
5.	उत्तररामचरितम् में नाट्यशास्त्रीय तत्त्व डॉ० साधना जनसारी	20-25
6.	भारत में सूक्तियों के भक्ति परक विचार डॉ० शैलेन्द्र चौधरी	26-29
7.	मानसायुर्वेद में मन एवं शरीरस्वास्थ्य का संबंध जयश्री अतिरुद्ध सकलकले	30-34
8.	"भारतमाता ब्रूते" इत्यस्मिन् महाकाव्ये वर्णिताऽधुनिकसंस्कृतिः सम्यता च कमलचन्द्रः	35-38
9.	प्राचीन मूल्यों एवं संस्कृति की उपयोगिता लाल बहादुर	39-41
10.	विश्वशांति के संदर्भ में अमेददृष्टि का विश्लेषण नीलम कुमारी	42-44
11.	परमात्मा स्वरूप विवेचन राजू	45-48
12.	रामकाव्य का ऐतिहासिक एवं सामाजिक वैशिष्ट्य सीमा देवी	49-51
13.	प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर विरचित 'आन्ताराष्ट्रियकाव्यसंग्रह : 'काव्यनिर्झर' की समीक्षा शिखा हाड़ा	52-53
14.	योग में अहार का महत्त्व उपमा राय	54-56
15.	संस्कृत नाट्य के विकास के संकेत कृष्णा	57-58
16.	पण्डितबालकृष्णविरचितशारदामणिलीलाचरितमहाकाव्यस्य काव्यशास्त्रीयविमर्शः विभूक्तिः	59-61
17.	बौद्ध-विचारधारा : प्रासंगिकता एवं सम्भावनाएँ डॉ० गीता शुक्ला	62-71
18.	कविवर बलवीर सिंह 'रंग' की राष्ट्रीय चेतना डॉ० (श्रीमती) किरन	72-75

प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर विरचित 'आन्ताराष्ट्रीयकाव्यसंग्रह :

'काव्यनिर्झर' की समीक्षा

शिखा हाड़ा*

कवि परिचय : संस्कृत कवियों की सुविशाल परम्परा में आधुनिक शताब्दियों में श्री हरिश्चन्द्र रेणापुरकर का नाम अत्यंत सम्मान के साथ परिगणित है। इनका जन्म 17 सितम्बर 1924 को महाराष्ट्र के लातूर जिले में रेणापुरकर ग्राम में हुआ। इनकी स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा औरंगाबाद, हैदराबाद नगरों में हुई। ये आंध्रकर्णाटकीय प्रदेशो-वारंगल, गुलबर्गा, शिमोगा, चिकमंगलूर के शासकीय महाविद्यालयों में संस्कृत आचार्यों के रूप में विभागाध्यक्ष रहे। 10 वर्षों तक मराठी साहित्य मंडल के अध्यक्ष रहे। महाराष्ट्र शासन के कालिदास संस्कृत साधना पुरस्कार तथा स्वातन्त्र्य सैनिक सम्मान से सम्मानित किये गये।

रचनाएँ – काव्योन्मेषः, प्राचीन भारत संस्कृतीयम्, काव्योद्यानम्, काव्यनिष्पन्दः, राममन्दिर विवादः, इन्दिरापतनोत्थानम्, काव्यनिर्झरः, श्रद्धासुमनाञ्जलिः आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। आकाशवाणी, दूरदर्शन के अनेक कवि सम्मेलनों में इनकी सहभागिता रही है। आंग्ल-हिन्दी, उर्दू, मराठी तथा संस्कृत भाषा के ज्ञाता हैं। संस्कृत के साथ हिन्दी और मराठी भाषा में भी लेखन कार्य करते हैं।

वर्ष 2006 में रेणापुरकर जी ने इस काव्य संग्रह की रचना की। यह काव्य संग्रह प्रमुखतया राष्ट्रीय और अन्ताराष्ट्रीय विषयों को ध्यान में रखकर लिखा गया है जिसमें अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के निमंत्रण पर वाजपेयी जी की अमरिका की सफल यात्रा का वर्णन है वहाँ उनके ओजस्वी भाषणों को सुनकर सांसद मंत्रमुग्ध हो गये। तत्पश्चात् पाकिस्तान के उग्रवादी घूर्तों द्वारा विगत 10 वर्षों में 30 हजार से अधिक निर्दोष लोगों की हत्या का वर्णन है। पाकिस्तान ही वैश्विक उग्रवाद का मूल है। पाकिस्तान के प्रति भारत का सद्भाव दिखाते हुये अटल जी द्वारा रमजान के पवित्र महीने में संघर्ष विराम की घोषणा को भी वर्णित किया गया है। भारत के इस निर्णय का अमरिका आदि राष्ट्रों ने स्वागत किया। परन्तु पाकिस्तान ने इस पर मौन साध लिया। भारत द्वारा संघर्ष विराम की घोषणा को पाकिस्तान ने भारत की दुर्बलता माना। सांसद भवन, लालकिला तथा राममंदिर पर आतंकवादियों के आक्रमणों को भी लेखनी प्रदान की गई है। भारत विश्वासघात करते हुये बांग्लादेश ने मेघालय पर आक्रमण किया। इस कृतघ्नता का भी सुन्दर वर्णन किया गया है। पाकाध्यक्ष मुर्शरफ द्वारा अटल जी को भारत-पाक संबंध परिष्कृत करने के लिए वार्ता हेतु आमंत्रित किया गया। लाहौर हुए निर्णय को न मानते हुये मुर्शरफ ने स्वेच्छानुसार परिवर्तित कर दिया। साथ ही अमरिका के सर्वोच्च वाणिज्य केन्द्र पर मुस्लिम आतंकी संगठन के मुखिया ओसामा बिन लादेन ने आक्रमण कर उसे ध्वस्त कर दिया। इससे पूर्व अमरिका में अपने मित्र पाक के घोर कृत्यों को नजरअंदाज किया था लेकिन जब स्वयं अमरिका आतंकियों का लक्ष्य बना तो उसने अफगानिस्तान पर आक्रमण कर दिया। जबकि अमरिका ने भारत को पूर्व आश्वासन देकर भी पाकिस्तान के विरुद्ध कोई कदम नहीं उठाया इससे अमरिका की भारत विरोधी नीति प्रकट होती है। भारतीय शासक अमरिका के इस व्यवहार को क्यों नहीं समझ रहे हैं? यह आश्चर्य उत्पन्न करने वाला है। भारत की अत्यंत साहसिक शूरवीर कन्या कल्पना चावला के कोलंबिया अंतरिक्ष यान पर शोधयात्रा करते हुये आत्म बलिदान की घटना को वर्णित किया है। भारत को अपने पड़ोसी देशों के लिये कठोर नीति को अपनाने का सुझाव

*पीएच.डी. (शोधयात्रा), राजकीय महाविद्यालय, कोटा (राज.)

कविवर ने दिया है क्योंकि आतंकवाद की समस्या सामसाध्य नहीं है। मनमोहन सिंह जी की कश्मीर यात्रा को भी इन्होंने वर्ण्य विषय बनाया है। राममंदिर विवाद इनके काव्य का प्रमुख विषय है। दिल्ली और मुंबई में हुये विस्फोटों ने लोगों के अस्तित्व को हिला दिया इस बात का उल्लेख इनके काव्यों में दृष्टिगत होता है अंत में वित्तैषणा को महाव्याधि के रूप में चित्रित किया है। भोगप्रधान इस युग में वित्त की प्रधानता और चरित्र की गौणता हो गयी है हर जगह भ्रष्टाचार व्याप्त है। जबकि हमारी संस्कृति तो त्यागपूर्वक भोग करना सिखाती है। तभी हम सुख-शान्ति पूर्ण जीवन व्यतीत कर सकेगे।

समीक्षा : इस आन्ताराष्ट्रिय काव्यसंग्रह में कविवर ने भारत के प्रधान सचिवों द्वारा देश-विदेश में की जाने वाली यात्राओं का वर्णन किया है। साथ ही देश के प्रमुख सम्मानीय स्थलों संसदभवन, लालकिला तथा राममंदिर पर आतंकी आक्रमणों का वर्णन है। कवि ने प्राकृतिक आपदाओं को भी अपने काव्य में लेखनीबद्ध किया है। अमरीका को भारत के प्रति दोहरी नीति, बांग्लादेश की कृतघ्ना को देखते हुए कवि स्वविचार प्रकट कर रहे हैं कि भारत को अपने पड़ोसी राष्ट्रों या समुदायों के लिए सामनीति को न अपनाकर दण्डनीति अपनाना ही श्रेष्ठ है तथा वित्तैषणा जो एक महाव्याधि बन चुकी है इसे दूर करने प्रयास करना चाहिए। धर्मनुसार ही वित्त का त्यागपूर्वक भोग करना चाहिए।

समसामयिक विषयों पर रचे काव्य ही संस्कृत भाषा को नवीन आयाम प्रदान करते हैं अतः काव्यनिर्झर में काव्यकार ने अर्वाचीन विषयों को ध्यान में रखकर काव्य रचनाएँ की हैं। कविवर ने ऐसे ज्वलन्त विषयों का चयन करके भी प्राचीन छन्द अलंकारों में काव्यों की रचना की है। मुख्यतः वसन्ततिलका, उपजाति, शार्दूलविक्रीडितम्, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता जैसे छन्दों का प्रयोग किया है। यद्यपि आधुनिक एवं यथार्थपरक प्रतिपाद्य होने के कारण ये विषय रसास्वादन कराने वाले नहीं हैं तथापि कवि ने अपनी लेखनी से इन काव्यों को चमत्कृत कर दिया है।

रेणापुरकर जी ने समसामयिक विषयों पर काव्य रचना कर उन लोगों को प्रत्युत्तर दिया है जो ये समझते हैं कि संस्कृत भाषा में लिखे जाने वाले काव्य प्राचीन विषयों से सम्बन्धित होते हैं। बीसवीं शताब्दी को संस्कृत का स्वर्णिम युग कहा जाने में कोई दो राय नहीं है। अर्वाचीन काव्यकार न केवल ज्वलन्त विषयों पर लेखनी चला रहे हैं अपितु इन काव्यों के साथ पूर्ण न्याय भी कर रहे हैं।

उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, निदर्शना विभावना काव्यलिंग, अर्थान्तरन्यास अलंकार कवि को प्रिय है। कवीश्वर ने अपने काव्यों में सूक्तियों और मुहावरों का भी सफल प्रयोग किया है।

रेणापुरकर जी ने सुन्दर, सरस, सरल भाषा में इन काव्यों की रचना कर सहृदय पाठकों के मन में अमिट छाप छोड़ दी है।

सन्दर्भसूची :

1. काव्यनिर्झर: -प्रो. हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, 2006, भगवती प्रिंटर्स, गुलबर्गा
2. अलंकार शास्त्र का इतिहास- डॉ. कृष्ण कुमार, साहित्य भण्डार
3. छन्दश्चयनिका (वृत्तरत्नाकर)- पंडित प्यारेलाल शर्मा
4. संस्कृत हिन्दी शब्दकोश- डॉ. वामनशिवराम आपटे
